प्रस्तावना

श्री रामो जयति।

श्री आदिकवि वाल्मिकिमुनिनै श्रीरामचरित्ररूप महारामायण कीया है तिसविषे सर्वाधिष्ठानब्रह्मरूप श्रीरामजीके निजस्वरूपका निरूपण तहां तहां (स्तुतिआदिककेप्रसंगमें) गोप्यताकरिके कीया है ताकूं प्रगटकरनेअर्थ परमदयालु श्रीवेदव्यासजीने ब्रह्मांडपुराणके अंतरगत श्रीअध्यात्मरामायण रच्या है सो ग्रंथ यद्यपिअल्प संस्कृत भाषाके वेत्ता जिज्ञासुजनोंकों आत्मज्ञानके उत्पादनविषे अत्युत्तम है तथापि संस्कृत अभ्यासरहित मंदबुद्धिवाले जनोकी तिसविषे प्रवृत्ति होवे नही यह जानिके प्राकृतभाषामात्रके वेत्ताजिज्ञासुजनोंपर अनुग्रह करिके महाविद्वान् श्रीमानसिंहजीके शिष्य गुलाबसिंहजीने यह अध्यात्मरामायणरूप ग्रंथ दोहा चौपाई आदिक रसिकछंदनसेंअलंकृत प्राकृतभाषामै कीया है या ग्रंथमे प्रक्रियापूर्वक अध्यात्मविचार बहुत है औ भगवद्भक्तजनोकी श्रीरामचंद्रजीके चरित्रमै प्रवृत्तिके मिषते मणिप्रभाविषै मणिबुद्धिकरिके पुरुषकूं मणिकेलाभकीन्यायी रामजीके अनारोपित निजस्वरूप साक्षात्कारकाजनक है यातैं यह ग्रंथ अतिशय उत्कृष्ट है अरु सकलपुराणनमें साररभूत है यहजानिके देवनागरी (बालबोध) लीपीमे लिखायके औ प्रयत्नपूर्वक परमदयालु सकलजन हितधृतशरिर सकलसुभगुणाधिष्ठान विगताभिमान ब्रह्मनिष्ठ साधु उदासीन श्रीसंगतिदासजीसें तथापण्डित उदासीन जयरामदासजीसें शुद्धकरवायके हमने छपाया है तथापि दृष्टिदोषतै कछु अशुद्ध होवै तौ सज्जनोने सुधारके वाचना यह प्रार्थनाहै.

मुंबई बहारकोट बडकी गादी. दरीयास्थानमें। — ला. पुजारा कानजी भीमजी, औ नारायणजी इभजी,

श्री
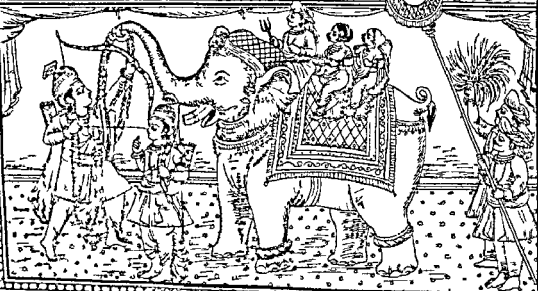
श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ श्रीमद्अध्यात्मरामायण भाषा प्रारंभः

ॐश्रीगणेशायनमः॥ ॥**दोहा**॥ ॥देवीमाताशारदाशरदइंदुसमहास॥वंदौंपदपंकजसदाकरोसुमतिपरकाश॥१॥ ॥**शंकरछंद**॥ ॥गणनाथदासनिवाइमस्तकवंदनापगधार॥करंयोचहौंउररामकोयशदेहिबुद्धिउदार॥सुरगुरुकरेसुरराजकारयपादकंजमनाइ॥हेरंबनायअनाथकेमेधीरवीरसहाइ॥२॥ ॥**सवैया**॥ ॥अजसूरयवंशविपिनपजेकपियज्ञविनाशकप्राणनिकारे॥कपिनारिउधारकरीक्षिनमेंजिनवीचसुमुद्रभूधरतारे॥रणरावणकेजिनसीसकटजिनदासविभीपनकाजसवारे॥जनकातमजापतिरामवहीमतिदाइकहैंअविलंवहमारे॥ ३॥परमातमरामरतेजगजेसभलोकजिनेपगवंदनधारे॥जिननाममुकुंदहिसेतुबनाइसुसेवकेगनपारउतारे॥जिनकीरतिपूररहीअवनीगुनसिंधुकहांवरनेहमवारे॥गुरुनानकवैपदमंजुलकोकरजोरसदाअभिवंदहमारे॥ ४॥ **अनंगशेखरछंद**॥ ॥गुरूगुविंदसिंहकोनमोसुहाथजोरके

कृशानुतेजतोरजाहिंपालयोहिंदानकों ॥ कृपालसीसहाथदैसु कोटतेकरेमृगिंद्रइंद्रचापलाजपेखनाथकीकमानको ॥ अपार दुखटारकैनिवारकैकलेशदासवासतोविकुंठतेजपूरयोजहान को ॥ भुजाभुजंगराजसीविराजसीसकेशचंद्रसामतानहोइ तामुखारविंदसानको॥५॥ ॥छप्पैछंद॥ ॥निपजेपंकसुवी चजरेकंटकतिनअंगा ॥ विधुअंचितपरमुंदभ्रमरमरंदेसरवं गा॥ गुरपदकंजसुनखप्रभातिहहसेनिरंतर॥ खिरेरहैंदिनरैनि सदानहिपरेसुअंतर ॥ श्रीमानसिंहगुरकेचरनभयभंजनउरत महरण ॥ जनअरथभुक्तअपवरगकरसभलाइकसेवतचर ण॥६॥ ॥सवैया॥ ॥रघुवीरकिकीरतिसिंधुकहांहमसेम तिमंदकहांवगवारे ॥ सुमरालहसैंकविमंडलजेतिहवीचफिरें नहिपावतपारे॥वगपैरनपेखमरालहसेंतुहसैंनहिहैकछुहानिह मारे॥रसकीरतिअंमृतपाइभलेसमहंसनकेवगकालनिवारे॥ ॥७॥ ॥सवैया॥ ॥वडबोलसुनेलघुवालजबेतिमवोलनकौ मनमेउमगावें॥वहयद्यपिनातिमवोलसकेंसुनबालकवैनवडे विगसावें॥ तिमहींममछंदनज्ञाननहींपुनजानतनालघुदीरघ नावें ॥ करुणानिधिकोविदकानधरेंममवालकवैनसदाहरपा वें॥८॥ ॥नराजछंद॥ ॥कथैंकविंदपुंजजांअपारउज्वलंय शं ॥ गनेशऔमहेशशेषभापहैदिवानिशं ॥ सुनेसुरामकाक लीकृपालुमोहिचालकी ॥हसेंमुखारविंदतेकटेसुपाशकालकी ॥९॥ ॥अथकथाप्रसंगा॥सूतउवाच॥चौपाई॥ ॥ए कसमयनारदमुनियोगी॥सभलोकनकेहितउदयोगी ॥ क्रम

करसकललोकमेंगए॥सत्यलोकपुनजावतभए ॥ १० ॥ ॥ सवैया॥ ॥ शुभमूरतिवंतसुवेदजहांचतुराननजूतिनमध्यविराजे ॥ रविबालप्रभासुलसग्रहसुंदरपेखतमिस्रसुदूरहिंभागे ॥ कपिमारकंडेलुसभेमिलकेचतुराननकेगुनगावतआगे॥सभगोचरज्ञानसदाजिनकौसभदेवसदाजिनकेपगलागे ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सारस्वतिजिहसंगविराजे ॥ जगंनाथचतुराननछाजे ॥ भक्तअभीष्टफलवरदाता ॥ ब्रह्मात्रईलोकविख्याता ॥ १२ ॥ तांकोपिखनारदमुनिज्ञानी ॥ दंडप्रणामभलीविधिठांनी ॥ पिखप्रसंनब्रह्माअतिखिरे ॥ नारदप्रतिपुनवैनउचरे॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कौनबातपूछीचहोहेमुनिदेहुसुनाइ ॥ उत्तरतांकोहोइजोतोकोंदेउंबताइ ॥ १४ ॥ सुनब्रह्माकेवचनकोनारदहरपअपार ॥ ब्रह्माप्रतिकरजोरकेंकीनोप्रणउदार ॥ १५॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ शुभअरुअशुभअहेजगजोई ॥ तुमतेसुनेंप्रथममेंसोई ॥ सुरसत्तमइकसंशयअहे ॥ मेरेउरअंतरकोदहे ॥ १६ ॥ सुननेयोग्यवहीअबघाल ॥ तांकोउत्तरकहोविशाल ॥ गोपहोइजेसोहुतुमारे ॥ तौभिकहोजेदयाहमारे ॥ १७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ युगजोकलिआंवहिगोजगमैनरपुन्यतयागाहिंपापपियारे ॥ मुखझुठबेंकसगेलजगमैदुरचाररतेनहिसाचुउचारें ॥ परकोअपवादकरेंसदहीपरद्रव्यसदामनमांहिविचारें ॥ परनारित्रिपेरतिनीतकरेंअतिक्रूरवडेपरप्राणनिकारें॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पंचभूततनआतमजाने॥पशुबुद्धीनहिवेदनमाने॥मातपिताकी

करेंनसेव॥ कामदासनारीतिनदेवा॥१९॥ विप्रसुलोभपिशाचहिंगिरे॥ वेदबेचतनजीवनकरे॥ विद्यापढेंसुधनहिंनमित्ता मदमोहेनहिंहरिमेंचित्ता॥ २०॥ ॥दोहा॥ ॥त्यागेंगेनिजजातिकेकरमपुरातनरीति॥ हरिविमुखपरवंचनाकरेंनिरंतरचीत॥ २१॥ ॥चौपाई॥ ॥प्रजानपालेंकलिमेंराजा॥ दंडप्रजानिजकरिहेंकाजा॥ वैश्यधर्मकोत्यागेंसारे॥ शूद्रकलिककौनविचारे॥ २२॥ ॥दोहा॥ ॥विप्रकर्मशूदरकरेंशूदरकेभूदेव॥ घोरकलीजबआइगोमानेंगेनहिंदेव॥ २३॥ ॥चौपाई॥ ॥नारिहोंहिंगीभ्रष्टीसारी॥ भरताभजेंनकलिमेंनारी॥ सामूद्रोहकरेंगीनारी॥ जोकलिआवैगोयुगभारी॥ २४॥ याविधिनष्टबुद्धजगजेते॥ स्वर्गजांहिंगेकिहिविधितेते॥ याचितासोंव्याकुलचित्ता॥ सदारहेममलोकनमित्ता॥ २५॥ सुनियाविधिनारदकीबानी॥ बहुतभलीकमलासनमानी॥ अबजासनपुनवैनउचरे॥ नारदप्रश्नप्रसंसाकरे॥ २६॥ ॥ब्रह्मोवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥नारदधन्यधन्यतववानी॥ परहितप्रश्नकरेंजगज्ञानी॥ सुननारदअबताहिबतांऊं॥ तेरसभसंदेहमिटाउं॥ २७॥ ॥दोहा॥ ॥मूरवगिरिजाजोरकरकीनोप्रश्नसनेह॥ श्रीरामतत्वत्रिपुरारिजूकहियेवांछाएह॥ २८॥ निजपत्नीप्रतिगूढजोकीनोशिवहिंबखान॥ पुराणोत्तमअध्यात्महिंरामायणपहिचान॥ २९॥ ॥सवैया॥ ॥सोवहपारवतीदिनरैनसुपूजसदाकरजोरिजुहारे॥ पारवतीमगनापुनआनंदरैनदिनानिततांहिबिचारे॥

जीवनसुकृतपुंजजवैवहग्रंथमहीतलमाहिविथारै॥ केवलता हिसुपाठकरैगतिऊत्तमपावहिंगेजनसारै॥३०॥ ॥चौपाई॥ ब्रह्महननलौपापसुजेते॥ गरजेंयाजगतौलौतते॥ जौलौयहि रामायणजोई॥ याजगमाहिउदेनहिहोई॥३१॥ विचरेंनिरभ यथमभटतौलौ॥ नाहिरमायणउदेसुजोलौ॥ कलिउतसाहर हेगोतौलौ॥ नाहिरामायणउदेसुजौलौ॥ ३२॥ तौलौशास्त्र सुकरैविवादा॥ परसपरंमतमहाविपादा॥ रामायणसुउदे जवहोई॥ वहुरविवादनहोसीकोई॥ ३३॥ ॥दोहा॥ तौलौरामस्वरूपजोढुरविगयअतिआहि॥ जौलौउदेनहोव ईरामायणजगमाहि॥३४॥ ॥सवैया॥ ॥तांहिपठनरजे जगमैपुनितांहिसुनेनरजेजगमाही॥ जोफलवैजनपावतहैं वहुनारदकौनकहेजगमाही॥ मैचतुराननआपसकोंनहिंऔ रनकीगणतीकिनमाही॥ किंवततोहिकहोंसुननारदजोशि वमोहिकह्योसुरमाही॥३५॥ ॥सवैया॥ ॥एकशलोकरमा यणकोपुनआधपढेउरप्रेमवडाए॥सोवहुपापसमूहनकोक्षि नएकविपेजगमाहिमिटाए॥नित्यपढैजुरमायणकोमनलाइ ज्ञितोपठयोतिहजाए॥ सोवहुवंधनतोरसभैजगभीतरजीव नमोक्षकहाए॥३६॥ ॥नराजछंद॥ ॥जुअर्चतेरमायणं निरंतरंमुनीवरे॥ दिनदिनेतुरंगमेधयागपुंन्यसोकरे॥ विनेच्छ यासुनेरमायणंनरोअनादरे॥ अनेकपापपुंजकोक्षिणेकमा हिसोदरे॥ ३७॥ करेसुवंदनारमायणंमुनेसमीपजो॥ सभे सुदेवअर्चनाफलंअपारपाइसो॥लिखेसमस्तपुस्तकंसुब्राह्मणं

ददानिजो ॥ वदामिपुंन्यताँहिंकोफलंसुनोउदारसो ॥ ३८ ॥ पढ समस्तवेदकेअनेकग्रंथकेकहे ॥ सुजोफलंनपाइहेसुयाँहिदान तेलहे ॥ इकादशीदिनेरमायणंपढेधरेव्रतं ॥ सुरामभक्तलोक मैसुनोसुतस्यसुकृतं ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुरसचर्य जोगायत्रीआपीवेदनजोइ ॥ प्रतिअक्षरयांपाठतेतांफलपावे सोइ ॥ ४० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ श्रीयुतरामनवमीदिनमांहीं ॥ करउपवासराममनमाही ॥ ४१ ॥ पठरमायणजागेरात ॥ तां हिपुंन्यफलसुनविप्यात ॥ ४२ ॥ कुरुक्षेत्रादितीर्थजगसारे ॥ सूर्यग्रहणखिरेंनभतारे ॥ आतमतुल्यधनंशरधीने ॥ व्यासादि कविप्रनकरदीने ॥ ४३ ॥ जोफलताहिदानतेहोई ॥ सोफलसत्य लहेजनसोई ॥ होइप्रसन्नगाइमुखखिरे ॥ रामरमायणअंम्र तभरे ॥ ४४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इंद्रपुरोगमदेवजेहैंअमरापुरिमां हिं ॥ गाइकआइसुजोरकरहेरेंनिजमनमाहि ॥ ४५ ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ पढेरमायाणप्रतिदिनजोई ॥ जोजोकर्मकरेपुनसो ई ॥ सोसोकोटिगुणतजगहोवे ॥ यांभीतरसंशयनहिजोवे ॥ ॥ ४६ ॥ रामरिदेतिनभीतरजोई ॥ तांहिपढेसुमहातमकोई ॥ ब्र ह्महनीसुमहाअघजोई ॥ तीनदिनामहिटारसोई ॥ ४७ ॥ ॥ स वैया ॥ ॥ प्रतिमाहनुमानसमीपपढेपुनरामरिदेनरजोजगमां हीं ॥ मुखमौनसुपाठहतीनकरेसभवांछतभांजनसोजगमाहीं ॥ मुखपाठकरेअरुदेपरदक्षणजोतुलसीअरुपीपलमाही ॥ जग मैसभपापनकीसिरदारजुब्रह्महनीसुमिटेछिनमाही ॥ ४८ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ गीतारामहातमजोई ॥ निखलपछानेशं

करसोई ॥ तिहआधोगिरिजाउरभासे ॥ अर्धअर्धपुनमाहि प्रकासे ॥ ४९ ॥ तामोकिंचतदेउवताइ ॥ सर्वनमोपैभाप्यो जाइ ॥ तांहिमहातमजोक्षिणजावै ॥ भलीबुद्धिजनप्रापतहोवै ॥ ५० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामगीतजिहपापकोनाहिनिवारेलोइ ॥ नारदढुंढोंमेसदापावोंनाहींसोइ ॥ ५२ ॥ वेदसिंधुमथरामजीसुधानिकारीजोइ ॥ गीतालक्ष्मणकोदईपीवअमरभयेसोइ ॥ ५२ ॥ कार्त्तवीर्यकेनाशहितजामदग्नसुतराम ॥ धनुपसुविद्यापढनहितवसेमहेश्वरधाम ॥ ५३ ॥ ॥ संखनारीछंद ॥ ॥ नहारामगीतापढेएकचीत्ता ॥ भवानीसयानीतिहूंलोकमांनी ॥ ५४ ॥ ॥ तोमरछंद ॥ ॥ ढिगरेणकासुतजाइ ॥ करजोरपादमनाइ ॥ गहिरामचंदहिगील ॥ सुपढेतिसेइकचीत ॥ ५५ ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ कलानरायणीलहीतिनेसुतांहिंपाठतें ॥ हनेरिपूकेमानतानधामहीनवाटते ॥ सुभूमिदेवहत्तिआमिटसमाग्पाठते ॥ पढेसुरामगीतजोसमस्तपापकाटते ॥ ५६ ॥ ॥ मधुभारछंद ॥ ॥ जगगहिकुदान ॥ दुरअंनआन ॥ दुरवैनगोइ ॥ जोपापहोइ ॥ ५७ ॥ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ पढरामगीतायदाएकवारं ॥ मिटैपापसारंलगेनासुवारं ॥ शिलाशालग्रामंपढेरापआगे ॥ तुलस्याश्वथंकैयतीनासमाजे ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ फलजोनवाणीकहिसकेतिहपाइहैजनसोइ ॥ सुनरामगीताजोपढेयहिभांतियाजगकोइ ॥ करश्राद्धब्राह्मणदेइभोजनविष्णुभक्तउदार ॥ पुनपितरतांकिविष्णुकेपदजांहिहरपअपार ॥ ५९ ॥ ॥ नरा

जछंद॥ ॥इकादशीदिनेव्रतंसुनेतुद्वादशीदिने॥ अगस्तवृक्ष मूलबैठरामगीतकाभने ॥तिसेसुरामचंद्रमैनभेदरंचआनिये ॥ समस्तदेवपूजहैसुरेशलोकमानिये॥ ६० ॥ ॥ सोरठा ॥ विनादानविनध्यानविनतीरथअवगाहनं॥ रामगीतकागान सोअनंतफलपावई॥६१॥ ॥दोहा॥ ॥नारदबहुताख्याक होंसुनियेतत्वप्रकाश॥स्मृतीवेदपुरानपुनऔआगमइतिहास ॥६२॥ याहिरमायणग्रंथकीकलासोलमीजोइ ॥ताहिसमा ननवेपुजैंजेसोआवैंसोइ॥६३॥ ॥सूतउवाच॥सवैया॥ याहिमहातमआपसुनोमुनिनारदपैचतुराननगाये ॥ जोनर याहिपढैजगमैपुनजोइसुनेमनप्रेमवढाय॥ पूजततासुरविंद सदाहरकीपदवीसुखसोंवहपाये ॥रामकथाकविसिंहगुलाव यथामतिगाइसभैसुसुनाये ॥ ६४ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्या त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादप्रथमोऽध्यायः॥ १॥ ॥ॐ॥ ॥ सवैया॥ ॥सूर्यवंशविपैतनुमानुपजाहिलयोहरिजीअ विनाशी ॥ अवनीवहुभारनिवारनकासुरविंदसभैचिनवैंसु खरासी ॥ सभराक्षसमंडलकोहनकैजिहपावनकीरतिभूमि प्रकासी॥ वेजनकात्मजापतिकोउरमाहिभजोपरब्रह्मविला सी॥ १ ॥ चौपाई॥ ॥ जगउतपतिपालनसंहार॥ माया आश्रेहअविकार ॥ अचिंतरूपआनंदस्वरूप ॥ सीतापति निजवोधअनूप ॥ २॥ विदितसुतत्वअमलतनजोई॥ रामभ जोपरपूरणसोई ॥ पुराणोत्तमरामायणसार ॥ -याहिपढैजे लोकउदार ॥ ३ ॥ अथवासुनेंनिरंतरजेई॥ धोइपापहरिपावैं

सेई ॥ भवबंधनतेछुटयोचहे ॥ नित्यरमायणकोमुखकहे ॥
॥४॥ **सोरठा** ॥ ॥धेनुसहस्रहदानआयुतकोटिसुजोकरे॥सुने
रमायणकानवैफलसोनरपावई ॥ ५ ॥ ॥**दोहा**॥ ॥ त्रि
पुरारीगिरितेभईमिलीरामनिधिवारि॥ अध्यात्मरामसुगंगय
हतीनभवनमलहारि॥६॥ ॥**चौपाई**॥ ॥एकसमैशिवगि
रिकैलाश॥ रत्नपीठवैठेसुखरास ॥ रविशतविमलपीठवह
छाजे ॥ ध्याननिष्टशिवतहांविराजे॥७॥ सेवेंसिद्धसदापदमं
जुल॥ वामअंगदेवीकरअंजुल॥ पारवतीसुभक्तभरभरी॥स
कलहितारथप्रश्नसुकरी॥८॥ ॥**पारवतीउवाच**॥ ॥अभि
वंदनतदेवदयाल ॥ सर्वातमद्रिकईशअकाल ॥ हेप्रभुतत्वस
नातनजोई ॥ सनातनमोहवतईयेसोई ॥ ९ ॥ गोप्यवस्तुज
गभीतरजोई॥ महानुभावजनभापेसोई॥ मैतुमरीअतिभक्त
सुदेव ॥ हेपतिमोहिवनईयेभेव ॥ १० ॥ सविज्ञानज्ञानहेजो
ई॥भक्तविरागयुक्तपुनसोई ॥ जांकरतेरसुभवनिधभारो ॥
करिसंक्षेपप्रभुमोहिउचारो ॥ ११ ॥ परमगोप्यइकपूछोंआ
न ॥ जलजनैनसोकरोवपान ॥ श्रीसुराममैभक्तिहमारी॥
हेप्रसिद्धसभजगतमझारी॥भक्तिमुक्तिकारणजगमाहीअव
रनसाधनकोभवमाही॥ तद्यपिमेसंशयइकआहि ॥ अमल
उक्तकरहनोसुनाहि ॥ १२ ॥ ॥**सवैया**॥ ॥ कवितरामकहै
परमातममाइकनाहिछुहेगुनकेई॥ सिद्धनिरंतररामभजेपरपू
रणतांपदपावततेई॥ हैपरमातमसत्यसहीतमआवृतभापतहै
पुनकेई ॥ याहितेआनकहेपरमातमरामलखेनसुतेपिखलेई॥

॥ १४॥ ॥चौपाई॥ ॥जोपरमातमजानतआप॥सीताहि तकिउकोनविलाप ॥ जोनहिजानततत्वसुसोई॥समसभजी वनभजनकोई॥ १५ ॥ यामेंकोउत्तरप्रभुकहो॥ मेरेउरकोसं शयदहो॥ औरसमर्थनकोजग आहि॥ विस्वहितारथपूछोंना हि॥१६॥ ॥ईश्वरउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥रामतत्वजा ननकीचाहि ॥धन्यधन्यतूयाजगमाहि॥परमगोप्ययहिआहि भवानी ॥ किनेनपृछीनाहिवपानी॥ १७॥ तेंअबपूछीकरोंव पान ॥ श्रीरामपदवंदनठान॥रामएकआनंदसरूपा॥ प्रकृति परपुनपुरपअनूपा ॥ १८ ॥ निजमायाकरजगउपजाइ॥ बा हरभीतररह्योसमाइ ॥ हेसभअंतरआतमगूढ ॥ नाहिपिखे ताकोनरमूढ ॥ १९ ॥ जिउचुंवकजगलोहचलावे॥ तिउव हरामजगतभरमावे ॥ एहनजानेमूरखलोक ॥ अवरेअवि द्यापावेंशोक ॥ २० ॥ निजअज्ञानेआहितिनजोई ॥ ईश्वर माहिअरोपेसोई ॥ पुत्रदारकरमअतिलाग ॥ तेजाभेंपुनमरे अभाग ॥ २१ ॥चामीकरजिउकंठनजाने॥ हृदेरामनहितथा पछाने ॥ जोतिरूपरविमेंतमनाही ॥ तिउअज्ञाननंशाघवमा हीं ॥ २२॥ शुद्धज्ञानपरमातमराम॥तामेंकथंअविद्यानाम॥ भ्रमकरभ्रमेनेनजिहवारे ॥ भ्रमतनिहारेवहुग्रहसारे॥ २३॥ तिउकरतत्वतनइंद्रियमाही॥मूरखकहेपरातममाही॥ प्रकाश रूपमूर्यजगआहि ॥ दिनरात्रीतिहदोउनाहि॥ २४ ॥ तिउअ ज्ञानज्ञानदोनाही ॥ शुद्धज्ञानहरिरामसमाही॥ तातिपरानंदहे राम ॥ तामेंअहंनतमकोनाम ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सा

र्हीहैंअज्ञानके कमलनैनश्रीराम॥ मायाआश्रयआपहै माया मोहननाम ॥ २६ ॥ ब्रह्माजूविनतीकरीलीनोनरअँवतार॥ अवनीभारउधरणहितक्रीडाकथाउदार॥ २७॥ ॥ श्रीमहा देवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥पारवतीतेप्रश्नमैउत्तरएकअनूप॥ परमगोप्यदुर्लभमहामुनेमिटतमकूप ॥ २८॥ ॥ नराजछंद॥ ॥सुरामऔविदेहजाप्रभंजनंकुमारको॥ सुनोसंवादअद्भुतंसमस्तमोक्षकारको ॥ पुरारमायणेसुरामरावणंविदारके॥ससैन्यपुत्रवाहनंरणेसमस्तमारकै॥२९॥ विदेहजाकपीशऔसुमित्रपूतकेसमं॥संकनआवतोभयोसमस्तवैरकोदमं॥हनूमतंसुआदिलैसमस्तवानरंवृता ॥ वसिष्टआदिविप्रतंसुभालटीकजोकृता॥ ३० ॥ नृपासनेअसीनकोटिसूरकीप्रभाधृतं॥ तदाहनूमतंनिहारअग्रअंजलीकृतं ॥ कृतंसमस्तकारयंनचाहिताहिआनकी॥महामतीकुमारवायुचाहिताहिज्ञानकी॥३१॥ सुरामजानकीकह्योसुतत्वकोवखानिये ॥ अपापज्ञानभांजनंसुभक्तहूंपछानिये ॥ विदेहजातथेतिप्राहरामतत्त्वनिश्चितं॥ हनूमतेप्रपंन्नकोसुलोकमोहनीसितं॥३२॥ ॥सूतउवाच॥ भुजंगप्रयातछंद॥ ॥परंब्रह्मरूपंविजानीहिरामं॥अनासीसदासच्चिदानंदनामं॥ विनोपाधिरूपंनवानीवपाने ॥ अंनदंसुशांतंमलंहीनमाने॥३३॥ ॥नराजछंद॥ ॥निरंजनंविकारहीनव्यापकंपछानिये॥ सुआतमाअकलमषंप्रकाशरूपजानिये॥ जगत्तमूलकारणंप्रकृत्तिमोहिमानिये॥ उपाइपालसंहरोनरामहेतुठानिये॥३४॥सुरामसंनिधासतीसिजामिमै

निरालसा॥ अरोपरामचंद्रमैकथेसुजीवबालसा॥ सकेतज
न्मरामकोपतंगवंशनिर्मलं॥ सुगाधपूतयागपालशत्रुमंडलं
दलं॥ ३५ ॥निवारश्रापगोतमासुनारिपावनीकरी॥ महेश
चापतोडरामपाणिजानकीहरी॥ सुरेणकाप्रपूतरामरामजी
मदंहरे॥सकेतवासमेसमंसमासुद्वादशंकरे॥ ३६ ॥सुदंडका
वनंगमंविराधदैतमारणं ॥ मरीचप्राणछेदनंकुरंगरूपधार
णं॥ सुछाइसीअकीहरीजटायुमोक्षहूंलहे॥कवंधदैतमोक्षके
सुभीलनीफलंगहे ॥ ३७ ॥सुग्रीवसोंसमागमंसुबालिप्राण
हारणं॥विदेहजाप्रसोधनंसमुंद्रसेतुकारणं॥ निरोधलंकराव
णंरणंसपुत्रमारणं॥ विभीषणंबुलाइभालराजटीककारणं॥
॥ ३८ ॥ विमानपुस्पकंसुबैठमेसमंविजेभरे॥ सकेतआवनं
सुभालराजटीकहूंकरे ॥ इनेसुआदिकर्मजेसमस्तजानकीक
रे॥ अरोपरामचंद्रमैसुलोकमूंढहूंधरे॥ ३९॥ विकारहीनआ
तमासमस्तरामजानिये॥ चलेनबैठतानहीनशंकरंत्रठानिये॥
नवांछैहनत्यागहैकरेनरंचकारयं॥ अनंतरूपआचलोप्रणाम
हीनधारयं॥ ४०॥ ॥ दोहा॥ ॥मायागुणअनुगतभएली
लाविग्रहराम॥करताभासेंजगतमैतरेजाहिंभजनाम॥४१॥
॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥नराजछंद॥ ॥हनूमंततत्तोसुरा
मतत्वकोवखानियो॥ सुआतमाअनातमाप्रमातमाप्रभानि
यो॥अकाशकीयथाभिदात्रिधासुलोकमेपिखो॥जलाशयेनि
हारियेसमस्तलोकहूंदिखो॥४२॥ महाअकाशएकसोविछिन
आनजानिये॥ अकाशभासतीसरोप्रतिविंवनाममानिये॥

सुबुद्धिमोवछिनएकचेतनंनिहारिये॥सुपूरणंकहेंतिसेद्वितीय भासधारिये॥४३॥सुविंयरूपतीसरोत्रिधाचितीसुयोंपिखे॥ सभासबुद्धिकारयोविछिनचेतनंविषे ॥ विकारहीनसाक्षणी अरोपतेभ्रमीयथा ॥ अरोपहैसुजीवतासुसाक्षणीभ्रमीतथा ॥४४॥ अभासतोन्हपासदातमोविकारभानिये॥ सुबुद्धिमोव छिन्नसोपरातमापछानिये ॥ विछेदतोविकल्पतंनरंचभेदले खिये॥प्रपूरणंसमंतिसेइकत्वताप्रपेपिये॥४५॥सुतत्वमस्यवा क्यतेसभासजीवकीतथा॥इकत्वभेदभानेहैसमस्तवेदमैकथा परातमासुजीवकोइकत्त्वज्ञानक्वैयदा॥ अविद्ययासकारयाम रेसुनाहनूतदा॥४६॥ विजानमोहिभक्तिजेसुमोहिभावकोल हें॥ विहीनभक्तियेनराक्रियाकलापमैवहें॥ जमेशतंसमानज्ञा नमोक्षतसुपाइहें॥ जगत्तसिंधुर्नारमेंसदावहेसुजाइहें॥४७॥ सुगोपमेरिदेसुनोसुआपमोहिगाइयो ॥ अपापपुन्यशीलतेंह नूमतेसुनाइयो ॥ अभक्तमेसठंतथानताहिपेवपानिये ॥ सुर शराजलक्ष्मीनतासमंपछानिये॥४८॥**श्रीमहादेवउवाच**॥ ॥**सवैया**॥ ॥पारवतीयहरामरिदेअतिगोप्यमयातुमपास उचारे ॥ आहिसुपावनऔरिदअंगमपापसुनेक्षिनमाहिनि वारे॥आपसुरामकहेमथकैसभवेदनमेजुअहेकछुसारे॥जा करप्रेमपढेनितहीनरसोभववंधनमूलउखारे॥४९॥ ॥**चौ पाई**॥ ॥ ब्रह्महनीलोपापहजार॥वहुजनमीजोकरेअपार ॥विनसंदेहसभैतेमरहें ॥ रामवचनजिउंसत्यउचरहे॥५०॥ जातिभ्रष्टपुनपापीजोई ॥ परधनपरदारारतिहोई ॥ चोरीक

निरालसा॥ अरोपरामचंद्रमैकथैंसुजीवबालसा॥ सकेतज
न्मरामकोपतंगवंशनिर्मलः॥ सुगाधपूतयागपालशत्रुमंडलं
दले ॥ ३५ ॥ निवारश्रापगोतमासुनारिपावनीकरी॥ महेश
चापतोडरामपाणिजानकीहरी ॥ सुरेणकाप्रपूतरामरामजी
मदंहरे॥सकेतवासमेंसमंसमासुद्वादशंकरे॥ ३६ ॥ सुदंडका
वनंगमंविराधदैतमारणं ॥ मरीचप्राणछेदनंकुरंगरूपधार
णं॥ सुछाइसीअकीहरीजटायुमोक्षहूलहे॥ कबंधदैतमोक्षके
सुभीलनीफलंगहे ॥ ३७ ॥ सुग्रीवसोंसमागमंसुबालिप्राण
हारणं॥ विदेहजाप्रसोधनंसमुंद्रसेतुकारणं॥ निरोधलंकराव
णंरणंसपुत्रमारणं॥ विभीषणंबुलाइभालराजटीककारणं॥
॥ ३८ ॥ विमानपुस्पकंसुबैठमेंसमंविजभरे॥ सकेतआवनं
सुभालराजटीकहूंकरे ॥ इनेसुआदिकर्मजेसमस्तजानकीक
रे॥ अरोपरामचंद्रमैसुलोकमूढहूंधरे॥ ३९॥ विकारहीनआ
तमासमस्तरामजानिये॥ चलेनबैठतोनहीनशंकरंचठानिये॥
नवांछहैनत्यागहैकरैनरंचकार्यं॥ अनंतरूपआचलोप्रणाम
हीनधार्यं॥ ४०॥ ॥ दोहा॥ ॥ मायागुणअनुगतभएली
लाविग्रहराम॥ करताभासैंजगतमैंतरेजाहिंभजनाम॥४१॥
॥ श्रीमहादेवउवाच॥ ॥नराजछंद॥ ॥ हनूमतंततोसुरा
मतत्वकोवखानियो॥ सुआतमाअनातमाप्रमातमाप्रभानि
यो॥अकाशकीयथाभिदात्रिधासुलोकमेंपिखी॥जलाशयेनि
हारियेसमस्तलोकहूंदिखी ॥४२॥ महाअकाशएकसोविछिन
आनजानिये॥ अकाशभासतीसरोप्रतिबिंबनाममानिये॥

सुबुद्धिमोवछिनएकचेतनंनिहारिये॥सुपूरणंकहेंतिसेद्वितीय भासधारिये॥४३॥सुचिंयरूपतीसरोत्रिधाचितीसुयोंपिखे॥ सभासबुद्धिकारयोविछिनचेतनंविषे ॥ विकारहीनसाक्षणी अरोपतेभ्रमीयथा ॥ अरोपहैसुजीवतासुसाक्षणीभ्रमीतथा ॥४४॥ अभासतोमृपासदातमोविकारभानिये॥ सुबुद्धिमोव छिन्नसोपरातमापछानिये ॥ विछेदतोविकल्पतंनरंचभेदल खिये॥प्रपूरणंसमंतिसेइकत्वताप्रपेपिये॥४५॥सुतत्वमस्यवा क्यतेसभासजीवकीतथा॥इकत्वभेदभानहैसमस्तवेदमैकथा परातमासुजीवकोइकत्त्वज्ञानह्वैयदा॥ अविद्ययासकारयाम रेसुनोहनूतदा॥४६॥ विजानमोहिभक्तिजेसुमोहिभावकोल हें॥ विहीनभक्तियेनराक्रियाकलापमैवहें॥ जमैशतंसमानज्ञा नमोक्षतेसुपाइहैं॥ जगत्तसिंधुनीरमैंसदावहेसुजाइहैं॥४७॥ सुगोपमेरिदेसुनोसुआपमोहिगाइयो ॥ अपापपुन्यशीलतेंह नूमतेसुनाइयो ॥ अभक्तमेसठंतथानताहिपेवपानिये ॥ सुरे शराजलक्ष्मीनतासमंपछानिये॥४८॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥**सवैया**॥ ॥पारवतीयहरामरिदेअतिगोप्यमयातुमपास उचारे ॥ आहिसुपावनऔरिदअंगमपापसुनेक्षिनमाहिनि वारे॥आपसुरामकहेमथकैसभवेदनमैजुअहेकछुसारे॥जा करप्रेमपढेनितहीनरसोभववंधनमूलउखारे॥४९॥ ॥**चौ पाई**॥ ॥ व्रह्महनीलोपापहजार॥वहुजनमीजोकरेअपार ॥विनसंदेहसभैतेमरहैं ॥ रामवचनजिउंसत्यउचरहै॥५०॥ जातिभ्रष्टपुनपापीजोई ॥ परधनपरदारारतिहोई ॥ चोरीक

रविप्रपुनमारे ॥ मातपिताकेप्राणनिकारे ॥ ५१ ॥ योगिंद्रि
दकोजोअपकारी ॥ योविधिकोजोमहाविकारी ॥ सोवहरा
मपूज्यजगमाही ॥ रामरिदेजुपढमुखमाही ॥ ५२ ॥ जापद
कोयोगीशनपावें ॥ तापदकोसुखसोंब्रह्मजावें ॥ पूजेतांअम
रेश्वरसारे ॥ रामभक्तगणवडोउदारे ॥ ५३ ॥ ॥ नराजछंद ॥
सुजानकीसमेतरामचंद्रजोप्रगाइयो ॥ महेशजामहानमोनि
जंप्रियासुनाइयो ॥ समेतसीयरामकेरिदेसुरामचंदको ॥ गु
लावसिंहदासकेमुखेवसोअनंदको ॥ ५३ ॥ ॥ इतिश्रीमदअ
ध्यात्मरामायणेउमामहेस्वरसंवादेश्रीरामहृदयंनामद्वितीयो
ऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ पारवतीउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥
धन्यआजुमैयाजगमाहि ॥ ईशअनुग्रहमोपरआहि ॥ आज
कृतारथमैजगमाही ॥ संदेहग्रंथटूटीउरमाही ॥ १ ॥ रामतत्त्वअं
मृतरसजोई ॥ प्रभुभाष्योकरुणाकरसोई ॥ पीवतमेमनदेव
दयाल ॥ त्रिननहोवैरसहिविशाल ॥ २ ॥ श्रीरामकीकथापुरा
नी ॥ सुनिसंक्षेपजुमोहवपानी ॥ अवविसतारसुननकीचाहि ॥
प्रगटवखानोमोप्रतिनाहि ॥ ३ ॥ ॥ श्रीमहावदेउवाच ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ सुनोभवानीकरोंवखान ॥ गोप्यनतेअतिगो
प्यपछान ॥ अध्यात्मरामचरित्रसुजोई ॥ रामवखान्योभापों
सोई ॥ ४ ॥ तीनतापकोकरेनिवार ॥ सोअवदेवीकरोंउचार ॥
जाहिसुनेसुमिटेभवभारो ॥ होइजीवकोभवनिसतारो ॥ ५ ॥
परमरिद्धिकोप्रापतिहोवै ॥ दीरघआयुसुखीतनजोवें ॥ पुत्रा
दिकशुभसंततिजोई ॥ ताहिनिरंतरहोवेसोई ॥ ६ ॥ ॥ स

वैया॥ ॥ ॥ रावणलौंसुमहागणराक्षसभारभरीधरणीज
बभारी ॥ गोतनुधारतबैमुनिदेवनसंगमिलीविधिलोकसि
धारी ॥ जाइंतहांउरकोदुखजोधरणीविधिपाससुरोइपुका
री ॥ ध्यानधरेतिनदोघटिकादुखकारणजोसुपिखेमुखचारी
॥ ७ ॥ निधिक्षीरगएसुरसंगलएधरणीकमलासनसंगलवा
ई ॥ श्रुतिसिद्धभलेपदउज्वलकेहरिईश्वरकीमुखकीरतिगाई॥
ऋपिवोचपुराननभापतजोविधगाइसभाहरिगीतसुनाई ॥ ह
रिभावभरेद्रिगनीरढरेमुखआनंदवाक्यगदागदआई॥ ८ ॥ त
बसूरहजारसमालसकेदिशपूरवमैप्रगटेहरिराई ॥ तमदूरकरे
दिगमंडलकोतंनुदीपतिनावरनीमुखजाई॥कमलासनएकपि
खेहरिपावनऔरननाहिलखीगतिकाई ॥ समनीलमणीत
नुमंदहसेद्रिगकंजनसेजनकोसुखदाई ॥ ९ ॥ कुंडलअंगदहा
रसुकीटसुहैकरकंकणसुंदरभारे॥ श्रीभ्रिगुपादमणीलसकैउर
भ्राजतसुंदरतावरधारे ॥ हैंद्विगनंदसुनंदखरेगुनगावनहैसन
कादिकचारे ॥ शंखरथांगगदाकरनीरजहैवनमालगलेविस
तारे ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेमजनेऊउरमैसोहे ॥ स्वरण
वरणअंबरतनमोहे ॥ पद्मांभूमिसहितहरिछाजे ॥ गरुडवि
हंगमऊपरराजे ॥ ११ ॥ हरखेभरेउरगदगदबानी ॥ ब्रह्मदे
वतवअसतुतिठानी॥ ॥ब्रह्मोवाच॥ ॥तेपदपंकजकोपरणा
म॥करोनिरंतरपूरणधाम॥ १२ ॥ प्राणबुद्धिइंद्रियमनलाई॥
मोक्षजोचितवेंसुखदाई॥त्रिगुणीमायाकेअनुसार॥ भवउत
पतिपालनसंहार ॥ १३ ॥ करोनिरंतरलेपनहोई॥ निजानंद

अनुभवतुमसोई ॥ दानअधैनकर्मकोकरें ॥ दुष्टजीवतिउपाप नहरें ॥ १४ ॥ तयसमैजिउभक्तिकमाइ ॥ संतदेहिक्षिणपाप मिटाइ ॥ तेपदपंकजदेप्योजोई ॥ मेउरदोपहरेंप्रभूसोई ॥ ऐसे चरनतुमारेदेव ॥ धारिरिदेमुनिकरेंसुसेव ॥ तवपदपंकजपूजा जोई ॥ तुलसीमालधरेजनकोई ॥ १५ ॥ सपत्नीजिउंपद मातिहसाथ ॥ करेसपरधाहेहरिनाथ ॥ तेभक्तनमैभक्तवि शाल ॥ श्रीसपरधेधरोंसुमाल ॥ १६ ॥ यातिभक्ततुमारेजे ई ॥ भक्तिनिरंतरचाहेंतेई ॥ तेपदपंकजभक्तउदारी ॥ होइ निरंतरमोहिमुरारी ॥ १७ ॥ भवआमयजेतपेंसुभारू ॥ भक्ति एकतिनकोजगदारू ॥ याविधब्रह्माभाप्योजबही ॥ बोले श्रीनारायणतबही ॥ १८ ॥ किंकरोमिनारायणबानी ॥ सु नीविधाताहरपवखानी ॥ भगवनरावणनामेंष्पाने ॥ पौल स्तजसुरनरसभजाने ॥ १९ ॥ हैभराक्षसकोवहुराई ॥ भ वरकैगरब्योअधिकाई ॥ त्रिलोकीलोकपालसभजेते ॥ वि श्वसमेतदुखाएतेते ॥ २० ॥ मानसकरमरणातिहजोई ॥ मैक ल्याणकलपयोसोई ॥ यातेतुममानुपतनधारी ॥ हनोदेवरिपु जाइमुरारी ॥ २१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ कश्यपमेहित तपकोकीनो ॥ होइप्रसन्नमोहिवरदीनो ॥ मोसुतयाच्योति नेउदार ॥ तथाकीयोमैअंगीकार ॥ २२ ॥ सोअबकश्यपदश रथनामा ॥ भूतलमैंहअजकेधामा ॥ कुशल्यानामताहिपटरा नी ॥ तासपुत्रतामैउरमानी ॥ २३ ॥ चारप्रकारआपकोंकरों ॥ एककुशल्याकेग्रहधरों ॥ तीनइतरदोनामैधारों ॥ भूको

निपलसुभारउतारों ॥ २४॥ योगमायसीताइकनामा ॥उप
जेगीमिथलापतिधाम॥ तिहसमेतविधकारयथारो॥ करोंस
पूरणयोंउरधारो ॥ २५॥ याविधिविष्णुसुबैनवषान॥ भयोत
हांपुनिअंतरधान ॥ ब्रह्माद्देवनवैनउचार॥ रघुकुलमेहरिनरत
नुधारे॥ २६॥ तुमसभअंशनकैजगमाही॥ वानरतनुधारोव
नमाही ॥ विष्णुसहायकरोजगतौलौ ॥ विष्णुरहैगोभूतलजौ
लौ॥२७॥ याविधविधिआश्वसनदीनो॥धरणीकोआश्वास
नकीनो ॥ कमलासननिजभवनेगयो ॥ उरज्वरदूरसुखीअ
तिभयो॥ २८॥ ॥शंकरछंद॥ ॥धरदेववानररूपकोविच
रेंअरंननमाहि॥ सुसहायताजगदीसकीयोंधारनिजमनमा
हि॥ बलवंतभूधरपादपोंसंग्राममैपरवीन॥ यहकथापावनई
शकीशिवआदवर्णनकीन ॥ २९॥ ॥इतिश्रीमदअध्यात्मरा
मायणेउमामहेश्वरसंवादे[illegible]कांडेनामत्रतीयोऽध्यायः॥३॥
॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥अथराजादशरथ
वरजोई॥सत्यपराक्रमश्रीमतसोई॥कौशलपतीवीरइकआहि
विश्रुतसवलोकनकेमाहि॥ १ ॥निहसंतानदूखतिहिभारा॥व
सिष्टसमीपगयोइकवारा॥ मुनिसरदूलबंदपदमंजुल॥ प्रश्नक
रीनृपवरकरअंजुल॥२॥ शुभलक्षणलक्षतसंतान॥किहविधि
होवेहेमुनिभान॥ संततहीनराजसभजेतो॥ केवलदुखकारण
हेतेतो॥ ३ ॥ वसिष्टकीएपुनबैनउचार॥ होवेंगेनृपवरसुतचा
र॥ मानोलोकपालतनुधारे॥होवेंगेवलबुद्धिउदारे॥ ४॥शृं
गीऋपिशांताकेभरता॥ नृपआनीजेतपतनुधरता॥ पुत्रकाम

यागजगजोई ॥ हमसमेतकरीयेनृपसोई ॥ ५ ॥ याविधिसु
निमुनिवरकीबानी ॥ मंत्रीप्रतिनृपवरहिवपानी॥ सुनमंत्रीशृं
गीऋपिल्याए ॥ पदवंदनबहुभांतिमनाए ॥ ६ ॥ सहतअमा
तयागनृपकरे ॥ अमलमुनीश्वरमंत्रउचरे ॥ श्रद्धाहवनक
रेनृपजवही ॥ हव्यवाटप्रगटेतिहितवही ॥ ७ ॥ तनजांवुनद
प्रभाउदारी ॥ पाइसस्वरणपात्रकरधारी ॥ पाइसलीजेहेनरदे
वा ॥तेपुत्रनहितरचीसुदेवा॥८॥ निरसंदेहपरातमजोई ॥ पुत्र
भावकरपावेंसोई ॥ ऐसेनृपप्रतिवैनवपान ॥ अग्निभयोतहं
अंतरधान॥ ९॥ मुनिशरदूलोंकेपदवारिज ॥ नृपवंदेनिजपा
इसुकारज॥ गुरशृंगीऋपिआइसुकीनी ॥ नृपपाइसनिजभा
मिनिदीनी ॥ १०॥ अर्धकुशल्याकेकरदयो॥ केकईअर्धसुदे
वतभयो ॥ वहुरसुमित्राप्रापतिभई ॥ पुत्रहेतपाइसतिनलई ॥
॥ ११ ॥ ॥दोहा॥ ॥ कुशल्याअर्धसुभागतिहदीनोप्रेमव
ढाइ ॥ केकईअर्धसुआपनोदयोप्रेममैआइ ॥ १२ ॥ ॥ चौ
पाई॥ ॥खायोदिव्यचरूतिनजवही॥गर्भसमेतभईतेतवही॥
ठविनिजिउंराजैंतेनारी ॥ नृपमंडलमैंकरउज्यारी ॥ १३॥ कौ
शल्यादशमासनभए॥ अविनाशीनिजपुत्रसुजए॥ नवमीशु
क्लपक्षमधुमास ॥ करकलग्नशुभभएप्रकास॥ १४॥ पुनर्वसु
नामनक्षत्रआए ॥ ऊचठौरग्रहपंचसुहाए ॥ मेपविपेरविवृ
पमैंचंदा॥ कंन्यामैंवुधमहाअनंदा ॥ १५ ॥ ॥ गीयामाल
तीछंद ॥ ॥ करकमैगुरुमीनमैभृगुदेवफूलवसावई ॥ प्रग
टेनरायणभूतलेपिखदेववलचलजावई ॥ परमातमाजिहवेद

भाषैंआवहैनहिध्यानमैं॥वहुभक्तिकेवशनैनगोचरआजुदशरथधाममैं॥१६॥नीलकंजसमानसुंदरस्याममूरतिमोहिनी॥भुजचारपीतपटंवराजगभक्तकारयदोहनी॥अरुणकंजसमाननेतरप्रांतदेशविराजहीं॥मकरकुंडलकानलसकैंहेरमकरसुलाजहीं॥१७॥ सहससूरसमानलसकैंभूपमंदरजालमें॥कुटिलअलककपोलसुंदरहेमकीटसुभालमें॥धरगदापद्मसुचक्रकरवनमालसुंदरशोभई॥सुविशालसोभाहेरकैमनदेवतासभलोभई॥१८॥जनकृपाचंद्रस्हदस्यजोमुसकावनातिहचांदनीं॥ करुणारसीलेनैनशोभानीलकंजनमादनी॥श्रीवत्सहारकियूरनूपरपादमैछनछनकरे॥पिखतांकुशल्यारूपकोविसमाकुलाउरमैंहरे॥१९॥ ॥दोहा॥ ॥हरपनीरनैनाभरेकरअंजुलहरिमान॥अद्भुतरूपकुशल्यापिखवालीभगवान॥॥२०॥ ॥कौशल्याउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥देवदेवपदवंदनथारे॥संखगदाकरचक्रसुधारे॥परमातमअच्युतआनंत॥पुरपोत्तमपूरणभगवंत॥ २१॥ ॥गीयामालतीछंद॥ ॥वाणीअगोचरतोहकोमुनिवेदवादीगावहैं॥मनवुद्धिइंद्रीनापिखैंसतज्ञानरूपसुनावहैं॥तुमहीस्वमायाविश्वकोउपजाइपालसंहारहो॥ सत्वादिगुणसंयुक्तहोनहिलेपरंचकधारहो॥२२॥ ॥चौपाई॥ ॥नाहिकरोकरतासेभासो॥चलोनाहिजनुचलतप्रकासो॥ नाहिसुनोजनुसुनतसमान॥ देषोनादेखतसेभान॥ २३॥ अप्रमाणमनवुद्धिनिआरे॥रूपतुमारोवेदउचारे॥समसभभूतनमैंतुमदेव॥लखेनजावोंअल

सबअभेव ॥ २४ ॥ अज्ञानअवरेचित्तजिनकेरे ॥ कैसेरूपतुमारोहेरे ॥ शुद्धबुद्धिजिनकीजगअहे ॥ ज ॥
॥ २५ ॥ ब्रह्मांडप्रमांणूसेउरतेरे ॥ ध्यानधरेयोगीश्वरहेरे ॥ तूंमेउदरविषेतनुधरे ॥ याविधलोकविडंवनकरे ॥ २६ ॥ भक्तनमैपरवसतातेरी ॥ आजरघूतममैउरहेरी ॥ भवसमुद्रमेमेअतिमग्ना ॥ पतीपुत्रधनमाहिसुलग्ना ॥ २७ ॥ तेमायाजगभ्रमवहुभारा ॥ अवतेअंघ्रीमूलनिहारा ॥ देवतुमाराएहुस्वरूपमेमानसनितरहेअनूप ॥ २८ ॥ विश्वविमोहनमायाधारी ॥ नाहिअवरेसुमोहिमुरारी ॥ एततरूपअलौकिकजोइ ॥ हरोसनातनसोइ ॥ २९ ॥ बालभावअतिकोमलअंगा ॥ रूप्रदिपावोमहाअनंदा ॥ बोलअलिंगनललनसुधार ॥ उतकटतममैतरोंसुपार॥३०॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥ ॥त ज जोइएतुमारे॥ सोईसोनहिऔरनिहारे॥भूमिभार नि मित्त॥ब्रह्माविनतीकरीसुचित्त ॥ ३१ ॥रावणमारणहतसुमात॥धारयोमैभूतलनरगात॥दशरथतेममहिततपकीनो॥होइप्रसंन्नमोहिवरदीनो॥३२॥मोहिपुत्रकरयाच्योजोई॥ पूरणकीयोआजमैसोई॥यहमेरूपनिहारोजोई॥पूरवतपफलजानोसोई॥३३॥दुरलभमोहिदर्शजगआहि॥मोक्षनमित्तपछानोताहि॥संवादहमारोथारोजोई॥पढेसुनेयांकोनरकोई॥३
नरममस्वरूपतापावे॥मरणसमेममस्मृतीआवे॥ माताप्रतियौंरामउचार॥रोवतभएबालतनुधार॥३५॥इंद्रनीलमणितनुद्युतिसोहे॥विशालनैनसुंदरसवमोहे॥बालअरुणसमप्रभा

उदार ॥ लालतलोकपालबलिधार ॥ ३६ ॥ सुतकोजनमसुन्यो नृपजबेही॥ सुखसमुद्रमग्नभेतबही॥ गुरुसमेतआयोपुनतहां॥ कमलपत्रद्रिगरामसुजहां ॥ ३७॥ पिखआनंदनीरद्रिगआए॥ गुरुसोजातकर्मकरवाए॥ केकईजनेसुभरतकुमार॥ कमलनै नतनुप्रभाअपार ॥ ३८॥ सुमित्राजूसयुगलसुतजाए॥ पूर्णइं दुसमबदनसुहाए ॥ ताहिंसमेराजाहरपाना ॥ ग्रामहजारद एदिजदाना ॥ ३९ ॥ हेमरतसुरभीपटघने ॥ ब्राह्मणपाइअसी साभने ॥ विद्याज्ञानसंपूरणभरे॥ जाहिबिपेमुनिरमणसुकरे ॥ ४० ॥ तांकोगुरुपुनरामउचारा॥रमणरूपतेरामनिहारा॥भर तभरणतकीयोउचारा॥ लक्ष्मणसुभलक्षणआधारा॥४१॥श त्रुहननशत्रूघनभाने ॥ याविधगुरसभनामबखाने ॥ लक्ष्मण रामचंद्रकेसंगी॥ शत्रूघनभयेभरतप्रसंगी ॥ ४२ ॥ प्रायसअ शनकेअनुसारी ॥ द्वंद्वीभूमिफिरैबहचारी ॥ लक्ष्मणसंगमिले श्रीरामा ॥ लीलाबालकरैसुखधामा ॥ ४३ ॥ ॥ **सवैया** ॥

मातपितासुनकाकलबैनसुपेखमुखांबुजकोविगसाए ॥ भा लविपैमुकतामणिहेमसुपीपलपातअनुपसुहाए ॥ कंठविपे मणिव्रातधरेत्रिककोनखताहिसुबीचजराए ॥ कांचनकुडल कानलसैंरतनोगणसुंदरपूरलगाये ॥ ४४ ॥ ॥ **चौपाई** ॥

सब्दाइमानमणिपरमउदारे ॥ पदभूपणतिहसंगसवारे॥ कटी सूत्रअंगदभुजधरे ॥ अल्पदशनहसतमुखपिरे ॥ ४५ ॥ इंद्र नीलमणिदेहसुहाए ॥ अंडणरिंङ्मानविकसाए॥ आगेबाल कपाछेरामा ॥ देखकुशल्यादशरथधामा ॥ ४६ ॥ परमअनं

खअभेव ॥ २४ ॥ अज्ञानअवरेचित्तजिनकेरे ॥ कैसेरूपतु
मारोहेरे ॥ शुद्धबुद्धिजिनकीजगअहे ॥ वैजनरूपतुमारोलहे
॥ २५ ॥ ब्रह्मांडप्रमाणूसेउरतेरे ॥ ध्यानधरेयोगीश्वरहेरे ॥ तूं
मेउदरविषेतनुधरे ॥ याविधलोकविडंवनकरे ॥ २६ ॥ भक्त
नमैपरवसतातेरी ॥ आजरघूतममैउरहेरी ॥ भवसमुद्रमैमैअ
तिमग्ना ॥ पतीपुत्रधनमाहिसुलग्ना ॥ २७ ॥ तेमायाजगभ्रम
वहुभारा ॥ अवतेअंघ्रीमूलनिहारा ॥ देवतुमाराएहुस्वरूप ॥
मेमानसनितरहेअनूप ॥ २८ ॥ विश्वविमोहनमायाधारी ॥
नाहिअवरेसुमोहिमुरारी ॥ एततरूपअलौकिकजोइ ॥ उपसं
हरोसनातनसोइ ॥ २९ ॥ वालभावअतिकोमलअंगा ॥ रू
पदिपावोमहाअनंदा ॥ वोलअलिंगनललनसुधार ॥ उतक
ठतममैतरोंसुपार॥३०॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥माताजो
जोइएतुमारे॥ सोईसोनहिऔरनिहारे॥भूमिभारअपनयननि
मित्त॥ब्रह्माविनतीकरीसुचित्त ॥ ३१ ॥रावणमारणहतसुमा
त॥धारयोमैभूतलनरगात॥दशरथतेममहिततपकीनो॥होइप्र
सन्नमोहिवरदीनो ॥३२ ॥मोहिपुत्रकरयाच्योजोई॥ पूरणकी
योआजमैसोई॥यहमेरूपनिहारोजोई॥पूरवतपफलजानोसो
ई ॥ ३३ ॥दुरलभमोहिदर्शजगआहि ॥मोक्षनमित्तपछानोता
हि॥संवादहमारोधारोजोई ॥ पढेसुनेयांकोनरकोई ॥३४॥सो
नरममस्वरूपतापावे ॥ मरणसमेममस्मृतीआवे ॥ माताप्रति
यौंरामउचार॥रोवतभएवालतनुधार ॥ ३५ ॥इंद्रनीलमणित
नुद्युतिसोहे॥ विशालनैनसुंदरसवमोहे ॥ वालअरुणसमप्रभा

उदार ॥ लालतलोकपालबलिधार ॥३६॥ सुतकोजनमसुन्यो नृपजवही॥सुखसमुद्रमग्नभेतवही॥गुरुसमेतआयोपुनतहां॥ कमलपत्रद्रिगरामसुजेहां॥३७॥पिखआनंदनीरद्रिगआए॥ गुरुसोजातकर्मकरवाए॥केकईजनेसुभरतकुमार॥कमलने नतनुप्रभाअपार॥३८॥सुमित्राजूसयुगलसुतजाए॥ पूर्णइं दुसमवदनसुहाए ॥ ताहिंसमेराजाहरपाना ॥ ग्रामहजारद एदिजदाना॥३९॥हेमरतसुरभीपटघने॥ ब्राह्मणपाइअसी साभने ॥ विद्याज्ञानसंपूरणभरे॥ जाहिविषेमुनिरमणसुकरे ॥४०॥ तांकोगुरुपुनरामउचारा॥रमणरूपतेरामनिहारा॥भर तभरणतेकीयोउचारा॥ लक्ष्मणसुभलक्षणआधारा॥४१॥श त्रुहननशत्रूघनभाने ॥ याविधगुरसभनामवखाने ॥ लक्ष्मण रामचंद्रकेसंगी॥शत्रूघनभयेभरतप्रसंगी ॥ ४२ ॥ पायसअं शनकेअनुसारी ॥ इंद्दीभूमिफिरैवहचारी ॥ लक्ष्मणसंगमिले श्रीरामा ॥ लीलाबालकरेंसुखधामा ॥ ४३ ॥ ॥ सवैया॥ मातपितासुनकाकलवैनसुपेखमुखांबुजकोविगसाए ॥ भा लविषैमुकतामणिहेमसुपीपलपातअनुपसुहाए ॥ कंठविषे मणिव्रातधरेत्रिककोनखताहिसुबीचजराए ॥ कांचनकुडल कानलसैंरतनागणसुंदरपूरलगाये ॥ ४४ ॥ ॥ चौपाई ॥ सब्दाइमानमणिपरमउदारे॥पदभूपणतिहसंगसवारे॥कटी सूत्रअंगदभुजधरे ॥ अल्पदशनहसतमुखपिरे ॥ ४५ ॥ इंद्र नीलमणिदेहसुहाए ॥ अंङणरिंङमानविकसाए॥आगेवाल कपाछेरामा ॥ देखकुशल्यादशरथधामा ॥ ४६ ॥ परमअनं

दभयेमनमाही ॥ तांसुखकीगिनतीकछुनाही ॥दशरथभोज
नकरेंसुजवही ॥ रामबुलायेभूपतितवही ॥ ४७ ॥ लीलास
क्तभएसुखधामा ॥ नाहिबुलाएआवहिंरामा ॥ आनकुश
ल्याभूपवखानी ॥ बहुतभलीकौशल्यामानी ॥ ४८ ॥ हसत
मावदौरीरघुनाथ ॥आएनाजननीहरिहाथ ॥ महायत्नकरयो
गीध्यावें ॥ वह्वैकैसेकरभीतरआवें ॥ ४९ ॥ हसतनरायण
आपेआए ॥ करदमदक्षणपाणिलगाए॥ किंचितग्रासगहे
मुखमाहि ॥ दौरिचलेलीलामनमाहि ॥ ५० ॥ याविधपरात्नं
दश्रीरामा ॥ सभजीदनकेसुखकोधामा॥ मायावात्लशरीर
हलीनो ॥ जननीतातपरमसुखदीनो ॥ ५१ ॥ मासमासकौ
शल्यामाता॥ वापनबहुविधिकरेसुताता॥ धरसुतभूपनबहु
तलडावे॥ बहुविधिमंगलसोमूखगावे ॥५२॥ मोदकऔरअ
पूपबनाए ॥करणशशकुलीअतिसुखदाए ॥ करणपूरपुनवि
विधप्रकारे॥वरपत्रिधअतिमंगलधारे॥ ५३ ॥ ग्रहकार्यसभ
तांहीत्यागे॥ रामजवैबहुखेलनलागे॥ मातसमीपगएइकवा
रा॥ भोजनदेरघुनाथउचारा ॥ ५४ ॥ कारजसकतताहिक्षि
नहोई॥ सुन्योनरामबखान्योजोई ॥ क्रोधभरेकरदंडउठाए॥
छीकेभांजनधरतगिराए ॥ ५५ ॥ लक्ष्मणकोनवनीतसुद
यो ॥ भरतबहुरशत्रूघनलयो ॥ दूधदहींबहुभांतिखवाए ॥
सूदतवैतिनमातबताए ॥ दौरीमातसुमुखविकसाने ॥ तांहि
विलोकतसर्वपलाने ॥ पदपदहुटीकुशल्याजवही ॥ भएनरा
यणलघुगततवही॥ ५६ ॥ रघुनाथहकरभीतरगहे॥ किंचित

भामनिवेनसुकहे॥ बालकभावसुअंगीकरे॥ मंदमंदरोवेंह रिखरे॥ ५७॥ तबमातासबकंठलगाये॥ शिरचूंमेबहुभांति लडाए॥ बालकतेपुनभएकुमारे॥ वसिष्टसभनसुजनऊंडारे ॥ ५८॥ सर्वसुविद्यामाहिविशारद॥ धनुरवेदमैपरमसुसा रद॥ लीलाकरहरिनरतनुधारे॥ सभशास्त्रनकेअर्थविचारे ॥६९॥ लक्ष्मणरघुवरकेअनुसारी॥ सेव्यजानसेवाउरधारी॥ शत्रुघ्नभरतकेपरमपियारे॥ सेवकभाईसुशीलउदारे॥६०॥ ॥सवैया॥ ॥रामलयेकरचांपमहांबलतूणिकसेकटिबालसु धारे॥ संगलएलघुवीरतुरंगमरूढमहावनमाहिसिधारे॥ खे लशिकारंनहांबलधारसोव्याघरसिंहघनेचुनिमारे॥ आननिवे दकरेंवनबातनरामदोऊकरतातजुहारे॥६१॥ उठप्रातसमेकर मज्जनजूपितमातनकोअभिवंदनधारे॥ पुरकारयफेरकरेंसग लेअतिनम्मरभावसुराममुरारे॥ मिलिबांधवसंगकरेंपुनभो जनसंगमुनीश्वरग्रंथविचारे॥ मुनिपुंगवतेसुनआपभलेलघु भ्रातनमैपुनआपउचारे॥६२॥ ॥तोमरछंद॥ ॥धररामजी अवतार॥ इहभांनकारजसार॥ नरलोकमैसुखकार॥ परिणाम हीननिहार॥६३॥ ॥दोहा॥ ॥सनकादिकजांकोभजेमुनिजन औमुखत्वार॥ वैपरमातमलोकमैभएमनुजअवतार॥६४॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेच तुर्थोऽध्यायः॥ ४॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥सवैया॥ एकसमेमुनिकौशिकजेपुरऔधविपेवनतेचलआए॥ जानइ हेमनमध्यमुनीपरमातमभूपतिमंदरजाए॥ पावकंकेसमतेज

लसेपिखतांअजनंदनजूहरपाए॥आसनतेउठलेनचलेगुरुसं
गवसिष्टसुऔरबुलाए॥१॥पूजनकैविधसोंतिनकोंमुनिपुंग
वसोंनृपवैनउचारे॥जोरदुऊकरआजकृतारथधन्यभएमुनि
भागहमारे॥संपतिआइवसेतिनकेघरजांघरमेतुमरेपगधारे॥
जांहितआवनसाचकहोवहकाजकरोंहमसेवकथारे॥२॥सुन
भूपतिवैनप्रसंन्नभयेमुनिआपमहामतिवैनअलाए॥जवया
गलगोंकरनेवनमैसुरपिन्नकेहितपुंन्नसमाए॥नृपदैंतविध्वं
शकरैंतवहीतहश्रोणितकीवरपावरपाए॥तिननाममरीचसु
वाहुकहेंपुनऔरघनेतिनसंगिलवाए॥३॥ममकाजइहैन्रपतां
वधकेहितरामदिजेअहिनाथसुसंगे॥इहकाजकरेंकलिआण
तुमेंनृपहोवहगीपुनवंशपतंगे॥मिलसंगवसिष्टविचारकरोनृप
रामकहोमुनिकौसिकमंगे॥नृपजौरुचिहोइतुदेहहमैममयाग
करायकरेअरिजंगें॥४॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥
भूपतिकोंचिंताभईगुरुइकांतढिगजाइ॥पूछनलाग्योजोरकर
वहुविधिपादमनाइ॥५॥ ॥दशरथउवाच॥ ॥सवैया॥गु
रुकौनउपायकरोंअवमैमुनिकौसकरामसुलेवनआए॥नहि
रामविछोहसहारसकोंमुनिवर्षहजारगयेसुतपाए॥सुतचार
सुरेश्वरतुल्यभयेअतिरामविपैमनमोहलगाए॥अजनंदनतां
क्षिणप्राणतजेरघुनंदनजोमुनिकेसंगजाए॥६॥गीयामाल
तीछंद॥मुनिकौनदेवोंरामजीवहिश्रापमोहिलगाइहै॥मम
संगसूरयवंशकोक्षिणएकमाहिजलाइहै॥किहभांतमेकल्या
णहोवेसोउपावभाषिए॥जिहभांतझूठनमैछुहेगुरुसत्यमेरो

राखिए॥७॥ ॥वसिष्टउवाच॥ ॥सवैया॥ सुनराजनबात वखानतगोपनऔरनपैइहबातवतैये॥ सुतमानुपनाहिपिखो मनमैपरमातमरामसनातनहैये॥ अवनीबहुभारनिवारनकी बिनतीचतुराननकीइनपैये ॥ भगवानजयेमहिपीतुमरीसुन भूपतिशंकनरंचकरैये॥८॥ तूंचतुराननकोसुतपूरवकश्यपना मकहैंसुरसारे॥ आदितिदेवनकीजननीयहराघवमातमहाय शधारे ॥ तांहिसमेबहुकालकरीतपसापुनपूजननीतमुरारे ॥ ध्यानसदाहरिकोमनमैविपसेविपियासभदूरनिवारे॥९॥भग वानप्रसन्नभएतवहीवरमांगइहैमुखमाहिउचारे॥तबतेमुखते इहभांतकह्योहरितूंसुतहोहुसुआपहमारे॥ सुनयाविनतीभग वानतबैसुतहोवहिंगेहमआइतुमारे॥अबरामवहीतवपूतभए मुरसेजिनदानवकोटिपछारे॥१०॥ ॥गीयामालतीछंद॥ रामकोअनुयाईजोउरशेपलक्ष्मणजानीए ॥ भरतऔशत्रुघ्न कोपुनशंखचक्रसुमानिये॥ योगमायाजानिकीउपजीसुजन कविदेहके॥मुनिरामव्याहनआइओमिसयागवचनसनेहके॥ ॥११॥ यहगोप्यवातसुधारमननृपऔरपैनहिभापिये ॥ क रप्रीतपूजसुकौशिकेसुतरामदैसतराखिये ॥ तिनसंगदीजेल क्ष्मणेकल्याणहोवेगीसही ॥ इहभांतभूपतिदशरथेपुनिगुरुव सिष्टहजोकही॥१२॥ ॥चौपई॥ ॥तबभूपतिकृत्तारथमा न्यो ॥ मनआनंदबदनविगशान्यो ॥ रामलखननृपआपवु लाए ॥ अतिआदरकरकंठलगाए॥१३॥ ॥सवैया॥ ॥सि रचूंमदुहूंसुतवारनकोमुनिकौशिककोनृपआपमिलाए ॥तव

पाइमहाबलवीरनकोभगवानकृपीअतिशैहरपाए॥ सुअसी संदईअजनंदनकोयुगवीरनकेकटितूणिकशाए॥ धरचापअसीपितवंदपदांबुजवीरवलीमुनिसंगसिधाए॥ १४॥ ॥शंकरछंद॥ ॥ कछुदूरदेसहिंजोगएपुरतेमुनीवरसोइ॥ वलाचातिदलाविद्यादईरामसुदोइ॥ देवताटानारचीतिहिंगहेयांजगकोइ॥ तिहक्षुधाऔपुनक्षामतादिकदुखकदापिनहोइ॥ १५॥ तवपारगंगानेगएमुनिसंगलक्ष्मणराम॥ तहंघोरविपननिहारियोजगताडिकावननाम॥ मुनिरामकोतवभाषियोइहराक्षसीइकआहि॥ कामरूपीताडकाइहनामभाष्योताहि॥ १६॥ ॥नराजछंद॥ ॥ समस्तलोककंटकाहनोसुरामतांअवै॥ तथेतिरामचापलैगुणंअरोपयोतवै॥ टणंतकारचापलैवनंसमस्तपूरयो॥ सुनंतताडिकातवैकरैसुनैनक्रूरयो॥ १७॥ सुघोरकामरूपणीप्रकोपघोरमैभरी॥ परीसुरामदौरकैसुअंगअंगमैजरी॥ सुएकबानरामकोसुताहिकोलग्योजवै॥ गिरीसघोरकाननेसुप्राणितंवमैतवै॥ १८॥ ततोसुसुंदरीभईसुयक्षणीअभूपिता॥ कृपासुरामचंद्रकीछुटीसुश्रापदूपिता॥ प्रणामरामपादकैकरीसुतांप्रदक्षणा॥ विधूयपापपुंजकोगईदिवंविचक्षणा॥ १९॥ प्रसन्नतोभएमुनीसुरामकंठलाइयो॥ सुचूमराममस्तकंहुलासचित्तआइयो॥ समस्तअस्त्रजालजोसुरामकोवताइयो॥ सुगोप्यमंत्रपुंजकोसुकानमैसुनाइयो॥ ॥ २०॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेवालकांडेपंचमोऽध्यायः॥ ५॥ श्रीमहादेवउवाच॥ ॥सवैया॥

रतिकेपतिकाननरातिवसेपरभातभएतहितेसुसिधाए ॥ सिध
चारणसेवतजोसिधआश्रमतांहिविषेकरुणाकरआए॥मुनि
कौशिकतांमुनिमंडलकोअजनंदनकेसुतरामजनाए ॥ तवपू
जनकैसुगभ्रातनकोमुनिमंडलजूबहुभांतिमनाए॥१॥तवरा
मकह्योमुनिकौशिककोअवयागअरंभकरोवलधारे॥ वहरा
क्षसनीचसुआंहिंकहांमुनिदेहिदयाकरमोहिदिखारे॥ सुनिक
इहवातप्रसंन्नभएमुनिहोइतथायहवैनउचारे॥तवयागअरंभ
कस्योमुनिमंडलवैठिभलेमषभूमिसवारे॥ २॥ मुनिरित्वजतां
मषमांहिंकरेगनकेसगलेइकवीसहजारे ॥ सुकुलीनवडेभुवि
मंडलमैसभवेदनकोजुलह्योजिहसारे ॥ दिनमध्यभयेवहरा
क्षसजेअतिसैंविकरालसुरामनिहारे ॥ सुमरीचसुबाहुधरेक
रहाडसुश्रोणितकीवरषावरषारे॥ ३॥ रामसुधीकरचापलयो
युगवाणभलेतिनमांहिलगाए॥ कांनहिंलौतवपैंचकमानसुरा
मदुऊसरतांहिचलाए ॥ एकमरीचभ्रमायभलेशतयोजनवी
चसमुद्रगिराए ॥ दूसरपावकवाणतवैसुसुबाहुवलीक्षिनमा
हिजलाए ॥ ४ ॥ अपरेअहिनाथकमानलिहाथसभैक्षिणमा
हिसुमारगिराए ॥ तहितांहिसमेयुगवीरनकैसिरदेवनजूबहु
फूलवसाए ॥ सभचारणसिद्धसराहकरेंअरदेवनजूनिजढुंद
भिवाए ॥ करयागमुनीरघुवीरनपूजसुअंकविप्रेकरप्रेमवढा
ए ५॥ पक्कफलादिकभोजनदेसुतगाधतवेइहवैनउचारे॥राम
सुनोजगनाथअवैसिधिदाइकजूइहवाक्यहमारे॥आजभयो
मखपूरणमेबलतेभुजदंडसुकाजसवारे॥ वासकरेंकछुकालइ

ह्यांहमसंगअलेपदपावनथारे॥६॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥देवसमीपपदांबुजतेहमवासकरेंकरणावहुधारी ॥ रामवखान सुयोंमुखतेतहंवासकीयोमुनिसंगमुरारी॥ वासकरेदिनतीन तहांमुनिनीतपुराणकथाविसतारी॥ कौशकरामतुरीदिनमेढिगवैठअपूरववातउचारी॥७॥ ॥चित्रपदाछंद॥ ॥राममहांमखदेपनकेहितजावहगेंमिथलापतिदेश ॥ रामविदेहपुरेइक चांपसुआपनियासधरेसुमहेश ॥ देखहुचांपमहांभुजरांमसुपूजहिंगेतुमकोमिथलेश॥ वाक्यवखानचलेमुनिपुंगवसंगचलेयुगपूतनरेश॥८॥ गंगसमीपगएमुनिपुंगवरामपिखेऋपिगोतमठांम ॥ नारितहांऋपिगोतमकीनितवासकरेतपकोनिजधाम॥ फूलफलादिकपादपमेवहुपूररहेनिवडीअतिछाम॥ नाहिविहंगमनामृगवाकछुनापिखियेतहिजीवननाम॥ ९॥ वारिजनैनसुरामपुछेकिहआश्रममोहकहोमुनिपाल ॥ फूलफलादिकपूररहेकिहठोरगईइहजंतनमाल ॥ चित्तप्रसन्नभयेहमरेयहआश्रमपेखसुपुन्यविशाल ॥ राघववैनसुनेमुनिकौशिकआपकहेपुनवाक्यरसाल॥१०॥ विश्वामित्रउवाच॥ सवैया॥ ॥ सुनरामवृतांतसुपूरवलोइकगोतमनामहुतोऋपिभारी॥ वहुलोकप्रसिद्धमहाधरमानमतांहरिकीतपसाविसतारी॥ पिखतांतपसासुप्रसन्नभएऋपिसेवनकीचतुराननधारी॥ अहल्यासुनामकहेंजिहंकोपुनतांहिदईदुहितामुखचारी॥ ॥११॥ मिलितांपतनीऋपिगोतमजोइहवासकियोतपदीरघधारे॥ ऋपिकीपतनीउपभोगनकोउरऔसरनीतसुरेशनिहारे

मुनिएकसमैघरतेनिकसेसुरनाथतवैमुनिभेपसवारे॥ वहतां उपभोगचलेजवहीमुनिताक्षिणमैघरमैपगधारे ॥ १२॥ पिखतांमुनिपुंगवकोपभरेसुरनाइककोइहवाक्यउचारे ॥ सुननीचमहाअपकारकरेतुमकौनअहोममरूपसवारे ॥ मुखसाचकहोनहिभस्मकरोंकहिजाहुचलेअतिसैंअधमारे ॥ मुनिपाहितवैसुरनाथकह्योहमहैंसभदेवनकेसिरदारे ॥ १३ ॥ मुनिदासमनोजसुमोहिपिखोहमकश्यपकेग्रहनीचजए ॥ मुहिनीचमनोरथहोंहिंसदाअतिनीचकुकाजसुमोहकए ॥ लखदेवपतीद्रिगलालकरेमुनिताक्षिणमैअतिकोपभए॥ भगलंपटहोहहजारभगातवयोंमुनिपुंगवश्रापदए ॥ १४॥ इहभांतपुरेंदरश्रापदएपुनपर्णकुटीमुनिवेगसुआए ॥ तहंकांपतिअंजुलिभीतमहामुनिहेरअहिल्यासुवैनअलाए॥ द्रुपटदुरचाररतेअपकारणिहोहशिलामुनिश्रापलगाए ॥ दिनरातअहारविनातपदारुणआतपतेतनुनीततपाए॥१५॥ ॥दोहा॥ ॥वातवरपतनमैसहोध्यावोईश्वरनीत ॥ रामकमलदलनैनजोधाररिदेइकचीत ॥ १६ ॥ वहुरअहिल्याजोरकरपूछेश्रापसुअंत ॥ पिखप्रसन्नगोतमतिनेअंतवपानेकंत ॥१७॥ ॥गोतम उवाच॥ ॥सवैया॥ ॥ अजनंदनकोसुतहोइजवैहरिरामवलीभवभूतलआवे ॥ तवहोइगोश्रापसुअंतसुनोजवरामतुमेनिजपादछुहावे ॥सभजंतविहीनसुआश्रममेयहहोवहिगोमुनितांहिवतावे॥ विधियाहिहजारवितेवरषासमुदाइघनोजुगनोनहिजावे ॥ १८॥ तवसानुजरामसुआवहिंगेपिखआश्र

मपुन्यमंहाविगसावें॥पिखरामशिलामम आस्रममैजवपाव
नवैंपदकंजछुहावें॥ तवपापमिटेसगलोतुमरोममस्रापकोअं
तसुतांक्षिणपावें॥ पुनपूजप्रणांमप्रदक्षणगाइसुरांमवलीपि
खमोपहिआवें॥१९॥ ॥शंकरछंद॥ ॥छुटश्रापतेसुनभामि
नीपूरवजिमेममसेव॥करेंगीमिलसंगमेरयोंकत्योमुनिदेव॥
वहआपहिमवंतपरवतेंक्रपिगयोहोइउदास॥ यहिआहिआ
श्रमतांहिकोजोपूछयोमुहिपास॥२०॥ लैतांदिनासुअहल्या
शिलरूपयावनमाहि ॥ अद्रिश्यभूतनक्केगईनहिहरहैकोतां
हि॥रजतेपदांबुजपावनीउरचाहतीसुनराम॥करपादकंजस
परसकैरघुनाथपूरणकाम॥२१॥वहिहैविधाताकीसुतामुनि
भारयासुनराम ॥ इमभापरामहिहाथगहिंमुनिवैदिपावैठां
म॥ जिहठांअहल्याथीशिलातपसावडीतनुधार॥ छुहाइरा
मतपोधनापदकंजकिलविपहार॥२२॥रामतापरणांमकैमै
रामकीनउचार॥तनुपीतरामपटंवराभुजचारलीनीधार॥शं
खचक्रधरगदाकरधारकमलविशाल॥धनुरवाणविराजईपु
नभ्रातलक्ष्मणनाल॥२३॥भ्रगुलताकोअनिचिह्नसुंदरवक्षश्री
रघुवीर॥मंदहास्यसुकंजनैननानासिकामुखकीर॥नीलमणिसं
काशऔदशदिशाद्योतीदेह॥निहाररामशरीरकोसभमाधुरी
कोगेह॥२४॥ ॥चौपाई॥ ॥रामरमापतिताहिपछाने॥भ
ईप्रसंन्ननैनविगसाने॥ गौतमकोतवबचनचितारा॥ रामन
रायणउरमैधारा॥ २५॥ अरघादिकविधिपूजाकरी॥ हरप
नैनजलआयोखरी॥बहुरिकरीतिनदंडप्रणामा॥हेरेकंजनैन

श्रीरामा ॥ २६ ॥ ॥दोहा॥ ॥ उठीसुबहुरअहिल्यापुलकित सभअंगहोइ ॥ रामवडाईताकरीगदगदवाणीसोइ ॥ २७ ॥ ॥ आहिल्याउवाच ॥ ॥सवैया ॥ ॥आजकृतारथराम अहोत्रलितेपदपंकजकोरजपाए ॥ शंकरऔचतुराननलौजिहंढूडननीतसमाधलगाए ॥ आहिविचित्रततेचरयानरकोतनुयाजगमाहिवनाए ॥ मोहतहोसभलोकनकोनहितोहिविहुंवनकोजगपाए ॥२८॥ ॥नराजछंद॥ ॥नपादआदितेअहेंचलोनिरंतरंसही ॥ अनंदकंदपूरणंअमाइमाइतेनही ॥ भगीरथीपदारविंदतेरजंसुहावनी ॥ विरंचशंभूआदिदेकरोसमस्तपावनी ॥ २९॥ प्रत्यक्षअक्षगोचरायदासुराममेभए॥ वखाननाथकोपुरासुकौनपुंनमैकए ॥ नरावतारजोहरीसुरामनामकोधरे ॥ सुश्यामसुंदरीमहाकुदंडवाणजांकरे॥ ३० ॥ विशालनैनकंजसेभजोंसुतांनिरंतरं ॥ नऔरकोभजोंकदीपरेनरंचअंतरं ॥ श्रुतीविमृग्यहैसदासुरेणपादकंजको ॥ सुजाहिंनाभिकंजतेभयोविरंचरंजको ॥३१ ॥ सुजाहिंनामसारकोरसीपुरारिशंकरा ॥ भजोंसुरामचंद्रकोरिदसदानिरंतरा ॥ सुजांवतारकीकथाविरंचिलोकगायहें ॥ सुनारदंविरंचिशंभुप्रेमकेंसुनायहें ॥ ३२ ॥ अनंदनीरनैनकैसुसिंचतीकुचागरा ॥ वगीश्वरीप्रगाइहैगुणंसुजांइकागरा ॥ शरंनताहिरामकीअहिल्लयासदागहे ॥ पुराणऔपरातमासुवेदवाक्यजांकहे ॥ ३३ ॥ स्वयंप्रकाशअंतलाअनंतवेदगाइहै ॥ धरीसुमानवीतनूस्वमाययासुहाइहै ॥ कृपासमस्तऊपरेशरंननाथतोरिया ॥ कटीसु

आपश्रिपलानिवांहलाजमोरिया ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ निखिलविश्वउपजावेजोई ॥ पालवहुरसंहारेसोई ॥ मा
यागुणविवितसुखधामा ॥ विश्वविरंचिविष्णुधरनामा ॥
॥ ३५ ॥ आहिसुतंतरपूरणरूपा ॥ नमोनमोपदकंजअनूपा ॥
जोपदपंकजश्रीसुलडाए ॥ धरवक्षस्थलप्रेमजनाए ॥ ३६ ॥
पूरवजांहित्रिलोकीसारी ॥ एकपादकरमिनीमुरारी ॥ मुनिश्वर
जोपदध्यावेंनीत ॥ तजअभीमानइकागरचीत ॥ ३७ ॥ रामतु
हींजगआदिमुरारे ॥ जगतरूपपुनिजगतअधारे ॥ सभभूतन
मैतुमपरकासौं ॥ विनविवेकनहिलोकनभासौं ॥ ३८ ॥ हरिॐ
कारवाच्यतूंआहि ॥ वाणीकोपुनगोचरनाहि ॥ वाचकवाच्यभे
दइहजोई ॥ तुमैजगतमैऔरनकोई ॥ ३९ ॥ कारयकारणज
गतमझार ॥ फलसाधनकरतत्वविकार ॥ तुमसमस्तनहितु
मबिनआन ॥ निजमायाकरहोवोभान ॥ ४० ॥ तवमायाक
रजामतिहाने ॥ तेनहितत्वतुमाराजाने ॥ मानुपतवमानेमति
मंदा ॥ तुमपरमेश्वरएकअनंदा ॥ ४१ ॥ तुमसभअंतरबाह
रदेव ॥ नभजिउअमलअनंतअभेव ॥ अचलअसंगनित्य
अतिशुद्धा ॥ सदाअनासीसदाप्रबुद्धाधा ॥ ४२ ॥ जोपितआ
ग्यामैअतिमूढा ॥ तत्वतुमाराअतिशयगूढा ॥ किहिविधिनाथ
पछानोंतांहि ॥ मनबाणीकोगोचरनांहि ॥ ४३ ॥ तांतेतोमै
बुद्धिलगाइ ॥ बारंबारनमोतेपाइ ॥ जहांजहांजावोंमैदेव ॥
तुमरीरहेनिरंतरशेव ॥ ४४ ॥ तेरेपादकंजजगजोइ ॥ तांकी
भक्तिसदाममहोइ ॥ नमोनमोहेपुरुषअध्यक्ष ॥ नमोनमोभक्त

तकरक्ष ॥ ४५ ॥ हृषीकेशतोकोंपरणाम ॥ नमस्कारनारायण
नाम ॥ भवभयनिखिलकरेजगनाश ॥ कोटिभानुसमआहिप्र
काश ॥ ४६ ॥ करधृतशरअरुचापउदारा ॥ कालमेघसमप्रभा
अपारा ॥ कनकरुचिरअंवरतनधरे ॥ कुंडलकानरत्नअतिजरे
॥ ४७ ॥ कमलनैनसानुजश्रीराम ॥ हैसभऊपरसभसुखधाम ॥
यौंउस्तुतिकरजोरेहाथ ॥ आगेखरेसुश्रीरघुनाथ ॥ ४८ ॥ करप्र
णामपरिदक्षणदई ॥ हरिआयसगहिपतिपहिगई ॥ गौतमसंग
मिलीपुनजाइ ॥ श्रीरघुवीरपादरजपाइ ॥ ४९ ॥ अहल्याकृत
अस्तोत्रजोई ॥ भक्तिसमेतपठैतिहंकोई ॥ जीवतनिखलसुपा
पमिटावै ॥ अंतसमेपरब्रह्मसुपावे ॥ ५० ॥ पुत्रअर्थजोपठैनिरं
तर ॥ श्रीरघुनाथधारउरअंतर ॥ यद्यपिवंध्यासाजगहोइ ॥ वरख
मांहिसुतपावेसोइ ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पावेंसर्वसुकामना
जेजेचांहेंधीर ॥ होइप्रसंन्नसुजगतमैसीतापतिरघुवीर ॥ ५२ ॥
॥ नराजछंद ॥ ॥ हनेसुब्राह्मणंहठीगुरोसुनारिसेवई ॥ महाकु
रीतरीतकैधनंचुराइलेवई ॥ सुमातभ्रातहिंसकोकुभोगएक
आतरो ॥ कत्थाजुयाहिभांतिकोजगत्तमैकुपातरो ॥ ५३ ॥ पढै
सुतोतरंजिसोसुरामचित्तधारकै ॥ प्रपाइसोइमोक्षकोसमस्त
पापडारकै ॥ अचारयुक्तजोनरोपढैसुतोतरंयथा ॥ लहउदार
मोक्षकोगुलावेसिंहकोकथा ॥ ५४ ॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरा
मायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेषष्टमोऽध्यायः ॥ ६ ॥
॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ रामलखनदोनो
तिहिखरे ॥ विश्वामित्रसुवैनउचरे ॥ मिथिलानामजनकरज

धानी॥तेहांचलेंइमसुनीवखानी॥१॥प्रथमेक्रतुवरदेखोराम॥ पाछेजाहुअयोध्याधाम ॥ राममुनीपुनलक्ष्मणभ्राता॥ शोभेजिउघनशविबुधताता॥ २॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इममुनिभाप सुजोचलेगंगाउतरनपार ॥ देवीनावकतांसमेरामहिंकह्योपुकार॥३ ॥ ॥ नावकउवाच ॥ सवैया॥ ॥ दूररहोरघुवीर खरेममनावननाहिसुपादछुहावो॥ दारुनमैपुनशैलनमैकछु अंतरहोइसुनाथबतावो॥ मानुपचूरननावलगाइसुदीनदयालनकाजगवावो॥राजकुमारपपारलिवोंपदतौममनावनकी ढिगआवो॥४॥इहभांतउचारपखारदुऊपदनावचढाइकेपार उतारे॥ रघुनाथमहांमुनिभ्रातभलेमिथिलापुरकीपुनओरसिधारे॥पुरकीढिगआयखरेजबहीमिथलेशकिदूतनवाक्यउचारे ॥ मुनिकौशिकपावकतेजलसेनृपआजुकरेपुरपावनथारे॥ ॥५॥सुनिकैयहवातप्रसंन्नभएमिथलेशसुपूजनद्रव्यमंगाए॥ सुपरोहतसंगलएतबहीमुनिपुंगवपूजनकेहितआएं ॥ करदंड प्रणामसुपूजनकैकरजोरदुऊइहबैनअलाए॥ पिखभ्रातदुऊ सुमनोदिशिकेतमवारनकोविधिसूरसुहाए॥ ६॥ ॥ जनक उवाच॥ ॥सवैया॥ ॥किनकेयहपूतसुपूतदुऊममभासतदेवनपूतसमाने ॥ नरऔरनरायणकेसमहैंइनपेखनतेमनमेविगसाने ॥सुनकैयहवातप्रसंन्नभएमिथिलापतिकोमुनिबैनवपाने॥अजनंदनकेसुतभ्रातदुऊमखपालनकेहितमैनृपआने॥ ॥७॥ शरएकहनीपथिताडकर।मसुवाक्यजबैनृपमोहिउचारे॥ ममआश्रमआइसुयागविनाशकसंगसुबाहुसुराक्षसमारे ॥

पुनऔरमरीचमहाबलिजोइकबानउडाइसुसागरडारे॥ तटगं
गसुआश्रमगौतमकेइनगौतमनारिकेश्रापनिवारे॥८॥शिल
रूपहुतीऋपिगोतमकीपतनीतिहिंकोपदकंजछुहाए॥ इनमा
नुपरूपकरीक्षिनमैंऋपिश्रापमहांवलिराममिटाए॥ पिखराम
सुताहिप्रणामकरीचलिसापदवंदतराममनाए॥ नृपतेग्रहमै
रविवंशमणीसुनचापमहेश्वरदेखनआए॥९॥ पूजनराजसमू
हसभैनउठाइसकैंसुनकेमुसकाने॥ राजनकौतकदेखहिभ्रात
महेश्वरचापदिखावहुआने॥ फेरसुकौसलजांहिचलेपितपेख
नकौवहुतेउमगाने॥जोमुनिरीतिकहीनिनकीनृपतोवहपूजन
योग्यपछानें॥ १०॥ विधिसौंतिनपूजनभूपकीयोपुनमंत्रिन
सोंतिनमंत्रसुनाए॥ शिवचापलिआवहुजाइअबेनृपधीम
निवैकरवेगपठाए॥ आपतवैमिथिलापतिजूमुनिकौशिकको
इहवैनअलाए॥ मुनिरामजवैशिवचापउठाइसुकोटिनमैगु
णदेइचढाए॥ ११॥ तवनामसियाममजोदुहितामुनिराम
हिहाथधरोंसुवही॥ मुनिकौशिकमानसुवातभलीहसरामकी
ओरसुवातकही॥ नृपचापदिखावहुरामअग्रेबलवंतगुणीक
छुढीलनहीं॥ इहभांतकहेमुनिपुंगवजोतवचापलएजनआए
तही॥ १२॥ पंचहजारजुआनबलीवहुचापउठाइसुपीडतआ
ए॥ पाटमणीवहुभांतिलसेपुनघंटकसोतिनसंगसुहाए॥ राम
समीपसुआनधरशिवचापइहैनृपरामदिखाए॥ देखप्रसंन्नसु
रामभयेकसपीतपटंवरतांकटलाए॥ १३॥ वामकरेधनराम
लयोहसतोलनताधनकौहरिकीनो॥ रामनिवाईसुकोटिदुऊह

सतांहिकवींचतनैगुणदीनो ॥ दक्षणपाणिसुअंचतजोरघुवीर कऱ्योतवहीधनुछीनो॥चापविभंजनकीधुनकैतिनपूरदएसग लेपुरतीनो ॥ १४॥ भूमिअकाशरसातललौसुनितांधुनिकोस गलेविसमाए ॥ देवसराहकरेंनभमैकरफूलनकीवरपावरपा ए ॥ रीझकिअप्सरनाचकरेंअरदेवनकेकुलदुंदभिवाए ॥ पेख दुटूकपरेहरचापसुरांमतवेनृपकंठलगाए॥ १५ ॥ ॥ कवित अंतहपुररानीसीयमातविसमानीयहईशकीकमानीलघुबाल तोरडारीहै॥जानकीसुहेममालदक्षकरलईबालभालहेममुक्त जालदामचमकारीहै ॥ हेमहीसुगातहेमहेमहीकेकानपातहेम जलजातकीप्रफुल्लकंजवारीहै॥ मुक्तहारगरेपाइनेवरासुसब्द करेंपाटकेदुकूलधरेमंदमुसकारीहै॥ १६ ॥ ॥ सवैया ॥मा लदईहसरामगलेपिखराघवरूपसुसीविगसानी॥बैठिगवाक्ष सुरामनिहारप्रसंन्नभईमिथिलापतिरानी॥ कौशिककोमिथ लेशतबैअभिवंदनकैइकबातबपानी॥ आजसितावसुकाज बनेलिखपत्रपठोअजकीरजधानी॥१७॥बेगकुमारसुसंगल एअजनंदनजूमिथिलापुरआवें ॥ संगसुदारनआइइहांसुकु मारनकेइहब्याहकरावें ॥ तौमुनिदूतपठेनबहीपुनिऔरकहीनृ पढीलनलावें॥ दूतकहींअजनंदनकोमुनिकौशिकतोहिसुवेग बुलावें ॥ १८ ॥ ॥कवित॥ ॥ दूतवेगगएदौरजाइखरेभू पपौरकौररामचंद्रकीअनंदबातगाईहै ॥ राइसुबुलाइकेबैठा इपासदूतपूतरामचंद्रकेरीभूपरीतीसुनपाईहै॥ हीयेंहरपाइभूप मंत्रिनबुलाइरामचंद्रकीकहानीतांहिकानमैसुनाईहै॥चलेंमि

१ जल्दी

थलेशदेशदेखियेनरेशएसगाधकेसुपूतमोहिपत्रिकापठाईहै॥ ॥१९॥ ॥**चौपाई**॥ ॥अथसुचलेमिथलापतिगेहा॥जहंराजाहेजनकविदेहा ॥ गजवाजीरथऔरपदाती॥वेगचलेंवनरामवराती ॥ २०॥ वसिष्टगुरुभगवानहमारा ॥ आगेचलेंसंगनिजदारा ॥ अग्नीअग्नहोत्रकीजोई ॥ लवेंसंगमुनीवरसोई ॥ २१ ॥ राममातहैंयेपुनजेती ॥ संगवसिष्टचलेंसवतेती यावििधसभप्रस्थानाकीनो॥भूपतिआपवडोरथलीनो॥२२॥ सैनालईवडीतिनसाथ॥स्यंदनवैठचलेनरनाथा॥दशरथआयोपुरढिगजवही॥भूपविदेहसुनीगतितवही॥२३॥ आगेव्हैलेनेकोआयो ॥ प्रोहितसदानंदसंगल्यायो ॥ दशरथकोनृपपूजनकरयो ॥धंन्यभागयोंमुखोंउचरयो ॥ २४॥ रामलखनदोनोचलआए ॥ पदवंदेपितकंठलगाए ॥ दशरथमनमैअतिहरपाने ॥रामचंद्रप्रतिवैनवखाने ॥ २५ ॥ आजअनंदभयोसुतमेरे ॥ फुल्लकमलसमपिखमुखतेरे॥ मुनीअनुग्रहभयोउदारा॥शोभनभयोसुकाजहमारा॥२६॥याविधभापवहुरगरलाए॥शिरचूंमैअतिशयसुखपाए॥हरपभयोनृपवरकोऐसे ब्रह्मानंदमगनकोजैसे ॥ २७॥ वहुरजनकनृपग्रहलैगयो ॥ डेरातिनेकरावतभयो॥सुखशोभाजांग्रहकेमाहिं॥दारासहितवसेनरनाहि ॥ २८॥ दिनअरुलग्नजवैशुभआए॥जनकतवैग्रहिरामलिआए॥भाईमातपितारघुनाथ॥जनकलिआएसभकोसाथ॥ २९ ॥ रत्नथंभजामंदरलाए॥वहुतचंदोआतहातनाए ॥तोरणवांधवहुतप्रकारा॥सभशोभाजहवनीउदारा

॥ ३० ॥ हेमसूतमुक्तावलिजाली ॥ मंदरद्वारप्रभासुविशा
ली॥हेमजनेऊजिनकेगरे॥ब्राह्मणतहांवेदधुनिकरे॥ ३१ ॥श्र
लेपटंवरतनमैलाए॥निशककंठअतिभूपणपाए॥याविधिकी
तरणीसुखभरी ॥सुरतरुणीसमजाग्रहखरी॥ ३२ ॥भेरींदुंद
भिगीतउदारा॥ नृत्यहांइजहंवहुतप्रकारा॥ दिव्यरत्नजांमाहि
जराए ॥ स्वर्णपीठनृपजनकलिआए॥ ३४॥ ताऊपररघुनाथ
विठाए॥शोभाकछुवरनीनहींजाए॥उभेपासमुनिवैठेदोऊ॥गु
रुवसिष्टमुनकौशिकजोऊ॥ ३४॥सतानंदक्रमकरवैपूजै॥ मु
निवसिष्टपुनकौशिकदूजे ॥ अग्निस्थापनतवतहकरी॥ वेदीत
हावनाईखरी॥ ३५॥ ॥ कवित ॥आनीजानकीकुरंगनैनी
अल्कैंहैंभुजंगहेमरंगरत्नअंगभूपनसुहावनी॥ जनकदारसंग
औपखाररामपादकंजगंगनीरशीशधारकरीदेहपावनी ॥ जो
ईरामपादवारिशीशईशगंगधारब्रह्मऔमुनीशककुपापको
मिटावनी ॥ सोईजनकशीशधेरजानकीकालीयोकरेअक्षतउ
दकजोईरीतहैसुहावनी॥ ३६॥ जानकीसुरामदीनीपानीग्रह
रीतकीनामिलीनिधिनीरमीनीभाष्योहैनरेशजू॥ सीअरूपकी
अगारनैनपातपूतवारिगरेहेममुक्तहारसाखीहैदिनेशजू ॥ प्र
संन्नरांमहोइतोहिदईसीयसाइजोइपाणिकैविदारयोसुचाप
जौमहेशजू ॥ प्रसंन्नभूपभएसभेशोकदूरगएमानोविष्णुको
दईरमाविचारकैसुरेशजू॥ ३७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ और
सुकंन्याउरमिलनामा ॥ लक्ष्मणदई जनकसुखधामा ॥ श्रुति
कीरतिपुनमाडविजोई॥ भ्रातसुतासुभलक्षणदोई॥ ३८ ॥ ए

कभरतकोअरपनकीनी ॥ द्वितीयाशत्रुघ्नहिंनृपदीनी ॥ चारोभएसुदारसमेता ॥ शुभलक्षणकेचारनिकेता ॥ ३९ ॥ चारोरूपविराजेअैसे ॥ लोकपालभवभीतरजैसे ॥ मुनिवसिष्टपुनिकौशिकओरे ॥ मैथिलजनकदुऊकरजोरे ॥ ४० ॥ सुताउदंतभापयोसोइ ॥ नारदमुनिभाष्योथोजोइ ॥ मुनिलांगललैमैइकवारी ॥ यज्ञनिमित्तसुभूमिसवारी ॥ ४१ ॥ सीतामुखतेउपजी कंन्या ॥ जिहिसमानदूजीनहिअन्या ॥ ताहिदेखमुनिआनंदभयो ॥ पुत्रीभावताहिमैकयो ॥ प्रियनारीसोंअरपनकरी ॥ शरदचंद्रशोभामुखवरी ॥ मैइकंतबैठोइककाल ॥ तहंआएनारदमुनिघाल ॥ ४२ ॥ महतीवीणाकरेवजावें ॥ नारायणगुणमुखतेगावें ॥ मैपूजनतिंनकोतवकीनो ॥ आदरकरसुखआसनदीनो ॥ ४४ ॥ तवमोप्रतितिनवैनउचारे ॥ गोप्यवचनसुनभूपहमारे ॥ होवेजांकरतकल्यान ॥ मेरोवचनभलोउरमान ॥ ४५ ॥ हृषीकेशपरमातमजोई ॥ भक्तअनुग्रहकारकसोई ॥ वेउपजेरावणवधकाजा ॥ भापेरामनामसुनराजा ॥ ४६ ॥ मायाकरनरतनजिनधारे ॥ दाशरथीवहभएमुरारे ॥ चारप्रकारभएहरिसोई ॥ योगमायतिनकीपुनजोइ ॥ ४७ ॥ सीतानामभईघरतेरे ॥ राजविदेहसंभारसवेरे ॥ यांतेसीतारामहिदीजो ॥ यत्नवहुतयांभीतरकीजो ॥ ४८ ॥ कवित ॥ पूर्वनारिरामकीसुहेरभूपजानकीनआनकीपछानवातकहीतोहिकानमै ॥ योंवपानकैमुनीशदेवऋपिजागुर्नवजाइवीनकीधुनीगयोसुरेशथानमै ॥ लैनांदिनतेविचारसेअ

लक्ष्मीनिहारआहिविष्णुनारिजगकारणीसुमानमै ॥ कौन भांतज्ञानकीसुदेंउंराममानकीमहानकोनिहारचिंतवडीगलतानमै ॥ ४९ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ कार्यएकविचारणकरयो ॥ मेदादाग्रहशिवधनुधरयो ॥ त्रिपुरदैतकोदाहनकरयो ॥ धनुपअमानहमारेधरयो ॥ ५० ॥ धनुपविचारसुप्रणठहरायो योंविचारमेरेमनआयो ॥ सीतापाणिग्रहणकोकारण ॥ सभभूपनकोमानविदारण ॥ ५१ ॥ ताहिकृपाकरहेमुनिद्याल ॥ रामकमलदलनैनविशाल ॥ आएधनुपनिहारणकाज ॥ भयोमनोरथमेरोआज ॥ ५२ ॥ सफलजन्महोएअबमेरे ॥ रामसीयाइकआसनहेरे ॥ आसनरामसीयादुइऐसे ॥ दीप्तिमानसूरजजगजैसे ॥ ५३ ॥ तेपदअंबुजवारिसुधरता ॥ ब्रह्माभयोजगतकोकरता ॥ तेपदसलिलधारबलिराजा ॥ देवनकोहोयोअधिराजा ॥ ५४ ॥ अहिल्यातेपदकीरजपाए ॥ भरताकोतनश्रापमिटाए ॥ मेटतश्रापनवारलगाई ॥ रामकौनतुमतेअधिकाई ॥ ५५ ॥ तेपदपंकजरेणसनेहा ॥ करयोगेश्वरआनंदगेहा ॥ भवभयजिनेजिनेनिजकाला ॥ विचरेआनंदरूपविशाला ॥ ५६ ॥ तेभजनामतजेंसभशोका ॥ सुरगमाहिसुरपाएओका ॥ ऐसोचरणतुमारोगायो ॥ तांकीशरणजनकंअबआयो ॥ ५७ ॥ याविधिकीस्तुतीभूपतिकरी ॥ मूरतिरामसुउरमैधरी ॥ सौकरोडदीनारनराशी ॥ दशहजाररथहेमप्रकाशी ॥ ५८ ॥ दशहिलाखदीनोनृपवाजी ॥ दसहजारहेमगजवाजी ॥ एकलक्षपैदलवलधारी ॥ त्रैसैदासीदईसु

खकारी ॥ ५९ ॥ दिव्यपटंबरहारअपारा ॥ रत्नमणीमयप्रभाउदारा ॥ सीताकोयाविधिदयोराजा ॥ जनकविदेहमहाबलिराजा ॥ ६० ॥ वसिष्टादिकजिब्रह्मऋपिसारे ॥ भरतसौमित्रीरूपअपारे ॥राजादशरथलौथेजेते ॥ जनकविदेहसुपूजेतेते ॥६१॥ बहुरोजनकविदाइसुदीने ॥ चलेरघुतमआनंदभीने॥ सजलनैनसियकंठलगाई॥मातानेमिलदईविदाई ॥ ६२ ॥ सासुससुरकीकीजोसेवा ॥ रामनिरंतरमानोदेवा ॥ पतिव्रतकोउरअंतरगहो॥पुत्रीसुखसेतीतुमरहो ॥६३॥ ॥सवैया॥ रामचलेमिथिलापुरतेतबवाजनकीधुनिहोतअपारा ॥ भेरिमृदंगसुआनकतूरगरूरबडेकछुआहिनपारा ॥ देवपुरीघनभेरितुरीधुनिमंगलरूपभयोजगसारा ॥ भूमिअकाशकेवादमिलेधुनिपूररहीसुभयंकरभारा॥६४॥इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणउमामहेश्वरसंवादबालकांडेसप्तमोऽध्यायः॥७॥ ७॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥मिथिलातेजबरामजीगएसुयोजनतीन॥निमित्तसुभावीभीतकेहेरेनृपपरवीन॥१॥अनंगशेखरछंद॥ ॥प्रणामकेवशिष्टकोसुपूछयोनरेशदेवदेखियेनमित्तघोरचीतदेविचारिये ॥ वसिष्टतौविचारकेबखानयोमहीपकोअगामिभीतहोयगोनरेशजूनिहारिये ॥ अभीतफेरहोयगोसुवेगभूपमैकहोंअनंदसोंरहोसदानशंकचित्तडारिये॥मृगाप्रदक्षणाकरेंसुपेखताहिभूपतेशुभंसुसूचतेसदासुनैनकेनिहारिये॥ २ ॥ जबैवसिष्टयोंकह्योववातिघोरतोनिलासुनैनसर्वकेमुदेसुधूरधारयोंवही ॥ततोजगामअग्रतासुतेजराशि

केसमंनिहारपरशुरामकोप्रतापपुंजहेसही ॥ सुनीलमेघकेस मंजटाकलापसीसमैकुठारऔकमानपाणिकोपदाहनेगही ॥ मनोसुप्रेतराटकोपकूरद्रिष्टदंडलैहनेसमस्तलोककोकपासुरंच हूंनही॥३॥ ॥दोहा॥ ॥कारतवीरयजिहहनेकाटीभुजा हजार ॥ त्रिसप्तवारक्षत्रीहनेवैआएवलधार ॥ ४ ॥ दशरथ कोसनमुखगयोकाढकठनकुठार॥कालमृत्युआईमनोदशरथ डरउरभार॥५॥ ॥सवैया॥ ॥देखसुभूपडरेतिनकोसभभू लगईअरघादिकपूजा ॥ त्राहिसुत्राहिवकैमुखतेनृपकेमुखबो लनआवतदूजा॥दंडप्रणामसुभूपकरीतनकांपतपेखसुराममहू जा॥औरहनोतोहनोद्विजराजसुदानकरोमैमरामतनूजा॥६॥ इहभांतवपानतभूपतिकोसुअनादरकैकरधारकुठारा ॥ द्रिग कोपसुलालकरेअतसैतिनरामसुनिष्ठुरवाक्यउचारा ॥ तुमवा हुजनीचसुरामइहैममनामकहोतनमैकिमधारा ॥ यदिबाहु जहैकरयुद्धहमेसंगसीससहोसुकुठारकिधारा ॥ ७ ॥ चापपु रातनशंकरकोतुमतोरकहामनमैगरवावो ॥ विष्णुसुचापइ हेपिखरामसुजोगुनयांहिकेवीचचढावो॥ तौतुमसंगसुयुद्धक रोंभिरमोसंगरामनजीवतजावो ॥ नाहिचढैलोहनोसभकाय मकेपुरकीअवसासनपावो ॥ ८ ॥ इहभांतकह्योजबतांद्विज राजसुकांपउठीवसुधातवसारी॥ द्रिगमूंदगएसभलोकनकेत मभूरभयोसुमनोनिशिकारी ॥ पिखरामसुतांभृगुनंदनकोअ तिकोपभरेसुमहाबलधारी॥धनुतांकरतेहरिछीनलयोगुणरो पदयोनलगीकछुवारी॥ ९ ॥ काढनिखंगुतेबानलयोधनुबीच

दयोपुनऐंचकमाना ॥ रामकह्योद्विजराजसुनोयहपेखतहो धनुवीचसुवाना ॥ आहिअमोघसुसाइकरामसितावदिपाइ सुयांहिनिसाना ॥ प्रादहनोतवलोकहनोवदवेगसुयामनढील निमाना ॥ १० ॥ ॥ संकरछंद ॥ ॥ सुनरामकोयहवातको द्विजभयोबदनमलान ॥ करयादपूरवकथाकोद्विजरामकीनव खान ॥ सुनरामबाहुविशालनैनाजानयोतवभेव ॥ हरिपुरप पूरणविष्णुतूंजगकारणोसुनदेव ॥ ११ ॥ मैवालतपसाविष्णु कीकरराधयाहरिनाथ ॥ चक्रतीर्थजाइकैप्रभुविष्णुश्रीरघुना थ ॥ ममभएतुष्टनरायणाआनंन्यकीनीसेव ॥ शंखपंकजचक्र कोकरगदाधारिदेव ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥मोप्रतिवचनवखा नयोसुनोरामदेकान ॥ मुखपंकजअतिसैखिरेभवभंजनभग वान ॥ १३ ॥ श्रीभगवानुउवाच ॥ चौपाई ॥ ब्रह्मनउठो तपस्याधारी ॥ सफलभईतपसाअवथारी ॥ मेचिदअंसयुक्ततु मभए ॥ हनोरिपूतवकिलविपगए ॥ १४ ॥ कारतवीर्यअर्जुन भारा ॥ ताततुमाराजानेसारा ॥ तांकोहनोतोहिवरदीना ॥ जां हिनमित्तमहांतपकीना ॥ १५ ॥ वारइकीशहनोसभक्षत्री ॥ भू मीहोइमुनिपलअक्षत्री ॥ भूंमिनिखिलकश्यपदेदाना ॥ वहु रशांतिहोवहुवलवाना ॥ १६ ॥ त्रेतायुगआवेगोजवही ॥ दा शरथीहोवोंमैतवही ॥ रामनामआपेंगसारे ॥ तवद्विजवरपुन मोहिनिहारे ॥ १७ ॥ मैतोकोंदयोतेजसुजोई ॥ देवेंगोमोकोपुन सोई ॥ पुनतपधरतनमाहिसुभारा ॥ तिष्टब्रह्मदिनजगतमंझा रा ॥ १८ ॥ योंव्रखानभएअंतरधाना ॥ परपूरणवैपुरपपुराना ॥

जोजोहरिआइसमुहिदीनी॥ सोसोरामसकलमैंकीनी॥१९॥ सोईविष्णुरामतुमहरी॥ जन्मलियोविधिविनतीकरी॥ मोमैं तेजहुतोतवजोइ॥तोहिलियोपुनतेजसुसोई॥ २० ॥ आज सफलभयोजन्महमारा॥प्रभुपूरणहरिनैननिहारा॥ब्रह्मादिक जांकोनहिपावै॥प्रकृतपरेजिहंवेदवतावें॥२१॥जन्मादिकपट भावविकारा॥ तोमैनहिअज्ञानविकारा॥ निरविकारपरिपूर णराम॥गमनादिकनहितोमैनाम॥ २२॥ जिउजलभीतरफे नअपारा॥ धूंमहोइजिउअगनमझारा॥तिंउभवभीतरमाया आहि॥निपलसुजगतवनायोताहि॥ २३ ॥मायाकरअवरे जेलोका॥ तोहिनजानेंपावेंसोका॥ विनविचारयहमायाअ है॥कीएविचारनरंचकरहे॥ २४॥ अविद्यानामसुयांहिवखा नें॥ विद्यासाथविरोधजुठानें॥ अविद्याकृतसंघातविकारा॥ चितप्रतिबिंबसुतांहिमझारा॥ २५॥ जीवनामसोतांहिकहा यो॥ आपभुलाइजगतदुखपायो॥ देहबुद्धिमनप्राननबीच॥ जौलोहैअभिमानसुनीच॥ २६॥ तौलौंकरेकरतत्वविका रा॥भोगेसुखदुखजगतमझारा॥आत्मकांनहिजन्मसुहैये॥ बुद्धिमाहिनहिज्ञानसुपेये॥ २२७॥ बिनविवेकदोनोंमिलि गए॥ संसारअनरथसुयातिभए॥ जडकोचेतनजोगसुजब ही॥ चेतनतांतिहंहोवेतवही॥ २८॥ चेतनजोजडसंगतपा ई॥ तौजडनाचेतनमैआई॥ जलअग्नीकोमेलनजैसे॥ मि लेसुचेतनजडपुनतैसे॥ २९॥ तवपदभक्तिसंगसुखजौलो॥ पावहिनाहिसंसरेतौलौ॥ तवभक्तनकीसंगतपाए॥ बहुरोते

पदभक्तकमाए॥ ३०॥ तथयहमायाहियेजोई॥ सनेसनेतनुहोवेसोई॥ पुनतवज्ञानसपन्नअचारय॥ पावेजोमतिहोवेआरय॥ ३१॥ असज्ञानशुभगुरतेलहे॥ तोहिकृपाकरबंधनदहे॥ जेजनभक्तितुमारीहीना॥ सदारहैंतेयाजगदीना॥ ३२॥ कल्पकोटिजोजाहिंअनेका॥ नातिनमुक्तिनहोइविवेका॥ सुखनहिलहैंकदाचिततेई॥ भक्तिविहीनअहेंजनजेई॥ ३३॥ यांतेतवपदकंजसुजोई॥ तांकीभक्तिसदाममहोई॥ जहंजहंहोवेजनमहमारा॥ सेवोंतहंपदकंजतुमारा॥ ३४॥ तवभक्तनकासंगउदारा॥ जांकरमिटेअविद्याभारा॥ तेरीभक्तिनिरंतजनजेई॥ धर्मअम्रतकोवरखैंतेई॥ ३५॥ अखिललोकवैपावनकरें॥ निजकुलमलनहिकिउंपरहरें॥ जगंनाथतोकोपरिणामा॥ भक्तनभावनहेसुखधामा॥ ३६॥ कर्णाकांतनमोपदथारे॥ रामचंद्रपरणामहमारे॥ जोजोपुन्यकीएमैनाथ॥ लोकजिगीषाकेरघुनाथ॥ ३७॥ सोहोवेतवचाणनिसाना॥ वंदनकैद्विजराजवषाना॥ भएप्रसंन्नतवैभगवाना शिरीरामकरुणासुप्रधान॥ ३८॥ ॥श्रीरामउवाच॥ ॥तोपैतुष्टभयोमैब्राह्मन॥ मागोवरभीतरजोहैमन॥ देवोंअखिलवस्तुहैजोई॥ संसैयामैकरेंनकोई॥ ३९॥ प्रीतमनाभृगुनंदनभए॥ पुनराघवप्रतिबैनअलए॥ यदिमोपरहैदयातुमारी मधुसूदनहरिराममुरारी॥ ४०॥ नीतवभक्तनकोसतसंगा॥ मोकोहोइसुसदाअभंग॥ तवपदपंकजपरमरसाल॥ तांकीभक्तिहोइममधाल॥ ४१॥ स्तोत्रसुयांहिपठेजनजोई॥ भक्तिहीनय

ग्रपिवहहोई॥ ताकोभक्तितुमारीहोवे॥ ज्ञानपाइदुखसगलेखोवे॥ ४२॥ मरणांतांकोहोवेजवही॥ तेरीस्मृतिसुआवेतवही॥ मोकोदीजेयहवरदाना॥ रामचंद्रपूर्णभगवाना॥ ४३॥ तथा होइरघुवीरवपाती॥ तवद्विजवरपरिकर्माठानी॥ वहुरप्रणामरामकोकरी॥ तवरघुवरपूजेद्विजवरी॥ ४४॥ वहुररामते आज्ञापाई॥ गयोमहेंद्राचलद्विजराई॥ पिखराघवदशरथहरखाए॥ मानोन्तकभएपुनआए॥ ४५॥ पुनपुनरामसुकंठलगाए॥ आनंदनैनचल्योजलजाए॥ अतिप्रसन्ननृपमनमैभए॥ स्वस्त्चित्तपुरभीतरगए॥ ४६॥ ॥ दोहा॥ ॥ रामसुलक्ष्मणशत्रुघनभरथमहावलवान॥ अद्भुतरूपविराजईनरवरअमरसमान॥ ४७॥ अपनीअपनीदारलैनिजनिजमंदरमाहि॥ रमैअयोध्यानगरमैमहानंदमनमाहि॥ ४८॥ चौपई॥ मातपिताहरपानेपेख॥ रामसीयलखमिलेवसेप॥ सीतारामरमेपुरऐसे॥ वैकुंठभवनमैश्रीहरिजेसे॥ ४९॥ युधाजितनामकैकईभाई॥ भरतमातुलाअतिसुखदाई॥ आयोभरतलैनहितसोई॥ प्रीतवडीमनभीतरहोई॥ ५०॥ राजादशरथभरतपठाए॥ भ्रातसत्रुघनसंगलवाए॥ युधाजीतकोपूजनकीनो॥ दशरथभूपविदाइसदीनो॥ ५१॥ रामपूतसीतानुपपाई कौसल्यादेवीपरमसुहाई॥ शक्रसपूतपुलोमीरानी॥ पाइयथासुरमातसुहानी॥ ५२॥ ॥ सवैया॥ जांगुणपूररहीअवनी अरुकीरतिजाहिसभैजनगावें॥ औरनकीअववातकहांसुरजांहिंअलंवनतेसुखपावें॥ नामउचारतजांजगमैशुभसंतस

[1] इंद्रकी स्त्री.

भैदुखबंधमिटावैं॥रामबहीपुरऔधविषेमिलजानकिसंगवि नोदकमावैं॥५३॥ नीतरहेजिनकेलक्ष्मीपुनिनाहिविकारक दीजिनमांही ॥ पूरणवैभवजांहिसदाघनचेतनमूरतियाजग मांही॥ माइककारयकेअनुसारसुमानवसेजगमाहिदिखांही हैंअखिलेशपरातमरामसुदेवनमैजिनकेसरनाही ॥ ५४ ॥ **नराजछंद**॥ ॥ सुवेदव्यासजांहिकोअनंतभांतगावही॥ म हेशऔहिमालजासदासुजांहिध्यावही ॥ सुतांहिरामचंदकी सुबाललीलकीकथा ॥ गुलाबसिंहदासपापहारणीकहीतथा ॥५५॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबाल कांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥इतिश्रीबालकांडंसमाप्तम्॥

॥इति बालकांडंसमाप्तम्॥

श्री
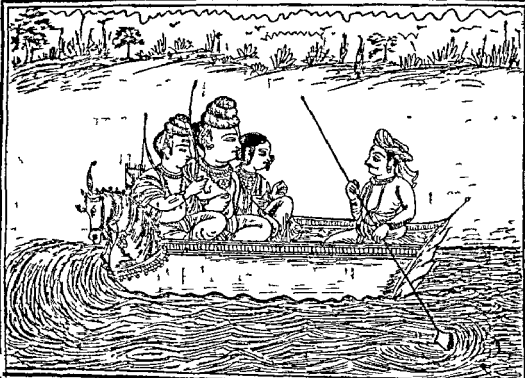
श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ अयोध्याकांड प्रारंभः

॥ सवैया ॥ ॥ तजराजविभूतिलयोवनवाससुतातकोवाक्य अखंडितकीनो ॥ वनेंजाइसुभ्रातमनाइरहेनहिराजविषे मनरंचकदीनो ॥ भवभारमिटेजिहिनामभजेभवफेरनहोंवत बंधनजीनो ॥ बहुवंदनवैरघुनाइककोजिनकोयशपूररह्यो पुरतीनो ॥ १ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकसमैसुखबैठरामा ॥ रत्नसिंहासननिजवरधामा ॥ सर्वसुभूषनतनमैधारे ॥ नीलकमलतनप्रभाअपारे ॥ २ ॥ कौस्तुभकंठविषेअतिसोहे ॥ मुक्ताहारप्रभासुरमोहे ॥ रत्न दंडचामरसुखकारी ॥ सीसफिरावेजनककुमारी ॥ ३ ॥ करेंविनोदतंबोलसुखावें ॥ हेरपरस्परअतिमुसकावें ॥ दशरथग्रेहलखहरिअवतार ॥ नारदआयोऋषीउदार ॥ ४ ॥ राम रघूत्तमदेखनकाजे ॥ स्फटिकमणीसमप्रभाविराजे ॥ मानो शरदचंदतनधारे ॥ ऋषिवरआयोपरमउदारे ॥ ५ ॥ उतरत अंबरपंथसुआए ॥ नारददिव्यज्ञानसुखदाए ॥ तिनकोदेखउमारघुनाथ ॥ शीघ्रसुउठजोरनिजहाथ ॥ ६ ॥ सीतासहित

सुदंडप्रणाम ॥ मुनिकोकरीभवानीराम ॥ नारदप्रतिपुनवैनउ
चारे ॥ प्रीतिभक्तिरघुवरउरधारे ॥ ७ ॥ संसारीजनकोमुनि
घाल ॥ दुर्लभतेरोदरशविशाल ॥ हमजेहैंविषयनकेप्यारे ॥
तिनकोकहांसुदरशतुमारे ॥८॥ अथवामेपूरवकृतभाग ॥ भए
सुमुनिवरआजुसुजाग ॥ जगतअवस्थामाहिसुघोर ॥ मुनि
वरपायोदर्शनतोर ॥ ९ ॥ मुनितेदर्शनपरमपदारथ ॥ तां
कोपाइसुभएकृतारथ ॥ कार्यकौनसोकरोंतुमारो ॥ मुनि
भापोमैसेवकथारो ॥ १० ॥ पुननारदमुनिरामवषाने ॥ भ
क्तपियारेरघुवरजाने ॥ लोकनजिंउंहरिवचनवषान ॥ कि
उंमोहोमोकोंभगवान ॥ ११ ॥ संसारीसुवंपान्योजोइ ॥ स
त्यतुमारावचनसुसोइ ॥ सभजगतनकोजाहैआदि ॥ ग्रहिणी
तुमरीसीयअनादि ॥ १२ ॥ तवसंबंधकररामउदार ॥ ब्रह्मा
दिकसुतजनेअपार ॥ त्रैगुणमायारघुवरजोई ॥ तवआश्रे
नितभासेसोई ॥ १३ ॥ शुक्लकृष्णअरुलोहितरूप ॥ त्रैवि
धपरजाजनेअनूप ॥ लोकतीनमयमहिलसुमंदर ॥ रामग्र
हीतुमतिनकेअंदर ॥ १४ ॥ विष्णुमहेश्वरतुमरघुराम ॥ प
द्माउमाजनकजानाम ॥ ब्रह्मातुंहीजानकीवाणी ॥ रवितुंम
सीताप्रभावपाणी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ रोहिणिसीयसुजानिये
तुमशशांकरघुनाथ ॥ आहिपुलोमीजानकीशक्रसुतुमसुरना
थ॥१६॥ ॥चौपाई॥ ॥तुमअग्नीसीतापुनस्वाहा॥ यमिनी
सीयसुयमतुमआहा ॥ निर्कृतितुमजगनाथसुराम ॥ ताम
सिहैसीताकोनाम॥१७॥ वरुणरामतुमजगमैपेए॥ भार्गवी

सीयजनकजाहैए॥ वायुसुतुमसीताहैगती॥ कुवेररामसंपति सिय मंती॥ १८॥ ॥दोहा॥ ॥रुद्राणिसियवखानयेस भगुणसीलप्रधान॥ लोकविनाशकरुद्रतुमभवभंजनभगवा न॥ १९॥इस्त्रीवाचकलोकमैसभीजानकीआहि॥ पुरपना मजोजगतमैरामतुमेविननाहि॥ २०॥ ॥चौपाई॥ तांतेलोकतीनकेमाही॥ रामसियाविनऔरसुनाही॥ तुमरे भासयुक्तअज्ञाना॥ अव्याकृतसुआहिपरधाना॥ २१॥तांतेव्है महतत्वउदारा॥ सूत्रभयोपुनजांहिविकारा॥ अहंकारवुधिपां चोप्रान॥ दशइंद्रियजगकरेवपान॥ २२॥ याकोंलिंगसरीरभ नीजे॥ जन्ममृत्युपुनतांहिकहीजे॥ सोईजगमैजीवकहावे॥ नानारूपजगतदिखलावे॥ २३॥ अवाच्यअविद्यानादिजो ई॥ कारणकहीउपाधीसोई॥ स्थूलसूक्ष्मअरुकारणनाम॥ तीनउपाधीसंस्थितिधाम॥ २४॥ इनविशिष्टचितजीववषा नें॥ इनविमुक्तपरमेश्वरभानें॥ जाग्रतस्वप्नसुपोपतिनाम॥ तीनअवस्थासंस्थितिधाम॥ २५॥ ताहिविलक्षणसाक्षीजोई॥ रामरघूत्तमवैतुमसोई॥ तुमतेंभयोजगतयहसारा॥ तुमही निखिलजगतआधारा॥ २६॥ तुमरेविपेलीनपुनहोई॥ राम सर्वकारणतुमसोई॥ रज्जुमाहिंजिउसर्पसुमान॥ होवेंलोक महाभयमान॥ २७॥ तिमाज्ञानकरजीवसुहोवै॥ आपभुला इमहादुखजोवै॥ परमातमआपजानेंहजवही॥ भयदुःखोंते छूटैतवही॥ २८॥ चिन्मयज्योतिरामतुमजोई॥ सभतनु वुद्धिप्रकाशकसोई॥ तांतेतुमसरवातमहैए॥ तुमविनऔर

१ मानि.

सुदंडप्रणाम ॥ मुनिकोकरीभवानीराम ॥ नारदप्रतिपुनबैनउचारे ॥ प्रीतिभक्तिरघुवरउरधारे ॥ ७ ॥ संसारीजनकोमुनिचाल ॥ दुर्लभतेरोदरशविशाल ॥ हमजेहैंविषयनकेप्यारे ॥ तिनकोकहांसुदरशतुमारे ॥८॥ अथवामेपूरवकृतभाग ॥ भए सुमुनिवरआजुसुजाग ॥ जगतअवस्थामाहिसुघोर ॥ मुनिवरपायोदर्शनतोर ॥ ९ ॥ मुनितेदर्शनपरमपदारथ ॥ तांकोपाइसुभएकृतारथ ॥ कार्यकौनसोकरोंतुमारो ॥ मुनिआपोमेसेवकथारो ॥ १० ॥ पुननारदमुनिरामबपाने ॥ भक्तपियारेरघुवरजाने ॥ लोकनजिउंहरिवचनवषान ॥ किउंमोहेमोकोंभगवान ॥ ११ ॥ संसारीसुवपान्योजोइ ॥ सत्यतुमारावचनसुसोइ ॥ सम्रजगतनकोजोहैआदि ॥ ग्रहिणीतुमरीसीयअनादि ॥ १२ ॥ तवसंबंधकररामउदार ॥ ब्रह्मादिकसुतजनेअपार ॥ त्रैगुणमायारघुवरजोई ॥ तवआश्रेनितभासेसोई ॥ १३ ॥ शुक्लकृष्णअरुलोहितरूप ॥ त्रैविधपरजाजनेअनूप ॥ लोकतीनमयमहिलसुमंदर ॥ रामग्रहीतुमतिनकेअंदर ॥ १४ ॥ विष्णुमहेश्वरतुमरघुराम ॥ पद्माउमाजनकजानाम ॥ ब्रह्मातूंहीजानकीवाणी ॥ शं

सीयजनकजाहैए॥ वायुसुतुमसीताहैगती॥ कुवेररामसंपति
सिय मंती॥ १८॥ ॥दोहा॥ ॥रुद्राणिसियवखानयेस
भगुणसीलप्रधान॥ लोकविनाशकरुद्रतुमभवभंजनभगवा
न॥ १९ ॥इस्त्रीवाचकलोकमैसभीजानकीआहि ॥ पुरपंना
मजोजगतमैरामतुमेविननाहि ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥
तांतेलोकतीनकेमाही ॥ रामसियाविनऔरसुनाही ॥ तुमरे
भासयुक्तअज्ञाना॥ अव्याकृतसुआहिपरधाना॥ २१॥तांतेव्है
महतत्वउदारा॥ सूत्रभयोपुनजाहिविकारा॥ अहंकारवुधिपां
चोप्रान॥ दशइंद्रियजगकरेवपान ॥२२॥ याकोंलिंगसरीरभ
नीजे ॥ जन्ममृत्युपुनताहिकहीजे ॥ सोईजगमैजीवकहावे॥
नानारूपजगतदिखलावे ॥ २३॥ अवाच्यअविद्यानादिजो
ई ॥ कारणकहीउपाधीसोई॥ स्थूलसूक्ष्मअरुकारणनाम ॥
तीनउपाधीसंसृतिधाम ॥ २४ ॥ इनविशिष्टचितजीववपा
नें॥ इनविमुक्तपरमेश्वरभानें॥ जाग्रतस्वप्नसुपोपतिनाम ॥
तीनअवस्थासंसृतिधाम॥ २५॥ ताहिविलक्षणसाक्षीजोई॥
रामरघूत्तमवैतुमसोई ॥ तुमतेंभयोजगतयहसारा ॥ तुमही
निखिलजगतआधारा॥ २६॥ तुमरेविपेलीनपुनहोई ॥ राम
सर्वकारणतुमसोई ॥ रज्जुमाहिंजिउसर्पसुमान ॥ होवेंलोक
महाभयमान॥ २७॥ तिमाज्ञानकरजीवसुहोवै॥ आपभुला
इमहादुखजोवै ॥ परमातमआपजानैहजवही॥ भयदुःखोंते
छूटैतवही ॥ २८ ॥ चिन्मयज्योतिरामतुमजोई ॥ सभतनु
वुद्धिप्रकाशकसोई ॥ तांतेतुमसरवातमहैए॥ तुमविनऔर

१ मानि.

नकोईपैए॥ २९॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रज्जूमाहिभुजंगजिउतिं उयहसभसंसार॥ भयोसुतवअज्ञानतेंनिखिलसुतवआधार ॥ ३० ॥ तवजानेजांतमिटेतांतेतेरोज्ञान॥ सेवेनित्यसुजोत्व हेयांभवबंधनहान ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तवपदभक्ति युक्तजनजेई॥ ज्ञानलहेंक्रमकरजनतेई॥ तांतेजेतवभक्तिसु युक्ता॥ तेईहैंभवबंधनमुक्ता ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवभ क्तनकेभक्तजेपुनतिनभक्तसुनाथ ॥ तांकिंकरनारदसदाजा नोश्रीरघुनाथ॥ ३३॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मोपैकरहुअनुग्र हराम ॥ मोहनकोनहिमोमैकाम ॥ नाभिकमलकमलास नभए॥ जिनतेनाथमोहिभवलए॥ ३४॥ यांतेतव नातीजन नारद॥ रक्षाकरोसुमोहिविशारद ॥ यौंनारदबहुभापभवा नी ॥ दंडप्रणामसुसानंदठानी॥ ३५॥ पुननारदइहवचनउ चारे ॥ ब्रह्माजेहैंजनकहमारे॥ तिनकेसुनोसंदेसेराम॥ क रोजननकेपूरणकाम ॥ ३६॥ रावणवधहितनरतनुधारे ॥ भू मिविपरघुवीरउदारे॥ अबतवपिताराजकेकाजा ॥ कीनोत वअभिषेकसुसाजा॥ ३७॥ जोतुमराजविपेमनधारौ॥ रा वणकोंरघुवरनहिमारौ॥ क्षीरनिधीहरिवचनतिहारो॥ भूको भारहरोंगोसारो ॥ ३८॥ तांकोकरोसत्यनरदेव ॥ सत्यसंधि तुमअलपअभेव॥ सुनयाविधिनारदकीवानी॥ हसबोलेपु नरांमभवानी॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ सुननारदयालोकमैमो प्रतिकछुअज्ञात॥ सबजान्योउरआपनेमैजानोविख्यात॥ ॥४०॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ क्षीरनिधीमैभाष्योजोई ॥ सत्यप्र

१ पौत्र.

तिन्योंकरिहोंसोई॥नारदहोईसमयअनुसार॥निखिलनिवारों भूकोभार ॥ ४१ ॥ क्रमकरमारोंराक्षससारे॥ जेजगहैंधरणी काभारे॥ नारदमारणहेतदशानन॥प्रातजांउमैदंडककानन॥ ॥४२॥ चौदांवरपवासवनकरों॥फलभक्षणतनवलकलधरों॥ कुलसमेतरावणहैजोई ॥ सीताभिपकरहनोंसुसोई ॥ ४३॥ याविधिरामवखान्योजवही ॥ भयोप्रसन्नसुनारदनवही ॥ तीनप्रदक्षिणकरीभवानी ॥ दंडप्रणामरामप्रतिठानी॥४४॥ रामदईतिनआग्याजवही ॥ गयोसुस्वर्गलोकमुनितवही॥ नारदरामसंवादसुजोई ॥ तांहिपढेजगमेंनरकोई॥४५॥ अथवासुनसिमरणमनकरे॥ रामभक्तिउरभीतरभरे॥ दुर्लभपदवीमोक्षसुजोई॥ करवैराग्यलहेनरसोई॥४६॥ इतिश्रीमद् अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ७॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ अजनंदनभूपसुएकसमैकुलचारयआपवसिष्टवुलाए॥ मुनिरामसराहकरेंसभहींपुरलोकईहैगुरुवैनसुनाए॥पुन नैगं मवृद्धअमोत्यसभेगुनगावतभूपविशेपजनाए॥अवराजदिउंसुतराममहीगुणपुंजसभैइनभीतरआए॥ १ ॥ ॥चौपाई॥ ॥ वृद्धभयामुनिदेहहमारा ॥ कमलनैनसुतरामउदारा॥ तांतितांकोतिलकसुदीजे ॥ मंगलकारयवेरनकीजे॥ २॥ सहशत्रुघ्नभरतथोजोई ॥ मातुलदेखनगयोसुसोई ॥ मैअभिपेकसुकरोंसकारे ॥ मुनिअनमोदनचाहोंथारे ॥ ३॥ सभसंभारकरोइकठारे ॥ जाइनिमंत्रोरामपियारे ॥ नानावर्णपता

१ वणिक अथवा वेदवेत्ता २ मन्त्री (प्रधान)

काजेती॥ करोस्थापनासगलीतेती॥४॥ बंदनवारसवारोसा रे॥स्वर्णमुक्तमयसर्वदुआरे॥ यांविधिभूपवसिष्टअलाए॥ मंत्रीत्रदुरसुमंतवुलाए॥५॥ आज्ञाकरेमुनीवरजोई॥ ल्यावो वस्तुसकलनुमसोई॥ यौवराज्यमैंरामसुटीको॥ प्रातकरोंमंत्रीमैनीको॥६॥सुनिमंत्रीभूपतिकीबाता॥ पुल्कितभयोसर्वतिनगाता॥ आपेमंत्रीदोकरजोरे॥ आज्ञाकरोमुनीवरमोरे॥७॥ तबवसिष्टमुनिबोलेज्ञानी॥ आग्यायांविधिकरीभवानी॥ कंन्यास्वर्णमंडजिनगाता॥ मध्यकक्षठांढीकरप्राता॥ ॥८॥स्वर्णरत्नजिनकेतनुधारे॥ पोडशल्यावदुगजसुउदारे॥ ऐरावतकीकुलमोजाए॥ चतुरदंतजिनतुंडसुहाए॥ ९॥ नानातीरथकेजलजेते॥ स्वर्णकुंभआनीजेतेते॥ बहुतसहस्रकुंभजलल्यावो॥ करोस्थापनावेरनलावो॥१०॥ ॥शंकर छंद॥ ॥तीनव्याघ्रसुचरममंत्रीआनियेमनलाइ॥ शुभछत्ररत्नसुदंडमोतीमणीबहुसुखदाइ॥ दिव्यमालसुआनीएपुनदिव्यपाटअपार॥ विविधभूपनआनियेपुनजांहिक्रांतउदार॥११॥ मुनिहोंहिंठाढेतहांसादरलैकुशानिजपान॥ वारमुख्यानर्त्तकीपुनगाइकाकरगान॥ नानावजंत्रीकुशलजेसुवजाहिंनृपआगार॥ गजअश्वरथपादातसायुधरहैंबाहरवार॥१२॥ नगरमैंजेदेवताकेआंहिआयतनानि॥ करोसुपूजातांहिंकीदेवलीबहुसनमान॥ वेगराजाआवईपुनलैउपायनहाथ॥ देउमाइहभांतआइसश्रेष्ठजोमुनिनाथ॥१३॥ रथबैठभगवानमुनिपुनिगयोरामअगार॥तीनकक्षालांघके

पुनभयोमुनिपदचार ॥ रामगुरुमुनिजानिकैनहिकीनद्वारप
वार॥इहभांतआपमुनीश्वरापुनगएभौनमझार॥ १४॥ आ
एगुरूउरजानकेपुनरामजोरसुहाथ॥ जाइसनमुखदंडवत्तप्र
णामकैरघुनाथ॥ स्वर्णपात्रसुनीरकोकरजानकीअनिवाइ ॥
करभक्तिवैरत्नासनेपुनरामगुरुवैठाइ ॥ १५॥ सीतासंयुक्तसु
धोयपदजलसीसरघुवरधार ॥ मैधन्यरामवखानियोमुनिपा
इतेपदवार॥ रामकेयहवचनसुनिमुनिकीनआपवपान ॥ ते
पदांवुजसलिलधरगिरिजापतीभगवान ॥ १६ ॥ धन्यहोयो
लोकमैब्रह्माजितातहमार॥तेपादतीरथसलिलकरतिनकरेकि
ल्विपतार ॥ अंववपानेंरामजोवहकरेजनउपदेश ॥ हैपरात
मरामतूपुनिभक्तहरणकलेश ॥ १७ ॥ देवकारयसिद्धहितपु
नभक्तिभक्तकमाहि ॥ रावणवधारथतूभयोमेजानयोउरमा
हि ॥ तद्यपिनदेवसुभापहोंयहगोप्यअमरसुकाज ॥ जैसेतु
मेविसतारयोयहनिखिलमायासाज ॥ १८ ॥ जोकरेंतूंरघु
नाथपूरवमैकरोंपुनसोइ॥तूंसिष्यमैगुरुहोययोनहिकरेमालम
कोइ ॥ गुरुनकोगुरुदेवतूंपुनपिताकोपितआहि॥ जगतयंत्र
सुवाहकोपुनरामतुमविननाहि॥१९॥ शुद्धसात्विकदेहतूंपुनि
धारनिजआधीन॥ निजशक्तिनरजिउंभासहैंनहिसकेकातव
त्वीन ॥ होनोपुरोहितजगतमैयहिआहिनिंद्यमहान॥ इक्ष्वा
कुकुलपरमातमाहरिउपजहैभगवान ॥ २० ॥ ॥ चौ
ई॥ यांविधिरामप्रथममैजानी॥ ब्रह्मामोप्रतिआपवपानी॥
निंदतकर्मपुरोहतजोई ॥ तवगुरुआसकरयोमैसोई ॥ २१ ॥

तांतेभयोमनोरथमेरा॥भयोअचारयजगमैतेरा॥सभलोकनकेमोहनहारी॥ मायाशक्तिजुआहितुमारी॥ २२॥ यथानमोहमोकोराम॥करोतथाविधिपूरणकाम॥गुरुनिरुक्तिइच्छाजोतोरी॥यहीदक्षिणादीजेमोरी॥ २३॥प्रसंगिकतोहिवपानीवात॥ औरठोरनहिंभापोंतात॥ राजादशरथमोहिपठायो॥ रामनिमंत्रणतोकोंआयो॥ २४॥ कालहसवेरेतोकोंराजा॥ देवेगेंदशरथसिरताज॥ अबतूंसीयसहितभूजाई॥करउपवासरहोरघुराई॥ २५॥ सुचिपुनइंद्रियजीतोराम॥मैजावोंदशरथनृपधाम॥ मंगलहोसीकालसकारे॥तबआवोंगोरामपियारे॥ २६॥ राजगुरुइहभांतवपान॥ स्यंदनेवैठगयोभगवान॥ उमाहेरलक्ष्मणनिजवीर॥ हसबोलेपुनश्रीरघुवीर॥ २७॥ लक्ष्मणसुनोहमारीवात॥ यौवराज्यहोसीमुहिप्रात॥ निमितमात्रहेनामहमारो॥ करनोकामनिखिलहैथारो॥ २८॥ मेरोवहिरप्राणतूंआहि॥ संशययामोरंचकनाहि॥ याविधलक्ष्मणप्रतिहरिभान्यो॥ बहुरकरयोजोमुनीवखान्यो॥ २९॥ सीयसमेतभएभूशायी॥ मनोघरेमुनिरीतिवनाई॥वसिष्टगएपुननृपवरपास॥ कहीरीतसोकरीप्रकास॥ ३०॥ ॥दोहा॥ ॥रामतिलकजवभापियोनृपवरमुनिवरपास॥ सुनआयोकोइकपुरुपराजभवनधरआस॥ ॥३१॥ चौपाई॥ कौशल्यारुसुमित्रासुंदर॥ रामलखनमातानृपमंदर॥ तिनकेपासवपानीवात॥ सुनेहरपानीपुलकितगात॥ ३२॥ जनकोउत्तमहमसुदयो॥ कौशल्यासु

हर्षउरभयो ॥ लक्ष्मीकीपूजाविस्तारी ॥ रामराजउरअंतर
धारी ॥ ३३ ॥ सत्यवाक्यदशरथवरराजा ॥ करहैसत्यक
ह्योमुखकाजा ॥ कैकईवशनृपकामुकसोई ॥ क्याकरहैनहि
जानेकोई ॥ ३४ ॥ यांविधिव्याकुलचित्तसुभई ॥ पुनदुर्गापू
जानिरमई ॥ यांअंतरपुनअमरभवानी ॥ मिलवाणीप्रतिवा
तबपानी ॥ ३५ ॥ भूमंडलवाणीतुमजावो ॥ औधपुरीमैनि
जपदपावो ॥ ब्रह्मवाक्यउरअंतरधरो ॥ रामतिलकविध्वंसन
करो ३६ ॥ प्रथममंथराकरोप्रवेश ॥ बहुरकैकईहृदेनिवेश
होवेविघ्नतिलकमोजबही ॥ आवोस्वर्गलोकपुनतबही ॥ ३७ ॥
याविधिदेवनकीनउचार ॥ वाणीकरउरअंगीकार ॥ कन्योप्रवे
शमंथरामाही ॥ भयोहुलासकुब्जमनमाही ॥ ३८ ॥ कुब्ज
चढीमहलपुनदौरे ॥ नगरअलंकृतहैचहुंओरे ॥ नानातोरणजा
मोंधरी ॥ बहुतपताकाकीनीखरी ॥ ३९ ॥ सभउत्सवकरनगरसु
हायो ॥ कुब्जाहृदयअचंभाआयो ॥ उतरीवेगमहलतेधाइ ॥
धात्रीकोपुनपृछ्योजाइ ॥ ४० ॥ मातानगरअलंकृतसारो ॥ का
हिनमित्तसुमोहिउचारो ॥ नानाउत्सवहरषअपारी ॥ करेकुश
ल्यारामसतारी ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणकोदेवेबहुदाना ॥ रत्नपटंबरहेम
सुनाना ॥ धात्रीहरषकहीतबबाता ॥ रामतिलकहोवेगोप्राता
॥ ४२ ॥ यांतिनगरअलंकृतकरिओ ॥ भूपतिआपसुवचनउचरि
ओ ॥ सुनयहबातमंथरावौरी ॥ कैकयीढिगआईदौरी ॥ ४३ ॥
सेजकैकईसोईपरी ॥ नैनजांहिम्हगद्रिगमदहरी ॥ तांप्रतिकुवरी
कीयोबपान ॥ किंसोवेंमूढेसुखमान ॥ ४४ ॥ दुरभागेभयअ

योभारी ॥ नाजानेंतनुरूपखुमारी ॥ रामराजकोतिलकउदारे ॥ भूपअनुग्रहहोइसंकारे ॥ ४५ ॥ सुनियहिबातककईरानी ॥ त्र्ग उठीउरमेहरषानी ॥ रलजढ़ीनूपुरपदेतारा ॥ दईमंथराहरपअ पारा ॥ ४६ ॥ बहुरकैकईबातबपानी ॥ तुमनीकेवहसुनोभवानी हरषस्थानवडोयहआयो ॥ तेंमोकोकिंउभेदिपलायो ॥ ४७ ॥ भरतहुंतेमुहिअधिकसुराम ॥ प्रियवादीमुहिकरेसुकाम ॥ मो हकुसंल्यासमउरपेख ॥ मेरीसेवाकरेविसेख ॥ ४८ ॥ मूढमं थराभापोमोहि ॥ रामकहांभयदीनोतोहि ॥ सुनीबातयहकु बरीजवही ॥ भयोदुःखमनभीतरतवही ॥ ४९ ॥ सुनरानीयहव चनहमारे ॥ जांतेभयचहभयोतुमारे ॥ राजाप्रियवाणीतवक हे ॥ कामुकअरथआपनोगहे ॥ ५० ॥ तोकोबातनसहिसंतोषे ॥ कारयकौसल्याकोपोषे ॥ रामराजमनभीतरआए ॥ तोतवपेकें भरतपठाए ॥ ५१ ॥ अनुजतांहिंकेसाथलवाए ॥ मातुलंकु लमेवेगपठाए ॥ आजसुमित्राहरपप्रसंगा ॥ रामराजलक्ष्म णतिनसंगा ॥ ५२ ॥ रामलखनलियराजसुसारो ॥ दास होइगोपूततुमारो ॥ केदेवेंगेनगरनिकार ॥ कैप्राननतेडारेंमा र ॥ ५३ ॥ तूंदासीकौसल्याकेरी ॥ होवेंगीजिउंऔरसुचेरी ॥ शोकनकरेंपराभवयारा ॥ तांतेभलोसुमरणतुमारा ॥ ५४ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ करयत्नभामिनिवेगतूंजिउंभ रतराजसुहोवई ॥ दशचारवरपसुवासवनमैरामनीकजोव ई ॥ पुनभरतरूढसुहोइगोवहराजपालेभुजवला ॥ सुउपाइतो कोआपहोंमनमैधराजोमैभला ॥ ५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ पूरब

१ सवर्गमें २ पगमें उतारा. ३ तब ४ तेरे पिताके ग्रहमें

देवअसुरसंग्रामा ॥ भयोअपारसुभैरवनामा ॥सुरपतिभूप
तियाच्योआइ ॥दशरथभयोसुतांहिंसहाइ॥ ५६ ॥ लैकरधनु
पचव्योरथभारे ॥ सैनासहितवजाइनगारे ॥ तूंतांकेपुनसंग
सिधानी॥सवहूंमाहिमनोहररानी॥ ५७ ॥ रणआसक्तभयो
नृपजवही ॥ अक्षकीलटूट्योपुनतवही॥ राजेकीलनजान्योतू
टो ॥ लैकरधनुपअसुरसंगजूटो ॥ ५८ ॥ तैंरणमैअतिधीरज
करयो॥कीलछेकमैनिजकरधरयो॥नीलकमलनैनीतूंप्यारी॥
प्रतिप्राननरछाउरधारी ॥ ५९ ॥ असुरसंघनृपरणमैमाख्यो॥
वहुर अरिंदम तोहिनिहाख्यो॥ अचरजतोहिपेखनृपआयो॥
प्रेमभरेतोकोंगललायो॥ ६० ॥ वरमागोमोतेतुमदोई॥ जोते
रेमनभीतरहोई॥यांविधिभूपतिकीसुनवानी ॥तुमभामनिपुन
आपवपानी॥ ६१॥ भूपतितुमवरदोइवखानें॥मोहिदएसुसभे
सुरजानें॥ सोमेरीआमानतहोई॥ तोमैरहेंचिरंवरसोई॥ ६२॥
अवसरहोइहमारोजवही ॥ मांगोंगीदेवोवरतवहीं॥राजामु
खतेतथावपानी ॥ चलिआयोअपनीरजधानी॥ ६३॥ यहमै
कथाकहीतवजोई॥तुमतेसुनीप्रथममैसोई॥ सिमरणभईआ
जन्नहमोकों॥ करोउपायवत्योजोतांकों॥६४॥क्रोधागारवेग
तुमजावो ॥ निजमनभीतररोपवढावो ॥ त्यागोतनकेभूपन
सारे ॥ चारोओरसुदेहखिलारे॥६५॥भूमिसैनमुखमौनगही
जे॥पूछभूपनउत्तरदीजे ॥ करप्रतिज्ञाजोलौंराजा ॥ सत्यकरों
गोवांछितकाजा ॥ ६६ ॥ तौपाछेबोलोकेकेई॥मेरीसिक्षाजा
नसुएइ॥गिरिजासुनयहिकुवरीवानी॥सत्यकैकईउरमैमानी

१ भयकर. २ शत्रुनकानाशक. राजा.

॥६७॥खोटनसंगतिजिउंभरमाए॥ तिंउंकैकेईलीयेभुलाए॥पु नकैकेईबचनउचारे॥ यहिमतिकहतेभइतुमारे ॥६८॥ तेरीबु द्धिनमोहिपछानी ॥ तूंहैंकुवरीपरमसियानी ॥ भरतहोइगोरा ज़ाजवही ॥ सौपुनगाउदेंउतवतवही ॥ ६९ ॥ तूंमेरीहैप्राण पियारी ॥ यहतोकोंमैसत्यउचारी ॥ याविधितांकोभापभवा नी ॥ क्रोधागारधसीरुषमानी ॥ ७० ॥ भूपनतनकेसभपर हरे ॥ चारोओरविकीरणकरे॥ सोईभूमिमलिनतनअंवर॥ भ रतराजहितकियोअडंवर ॥ ७१ ॥ कुनेसुनयेबचनहमारे ॥ ज़ौलौरामनयनंसिधारे॥ तौलौभूमिविपेमैसोवों॥ नातरअ पनेप्राननखोंवों॥७२॥ निश्चययहतूंकरकल्यानी॥ नवकल्या नहोइगोरानी ॥ यांविधिभापकुबग्रहगई ॥ रानीवहिविधि करतसुभई॥७३॥ ॥सवैया॥ ॥ धीरवडोउरमाहिदयागु णऔरअचारसुनीतउदारी॥ जोविधिवादनकोउपदेशकऔ रविवेकसुज़ाहिअपारी॥जोवहखोटनसंगकरेपुनपापवडोजि निआहिअपारी॥ सोतिनकेसमहोवतहैंक्रमकैजगमैगिरिना थकुमारी॥७४॥ ॥इतिश्रीमत्अध्यात्मरामायणेउमामहे श्वरसंवादेअयोध्याकांडेद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥ ॥७॥ ॥

॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥वहुरभवानीदश रथराई ॥ निजमंत्रीकोलीयेवुलाई ॥ गुरुनवखान्योतुमको ज़ोई॥ रामराजहितसुनियोसोई॥ १॥ सोवहवस्तुवेगलैआ वो॥ मंत्रीवरकछुढीलनलावो ॥ यांविधिमंत्रीआइसदयो ॥ सानंदभूपसुनिजग्रहगयो॥ ॥दोहा॥ ॥भावीमृत्युअधी

१ विसरे हुये

नकैउमाचलेग्रहराइ ॥ होनीमेटनकोसकेकौनहटावेजाइ ॥
॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूपतिगएसुजबनिजधामा ॥ देखी
नहीतहांनिजभामा ॥ व्याकुलमनभूपतिइहुआई ॥ आजकै
कईकहांसिधाई ॥ ४ ॥ आगेजोआवोंमैमंदिर ॥ हसतसमी
पआइवहिसुंदर ॥ आजुनवहिग्रहभीतरदेखी ॥ भूपतिमनयह
चिंतविसेखी ॥ ५ ॥ भूपतिमनकांपेजिमदामनि ॥ दासीभाषक
हांतुमस्वामिनि ॥ मेरीप्यारीकिंउनहिआवे ॥ पूर्वजिंउनहिवदन
दिखावे ॥ ६ ॥ दासीवचनबखानेआप ॥ सुनियेभूपतिभानुप्र
ताप ॥ क्रोधागारधंसीरुषमाने ॥ कारणदेवनहमकछुजाने ॥
॥ ७ ॥ तुमभूपतिवरलेहुविचार ॥ कारणतहांनिकटपगधार ॥
दासीगनयोंभाष्योजबही ॥ त्रसतभयोभूपतिवरतबही ॥ ८ ॥ रा
ज़ातांहिसमीपेंगयो ॥ तांहिंनिहारदुखीअतिभयो ॥ निजहाथ
नकरतांकोदेह ॥ कन्योविमर्दनभूपसनेह ॥ ९ ॥ राजातांकोवच
नयखाने ॥ किंउंसोईभूमैरुषमाने ॥ शुक्कसेजतेंदुरहित्यागे ॥ तो
कोंहेरमोहिदुखलागे ॥ १० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ भामनिक्योंनहि
बोलतमोहसुभूषनकिंउधरभीतरडारे ॥ डारकिपाटपटंवरतैंम
लिनांवरकिंउतनऊपरधारे ॥ साचकहोतववांछितजोवहका
जकरोंइहनेमहमारे ॥ नारिकिंधोंनरहोइसुनोकहुसुंदरिजांतव
काजविगारे ॥ ११ ॥ दंडकरोंतिनकोगजगामिनिकैतिनप्रानन
देंउंनिकारे ॥ जांपरतूंअतिकोपभईवरपीनपयोधरदेहिदिखा
रे ॥ जोदुर्लभअहेजगकारयसोवहकाजकरोंक्षणथारे ॥ चंद्रमु
खीउरजानतहैंयहभूपतिआहिअधीनतुमारे ॥ १२ ॥ नराजछं

१ भवेशकू मामभद २ रोष ३ मोस ४ पृथ्वी ५ किवा.

४॥ ॥नखेदमोहिकीजियेबतायबातजोअहे॥धनीकंगालको करौंप्रसन्नहोइतूंकहें॥जिनेहनेसुतोहिकाजहोइजेधनीघनो॥ त्निनेकमाहितांहिकोसमस्तमैधनंहनो॥१३॥कहेंअवध्यकोव धावंधाइकोविमोक्षहों॥कहाबखानहोंघनोस्वप्राणतोहितोप हों॥स्वप्राणप्रीतमोसुराममोहिलोकमैअहे॥करौंसुगंदतांहि कोकरोंसुकाजजोकहे॥१४॥जवैसुभूपनेकथ्योसुगंदरामकी करी॥तवैविमृज्यनैनकोंउठीमनोलताहरी॥कहेसुभूमिपाल कोसुनोसुबातमेरिया॥सुसत्यवाक्यभूपतूंसुगंदरामकेरिया ॥१५॥चौपाई॥ ॥मेरीवाणीसफलसुकीजे॥भूपतिवेगसु आपभनीजे॥पूरवदेवअसुरअतिसंगर॥भयाभूपभुवमंडल अंदर॥१६॥मैंतेतनुंतेवरक्षणकीने॥तोहितुष्टमैद्वैवरदीने॥तेदो नोवरआहिनिआस॥सत्यव्रत्तराखेतवपास॥१७॥तिनमै एकसुयहवरदीजे॥राजापूतहमाराकीजे॥यहजोकरेइकत्र सुभारा॥तांकरटीकोभरतहमारा॥१८॥दूजोयहमांगोतेवपा स॥रामकरेंदंडकवनवास॥सुंदरतेमुनिभेपसुकरें॥सीसजे टालनुवलक्कलधरें॥१९॥चौदांवरपवसैंवनभारे॥कंदमूल फलकरैंअहारे॥यदूरोवसैंअयोध्यामांही॥कैरुचिहोइरहैव नमांही॥२०॥वनकाजावेवैपरभाते॥रामकंजद्रिगसुंदरगा त॥जोकछुतहांविलंवहिजोवों॥तौभूपतिमैप्राणसुखोवों ॥२१॥सत्यप्रतिग्यातेंजगअहें॥दीजभूपसुजेवरकहे॥सु नीकैकइदारुणवानी॥भूमिगिरेनृपहोइमलानी॥२२॥जिउं तरुगिरवज्रकेमारे॥तिउंभूपतिनहिरहीसंभारे॥शनेशनेनृप

१ वधकरनेके अयोग्यका. २ वधकरने योग्यकों ३ पोंचके. ४ तेरी.

आंखउघारी॥ मनकेमाहिभयोभयभारी ॥२३॥ किंवादुहसु पनाभ्रमभाने॥ किंवाचित्तसुमोहिभ्रमाने॥ इममनभीतरकी नविचारी ॥ बाघनिजिउंपुननारिनिहारी ॥ २४ ॥ क्याक ल्याणीवाक्यबखानें ॥ जांकरहोहिप्राणमसहानें ॥ रामकि कीनोतेअपराधू॥कमलेक्षणअतिरामसुसाधू॥ २५ ॥ तूंमम आगेकरैंवडाई ॥ रामगुननकीहैंसुखदाई ॥ मोहिकुसल्याके समहेरी ॥ करैंनिरंतरसेवामेरी॥ २६॥ यांविधिपूरवतूंमम भाने॥अवकाहेतूंव्यर्थाबखाने॥राजगहीजेसुतहितसुंदर॥राम रहेंपुनअपनेमंदर॥२७॥ मोपैंयहैअनुग्रहकीजे॥रामभीखमेरे करदीजे॥रामहितेनहिंतेडरकोई॥रामनंहीदुखदाताहोई॥२८॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यांविधिभूपवर्पानियोचल्योनीरहगंजाइ॥ कर जोरेअतिदीनव्हैपरकैकईपांइ॥ २९ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ वहु रकैकईवचनउचरे ॥ कोपभईदृगलालसुकरे ॥ भूपतिक्या भ्रमभयोतुमारे॥ तुमैंव्यर्थकिमवाक्यउचारे॥३०॥मिथ्याकरैं प्रतिग्याकरी॥नरकहोइतोकोंनरवरी॥जोवनजाइनरामप्रभा ता॥अजिनचीरधरसुंदरगाता ॥ ३१ ॥ तौउद्वंधनमैंतनकरों ॥ कैविपखाइअग्रतेमरों ॥ सत्यप्रतिग्यासेंजगराजा॥ ठागेस र्वसभांतरकाजा॥३२॥ करीसुगंदरामंसुतकरी॥ मिथ्याअहै प्रतिग्यातेरी॥नरकेहोइतोकोंनृपभारा॥योंकैकेयीजबेउचारा ॥३३॥भूपतिदीनमनातबभयो ॥ दुःखसमुद्रेगोतालयो॥ मू र्छितहोइगिरयोधरमाही॥मनोपरेंशवस्वासंसुनाही॥३४॥सवै या॥इहभांतवितीतभईनृपरातिसुदुःखवडेजनवर्पसमानी॥पु

१ द्वारके २ नेत्रनसें. ३ गलफांसा.

नजोपरभातभयोजगमैमिलबंदिनगाइककीरतिठानी॥सुन
केवहुवादकवित्तनकोउरकोपभईनृपकीवहिरानी॥जलजाहु
यजाहुनवाघघनेइहभांतनिवारसुताहिंभवानी॥३५॥ ॥चौ
पाई॥मध्यहवेलीभयेप्रभात॥ठाढेभयेसुजनविख्यात॥ब्राह्म
णक्षत्रीवैश्यसुधनिवर॥ऋषिकन्यापुनछत्रसुचामर॥३६॥ग
जवाजीपुनऔरपदाती॥वारविलासिनिपौरजनाती ॥गुरुव
सिष्टजिउविधिहिंव्रताई॥मंत्रीतिंउतिंउसकलवनाई ॥३७॥
इस्त्रीवालवृद्धपुरमांहीं ॥ रात्रीनिद्रालहीनकांहीं ॥ रामचंद्र
कोकदोंनिहारे॥पीतपटंवरतनमैधारे॥३८॥ सर्वअभरणध
रेमनमोहे ॥ हेमकीटकरकंकणसोहे ॥ कौस्तुभमणिगललशे
उदार ॥ सौमनोजसुंदरतनुधारे ॥३९॥राजतिलकसोंभाल
सुहावे ॥ गजारूढमुसकावतआवे ॥ लक्ष्मणकेकरछत्रसुहा
ए॥सीसरामकेभ्रातझुलाए ॥४०॥ ॥सवैया॥ ॥कवहो
इप्रभातसुयांजगमैकयआवतरामसुनैननिहारे॥इमरातिवि
तीतभईसगलीउत्कंठितहैंपुरकेजनसारे ॥ अवलौनहिभूपउ
ठेघरतेइहकारणकौनसुमंतविचारे॥हरुएहरुएजहंभूपहुतोसु
सुमंततहांघरमाहिंसिधारे ॥ ४१ ॥ जयशब्दउचारनिवाइ
सुनारसुभूपतिकोतिनवंदनठांनी ॥ अतिखेदनिहारसुभूपति
कोकरजोरउभेपुनपूछतरांनी ॥ वधदेविसुकैकइनीततुमूकहु
भूपतिकोमुखकाहिमलांनी ॥ वलआहिचलाचलभूपवलीम
नविक्रितआजभयोमुहिभांनी ॥४२॥ कैकइवोलसुमंतक
ह्योनृपरातिननींदकरीद्रिगमांही ॥ औरनभापतहैमुखतेइक

रामहिरामवकेमुखमाही॥जाग्रतरात्रिरह्योसगलीइहकारण भूपचलाचलआही॥ भूपपिखेसुतरामभलेतुमजाइसुमंतलियाउइहाही॥४३॥ ॥सुमंतउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥रानीभूपनआपियोकिंहंविधिजांवोलैन॥ तौमैंल्यावौंरामकोभूपवखानेवैन॥ ४४॥ सुनिमंत्रीकेवोलकोवोलेदशरथराइ॥ तातनिहारौंरामकोवेगसुल्यावोजाइ॥४५॥ यांविधिभूपवखानियोचलेसुमंतसुदौर॥ रामभवननीकेगएकिनेनवारिपौर॥४६॥ ॥चौपाई॥ ॥रामकंजद्रिगतेकल्यान॥ वेगचलोनृपग्रहकरयांन॥राजातवदेपनकोचहे॥चलोवेगकछुढीलनअहे॥४७॥ याविधिकह्योसुमंतसुजवही॥ रामचलेरथवैठसुतवही॥लक्ष्मणसंगसुलएवुलाइ॥मध्यदेवढीपहुचेआइ॥ ४८॥ गुरुसमीपनहिढीललगाई॥ देखतचलेगएरघुराई॥पितासमीपसुजाइभवानी॥वेगरामपदवंदनठानी॥४९॥ ॥दोहा॥ ॥रामअलिंगनहेतनृपउठेसुजवहुलसाइ॥वाहुपसारसुवीचहीगिरेमूरछाखाइ॥५०॥चौपाई॥ ॥हाहारामभाषमुखमाही॥ वेगभूपलीनेअंगमाही॥ भूपतिपेखमूरछाभारी॥ रोवनलगीसकलतहनारी॥ ५१॥ रोवनकैसोग्रहमैभयो॥सुनतवसिष्टतहांपुनगयो॥पूछतभयेरामसुततारण॥ कौनभयोभूपतिदुखकारण॥ ५२॥ याविधिरामपूछयोजवही॥ उत्तरदयोकैकईतवही॥तुमहींकारणहोसुनराम॥ तवअधीनकछुभूपतिकाम॥५३॥ पितादुःखरघुवरपरहरो॥ भूपतिकोवहुकारयकरो॥ सत्यप्रतिज्ञरामत

वतात ॥ सत्यप्रतिज्ञाकरविख्यात ॥ ५४ ॥ राजादोवरमो कोदए ॥ तुष्टचित्तजौमोपरभए ॥ तवअधीनदोनोतेअ हे ॥ तवभापतनृपलज्जागहे ॥ ५५ ॥ सत्यफासिमैभूपति परो ॥ रामतुमेतिनमोचनकरो ॥ पुत्रकहीजेसाचोसोइ ॥ पि तानरकतेराखेजोइ ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसैकैकईआप योभूपतिकोदुखमूल ॥ सुनतरामदुखउरभयोमनोहनेकरशू ल ॥ ५७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ दुखतरामकैकेयीआने ॥ मोप्रति किउइंउंवचनवखानें ॥ पिताहितजीवनपरहरों ॥ घोरहलाहल पीवनकरों ॥ ५८ ॥ सीयकुसल्याकरोंसुत्याग ॥ तजोंराज नहिकरोंखुराग ॥ विनभापेपितकारयकरे ॥ उत्तमपूतसुव हीउचरे ॥ ५९ ॥ भापेकरेपिताकोकारय ॥ मध्यमपूतकहेंवह आरय ॥ भापेकरेनकारयजोई ॥ पितापूतमलभाप्योसोई ॥ ॥ ६० ॥ यांतिकरोंसकलनृपकारय ॥ जोसोप्रतिभापेजगआर य ॥ सत्यकरोंगोशंकनमाने ॥ रामवचननहिदोइवपाने ॥ ६१ ॥ ॥ दोहा ॥ रामप्रतिज्ञायांहिविधिसुनीकैकईकांन ॥ उमाहर पउरबैठकैलागीकरनवखान ॥ ६२ ॥ कैकेयीउवाच ॥ रामसु तरेतिलकहितकरेइकत्रसुभार ॥ तिनहीकरअवटीकीये भरत सुपूतहमार ॥ ६३ ॥ एकसुयहवरजानियेदूजोसुननिरधार ॥ तु मवनजावोवेगअवचीरवसनजटधार ॥ ६४ ॥ पितुआइससि रपरधरोचौदांवरपसुआहि ॥ वनोवासतनुमैधरोमुनिभोज नमुखखाहि ॥ ६५ ॥ यहीकाजहैपिताकोकरोरामउरमान ॥ राजाउरलज्जावढीकरेनतोहिवपान ॥ ६६ ॥ श्रीरामउवाच ॥

१ विष २ सज्जन ३ सामर्थी ४ अभिशेषकरिये

दोहा ॥ भरतलएसभराजकोमैंजावोंवनमांहि ॥ परराजाभा
प्रेनहींकारणजांनोनाहिं ॥ ६७ ॥ सुनतरामकेवचनकोदश
रथनैनउघार ॥ चंद्रवदनद्रिगकंजसेठाढेरामनिहार ॥ ६८ ॥
दुखीसुदुःखतवचनतवभूपतिकीनवपान ॥ मैनारीवशिभ्रांत
सुतउनमारगगतिमान ॥ ६९ ॥ सिखलमेपगडारकैराजक
रोपुरमाहि ॥ मोकोझूठसुनाछुहेतोकोपापसुनांहि ॥ ७० ॥
याविधिभूपवखानियोउरमैदुखसंताप ॥ तमरिदेअतिहोगयो
लागोकर्नविलाप ॥ ७१ ॥ हाइरामहानाथउदारे ॥ हामेरेसु
तप्राणनप्यारे ॥ मोकोत्यागघोरवनमांही ॥ जावनकिंचाहो
मनमाही ॥ ७२ ॥ याविधिभापरामगललाए ॥ राजारोइ
नैनजलजाए ॥ निजपाननकररामउदारे ॥ भूपतिकेद्रिगनीर
निवारे ॥ ७३ ॥ नयकोविदसुतधीरजधरयो ॥ भूपतिकोआ
श्वासनकरयो ॥ किउनृपदुखउरभयोउदारे ॥ राजकरेंगेअनु
जहमारे ॥ ७४ ॥ तेरोवचनपालवनमाही ॥ मैआवोंवहुरो
पुरमाही ॥ राजकोटिगुणसुखमनमाही ॥ राजनहोइसुमैव
नमाही ॥ ७५ ॥ तेरोसत्यपालतहँकरें ॥ देवकाजसभयावि
धिसरें ॥ मातकैकईदैवनवास ॥ मेरोहैवहुगुणनप्रकास ॥
॥ ७६ ॥ अवहीवनजांनोमैचहों ॥ ढीलनहीउरअंतरगहों ॥
तिलकहेतजेआनेभार ॥ तेसभधरोसुभवनमझार ॥ ७७ ॥
॥ **दोहा** ॥ ॥ जनकनंदिनीतोपकरमाताकोआश्वास ॥ तवपद
पंकजवंदकैमैजावोंवनवास ॥ ७८ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ यावि
धिरामउचारणकीनो ॥ भूपतिकोपरिक्रमादीनो ॥ मातकुसल्या

१ नीतिनिपुण. २ समाधान ३ मेरेकू. ४ जानेकू.

देखनहेत॥आवतभयोसुधर्मनिकेत॥७९॥शंकरछंद॥कौसल्ययाहरिपूजहैउररामकारयधार॥ धनब्राह्मणनबहुदानदे पुनहोमकीनअपार॥करमनइकाग्रसुआपनोउरविष्णुध्यानउदार॥तिननैनदोनोमीचकैमुखमौनलीनोधार॥८०॥हैसुअंतरसर्वकेपुनएकरूपअनूप॥ घनचित्प्रकाशअनंदसतपुनसर्वअधिकस्वरूप ॥ याविधिअनूपस्वरूपजोहरिधारयोउरधाम ॥ नैनदोनोंहैंमिलेतिननाहिपेखेराम॥८१॥इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेतृतीयोऽध्यायः॥३॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥शंकरछंद॥ ॥पिखसुमित्रारामकोद्रिगकंजशोभअपार॥कौसल्ययाकोभापयोपिखरामखरेउदार ॥ सुनरामनामकुसल्ययाद्रिगलएतांहिउघार ॥ विशालनैनसुरामकोपिखगोदलीनबिठार॥१॥ ॥गीयामालतीछंद ॥ ॥शिरचूंमकंठलगाइकेसुतजोचहोसोलीजीए ॥ उपवासकीउरभूखहैमिष्टान्नभोजनकीजीये॥सुनरामआपवखानयोनहिकालभोजनकोअहे॥अववेगमाइसुमैचलोंमैवासदंडकवनगहे॥२॥कैकईकोवरदानदेपुनसत्यवादीभूपती॥ भरतकोदियराजपुरकोममअरण्यमहामती॥वरपचौदांवासकैमुनिसंगनीकेजीजीये॥पुनवेगआवोंमाइमैरिदचिंतरंचनकीजिये॥३॥ ॥सवैया॥ ॥सुनरामेकिबातसुदुःखवन्योतनुमूर्छितजाइपरीधरमांही ॥ उठिफेरसुरामहिबातकहीमनडूबततांदुखसागरमांही ॥वनंजाहुसुजोतुमरामवलीसुतसंगचलोंतवमैवनमांही ॥ विछरीतुमते

१ जल्दी

सुतरामसुनोक्षिनआधनजीवसकोंजगमाही ॥ ४ ॥ ॥ गी यामालतीछंद ॥ ॥ जिमगऊबालकपूततजनहिऔरठौरें सोरहे ॥ तिमरामतोहिनतजोंमैअतिप्राणप्यारोमोअहे ॥ प्रस न्नभूपतिजोभएदेभरतराजसिंहासनं ॥ किसहेतुभूपतिआप हैपुनरामतववनवासनं ॥ ५ ॥ कैकइकोवरदानदेसवस्वदवे ताहिको ॥ तेंकैकइअरभूपकोअपराधकीनोनाहिको ॥ पिता जिमगुरुरामहैतिममातअधिकपछानिये ॥ पितातेवनवास आप्योमैहटावोंमानिये ॥ ६ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ ममवाक्यउलं घनकैवनकोतुमजाहुसुभूपतिकेवचमाने ॥ तवमैयमकेघरजा उंअवैसुनरामकरोंनिजप्राणनहाने ॥ लक्ष्मनसुनेइहवाक्य जवैउरकोपवढ्योजनुआगसमाने ॥ जनुलोकसुतीनजलाव तहैइमपेखतवैतिनवैनवखाने ॥ ७ ॥ ॥ **लक्ष्मणउवाच** ॥ हैउन्मत्तसुनारिअधीनसुभ्रांतमहांउरभूपनिहारों ॥ वांधति नेघरराखतहोंसुनरामवडीपगसिखलडारों ॥ वंधुसमेतसमा तुलमैभरतेंपथिआवतवाननमारों ॥ देखहिंमेवलदेवसभैसभ लोकनकोक्षिनभीतरजारों ॥ ८ ॥ ॥ **गीयामालतीछंद** ॥ रामतूंकरतिलकभालसुवैठिराजसिंहासनं ॥ विघ्नकारीलो कमैकरचापकरहोंसुनाशनं ॥ इमकहेलक्ष्मणकोपकैतवराम कंठलगाइयो ॥ उमाताशिरचूंमकैतवरामआपसुनाइयो ॥ ९ ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ **चौपाई** ॥ ॥ रघुसरदूलभुजावलधा री ॥ तूंमेरोअतिसैहितकारी ॥ तववलपिखोंसकलमनमाही ॥ लक्ष्मणसुनोसमेअविनाही ॥ १० ॥ विश्वशरीरराजपुनजो

१ सर्वभत. २ रघुकुलविषेशार्दूलकहिंयेसिंह.

ई ॥ जोलक्ष्मणयहसाचोहोई ॥ तौतांहितसुयतनुमारा ॥ सफ
लहोइयाजगतमंझारा ॥ ११ ॥ मेघनमांहिसुविजलीजैसे ॥
भोगसभंजगचंचलतैसे ॥ तपतलोहजलविंदुसुजैसी ॥ आ
युपिखोक्षिणभंगुरतैसी ॥ १२ ॥ जिममेंडुककाअहिमुखग
हे ॥ वहिअतिमूरखदर्शनलहे ॥ कालसर्पतिमलोकनग्रा
से ॥ मूरखकरेभोगउरआसे ॥ १३ ॥ जाकरमनतेअतिदुख
पावे ॥ तनुसुखहितवैकरमकमावे ॥ सोतनुआतमतेअति
न्यारो ॥ भोगसुकिहविधिहोइविचारो ॥ १४ ॥ मातपिताभा
ईसुतदारा ॥ ज्ञासंगकर्मसुकरेविकारा ॥ प्रपोजंतुजिउंनदी
यनकोठ ॥ तिउंक्षिणचंचलसंगमठाठ ॥ १५ ॥ पद्माछाया
जिउंअतिचला ॥ तरुणअवस्थाउर्मीजला ॥ स्वप्नतुल्यइस्त्री
सुखअहे ॥ तद्यपिनरअभिमानहिंगहे ॥ १६ ॥ स्वप्नतुल्यसभय
हसंसारा ॥ सदारोगदुखजाहिमंझारा ॥ गंधर्वनगरकेसमज
गगरे ॥ मूरखतांअनुवर्त्तनकरे ॥ १७ ॥ रविकीगतिआगती
अधीना ॥ आयूहोइनिरंतरक्षीना ॥ जरामरणऔरनिकोदे
खे ॥ मूरखअपनोनाहिसुलेखे ॥ १८ ॥ सोईदिनअरुसोईरात ॥
मूढधरेमनमेंविख्यात ॥ भोगनकोअनुधावनकरे ॥ कालवेग
कीसुद्धिनपरे ॥ १९ ॥ काचेघटकोनीरसुजैसे ॥ आयूजाइसुक्षि
णक्षिणतैसे ॥ सफलवानजिउंकरेप्रहारा ॥ तिउंतनुरोगसुकरें
संहारा ॥ २० ॥ बाघनजिउंजगजराडरावे ॥ समोनिहारमृत्यु
संगआवे ॥ तुचपुनमासहाडअरुविष्टा ॥ मूत्ररेतरक्तजिहनि
ष्टा ॥ २१ ॥ ऐसेतनुमेंकरअभिमान ॥ मैराजायौंलेवेमान ॥

१ मक्षिकाकों. २ पानीकीशाला. (पर्व) मेंमाबमाणी. ४ नदीप्रवाहमेंमासकाष्ट:

अंतसमेतनुविशाहोई ॥ केभस्मीकृमिआदिकसोई ॥ २२ ॥ औविकारिपरिणामीजोई ॥ आत्मादेहकदापिनहोई ॥ लक्ष्मणजोतनुआतममान ॥ लोकदहनकोपहेभवान ॥ २३ ॥ दुःख अहेंजगभीतरजेते ॥ तनुअभिमानहोंहिसभतेते ॥ देहाहंयह बुद्धिसुजोई ॥ नामअविद्याभाखीसोई ॥ २४ ॥ नाहंदेहश्चिदात्माहैये ॥ याविधिकीमतिविद्याकैये ॥ अविद्याकरहोवेसंसारा ॥ विद्यातांहिसुदएनिवारा ॥ २५ ॥ तांतेभ्रातमोक्षउरधरो ॥ विद्याभ्यासयत्नयहुकरो ॥ कामक्रोधादिकहैंजेते ॥ मोक्षपंथकेवैरीतेते ॥ २६ ॥ शत्रूसूदनतांहिनिवारो ॥ मेरेवचनभलेउरधारो ॥ तिनमैक्रोधअहेजगजोई ॥ मोक्षविनाशकएकोसोई ॥ २७ ॥ क्रोधसंगजगजोनरकरे ॥ सौत्हदभ्राततातसंहरे ॥ क्रोधसूलमनतापपछानो ॥ क्रोधमूलजगबंधनजानो ॥ २८ ॥ क्रोधकरैनिजधर्मसुघात ॥ तांतेक्रोधतजोममभ्रात ॥ क्रोधवडोजगशत्रुसुहैए ॥ वैतरुणीनदित्रिष्णापैए ॥ २९ ॥ संतोषनामनंदनवनजानों ॥ शांतिसुकामधेनुपहिचानों ॥ तांते शांतिभजोउरमाही ॥ शत्रूतेरोकोइकनांही ॥ ३० ॥ प्रज्ञातनुमनइंद्रियप्रान ॥ आपसुइनतेभिन्नपछान ॥ स्वयंज्योतिअतिशुद्धसुआहि ॥ हीनविकारआकृतिनाहिं ॥ ३१ ॥ तनुइंद्रियपुनप्राणनियारे ॥ जौलौनहिंआत्मनिरधारे ॥ तौलौपावेदुःख अपारा ॥ माहिसुजगतमरेवहुवारा ॥ ३२ ॥ तांतेप्राणादिकतेंन्यारो ॥ लक्ष्मणउरआत्मनिरधारो ॥ वाहिरकरोसर्वव्यवहारे ॥ खेदनहोइसुरंचतुमारे ॥ ३३ ॥ प्रारब्धंसोभोगोभ्रात ॥ सु

१ तुम. २ बुद्धि.

खदुखजोजगमैविख्यात॥ कार्यसुकरोअहेजगजोई ॥ लेपन तोकोरंचकहोई॥३४॥ बाहिरकरकर्तत्वविकार॥ अंतरशुद्धस्वभावनिहार॥ कर्मअहेंजगभीतरजेई॥ तोमैलेपकरेंनहितेई॥३५॥ मेरोकथ्योज्ञानयहसार॥ तुमलक्ष्मणउरअंतरधार॥ जगतदुःखकीपीडाजोई॥ तोमैनाहिकदाचितहोई॥ ३६॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गिरिजायांविधिरामजीकथ्योभ्रातप्रतिज्ञान॥ पुनमाताप्रतिभाषयोसुनोसकलदैकान॥३७॥ ॥ चौपाई॥ मातायहमैभाष्योजोई ॥ तुमउरअंतरधारोसोई ॥ ममआगमनप्रतीक्षनकरो॥ दुःखसकलउरकेपरहरो॥३८॥ कर्मपंथमैआएजेई॥ सदाइकत्ररहेंनहितेई॥ नदीप्रवाहयथासरभारे॥ कवीमिलेकविजाहनिआरे॥३९॥ चौदांवर्षकालहैजेतो ॥ आधेक्षिणजिउंजावेतेतो॥ दुःखसकलउरकेपरहरो॥ मायमोहिअनुमोदनधरो॥४०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यांविधिकरोसुमातेअवमोपरकरुणाधार॥ तौवनवाससुमोहिकोहोवेगोसुखकार॥४१॥ ॥ सवैया॥ ॥ इमरामउचारउमामुखतेतवदंडप्रणामकरीधरमांही॥ चिरकालपरेधरऊपरवैअरमातकिपादगहेकरमांहीं॥ तवमाइउठाइसुगोदलएशिरचूमतनीरवहेद्रिगमांहीं॥ वनरामचलेपिखमाततवैसुअसीसकहेअपनेमुखमांहीं॥४२॥ सुरसोध्यकहैंजिनकोजगमैअरुहैंपितरांभवमैविखिआता॥पुनऔरमहारिपिपूषभयोयमऔवरुणापुनजेवरुधाता॥ दिशिमित्रअदित्यक्षिपादिनसंवतमाससमेतसुइंद्रविधाता॥ सुततेवननमैकलिआनकरेंइमभाषतहैरघुवीरकिमाता।

१ साध्यनामकदेवा २ पितृदेव. ३ पूषानामकदेव. ४ अष्टवसु

॥४३॥ वृत्रासुरमारनकोजवहीगजराजचढेसुरराजपधारे॥ सुरमंगलजोहिततांहिकरेवहमंगलहेसुतहोइतुमारे॥ सुसुधारसलैनचलेविनतासुत सीसजवैविनतापगधारे॥ विनतातव मंगलजोइकरेवहमंगलतेरघुवीरपियारे ॥ ४४॥ श्रुतिसिम्टति वेदसुविद्यासभैपुनवेदनकेऋपिअंगउचारे ॥ ऋपिदेवसुमंत्र अथर्वणजूसभहीयहिरक्षकहोंहितुमारे ॥ ऋपिसातसुनारद सिद्धमहासुरचारसशक्रसुसोमउदारे ॥ ग्रहऔरनक्षत्रसुदेव सभैवनमैसुतपालकहोहिंतिहारे॥४५॥सुमहाविपनागपिशाचवडेपुनराक्षसयक्षभयानकसारे॥गजसिंहवियाघर कोलव डे पुनकीटपतंगसुगेंडउचारे॥तरखा रिछदंसमहाविछूआअतिक्रूरसुभावसुजांहितिहारे॥ सभक्रूरसुभावतजेवनमैसुतते हितसोंमसुभावसवारे ॥ ४६ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥अंतरिक्षवासीहैंजेते॥ तकल्यानकरेंसुततेते ॥ भूतलऔरपतालनिवासी॥ स्वस्तिकरेतुसकोसुखरासी ॥४७॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ ब्रह्माविष्णु महेसजेदेवनमैपरधान ॥ सोएवैठेपथचलेकरेंसुतवकल्यान ॥४८॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ सदासुखीरहोवनेनपूतदुःखकोलहो॥अरातिपुंजजीतकैविभूतितेजकोगहो॥सकेतशंखदुंदभीवजाइफेरकैवेरो॥सुमाततातदासकेकलेशपुंजकोहरो॥४९॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इहभांतअसीसदईजननीतवरामचलेवनसीसनिवाए॥ तवरोइसुमातलगागलमैशिरचूमसुअक्षतभाल लगाए ॥ इहरामअसीसपठेनरजोउठप्रातसमैमनप्रेमवढाए॥ कविसिंहगुलावसदासुखसोंतनअंतसमेंहरिकेपुरजाए॥

१ गरुड़. २ व्याघ्र. ३ वनसूकर. ४ गेंडा. ५ चराख. ६ समोदय. ७ सत्रु. ८ गह. ९ प्रवेश करो.

॥५०॥ ॥**चौपाई**॥ ॥ लक्ष्मणतांहिंसमैंरघुनाथे॥ करीप्र
णामजोरनिजहाथे॥ हरपनैनजलगदगदवानी॥रामचंद्रप्र
तिकह्योभवानी॥५१॥राममोहिउरसंशयजोई॥तुमकाट्यो
करुणाकरसोई ॥ मैसेवाहितचालोंसाथ ॥ आग्यादीजेमम
रघुनाथ॥५२॥ ॥**दोहा**॥ ॥मोहिअनुग्रहकीजीयेसंगच
लोंवडभाग॥नांतरअपनेप्राणजोदेवोंसनमुखत्याग॥५३॥
लक्ष्मणकोहठपेखकैरामकह्योचलवीर॥ सीताकेसमज्ञानको
वढुरगएरघुवीर॥५४॥ ॥**भुजंगप्रयातछंद**॥ ॥जवेरा
मआएतवेसीअजाने॥लयोहेमभांडेजलंआपताने ॥ भले
पादधोएपुनावैठआगे॥ पुछेसीयवातैंवडेभागजागे॥५४॥
कहानाथसेनाविनासेनआए॥शशीस्वेतछत्रंनहीसीसछाए॥
नहीवादवाजेभयोकौनहेतू ॥ नहीकीटसीसंकहाधर्मकेतू॥
॥५६॥वडोराजपायोभयोहर्पतोकों ॥ चलेवेगआएकहोस
र्वमोकों ॥ हसेरामवोलेकहोंसीयतोकों॥दयोदंडकारंण्यको
राजमोकों॥ महासत्यवादीसुराजादयालं ॥ दयोराजजो
ईकरोंजाइपालं ॥५७॥ अवैवेगजाऊंवनंसीयप्यारी ॥ क
हीवातसाचीनझूठीहमारी ॥ जहांमातमेरीरहेतातराजा ॥त
हांनीतठाढीरहांसेवकाजा॥५८॥ ॥**शंकरछंद**॥ ॥
सुनरामकीयहवातसीताभईउरमैभीत ॥ वोलीतवैपुनआप
सीताव्याकुलाअतिचीत ॥ किंहहेतुतेवनवासभूपतिदयोआ
पउदार ॥ इहराममोहिवखानियेमनतनभयोहमार ॥५९॥
तवरामआपवखानयोसुनजानकीदेकान॥संतुष्टभूपतकैकई

वरदेनकीनवखान ॥ भरतकोदयोराजभूपतिमोहिकोवनवास॥ वरपचौदहमैंवसोंवनसूखसोंमुनिपास॥६०॥ कैकईवरमांगिओदीयोसत्यवादीभूप ॥ मैजांउंवेगसुभामिनीनहिकरोविघनअनूप ॥ सुनरामकेयहवाक्यसीताप्रेमकेवशिहोइ॥ मैजांउआगेरामजीतुमआउपाछेसोइ ॥ ६१॥ योग्यनावनजावनोतवमोविनासुनराम ॥ सुप्रसन्नमुखरघुनाथसीताकहेकरुणाधाम॥ कैसेलिजावोंतववनंसुनजानकीदैकान॥बहुव्यालजांवनमाहिफूकेंमृगाव्याकुलजान॥६२॥ अतिघोरराक्षसजाहिमेपुनिखांहिमानुपनीत॥ सिंहव्याघ्रसुसूकरावहुफिरेंअतिनिरभीत ॥ कटुअम्लफूलफलादिकातहँवनेभोजनकाज ॥ आपूपविंजननामिलेजोदेपियेघरसाज॥ ६३॥ मिलेकवहूंनामिलेफलमूलभापेजोइ॥ अतिघोरवनभैदायकोनहिराहपेखेकोइ॥ सरकरापुनकंटकागजदंशजांहिघनेर॥ गुहागव्हरेहघनीसमरातिज़हांअंधेरा॥६४॥इहभांतहैतहदुखघनाजिहदंडकावननाम ॥ पाढकैतहजावनोतनुसीतसिरपैघाम॥ राक्षसनकोहेरकैतूंतजेंसीतेप्रान ॥ घरवीचरहुतूंभामनीउरकरोमेरोमान॥६५॥ मैवेगआवोंसुंदरीउरशंकरंचनधार॥ पुनवेगपेखोमोहिकोइमरांमकीनउचार॥ सुनरांमकीयहवातसीताभयोदुखउरमांहि॥ कछुकोपकैमुखतांफुरेपुनिकहैसीतानाहि॥६६॥ किउंराममोकोंत्यागहैमैधरमपत्नीदेव॥ सुपतिव्रतानिरदोपमैआनंन्यकरतीसेव॥धर्मज्ञतूंजगभाखियेंपुनदयातोहिअपार॥ सुसमीपतेरेमैरहोवनकोकरेअपकार॥६७॥फ

१ भोजन

लमूलजोभोजनवनेतुमखाइछोडोजोइ॥ तिहखाइकेविचरों सुखीपुनमेसुधासमसोइ॥तवसाथविचरोंराममैकुशकाशकं टकजोइ॥समफूलकेसुविछावनेममहोंहिंगेवनसोइ॥६८॥

सवैया॥ ॥रामकलेशनदेंउतुमैतवकारयमैकरहोंवनमां हीं ॥ औरसुनोजववालहुतीइकज्योतशिआइपिताघरमां हीं॥रामकह्योममपेखतिनेंपतिसंगवसेंकवहींवनमांही॥वा क्यसुब्राह्मणहोइतवैतुमसंगचलोंजबमैवनमांही॥६९॥ क छुऔरकहोंममसंगगहोसुनकैमनभीतरआइजवी॥ सुरमा यणजेवहुवारसुनेंतिनब्राह्मणकोतुमपूछअवी॥ द्विजराजक होपुरऔधहुंतेवनरामगएविनसीयकवी॥ द्विजराजवखान हिंजोमुखतेतुमरामत्यागहुमोहितवी॥ ७०॥ तवसंगचलों सुनरामअवैतवकारयकीवननीतसहाई॥जवमोतजरामसु जाहुचलेतवप्राणदियोंछिनमाहिवहाई॥इहभांतहठीउरसीय जवैतवजानलयोमनमैरघुराई॥ममसंगचलोतवरामकह्यो अवकाजवनेनहिढीललगाई॥७१॥ ॥**चौपाई**॥ हारअ भरणअहेंतवजेते॥वेगअरुंधतिदीजेतेते॥ ब्राह्मणकोदेधनहुं अपार॥हमचालेंअबविपिनमझार॥७२॥ लक्ष्मणतुमअबव गसुजावो॥ भक्तिसहिततुमद्विजवरल्यावो॥ अपनोधनअ वदेवेंताहिं॥ हमसोचलेंअबीवनमांहिं॥७३॥ ॥**दोहा**॥ यांविधिरामहिजौकह्योतौलक्ष्मणतिहिंकाल॥ भक्तिसमेतबु लाइकैआनेविप्रविशाल॥ ७४॥ ॥**चौपाई**॥ गोशतवं दधनवहुअंवर॥ दिव्यअभरणहुतेजेमंदर॥ कुटंवीशीलवंत

१ वनम

द्विजजेतू ॥ तिन्नकोंदयोसुरघुकुलकेतू ॥ ७५ ॥ मुख्यअभरण आंहितिहिंजेई ॥ दएअरुंधतीसीतातेई ॥ राममातसेवकजे आंहिं ॥ रामदयोधनबहुविधितांहिं ॥ ७६ ॥ ॥ **शंकरछंद** आपनेपुनसेवकनधनदयोरामअपार ॥ पुरवासिऔपुनदेश केजेहुतेविप्रहजार ॥ देतांहिकोधनबहुविधाउरप्रीतिचित्तउ दास ॥ पुरराजरामसुत्यागकैपुनेलयोवैवनवास ॥ ७७ ॥ लक्ष्म णतवैनिजमातकोकौसल्लिआढिगंआणि ॥ समर्पमातातांहि कोपुनचापलैनिजपाणि ॥ आइरामसुसनमुखंपुनरख्योठाढो होइ ॥ रामसीतालक्ष्मणोनृपधामचालेसोइ ॥ ७८ ॥ ॥ **छपैछंद** सानुजरामसुसीयचलेनृपपंथमैसोहैं ॥ सभलोकनकीओररा मपुनसानंदजोहैं ॥ श्यामवरणतनुकामकोटिद्युतिअतिसुखदा ई ॥ हनेअंधेरोकांतिकरेगतिमंदसुहाई ॥ सुपादन्यासजगपाव नोपदपदमैरघुवरकरे ॥ इहभांतभवानीरामजीसतपितमंदरमै वरे ॥ ७९ ॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवा देअयोध्याकांडेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ **श्रीम हादेवउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सानुजसीयसमेतहरिआवत पिखपथमाहि[1] ॥ बोलेनागर[2]परस्परमनमैअतिविस्माहिं ॥ ॥ १ ॥ कैकेयीवरदानसुनभएदुखतसभलोइ[3] ॥ सत्यसंधभूप तिभनेराजगंमैसभकोइ ॥ २ ॥ इस्त्रीहततज्योजिनेरामसुप्यारो कौर ॥ सत्यसंधभूपतिनहीभयोकामवशबौर ॥ ३ ॥ कथंकक ईदुष्टनेरामदयोवनवास ॥ क्रूरकर्मअतिमूढधीकरेसकेलसु खनाश ॥ ४ ॥ हेजनईहांनिहिंवसेंचलेंअबवनमांहिं ॥ रामसुसी

१ पास. २ नगरकलोक. ३ लोक.

तासानुजोजहँजानकीचांहिं ॥५॥ ॥सवैया॥ ॥देखहुसी
यचलेपदसोंकवहूंनहिलोकननैननिहारी ॥ रामचलेपदसोंप
थिमैअर्जुनागजवाजिनकीअसवारी॥जावतरामपिखोद्रिग
कैतनुकोटिमनोजनकीछविवारी॥ जांइनकोवनवासदयोव
हहैजगक्रूरमहानृपनारी ॥ ६॥ ॥चौपाई॥ ॥कैकईनाम
राक्षसीआहि॥सर्वविनाशकीयेपुनतांहि॥ सीतापदसोंचलै
कुमारी॥ रामपेखदुखहोसीभारी॥ ७ ॥ वलवानविधिहैजग
माही ॥ पुंप्रयत्नकोवलकछुनाही ॥ यांविधिदुखव्याकुलजन
भए॥ वामदेवतवबैनअलए॥८॥ रामसीयलक्ष्मणपथिपेख॥
मततुमशोचकरोसुविशेख॥ रामपिखोतुमपथिमैजोई ॥ आ
दिनरायणविष्णुसुसोई ॥ ९ ॥ जनकनंदनीलक्ष्मीआहि॥
योगमायआपेंरिपितांहि॥श्रीपतिकोअनुगामीजोई॥ शेषपे
छानोलक्ष्मणसोई ॥१०॥ रामसुमायागुणअनुसार॥ भासत
हैनानाआकार॥रजगुणयुक्तरामविधिभए॥ निखिलजगतपु
नजांनिरमए॥११॥सतगुणसहितविष्णुतनुधारे॥तीनलोकभु
जवलप्रतिपारे ॥ तमसंयुक्तरुद्रवपुधर॥ अंतसमेसभजग
संहरे॥१२॥ ॥सवैया॥ ॥ मनुसूरयकोसुतसेवकथोतिंहँ
आपदपेखसुमीनभए॥ तिनपालनरामसुकीनतवीपरलैजल
नावचढाइलए॥ सुरनीरधपूरवजोमथएगिरिमंदरडूवपताल
गए॥गिरिपीठसुधारलयोतवहीइनकूरमरूपतवैसुकए॥१३॥
धरणीजवडूवपतालगईइनसूकररूपसुरामसवारे॥ रघुनंदन
तोलनकीनतवीधरणीपुनरोपसुदाढकिनारे॥नरसिंहभयेभव

पूरवएप्रहलाददएवरकैप्रतिपारे॥ सभलोकहकंटकराक्षसजो जगरामवहीनखसाथविदारे॥ १४॥सुतराजहरेपिखआदिति जोअतिदीनभईहरियाचनकीनो ॥ बनवामनराजलयेबलते तिंहिंकेसुतकोइनफेरसुदीनो॥ जबबाहुजनीचभएजगमैधर णीपरभारकऱ्योतिनपीनो ॥ भृगुवंशविपेतवरामजएधरबा हुजभारकऱ्योसभक्षीनो॥ १५॥ ॥ शंकरछंद॥ ॥ वही इश्वररामजीअवभयेनरअवतार॥रावणादिककोटिराक्षसह नेंगेवलधार॥ मानुष्यकैमरणातिसेविधिआपकीनवखान॥ यांतेभयेहरिआपमानुपनासमर्थसुआन॥ १६॥ भूपदशर थकीनतपसाराधयोहरिराइ ॥ पुत्रकीइछाकरीहरिभयोपूत सुआइ॥ सोइविष्णुसुरामजीदशकंधकेवधकाज॥ संगल क्ष्मणजांहिंगेवनलोकपेखोआज॥ १७॥ विष्णुमायाजान कीकरपालवहुरसंहार॥ राजकैकईकारणोवननाहिंकीनवि चार॥ कालपूरवनारदोकहिगयोआपविचार॥ वनजाइके अवरामजीतुमहरोधरणीभार॥ १८॥ रामआपवखानयोव नजांउप्रातसुकाल॥ रामहितचितातजोतुमसुनोलोकसुवा ल॥ रामरामसुजेजपेंपुनलोकयाजगमाहि॥ तिनजन्ममृत्यु भयादिकोजगकदेहोवेनाहि॥ १९॥ कैसेपरातमरामकोपुनदुः खशंकाहोइ॥ रामनामसुमुक्तिदेवेऔरकलूनकोइ॥ मायाम नुप्यस्वरूपकैविचरेसुलोकनमांहिं॥ सुविडंवहैसभलोककोन हिजानहैकोतांहि॥ २०॥ सात्विकोंकेभजनहितदशकंधकेवध काज॥ भूपवांछितदैनहितइनलयोमानुपसाज॥ इहभांतभाप

१ क्षत्रिय २ परशुराम ३ नटकीठगताहै ४ भक्तजनोंके

सुमौनलीनीवामदेवकपीश॥ सुनविप्रकेमुखकथालोकनरा
मजात्यांईश॥ २१॥ ॥दोहा॥ ॥जवलोकनसंशयगयोचितवें
हरिउरराम ॥ तवेमुनीश्वरऔरकछुभापेकरुणाधाम॥ २२॥
रहेंससुसीतारामकाजोचिनवेनरकोइ॥ रामभक्तितिनकोस
दाज्ञानसहितपुनहोइ ॥ २३॥ तुमराघवकेपरमप्रियपरमगो
प्यग्रहजान ॥ राखोपरमदुराइकैकोजोनाहिंवपान ॥ २४॥
इहिविधितहांवपानकैगयेमुनीश्वरधाम॥ लोकननेपुनतांसमे
लपेपरातमराम ॥ २५॥ ॥सवैया॥ ॥ तवरामगयेपितुके
निजमंदरताहितहांकिनजातहटाये ॥ वहिसानुजसीयसमेत
तहांढिगजायविमातकिवैनअलाये ॥ वनवासकह्योहमको
जननीतहँजावनकेहितहैंहमआये ॥ अवभूपकहेअपनेमुख
तेहमजांहिंशितावनढीलसहाये॥ २६॥ ॥दोहा॥ ॥ गिर
जायाविधिरामजीजवैसुकीनवखान ॥ तवैकैकईवेगकैउठी
हरपउरमान॥ २७॥ ॥सवैया॥ ॥सानुजरामसुचीरद
येतिनजानकिकोपुनचीरफराये ॥ रामपटंवरतारतवैवनचीं
रभलीविधिसोंतनलाये॥ भ्रातकरीलघुरीतवहैनहिजानकि
जानतरीतसुकाये॥ राममुखांवुजओरपिखेकरचीरमहांउर
माहिलजाये ॥ २८ ॥ रामलयेकरचीरवहीधरजानकीअंग
नआपमुरारी॥ देखसुचीरधरेतिनकेपुनरोइउठीसगरीनृपना
री॥वैसुनआपवसिष्टतवैपुनकैकईसोंरुपवाक्यउचारी॥ दुष्ट
वनवासगुरामदयेकिमसीयकुदेवतचीरसँवारी ॥ २९॥ प
तिसंगपतिव्रतधारचलेसियआपवडेजवप्रेमवढाये॥ तवधा

१ एकांतमें २ उतार.

रदिवांवरभूषणसोंअतिभूषितहीवनभीतरजाये ॥ पतिसंग फिरेवनभीतरएगमकाननकेसभदूरमिटाये॥ इमभापवसिष्ट सुमौनगहीनृपआंपतवैसुसुमंतवुलाये॥३०॥ रथआनसुमं तसुरोइकहीचढजाँहिंवनेवनजीवनप्यारे ॥ इहभाँतिउचार सुरामपिखेपुनसीयसुमित्रजओरनिहारे॥ द्रिगनीरवहेअति रोवतहैदुखभारभयोसुगिरेधरभारे ॥ रथसीयचढीपतिराम पिखेकरजोरसुभूपतिसीयजुहारे॥३१॥**शंकरछंद**॥॥ पुन रामकरीप्रदक्षिणाभूपतिचढेरथमाँहिं ॥ लक्ष्मणदोऊधनुख ङ्गतूणीधारनिजभुजमाँहिं ॥ रथवैठकपुनवोलिओसुनसार थीमनमाँहिं ॥ वेगरथकोहाँकीयेअवढीलकीजेनाँहिं॥३२॥ ॥ **सवैया**॥ ॥रथठाँढकरोरथठाँढकरोइमभूपतिआपसुमं तउचारे ॥ सुचलाइचलाइसुरामकरीरथताँहिंहकेअतिसेह ठधारे॥कछुदूरगयेहरिजोपुरितेनृपखाइतवारगिरेभुविभारे॥ पुरिवालकवृद्धयुवाद्विजसत्तमवेरथकेपुनसंगसिधारे॥३३॥ ॥ ॥**गीयामालतीछंद**॥ ॥तिष्ठतिष्ठसुरामजीमुखभापते जनजांवहीं॥रथवेगरामचलाइओनहिंताँहिंसंगतिपावहीं॥ राज्ञासुवहुचिररोइकैपुनसेवकिनकोयोंकही॥ राममातकुस ल्याघरलेचलोमोकोंसही॥३४॥ कछुकालमेरोजीवनोतहँ होइप्राणउद्यानियो॥ अवनाँजियोंचिरकालमेंविनरामयाँज गजाँनियो ॥ जववरेभूपतिमंदिरेधरगिरेव्याकुलव्हैसही ॥ चिरकालसंज्ञापाइकैवैठमहीवोलेनही॥३५॥ ॥**दोहा**॥॥ याँविधिभूपतिधरपरेव्याकुलउरपछुताँहिं ॥ रामकथागिरि

१ दिव्यांवर. ५ शोक. ३ मूर्च्छा.

जासुनोंसुनतपापमिटजाँहिं ॥ ३६ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तब रामगयेतमसातटमैंसुखसंगवसेतरुकीपरिछाँहीं ॥ जलपान करेनहिंअन्नगहेधरसोइरहेहरिसीयसमाँहीं ॥ लघुभ्रातसुमंतसमेततहाँनिशिपालकरीधनुलैकरमाँहीं ॥ पुरिलोकसभेढिग रामहिंकीनिशिवासकीयोपुनजाइतहाँहीं ॥ ३७ ॥ रामलिजावहिंगेपुरिमैंनहिंजाउतवैहमहूँवनजाँवें ॥ लोकनकीमतियोंलखकैरघुवीरमहाँउरमेंविसमाँवें ॥ नाँहिंचलोंजवमेंपुरिमैंतव लोकसभेउरमैंदुखपाँवें ॥ रामसुमंतवुलाइकहीरथआनसुमंतअवैवनजाँवें ॥ ३८ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सोयेजनसभहेरकै रामसुआज्ञादीन ॥ जोड्योतवैंतुरंगसिंउँरथसुमंतअतिदीन ॥ ३९ ॥ रामसीयलक्ष्मणचढेवेगचलायोसोइ ॥ लोकनछलवनकोगयेअवधप्रतीकछुहोइ ॥ ४० ॥ प्रातउठेजन दुःखउररामनिहारेनाँहिं ॥ रथनेमीमारगपिखतगयेसुपुरिकेमाँहिं ॥ ४१ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इतलोकचिंतारतरामसियाउतस्यंदनवेगसुमंतचलाये ॥ वडदेशनिहारतरामसियावलजाइकवीतटगंगसुआये ॥ जगपावनगंगनिहारतहींहरिरामसियानिंजशीशनिवाये ॥ मनसानंदतीरनिवासकरेजलपावनकैसगलेपुननाये ॥ ४२ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ गंगाकेतटशिंशेपातरुतलकीननिवास ॥ रामलखनसीताभलेंश्रिंगवेरकेपास ॥ ४३ ॥ आयेरामसुगुहसुनेलोकनकह्योसुजाइ ॥ सखासुस्वामीजानकैढिगआयोगुहधाइ ॥ ४४ ॥ **चौपाई** ॥ भक्तिसहितउरमैंउमगायो ॥ फलमूलादिउपांइनल्यायो ॥

१ चिंतत. २ शंशाम ३ भेट.

आगेआनधरीगुहराम ॥ बहुरकरीतिहंदंडप्रणाम ॥ ४५ ॥
॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ उठाइरामसुवेगहीकरप्रेमनि
जगललाइयो ॥ रामकुशलसुपूछयोगुहहाथजोरसुनाइयो॥
मैंधन्यमेरोजन्मआजनिषादलोकसुपावनो ॥ भयोपरमानं
दतेरअंगसंगसुहावनो ॥४६॥ निषादराजसुरामजीतवदास
कोउरजानिये॥ इहआहितेरोराससजीहमपालवालसुमानिये॥
नगरमैंचलदेवशंकरदासकोग्रहपावनं ॥ फलफूललीजेराम
जीतवअर्थराखेभावनं ॥ ४७॥ मैंदासतेरोरामजीभगवान
किरपाकीजीये ॥ इहठौरकरोसुवासनीकेनीरपावनपीजीये॥
रामतांकोभाषियोममसखेवचनसुनीजिये ॥ प्रसंन्नअतिसै
मैंभयोकछुकहोंबातसुकीजिये ॥४८॥ ॥ शंकरछंद॥ ॥ ग्रह
नगरमाहिनमैंवरोंसोवरषचौदहजान॥फलफूलपांवोंनाकदी
जोऔरदेवैआन ॥ अतिसखातूंममवल्लभोतवराजआहिसु
जोइ ॥ बहुसगलमेरोमैंपिखोंनहिआहिअंतरकोइ॥४९॥वट
क्षीरल्यावोजाइकैइमभाषियोरघुराइ ॥वटक्षीरसुंदरसंपुटति
नलयेतुरतमगाइ ॥ वटक्षीरकैकचकुंचितांकीजटालीनवना
इ॥ रामलक्ष्मणभ्रातनेतिहहेरगुहविसमाइ॥५०॥जलपानकै
सहसीतयात्रिणकुशापातविछाइ ॥ रचसेजलक्ष्मणनेदईतह
सोरहैरघुराइ ॥ जैसेसुसोवेंनगरमैंपर्यंकमहलउदार ॥ तैसे
सुसोयेसीयसोंतहंजाइकविवलिहार ॥ ५१ ॥ ॥ सवैया ॥
लक्ष्मंनतवैधनुलैकरमैंकरवाननिषंगकसेकटिमाही ॥ द्रिग
चारतिहारतचारदिशारघुवीरसुपालकरीनिशिमाही ॥ गुहसं

गभयेतिनकेनिशिमैपुनआपसरासनलैकरमाही ॥ निधिनी रसवेंअहिऊपरजेसुरकाजपरेगिरिजाधरमाही ॥ ॥५२॥ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेपंचमोऽध्यायः॥५॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥गिरिजारामनिहारकेगुहनैनोंजलजाइ॥ लक्ष्मणकोंतबबोलियोपरमसुनिस्रतभाइ॥१॥ ॥शंकरछंद॥ ॥ तुमभ्रातदेखोरामकोसहसीयसुंदरश्याम॥ धरकुशापल्लवसेजमैंअवरेहसोइसुरांम ॥ जोसोवतेपर्यकहेमसुभवनपाटविछाइ॥ कैकईकारणदुःखकोविधिदईरामवनाइ ॥ २॥ भलमंथरामतिमानकेकैकइपापसुकीन ॥ पुनउमासुनगुहकोमतोलक्ष्मनप्राहप्रवीन॥सुनसखेमेरेवाक्यकोगुहआपनेमनमाहि॥ सुखदुःखकारणजगतमैसुनऔरकोईनाहि॥३॥निजकरमपूरवजोकरेनरलाइनीकेप्रीत॥ सुखदुःखकारणहोइसोजगधारमनमैमीत॥ सुखदुःखदाताऔरकोयहहैकुबुद्धिअपार॥ मैकरोंयहअभिमानझूठोजनेसगलविकार॥४॥ निजकर्मसूत्रसुमैफसेइहजंतजगमैआप॥ निजसुहृदमीतउदासवैरीलयेआपसुथाप॥ जोकरमकरेसुजगतमैफलभोगैहेपुनसोइ॥ यहनेमनीतपछानियेनहिअन्यथाइहहोइ॥ ॥५॥ ॥चौपाई॥ ॥सुखदुखयाजगभीतरजोई॥ करमअधीनसदानरहोई ॥ जोजोफलआवेजगमाहीं ॥ भोगेतांहिस्वस्थमनमांही ॥ ६ ॥ भोगागमनविवरजनजोई ॥ चांहेनहिमनभीतरदोई॥आगछतुगछतुवासोई॥भोगविरसजगभी

तरहोई ॥ ७ ॥ देशकालकीसंगतिपाइ ॥ जांविधिकेनरक
र्मकमाइ ॥ शुभाशुभतांफलभोगेसोई ॥ नाहिकदाचितउ
लटोहोई ॥ ८ ॥ भलोवुरोफलजोकछुहोई ॥ हरपविषादकरेन
हिकोई ॥ धातानेरचदीनोंजोई ॥ सोनउलंघसुरासुरहोई ॥
॥ ९ ॥ सुखरदुःखजगभीतरभारे ॥ सदाहोहिनरदेहमझारे ॥
पुन्यपापतेउपजेदेह ॥ सोहैसुखअरुदुखकोगेह ॥ १० ॥ सूखअ
नंतरहोवेदूप ॥ दुःखअनंतरहोइसुसूख ॥ दोनअलंघसर्वकोअ
हे ॥ दिनरात्रीजिमनरउरगहे ॥ ११ ॥ सुखकेवीचरहेदुखमी
त ॥ दुखकेवीचसुसुखधरचीत ॥ दोऊपरस्परमिलेसुऐसे ॥ ज
लअरपंकमिलेंजगजैसे ॥ १२ ॥ ज्ञानीधरधीर्यउरमांहीं ॥
इष्टअनिष्टपाइजगमांहीं ॥ हरपविषादनतांमैकरे ॥ मायासर्व
सुयोंमनधरे ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुहलक्षमणइहभापते ॥
भयोसुविमलअकाश ॥ रामसुनीरस्पर्शकैभएसुचेतउदास
॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ रामकह्योद्रिढनावअवैगुहजाइलि
आवसुमीतहमारे ॥ जावहिंवेगसुप्रातभयोचढिनावभलीं
विधिगंगसुपारे ॥ सुनरामकेवाक्यनिषादपतीचलिआपगए
नलगीकछुवारे ॥ शुभलक्षणनावसुवीनलईतिंहिलपहुतोज
हरामसुरारे ॥ १५ ॥ ममनाथसुसानुजसीयसमांवलिनावच
ढोइहनावसुआई ॥ अवआपचलावहुंमैविधिसोंपुनऔरच
लावहिंगेममभाई ॥ गुहरामतथेतिवखानतवैभुजथांभसुजा
नकीआपचढाई ॥ गुहहाथअलंवनकैगिरजापुनअच्युतनाव
चढेरघुराई ॥ १६ ॥ सभआयुधलैअपनेकरमैपुननावचढेरघु

वीरकेभाई ॥ गुहजातिस मेंतसुनावभलेअतिपावननीरमैंआ
पचलाई ॥ करजोरकरीविनतीतवसीअधवीचजवैचलनाव
सुआई ॥ अभिवंदनतेपदपंकजकोसुनगंगभलेविनतीमम
माई॥ १७॥ ॥दोहा॥ ॥ वनोवासतेमैजवैआवोंगीघर
माइ॥रामलखनकेसंगपुनपूजोंगीतवपाइ ॥ १८ ॥ सुरामां
सउपहारकेनानावलीअपार ॥ पूजोंगीमैगंगतवपरमसुआ
दरधार ॥ १९॥ यांविधिभाष्योजानकीगएसुपरतटमाहि ॥पां
वनकरेसुभूंमिपदसनेसनेपथिजांहि ॥ २० ॥ गुहरघुपतिप्रति
भापयोसंगचलोंश्रीराम ॥ आज्ञामोकोदीजिएसुराजेंद्ररघु
रांम॥२१॥ देहुनआइसरामजवतजोंप्राणसुखदेन ॥ सुनलि
षादकोवचनयहवोलेकरुणाऐन॥२२॥ ॥सवैया॥ ॥घर
वीचरहोसुनिपादपतीममआवनपंथसुनीतनिहारो॥दर्शचा
रसमावसदंडकमैंपुनआवहुंवेगसुमैउरधारो॥नहिरांमसुझू
ठवखानतेंहयहसत्यभलेंउरमाहिविचारो ॥ इमभापसुराम
मिलेगलमैंधरधीरसखैनहिफेरउचारो॥२३॥ इहभांतवखांन
हटाइदएगुहसोदुखसोंघरमाहिगए॥ तिंहिठौरविपेम्टगपावन
एकसुरांमसरांसनतांनहए ॥ वनपावकमाहिप्रकाइतिनेपुनदे
वनकेहितहोमकए ॥ करभोजनशेपसुलीनजनेतरुमूलसुखी
निशिकालनए ॥ २४ ॥ ॥दोहा॥ ॥ लक्ष्मनरामसुजानं
कीपरमरूपकीरास ॥ भारद्वाजआश्रमगयेवाहिरखरेसुपास
॥२५॥ तहंइकवटूनिहारकैरामकह्योतिहंवाल ॥ दाशरथीइ
कुरामहैसीतालक्ष्मणनाल ॥२६॥ वाहिरवनकेहैंखडेजाइकहो

मुनिपास ॥ सुनरघुवरकीवातकोबटुउरभयोउलास ॥ २७॥ वेगगयोमुनिपासबहुपदवंदेअभिराम ॥स्वामिनवाहिरहैखर लक्ष्मनसीताराम ॥ २८॥ मोप्रतितांहिवखानयोहैवटुवेगसु जाइ॥ भारद्वाजमुनिपासतूंममवृत्तांतसुनाइ ॥ २९॥ ॥स वैया ॥ ॥सुनकैयहवातमुनीशगुणीउठआसनतेहरिकीढि गआए॥ मुनिरामनिहारसुपूजनकैउरप्रेमभरेपुनवैनअलाए करपावनपर्णकुटीचलकैहंगवारिजपाइनकीरजलाए ॥ इम भाषमुनीश्वररामसीयालघुभ्रातसमाघरभीतरआए ॥३०॥ **चौपाई** ॥ ॥भक्तिभरेपुनपूजनकरयो॥ कीयोअतिथ्यहर पउरभरयो॥ तवसंगतितेरामउदार॥ आजुलख्योमैतमकोपा र ॥ ३१॥ तेरांआहिब्रतांतसुजोई॥ पूर्वभयोवहुरकछुहोई॥ सोमैजान्योसगलोराम ॥ तुमपरमात्मपूरणधाम ॥ ३२ ॥ मायाकरजगमनुजअकार ॥ जाहिततेरोहैअवतार ॥ ब्रह्मा करीसुविनतीथारी ॥ तांतिआयोभूमिमझारी ॥ ३३ ॥ जांहि ततैंलीनोवनवांस॥ सोमेरेउरभयोप्रकाश॥ आगेकरोरांमतु मजोई ॥ मैजानोसगलोपुनसोई ॥ ३४ ॥ तेरीकरीउपासन जांते ॥ ज्ञानदृष्टिकरजानोतांते ॥ इतहपरंकिंभनोमहार्थ ॥ आजुभयोमैरामकृतार्थ ॥ ३५॥ प्रकृतिपरेत्वंपुरुषपुरान ॥ रामभयोममनैननभान ॥ याविधिमुनिवरभाष्योजवही॥ बोलतभयेरामपुनतवहीं ॥ ३६ ॥ सीतालक्ष्मणसंयुतराम॥ प्रथमकरीमुनिपदप्रणाम ॥ करुणाभाजनहेमुनिथारे॥ हम हैंक्षत्रीवंधुविचारे॥३७॥ ॥शंकरछंद॥ ॥इमभाषमुनहरि

परस्परमुनिपासरामनिवास॥निशिमाहिकीनोप्रातऊठभये अरुणप्रकाश ॥ मुनिसिष्यकीनेपल्लवनकररामयमुनापार॥ मुनिदृष्टमारगरामजीगयेचित्रकूटपहार॥३८॥ वालमीकिमु नीशकोजहंआहिपरमस्थान॥ वहपरमआश्रमसुंदरोघनरहैं मुनिसुमहान॥सरकमलफूलेमालतीमृगऔविहंगहजार॥फ लपुष्पजामैनीतहैंमनहरणउज्जलवारि॥३९॥ तहँपेखबैठेराम जीमुनिवाल्मीकिविशाल॥ शिरसोंकरीअभिवंदनाश्रीभ्रात लक्ष्मणनाल ॥ रमानाथसुरामजीत्रईलोकसुंदररूप ॥ जान कीलक्ष्मणमिलेशिरजटामुकटअनूप ॥ ४० ॥ कंदर्पसुंदरवैत नूदृगकमलशोभअपार॥ तिहपेखमुनिसहसाउठेउरविस्मनै नउघार ॥ गललाइपरमानंदरामसुहर्पदृगजलजाइ ॥ अर घादिपूजनभक्तिकैमुनिकेरेरामवठाइ ॥ ४१ ॥ लालनकीयो वहुभांतिमुनिफलमूलमिष्टखवाइ॥ तवरामनिजकरजोरकै मुनिकह्योआपसुनाइ ॥ वनदंडकाआयेहमेपितुआगयाउ रमान॥तुमजानहोमुनिआपकारणकहाकरोंवखान॥४२॥ सवैया ॥ ॥ किंचतकालसुसीयसमेतजहांसुखवाससुमेमु निहोइ ॥ आपविचारकहोमुनिपुंगवमोप्रतिसुंदरठौरसुसो ई ॥ सुनिकैयहवातहसेमुनिपुंगवउत्तमठौरसुनोअवजोई॥ तुमहीसभलोकनिवासजगाजगभीतरऔरनभासतकोई ॥ ॥४३॥ ॥ चौपाई॥ ॥ जीवअहेंजगभीतरजेते॥ सदन तुमारोरामसुतेते॥ यहसुसथानसधारणजोई ॥ रघुनंदनमै भाष्योसोई ॥ ४४ ॥ सीतासहितजहांसुखहोई ॥ रामविशे

षसुपूछ्योजोई॥सोअवतोहिवखानोंराम॥सीतासहितसुजो
तवधामं ॥ ४५॥ समदृष्टीउरशांतिउदारे ॥ जीवनमाहिसु
द्वेषनधारे ॥ तोकोंभजेंनिरंतरनीत ॥ रामतुमारोग्रहतिनची
त॥४६॥ धर्माधेर्मदोऊजिनत्यागे ॥ तेरेभजनविखेनितला
गे ॥ सीतासहितरामतिनचीत॥ तेरोमंदरअहेसुनीत॥४७॥
तेरोमंत्रजपेशुभजोई ॥ तेरीशर्णसदाउरहोई ॥ निरद्वंद्वीनिर
वासउदार ॥ तांकोरिदेसुतोहिअगार ॥४८॥ ॥ नराजछं
द ॥ ॥ अहंभिमाननाजिनेसुशांतिचीतजेधरें ॥ अकामलो
कसर्वमैनद्वेपरंचजेकरें ॥ डिलंसिलंसुकांचनंनिहारहेंवरोव
रं ॥ समेतसीयरामंतेव्हदेसुतांहिकोघरं ॥ ४९ ॥ सुवुद्धि
औमनंसदाजुतोहिमैलगाइहें ॥ सुतोहिध्यानधारकैसदाअ
नंदपाइहें ॥ समस्तकर्मतेहितंकरेंनिरंतरंजनो ॥ ग्रहंसुतेनि
हारहोंससीयरामतांमनो ॥५०॥ अनिष्टवस्तुपाइकेनद्वेपजो
कदेकरें ॥ सुइष्टवस्तुपाइकैनहर्षचितमैधरें ॥ सुमाइआसम
स्तहेरतेभजेंनिरंतरं ॥ वसोसुरामचंदत्वंसुतांजनोमनोंतरं
॥ ५१ ॥ विकारसर्वदेहमैनआत्माविखेपिखें॥क्षुधात्रिपासु
खंभयंसुप्राणवुद्धिमैलखें ॥ विमुक्तजोजगत्ततेसदाअंसंग
जोरहें ॥ ग्रिहंसुरामतांमनोसुवेदआपतेकहें ॥ ५२ ॥ पि
खेंसुसर्वभूतकेगुहाशयंसुचेतनं ॥ अलेपकंअनंतसत्यसर्वगं
सुएकनं ॥ इसेजिभक्तथारेयासुतांरिदांवुजेग्रहे ॥ ससीतया
वसोसदाविशालमंदिरंअहे ॥ ५३ ॥ द्रिढातमासदाअभ्या
सजेकरेंनिरंतरं ॥ सदासुतोहिसेवहेंकरेंनरंचअंतरं॥ सुतोहि

नामकेजपेमिटेंसुपापजांहिके ॥ सुखीवसोससीयरामनीत चित्ततांहिके॥५४॥ ॥दोहा॥ ॥रामतुमारेनामकीमहिमा कहीनजाइ ॥ जांप्रभावतेमैंऋषीभयोरामसुखदाइ॥५५॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रथममेमैंसुकिरातनमाही ॥ संगकिराति वढ्योजगमाही ॥ जनममात्रमैद्विजतेभयो ॥ औरअ चारशूद्रकोकथो ॥ ५६ ॥ वहुसुतशूद्रीमैउपजाये ॥ चोरन मिलपरद्रव्यचुराये ॥धनुपवाणकरभीतरधरों ॥ जीवनको अंतकसमहरों ॥ ५७ ॥ एकसमेमुनिसप्तउदारे ॥ कानन माहिसुमोहिनिहारे ॥ तत्त्वंज्ञानीदीपतिमान॥ अग्निअर कसीप्रभामहान ॥ ५८॥ तिनकेपाछेमैउठधायो ॥ लोभ वडोमेरेउरआयो ॥ तिनकेथेतनवस्त्रसुजेते॥ उरमैचहोउ तारेतेते ॥ ५९॥ तिष्टतिष्टकहंजाहुसुभागे ॥ मोकोपिखमु निपूछनलागे॥ त्वंकिंआवद्विजाधमधाइ ॥ तवमेतिनप्रति दयोसुनाइ ॥ ६०॥ मुनिसत्तमकछुतुमतेलेवों ॥सुतदारा प्रतिमैग्रहिदेवों ॥ वहुतेहैमेरेसुतदारा॥ भूखेकरेंसुभवनपु कारा ॥ ६१॥ तिनकीरक्षधारउरमाही ॥ विचरोंमुनिमै काननमाही॥ तवमेरेप्रतिवैमुनिवोले॥ सावधाननहिअंत रडोले ॥ ६२॥ जाइकुटंवपुछोतुमनीच ॥ जोजोपापकरों दिनवीच ॥ तुमेतिनभागीहोहुकिनाही ॥ भिंनभिंनपूछोघ रमाही॥६३ ॥ हमनहियाहिठौरतेजावें ॥ जवलगत्वंनहिघ रतेआवें ॥ तवमैकह्योतथामुनिजावों ॥ पूछसभनकोघरते आवों ॥ ६४ ॥ सुतदारामैपूछेजवही॥ मोप्रतिकह्योराम

तिनतबही ॥ पापसर्वहेंतेरेमांही ॥ फलभागीहमहेंजगमांही ॥ ६५ ॥ सोसुनमेउरवढ्योविराग ॥ जाग्योकोपूरवकृतभाग ॥ करविचारमनतहँचलआयो ॥ जहँतेमोकोमुनिनपठायो ॥ ६६ ॥ करुणापूरणमनमुनिसारे ॥ तहँठाढेमुनिमोहिनिहारे ॥ मुनिकोदरसनपायोजवही ॥ शुद्धभयोमेरामनतबही ॥ ६७ ॥ करतेत्यागेमैधनुबान ॥ मुनिपदपर्योसुदंडसमान ॥ नरकसमुंद्रगिर्योमैभारी ॥ हेमुनिलीजेमोहिउवारी ॥ ६८ ॥ आगेगिर्योदेखमुनियाल ॥ मोप्रतिबोलेवचनरसाल ॥ उठो उठोतेरीकल्यान ॥ सफलभयोसतसंगमहान ॥ ६९ ॥ कछुतोकोहममंत्रबतावें ॥ तांहीकरतूंमुक्तिसुपावें ॥ पुनिमुनिपरस्परंसुनिहार ॥ ममदुरवृत्तद्विजातमधार ॥ ७० ॥ उपेक्ष्यायोग्यअहेयहनीच ॥ एकसुभापेयोंमुखवीच ॥ अपरकहेंशरणागतिआयो ॥ मोक्षपंथकहंबनेछुडायो ॥ ७१ ॥ याविधिभापपरस्परराम ॥ भयेकृपालुमुनीनिहकाम ॥ तेरारामनामहैजोई ॥ व्यत्ययवर्णसुभाष्योसोई ॥ ७२ ॥ यहीठौरमनकरोइकागर ॥ मरामरायोंजपोसुसादर ॥ वहुरोहमआवेंगेजौलौं ॥ जपोनिरंतरयहतुमतौलौं ॥ ७३ ॥ दिव्यज्ञानयुतवैमुनिजेई ॥ यौंममभापगयेपुनतेई ॥ तिनकीयोउपदेशसुजैसे ॥ जपोनिरंतरमैपुनतैसे ॥ ७४ ॥ जपतैकागरमेमनभयो ॥ वाहिरज्ञानभूलसभगयो ॥ याविधिकालवहुतविगतए ॥ मेरेतनमननिहचलभए ॥ ७५ ॥ जनसंगतिमेरीमिटगई ॥ वल्मीकीममऊपरिभई ॥ युगसहस्रशुभवीत्योजवही ॥ आएमुनिकरुणाकरतब

ही ॥ ७६ ॥ निकसोयौंमुनिभाष्योजवही ॥ मुनिकेवेगउठ्योमै तवही ॥ वल्मीकीतनिकस्योऔसे ॥ फोरकुहीरतरुणरविजै से ॥ ७७ ॥ मोकोपेखब्रह्मुरमुनिभाख्यो ॥ वाल्मीकिममनाम सुराख्यो ॥ वल्मीकिहुंतेनिकस्योजाते ॥ दूसरजनमभयोतव ताते ॥ ७८ ॥ यौंममभापगएसुरलोक ॥ रघुवंशोत्तममुनी अशोक ॥ मैतेरामनामइकलयो ॥ जांप्रभावतेऐसोभयो ॥ ॥ ७९ ॥ अवसाख्यातनिहारोंराम ॥ सानुजसीयसमंसुखधा म ॥ वारिजनैनमुक्तमैभयो ॥ याहिविपनहिसंशयरह्यो ॥ ॥ ८० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यौंपरमारथभापकैपुनिबोलेमुनि राम ॥ भक्तहितारथनरभएपूछोठौरअकाम ॥ ८१ ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ आवोरामदिखावोंसोइ ॥ नीकीठौरअहेपुनिजो इ ॥ नीकेजहांवासुतुमहोई ॥ निजनैनोकरहेरोसोई ॥ ८२ ॥ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ इमभापमुनिवरजाइकैपुनवीचपर वतगंग ॥ रामकोलघुभ्रातऔपुनशिष्यलीनेसंग ॥ शाला वडीइकतह्करीरूपिनीठभूमिसवार ॥ मंदिरवनाएदोतहां शोभासुजाहिंअपार ॥ ८३ ॥ मुखएककोपूर्वकरेपश्चमदि शाकरिपीठ ॥ दक्षणपिछावरउत्तरेमुखआनकीनसुनीठ ॥ तवसीयलक्ष्मणसोंमिलेतहंवासकीनसुराम ॥ समदेवतावै तीनहेपुनवनेसुंदरधाम ॥ ८४ ॥ वाल्मीकिसुपूजतोरघुनाथ हरणकलेश ॥ सहसीयनीकेतहंवसेशिरजटामुनिवरवेप ॥ देवमुनिगणपूजतोसुरलोकसुंदरदेश ॥ सुपुलोमिजाकेसंग मिलजिमवसआपसुरेश ॥ ८५ ॥ ॥ इतिश्रीमत्अध्यात्म

करामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेपष्टमोऽध्यायः ॥
॥६॥ ॥७॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥
इतसुमंतसायंसमेवरेअयोध्यामाहि ॥ मुखसुवस्त्रकरढाकि
योनीरवहेदृगताहि ॥ १ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ रथबाहिरथा
पसुमंततवेनृपभौनगयेनहिवेरलगाई ॥ जयभापमुखोंनृप
कीरतिकैसुप्रणामकरीनृपकेढिगजाई ॥ अजनंदनतांअभि
वंदतकोमनव्याकुलएकसुबातअलाई ॥ किहिठौरसुमंतरहेर
घुवीरसुजानकीभ्रातसुजांहिसहाई ॥ २ ॥ ॥ **गीयामा
लतीछंद** ॥ ॥ किहंठौरछोडेरामतुमक्याकहेंथेमेपापि
नं ॥ क्याकहेथीमेजानकीसुसुमंतदूपउतापिनं ॥ निरदईमे
अघवंतकोलक्ष्मणवखान्योक्याकहो ॥ इमभापभूपतिरोव
ईकिहठौरश्रीरघुवररहो ॥ ३ ॥ ॥**शंकरछंद** ॥ ॥ हाराम
हागुणसागरोहासीयप्रियवचतोर ॥ दुखसिंधुडूबोमैमरों
किनापिखोममआर ॥ इहभांतिभूपविलापकैदुखसिंधुमैग
लतान ॥ पिखतांसुमंतसुभूपतंकरजोरकीनवखान ॥ ४ ॥
॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ सीतारामसुलक्ष्मणभाई ॥ मैतीनोतेर
थेचढाई ॥ श्रिंगवेरकेढिगलेगयो ॥ गंगातीरउतारतभयो
॥ ५ ॥ फलमूलादिकगुहलेआए ॥ रामगहेनहिंपाणिछुहा
ए ॥ परमप्रसंन्नरामतवभये ॥ फलमूलादिविसर्जनकये ॥
॥ ६ ॥ वटक्षीरगुहहाथमंगायो ॥ जटामुकटरघुनाथवना
यो ॥ बहुरकहीसुमंततुमजावो ॥ राजाप्रतिममकुशलवता
वो ॥ ७ ॥ ममनमित्तनहिंशोककरीजे ॥ ममवंदनकरिभूप

कहीजे ॥ औधपुरीतेममनमाही ॥ सुखहैअधिकविपन केमाही ॥ ८ ॥ ममताकोकहोसंदेस ॥ ममनमित्तनहिंक रोकलेस ॥ राजावृद्धशोकनिधिपरो ॥ तांकोतुमआश्वासन करो ॥ ९ ॥ सीतानैनभरेबहुवारा ॥ नृपसत्तमतिनमोहिउ चारा ॥ दुखसोंवाणीगदगदभई ॥ रामओरकिंचितनिरख ई ॥ १० ॥ सासुससुरपदकमलमझारा ॥ कहोसुमंतप्रणा महमारा ॥ यांविधिभापरुदतिअतिभई ॥ किंचितपंथअधो मुखगई ॥ ११ ॥ तीनोंनैनभरेजलधारा ॥ भूपचढेवैनावम झारा ॥ जौलौगंगापारसुगए ॥ तौलौभूपतिमैनिरखए ॥ ॥ १२ ॥ वैतीनोवनपंथपधारे ॥ मैदुखसोंपुरआयोथारे ॥ सु नरोईकौशल्यारानी ॥ भूपतिप्रतिपुनकह्योभवानी ॥ १३ ॥ नृपकेकेईप्यारीरानी ॥ ह्वैप्रसन्नवरकोनवखानी ॥ तुमदेवो तिंहराजअपारा ॥ ममपुत्रहिंकिंवनेनिकारा ॥ १४ ॥ निख लकर्मयहकीनोतोही ॥ अबकिंरोइसुनावतमोही ॥ कौश ल्यावचसुनदुखभयो ॥ मनोघावमैपावकदयो ॥ १५ ॥ ॥ **दशरथोवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ क्यातूंभापेममक ल्यानी ॥ होवनहारनकिनेमिटानी ॥ मैअतिदुखितभयोसु नरानी ॥ तुमकोयोगनयेहवखानी ॥ १६ ॥ कोइकपापसु मोहिकमायो ॥ जांकरयहसंतापसुपायो ॥ शोकनीरद्रिग पूरणभए ॥ कौसल्याप्रतिभूपअलए ॥ १७ ॥ दुखकर मर्णभयोअवमेरो ॥ तूंममदुःखनदेहिघनेरो ॥ पुनिकौस ल्याभूपतिभने ॥ कार्णदुखकेयुगमसुगने ॥ १८ ॥ तुमकेके

इदोनोहेतू ॥ तांकरममसुतवनेनिकेतू ॥ सुनिभूपतिकौसल्यावानी ॥ परमदुखीयहकीनवखानी ॥ १९ ॥ अवनिकसैंगेप्राणहमारे ॥ सुणदेवीमैंहेतुविचारे ॥ पूर्वमुनिममश्रापसुदयो ॥ तांकारणमेमर्णसुभयो ॥ २० ॥ पूर्वमैंयोवनवनमांही ॥ वानसरासनलैकरमांही ॥ मृगमारनहितनदीकिनारे॥ विचरोंनिशिमैंविपनमझारे ॥ २१ ॥ आधीरात्रिसमैंइकवारा ॥ त्रिपावंतइकमुनीकुमारा ॥ मातपितातिहंपरमत्रपाए ॥ तांहितवैजललेनेआए ॥ २२ ॥ जलमैंकुंभडुबायोजवही ॥ सब्दभयातांतेंपुनतबही ॥ मैजान्योगजपीवतपानी ॥ वानदयोमुखमांहिकमानी ॥ २३ ॥ सब्दवेधवडुबानउदारा ॥ मोहिचलायोनिशामझारा ॥ हामैंमुयोसब्दतहंभयो ॥ मानुपलक्षणसूचनकयो ॥ २४ ॥ **गीयामालतीछंद** ॥ मैंनाकीयोअपराधकाहूंमारयोविधिकिंउंकिने॥पितमातमेरीवाटदेखेंनीरदेवेकोतिने ॥ सुनशब्दमानुपसूचकोभयभीतहोयोमैंमने ॥ कौसल्यातिहंठाउंमैंनिशिमैंगयोसुसनेसने ॥ २५ ॥ ओस्वामिदशरथभूपमैंढिगजाइतांव्याकुलकही ॥ अनजानमैंअपराधकीनोत्राहिमोकोमुनिसही ॥ इमआपतांपदमैंगियोंमुखबोलगदगदहैतमा ॥ पुनतांहिमोप्रतिभापिओमतडरोभूपतिसत्तमा ॥ ॥ २६ ॥ ॥ **शंकरछंद** ॥ ॥ तवब्रह्महत्यानाछुहेमैंवैश्यतपमोआंहिं ॥ पितमातमोहिअपेक्षतेत्रपभूखतांतनमांहि ॥ तजचिंतवेगसुजाइकैतूंनीरतिनकोदेहि ॥ नहिदेहिमेपितकोपकेतनकरेतेरोखेह ॥ २७ ॥ जलतांहिदैपदवंदकेनिजकरमकरो

वखान॥सरकाढमेरीदेहतेतनपीडत्यागोंप्रान॥इहभांतिमेमु
निजबकह्योमैकीनवानउधार॥पुनगयोजहंवहदंपतीलैकुंभ
पूरतवारि॥२८॥ अतिश्रांतवृद्धसुअंधभूखेनीरकीतनचाहि॥
कोभयोकारणनीरलैअबपूतआयोनाहि॥सुअनंन्यगतिहम
वृद्धहैंतनुत्रिपापीडअपार ॥ किंवाउपेक्षातिनकरीनहिभक्ति
वानहमार॥२९॥ इहभांतचिंताथेकरेंममपादधुनिसुनलीन
॥ सुनतांपितापुनभापयोसुतकिंविलंबसुकीन ॥ भोदेहपूत
सुनीरहमकोआपनीकेपीव॥ इहभांततांहिंविलापसुनअति
कंपयोममजीव ॥ ३० ॥ ढिगजायतांपदवंदकैपुनिमुखोंकी
नवखान॥ मैनांहितवसुतऔधकोपतिभूपदशरथमान॥मै
रात्रिमृगनविहिंसकोवहुकरोंपापअपार॥ जलघाटदूरेथोप
डोधुनिभईभीतरवारि ॥ ३१ ॥ गजजानमैशरछोडयोतन
माहिगोह्योजाइ ॥ मैमुयोमानुपशव्दसुनमैडरतआयोधा
इ॥ शिरजटाफैलोकिरणसीपिखपरेमुनीकुमार॥ मनभीत
मैपदतांगहेमुखरक्षरक्षउचार॥३२॥ मतडरोइवममभाप
योमुनिपरमकरुणाधार॥ब्रह्महत्याभयनहीतवकह्योमानह
मार॥ ममभाततातसुनीरदैकरजोरतांपदवंद ॥ नवनूतना
यहदेहकोलैजीवनोतूमंग॥३३ ॥**चौपई**॥ ॥यांविधि
तिनमुनिमोहिवतायो॥मुनिहिंसकमैतुमपहिआयो॥दया
युक्ततुमपरमउदार ॥ शरणागतिममलेहुउवार ॥ ३४ ॥
याविधिसुन्योसुमोतेजवही ॥ दुःखारतिशोचतभएतवही॥
पयोंजहांसुनपूतहमारो ॥ तहंलेचलोविलंवनधारो॥३५॥

तवलेगयोजहासुतआहि ॥ वृद्धदंपतीदुखमनमाहि ॥ सुत
कोछुहनिजहाथनसंगा ॥ बहुविलापकरव्याकुलअंगा॥३६
हाहारुदनकरेंतेभारी ॥ पूतपूतमुखमाहिउचारी ॥ जलदीजेह
मकोसुतसोइ॥ नहिदेवेंअबकारणकोइ॥ ३७॥ पुनिमोप्रति
तिनकीनउचार॥ चितारचोनृपवेगसवार॥ मैतवहीतहंचिता
बनाई॥ बहुनीनोतहंदएबिठाई॥३८॥ ॥शंकरछंद॥ ॥पुन
अग्नितिनकेकहेतेमैंदईतहांलगाइ ॥ दिवलोकतीनोवेगयेतनु
भूमिमाहिजलाइ॥ पुनजानअवसरतांपितामभदयोएहीशा
प॥ ममवचनतेसुतशोककैतूंमरेंगोनृपआप॥३९॥ वहुश्राप
अवसरभयोअबेममवारहैनहिकोइ ॥ इहभांतभापविलाप
कीनोशोकव्याकुलहोइ ॥ हारामसुतहाजानकीहालक्ष्मणागु
णधाम॥ सुवियोगथारेमैमरोंकैकईकाढेप्रान॥४०॥ इमवद
तभूपतिप्राणतजपुनगएसुरपतिलोक॥ पिखरामलक्ष्मणमा
तलोनृपनारिकरेंसुशोक॥करताडछातीरोवहीमुखभूपकेगुण
गाइ॥पुरऔधअंमृतकुंभमैविधिदइहलाहलपाइ॥४१॥ सुव
सिष्टलैमंत्रीसकलतहंप्रातपहुचेजाइ॥धरतैलद्रोणीभूपतनुपु
नदूतकहेबुलाइ॥नृपयुधाजितकेनगरप्रतितुमदूतवेगसुजाहु
चढघोरेंयोंपरभलीविधितहंभरतसानुजल्याहु॥४२॥तिहंकहो
मेरेवचनतेगुरवेगआइसुकीन॥निजनगरआवोवेगतुमजग
भरतबुद्धिप्रवीन॥पुरऔधदशरथराजकोनिजमातुपेखोआ
इ॥सुवसिष्टकेयहवाक्यसुनपुनगएदूतसुधाइ॥४३॥नृपयुधा
जितपुनभरतकोसुप्रणामकीनोजाइ ॥ राजनवसिष्टबुलाइ

१ अश्व.

वखान ॥ सरकाढमेरोदेहतेतनपीडत्यागोंप्रान ॥ इहभांतिमेंमुनिजबकह्योमैकीनवानउधार ॥ पुनगयोजहँवहदंपतीलैकुंभपूरतवारि ॥ २८ ॥ अतिश्रांतवृद्धसुअंधभूखेनीरकीतनचाहि ॥ कोभयोकारणनीरलैअबपूतआयोनाहि ॥ सुअनंन्यगतिहमवृद्धहैंतनुत्रिपापीडअपार ॥ किंवाउपेक्षातिनकरीनहिभक्तिवानहमार ॥ २९ ॥ इहभांतचिंताथेकरेंममपादधुनिसुनलीन ॥ सुनतांपितापुनभापयोसुतकिंविलंवसुकीन ॥ भोदेहपूतसुनीरहमकोआपनीकेपीव ॥ इहभांततांहिंविलापसुनअतिकंपयोममजीव ॥ ३० ॥ ढिगजायतांपदवंदकैपुनिमुखोंकीनवखान ॥ मैनांहितवसुतऔधकोपतिभूपदशरथमान ॥ मैरात्रिमृगनविहिंसकोवहुकरोंपापअपार ॥ जलघाटदूरेथोपडोधुनिभईभीतरवारि ॥ ३१ ॥ गजजानमैशरछोडयोतनमाहिगाज्योजाइ ॥ मैमुयोमानुपशब्दसुनमैडरतआयोधाइ ॥ शिरजटाफैलीकिरणसीपिखपरेमुनीकुमार ॥ मनभीतमैपदतांगहेमुखरक्षरक्षउचार ॥ ३२ ॥ मतडरोइवममभापयोमुनिपरमकरुणाधार ॥ ब्रह्महत्याभयनहीतवकह्योमानहमार ॥ ममसाततातसुनीरदेकरजोरतांपदवंद ॥ नवनूतनोयहदेहकोलैजीवनोतूंमंग ॥ ३३ ॥ **चौपई** ॥ ॥ यांविधितिनमुनिमोहिवतायो ॥ मुनिहिंसकमैतुमपहिआयो ॥ दयायुक्ततुमपरमउदार ॥ शरणागतिममलेहुउवार ॥ ३४ ॥ यांविधिसुन्योसुमातजवही ॥ दुःखारतिशोचतभएतवही ॥ पयोंजहांसुनपूतहमारो ॥ तहँलेचलोविलंवनधारो ॥ ३५ ॥

तवलेगयोजहासुतआहि ॥ वृद्धदंपतीदुखमनमाहि ॥ सुत कोछुहनिजहाथनसंगा ॥ बहुविलापकरव्याकुलअंगा॥३६ हाहारुदनकरेंतेभारी ॥ पूतपूतमुखमाहिउचारी ॥ जलदीजेह मकोसुतसोइ॥ नहिदेवेंअबकारणकोइ॥ ३७॥ पुनिमोप्रति तिनकीनउचार॥ चितारचोनृपवेगसवार॥ मैतबहीतहंचिता बनाई॥ बहुनीनोतहंदएबिठाई॥३८॥ ॥शंकरछंद॥ ॥ पुन अग्नितिनकेकहेतेमैंदईतहांलगाइ ॥ दिवलोकतीनोवेगयेतनु भूमिमाहिजलाइ॥ पुनजानअवसरतांपितामम दयोएहीशा प॥ ममवचनतेसुतशोककेतूंमरेंगोनृपआप॥३९॥ वहुश्राप अवसरभयोअवममवारहैनहिकोइ ॥ इहभांतभापविलाप कीनोशोकव्याकुलहोइ ॥ हारामसुतहाजानकीहालक्ष्मणागु णधाम॥ सुवियोगथारेमैमरोंकैकईकाढेप्रान॥४०॥ इमवद तभूपतिप्राणतजपुनगएसुरपतिलोक॥ पिखरामलक्ष्मणमा तलौनृपनारिकरेंसुशोक॥करताडछातीरोवहीमुखभूपकेगुण गाइ॥पुरऔधअंमृतकुंभमैविधिदइहलाहलपाइ॥४१॥ सुव सिष्टलैमंत्रीसकलतहंप्रातपहुचेजाइ॥धरतैलद्रोणीभूपतनुपु नदूतकहेवुलाइ॥नृपयुधाजितकेनगरप्रतितुमदूतवेगसुजाहु चढघोरयोंपरभलीविधितहंभरतसानुजल्याहु॥४२॥तिहंकहो मेरेवचनतेगुरवेगआइसुकीन॥निजनगरआवोवेगतुमजग भरतबुद्धिप्रवीन॥पुरऔधदशरथराजकोनिजमातुपेखोआ इ॥सुवसिष्टकेयहवाक्यसुनपुनगएदूतसुधाइ॥४३॥नृपयुधा जितपुनभरतकोसुप्रणामकीनोजाइ ॥ राजनवसिष्टबुलाइ

1 अश्व.

योपुरभरतऔतिनभाइ ॥ आवोअयोध्यापुरीमैनहिकरोरंच विचार ॥ यहवाक्यसुनरोमांचभरतसुभयोभयउरभार ॥ ॥४४॥गुरवचनसानुजसंगदूतनभरतचालेदेश॥श्रीभूपऔ रघुनाथकोकछुभयोनगरकलेश ॥ इहभांतिचितवतमारगेपु ननगरपहुतोआइ ॥ जनभीरनाकछुनगरमैसभप्रभागईवि लाइ॥४५॥उतसवनहीकोनगरमैपिखभरतचितअपार॥पु नगयोनृपकेभवनमैनहिशोभनृपकेद्वार ॥ कैकईदेखीएकली बैठीसुपलंघविछाइ ॥ शिरसौंप्रणामसुमातकेपुनभरतकी नोपाइ ॥ ४६ ॥ आयोनिहारसुभरतकोकैकईआदरकीन॥ सुउठाइभरतलगाइगरपुनगोदभीतरलीन॥ शिरचूमकैनिज वंशकोपुनकुशलपूछ्योताहि॥शुभपिताभ्रातामातमेसभकु शलहैंपुरमांहि॥४७॥भलआजममआनंदसुततवकुशलडी ठनिहार॥इहभांतिताहिसुपूछयोनिजपेवकोपरवार॥ कहभ रतव्याकुलचितअतिमनकंपपूछीमाइ ॥ मेमाततुमविनमेपि ताकिंहठोरआहिवताइ॥४८॥तुमविनाजोमेपितानहिंएकंत बैठेसोइ॥ अवनादिखाईदेतहैकहुभयोकारणकोइ॥ श्रीतात केसुअदेखनेममदुःखभयअतिआहि॥किंदुःखसौंतिअनघसु तकैकईभाषेताहि॥४९॥हैधर्मशीलीजोगतीकृतअश्वमेधीयां हि॥ सुततांगतीकोताततेरोगयोयांजगमांहि ॥ इहभांतसुन भूभरतगिरेसुशोकव्याकुलहोइ ॥ हातातकहतुमगयेमोकों दुखसमुद्रविगोइ ॥५०॥ नसमर्पयोममरामराजेआपगए सिधाइ ॥ इहभांतभरतविलापकरशिरकेशदीनखिलाइ ॥ उ

[1] द्वारके.

ठाइकैकईतांहिकोनिजपाटकैद्रिगपोच ॥ पुनसमाधानसुतांक रेसुतकिंकरेंत्वंशोच ॥ ५१ ॥ कल्याणतेरीपूतमैसभसिद्धकीनो काज ॥ करतव्यतोकोंनाकछूसुतरत्योशेपसुआज ॥ तवभरत तांकोभाषयोपुनमरणअवसरमांहि ॥ ममपिताभूपशिरोम णीतिनक्याकत्योमुखमांहि ॥ ५२ ॥ श्रीरामकोपुनक्याकत्यो वहुनिखलभाषोमोहि ॥ कैकईनिर्भयतांकहेसुतसुनोभाषोंतो हि ॥ हारामसीतेलक्ष्मणाइहभांतिवारंवार ॥ विललापच्चिरकर त्यागतनुकोगयोसुरगमझार ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भरतवखा नेतांहिकोरामलखनसियमात ॥ नहिसमीपतवकहंगयेजौवि लपेममतात ॥ ५४ ॥ ॥ कैकेय्युवाच ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ सुतरामकेयुवराजहिततवतातउद्यमकीन ॥ तवराजकेहितपू तमैतिहमाहिविघनसुकीन ॥ प्रथमेकवीवरदोनमोकोवरदभू पतिदीन ॥ सोइहइदानीदोनहीमैमांगनृपतेलीन ॥ ५५ ॥ सुतए ककैतवराजदूसररामकोवनवास ॥ तवसत्यवादीभूपतेतवरा जकीनप्रकाश ॥ पुनरामकोवनभेजिओतवपिताधरमउदार ॥ तवरामपाछेसियगईजगपतिव्रत्तसुधार ॥ ५६ ॥ शुभभ्रातभा वदिखावनेहितगयोलक्ष्मणआप ॥ वनगएसवंसुयांविधीपुन भूपकीनविलाप ॥ भलरामरामसुभाषयौंमुखमुयोभूपतिसो इ ॥ गिरजासुनोइहभांतमरणोभागविननहिहोइ ॥ ५७ ॥ इह भांतमातावचनसुनसुतगिरयोभूमिमझार ॥ भूवज्रहतद्रुमजिं उंगिरेकछुरहीनाहिसंभार ॥ सुपेखकैकईतांदुखीक्वैवहुरकीनउ चार ॥ किंशोकमेरेसुतकरेंअवभयोराजतिहार ॥ ५८ ॥ सुतदुः

खअवसरनाकछूइहभांतिभाष्योमाइ॥ कहिकोपभरतविलोकतांप्रतिमनोदेतजलाइ ॥ मेअसंभाप्यापापनीतैंकीनभर्त्ताघात ॥ दुर्भागनीतेजन्मलीनोअघीमैंविख्यात ॥ ५९ ॥ हाअग्निमेमैपरैंगोकेमरोंगोविषखाइ॥कैखडगसोंतनकाटअपनोजांउंयमपुरधाइ॥ हेभर्त्तघातिनिदुष्टितेरोकुंभिपाकसुगौन॥ कैकईडाटसुयौंगयोपुनकौसल्याकेभौन॥ ६०॥ सापेखभरतअपाररोईमुक्तकंठपुकार॥ अतिभरततैसेरोवईतिहंपादमस्तकधार॥आलिंग्यभरतसुधर्मशीलारामनातसुहाइ ॥ कृशदीनवदनाभापईवहुनैननेतजलजाइ॥६१॥गैदूरतेरेपूतयौंसभंगयोकारणहोइ॥सभसुन्योमातवखानयोतवमातकीनोजोइ॥सहजानकीसहलक्ष्मणोसुतरामचंद्रहमार॥दुखसिंधुमगनामैरहीवनगएचीरसुधार॥६२॥ ॥चौपाई॥ ॥हाइरामरघुवंशसुनायक॥त्वंपरमात्मासभवरदायक॥ यद्यपित्वंममउदरसुभयो॥ तद्यपिनहिदुखमेरोगयो॥६३॥ तांतेविधिहैवहुवलवान॥ यहमोकोउरभयोसुभान॥ यौंविलापकौसल्याकीनं॥ तांपिखभरतभयोअतिदीन॥६४॥ पादगहैकरभाखेएहु॥ मातावचनसुमेसुनलेहु ॥ रामराजअभिपेचनवीच ॥ कैकईकर्मकर्योजोनीच ॥ ६५॥ अन्यतवातिनकीनसुजोइ ॥ भरतसुजोउरजानतहोइ ॥ अथवामैप्रेरीजेसोइ ॥ तौमोकौयांविधिअघहोइ॥६६॥ ब्राह्मणकेमारेतेजैस॥ मोकोहोइपापपुनतैस ॥ सहअरुंधतीगुरुकोमार ॥ जोहोवेतिहंपापअपार॥ ६७॥ मैजौजानतहोवोंसोइ ॥ तौमोकोवहुसगलोहो

इ ॥ यांविधिभरतशपथवहुभाख ॥ रोयोमातचरणशिरराख ॥ ६८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनकौसल्यातांहिकोलीनोकंठलगाइ ॥ सुतजानोमैंसकलविधिमतशोचोसुखदाइ ॥ ६९ ॥ ॥ महादेवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पुनतांहिसमेभरतागमंकोसुनआपवसिष्टतहांचलआए ॥ नृपमंदिरमैवहुराजगुरूसहमंत्रिनकेवहुभांतिसुहाए ॥ पिखरोवतराजकुमारमहांतिहंसादरआपवसिष्टअलाऐ ॥ वहुभूपतिथेअतितज्ञवडेपुनसत्यपराक्रमथेजरठाए ॥ ७० ॥ मानवकेसुखभोगसभैहयमेधन [illegible] ॥ दैदक्षणावहुयज्ञनमैहरिराममहांसुतसुं [illegible] मोक्षकिभाजनवैनृपथेसुद्यथातुमशोचतनीरवहाए ॥ ७१ ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ आत्मानित्यअनाशीजान ॥ जन्मनाशनहितांमैमान ॥ तनुजडअतिअपवित्रसुअहे ॥ प्राणविनाशसुक्षणक्षणगहे ॥ ७२ ॥ भलप्रकारविचारसुकरे ॥ शोकठौरकहिंनदरनपरे ॥ पितातनुजजगभीतरमरे ॥ [illegible] करे ॥ ७३ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ निःसारखलुसंसारमैविवियोगजवैसुहोइ ॥ तवतज्ञकोवैरागऔसुखशांतिदेवैसोइ ॥ जनजन्मवानसुजोअहेतिहमृत्युचालेसंग ॥ परिहारनहिकरकोसकेयहजन्ममरणप्रसंग ॥ ७४ ॥ निजकर्मकेस्वाधीनजंतूजन्ममरणसुपांहि ॥ इमजानकैअविवेकिजनकिमशोचहैपुनतांहि ॥ ब्रह्मांडकोटिसुनष्टहोएगईस्त्रष्टिअपार ॥ सूकेसुसागरनीरकेकाआसथातनक्षार ॥ ७५ ॥ चलपत्रअंतलग्नजिमजलविंदुभंगुर

होइ॥ तिमआयुजावेलोककीतवभयोनिश्चैकोइ ॥७६॥ जग जीवपूर्वसुकर्मकरजिमलईदेहसुएह ॥ तिमवर्त्तमानसुकरम करपुनऔरलेवेदेह ॥ ७७॥ जिमतजेजीर्णसुपाटकोपुनगहेनू तनचीर ॥ तिमतजेजीर्णसुदेहकोपुनगहेनयोशरीर ॥ सुतशो कअवसरहैकहांइहभांततनुशतहोइ ॥ नहिमरेआत्मानाजमे पुनवर्धहैनहिकोइ ॥७८॥ ॥चौपाई॥ ॥जिहंषड्भावविका रनकोइ ॥ सत्यज्ञानविग्रहपुनसोइ॥सुखस्वरूपवुध्यादिकसा क्षी॥लयविहीनइकश्रुतिसुसाक्षी ॥७९॥ आत्मापरअद्विती अनूप॥ समसुस्थितहैजांकोरूप ॥ यांविधिआत्माद्रिडउरध रो॥ शोकतजोसुतक्रियासुकरो ॥ तैलद्रोणमैपितुतनपरो ॥ सचवनसहितउधारणकरो॥हमसोंमिलरघुनंदनवीर॥यथा न्याइकृतकरोसुधीर ॥ ८० ॥ ॥दोहा॥ ॥दिनअठताली हैंभएमरणअनंतरभूप ॥ यांविधिउमाजनाययोभरतवसिष्ट अनूप॥८१ ॥तजअज्ञानजशोककोविधिवतक्रियासुकीन आहितअगनीकीविधीजोगुरआइसुदीन॥८२॥ सुसंस्कार विधिवतकरेदीनीअग्निलगाइ॥ दिनएकादशकेभयेलीनेविप्र बुलाइ ॥ ८३॥ पितोद्देशकरतिनहुंकोभोजनदयेअपार॥ वि धिवत्ब्राह्मणजेवहीसैसैकईहजार ॥ ८४ ॥ विप्रनकोधन बहुदयेगोदइकईहजार ॥ रत्नपटंवरबहुदयेग्रामसुदएउदार ॥८५॥ ॥सवैया॥ ॥इहभांतिक्रियाकरकैसगलीपितकोरि णयोवहंतांहिउतारे॥मिलसंगपुरोहितसानुजसोपुनकैकईनंद नआइअगारे॥ निशिवासकीयोघरभीतरतांउरभीतररामहि

रामचितारे॥ गुरुभ्रातअमातसभैंढिगहैंसुमनोनिशिमेंशशि हैंपरवारे॥ ८६॥ सुखनाहिलख्योउरभीतरतांइहचिंतवढीतिहं केउरमाही॥ मिलजानकिऔलछमनसमेरघुनायगयेसुवडे वनमांही॥ममआतसुराक्षसिकेसमचीतदहेमुखपेखनतेक्षण माही॥ वनजांउंअवैमतिएहुकरोंतजराजसभोनृपकोघर माही॥ ८७॥ ॥ दोहा॥ ॥ मंदहासमुखसुंदरोसीयसमं श्रीराम॥ तांपदपंकजसेवसीभरतसुआठोजाम॥ ८८॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकां डेसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥

॥ श्रीमहादेवउवाच॥ ॥ सवैया॥ ॥ प्रातवसिष्टसमे मुनिसंगसुमंत्रिसभेपुरवासिवुलाए॥ राजसभाजनुदेवस भातिहमांहिवसिष्टमुनीचलआए॥ मध्यसिंहासनकेमुनि सोजनुहैचतुराननजूसुखदाए॥ आनसुभूपतिकेसुतकोपुन सानुजतांहिकेवीचविठाए॥ १॥ ॥ चौपाई॥ ॥ देशकाल कोजोगसुजोइ॥ मुनिवरवचनवखान्योसोइ॥ भरतअहे तवपितुअनुशासन॥ तिलककरेंहमयहोसिंहासन॥ २॥ कैक इयाचनराजसुकीन॥ भरतसुतवहितयोंउरचीन॥ सत्यसं धदशरथवरराइ॥ राजदयोतिनमुखांअलाइ॥ ३॥ अवदे वेंतवतिलकवनाइ॥ मुनिवरमंत्रवदमुखगाइ॥ सुनकैभर तसुयांविधिवानी॥ ममनहिराजसाथकछुज्ञानी॥ ४॥ राजा रामसुअहेउदारे॥ हमतिनकेंहेंदासविचारे॥ प्रातकाल्हमु निवरमैजावों॥ रामचंद्रकोनगरलिआवों॥ ५॥ तुमसभ

मातहमारीजेती ॥ विनकैकेईचलेंसुतेती ॥ मातगंधर्वनीनाम सुएही ॥ अवहीहनोआइमनएही ॥ ६ ॥ परमोकोंरघुवरन हिंदेखें ॥ इस्त्रीवधनकलंकसुपेखें ॥ पादचारिदंडकवनजा वों ॥ काल्हप्रातनहिविलमलगावों ॥ ७ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ सत्रुघ्नसहितसुमैचलोंतुमचलहुचाहेमतचलो ॥ ॥ रामजिमवनमैंगयेतिमधारमैतनवलकलो ॥ फलमूल भोजनमैकरोंसत्रुघ्ननीकेल्यावई ॥ शिरजटाअवनीमैसवोंन हिरामजवलगआवई ॥ ८ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ इहभांति भरतसुधारमनमैमौनलीनीधार ॥ सभलोकभरतसराहहींमु खसाधुसाधुउचार॥शुभधर्मशीलप्रभातवर्नप्रतिभरतकीनप यान ॥ सुसुमंतसभैबुलाइसैनिकएहकीनवखान ॥ ९ ॥ चतुरं गनीसभसैनजेतीभरतकेअनुगाम ॥ शुभअश्वकुंजररथपदा तीरहेंआठोजाम ॥ सभराममाताआदिरानीगुरूलौद्विजरा ज ॥ सभओरचालेछाइभूमीरामदर्शनकाज ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गंगातटस्रंगवेरपुरसेनाकीननिवास ॥ रिपुहनभा प्योसर्वकोईहांकरोनिवास ॥ ११ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ सुनकैभरतागमकोमनमैअतिशंकभईगुहएहुविचारे ॥ व हुसैनसमेतसुकैकईनंदनआइपरोयहंगंगकिनारे ॥ नहिजा नपरेसंगसैनलईयहरामपरातमकोनहिमारे॥ सभलोकनको इहवातकहीचलसायुधयांमनलेहिंनिहारे ॥ १२ ॥ जोमनभी तरशुद्धअहतवलेममनावनसैनउतारे ॥ जोमनभीतरपापक छूतवनावनखैंचसुलाहुकिनारे ॥ जातिसभेममसंगचलैंगह

आयुधऔदिशिचारनिहारे ॥ इहभांतिबखानसुलोकनकोगु
हनूणकसेकरमैधनुधारे ॥ १३ ॥ बहुभांतिउपाइनतांहिलईपु
नसंगचलेबहुसायुधवीरा ॥ भरतैंपिखतांहिउपाइनलैगुह
आनधरीलखरामसुवीरा ॥ पिखमंत्रिसमंपुनसानुजतां
शिरमैजटहैंतनमैंबनचीरा ॥ उरभीतररामकीशोचकरेमुख
रामभनेहगजावतनीरा ॥ १४ ॥ अभिवंदनकैमुनिपाद
पतीगुहहोंमुखमाहिसुएहुबखाने ॥ तबकैकइनंदनवेगउठा
इसुसादरवैगलिमांहिलगाने ॥ कलिआनपुछीगुहकीमुख
तेपिखभ्रातसखामनमैंविगसाने ॥ यहरामसखापुनकैकइ
नंदनलोगनकोमुखआपबखाने ॥ १५ ॥ ॥ भरतउवा
च ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ भ्राततुमेरघुनाथकिसंगसुवास
कियोइहठौरसुहाई ॥ रामपरातमप्रेमभरेविगसेतुमकोग
लिमाहिलगाई ॥ धन्यभयोकृतकृत्यभयोमुखरापवसोंतु
मभ्रातअलाई॥रामसियालछमंनसमंजिहिंठौरपिखेबहुदेहु
दिखाई ॥ १६ ॥ ॥ अबसुभ्रतलेचलमोहितहांजहँसैनकि
योसीयसोंममवीरा ॥ तुमसेवकरामसुप्रीयतमातवभाग्य
महांजगमाहिगंभीरा ॥ इमरामसमारसमारतहीद्रिगकैकइ
नंदनजावतनीरा ॥ गुहसंगमिलेतहँठौरगएजहँरामवसेनि
शिगंगसुतीरा ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ शयनस्थानपिखे
तिनजाई ॥ जहँसोएथेकुशाविछाई ॥ सीताभरणबिंदुअ
तिसुंदर ॥ अंचितभूमिभईगुणमंदिर ॥ १८ ॥ दुखसंतम
रिदेअतिहोया ॥ भरतव्याकुलउरअतिरोयो ॥ अहोसीय

अतिशयसकुमारी ॥ जनकनंदनीगुणनअगारी ॥ १९ ॥
रत्नपलंघपुनमहलउदारे ॥ कोमलऊपरपाटसवारे ॥ रामस
हितसोवतथीतैसे.॥ सोकुशविष्टरसोईकैसे ॥ २० ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ सीतारामसुदुखभरे वनकुशपातनमाहि ॥ मेरो
हीअपराधहै औरसुकारणनाहि ॥ २१ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥
धृगमोहिपापनराशिकैकइजन्मयोउरमाहिं ॥ अतिममनिमि
त्तकलेशवनमैरामसीतापाहिं ॥ अतिधन्यलक्ष्मणजनमहैज
गरामकेसंगजोइ ॥ वनगयोहरपउदारउरनहिरत्योघरमैसो
इ ॥ २२ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ ॥ मैरामदासनदासको
पुनदासहोवोंगोजवी ॥ तवजनममेरोसफलहोवेशंकनहि
यामैकवी ॥ हेभ्रातजहँरघुनाथहैंवडुठौरजानतहोजवै ॥ कहु
मोहिरामानैनकेहितवेगजावोंमैअवै ॥ २३ ॥ ॥ सवैया ॥
गुहपेखतिनेअतिशुद्धमहामनप्रेमभरेइहवातउचारी ॥ तुमध
न्यभएजगमाहिसुनोरघुवीरविपेइहप्रीतितुमारी ॥ जनका
तमजालछमंनविषेअतिआहिसनेहतुमैसुउदारी॥ गिरिचित्र
सुकूटविराजतहैंजहँहैकदलीपनसाफुलवारी ॥ २४॥ ॥ नरा
जछंद ॥ ॥ मंदाकिनीसमीपरामसीयसानुजोरहैं ॥ अनंदकं
दपूरणोअपारसूखहूंलहैं ॥ तहांचलेंसमस्तहूंससैनगंगकोत
रो ॥ निपादराजभापयोकत्योविलंबनाकरो ॥ २५ ॥ अना
इनावपांचसैमहानदीतरावनी ॥ निपादराजआपराजनाव
आनपावनी ॥ चढाइराममातभ्रातसानुजंउदारधी ॥ वसि
ष्टकोचढाइयोंनिपादराजशीलधी ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥

कैकईऔरजोपिताजेती ॥ औरेनावचढाइसुतेती ॥ यांविधि गंगाउत्तरेपार ॥ भरतनिषादपतीसुउदार ॥ २७॥ भरद्वाज कोआश्रमजहां ॥ वेगगएवहुसगलेतहां ॥ सैनादूरसुथापपि छारी ॥ सानुजभरतसुगयोअगारी ॥ २८ ॥ आश्रममाहि सुमुनीविराजे ॥ तपोकांतिपिखपावकलाजे ॥ पेखभरतस हभक्तउदारी ॥ सहाशंगपदवंदनधारी ॥ २९ ॥ दशरथको सुतजानमुनीश्वर ॥ पूजनकीयोतांहियोगीश्वर ॥ शीशज टातनुवलकलधारी ॥ भरतपेखऋषिकीनउचारी ॥ ३० ॥ कुश लक्षेमतुमभरतकुमारे ॥ राजपाइकिंउंवलकलधारे ॥ कांहि निमित्तविपनतुमआए ॥ मुनिआश्रमशिरजटावनाए ॥ ३१ ॥ भारद्वाजवचनसुनपायो ॥ भरतनैनभीतरजलआयो ॥ भगवनसभभूतनउरजोइ ॥ तुमजानतहोसगलोसोइ ॥ ३२ ॥ तद्यपितुमपूछ्योप्रभुजोइ ॥ भयोअनुग्रहमोपरसोइ ॥ तु मसर्वज्ञसभैविधिअहो ॥ भापनतेजनकेअघदहो ॥ ३३ ॥ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ प्रभुरामराजविघातलोकैकईकीनोजो इ ॥ वनवासपुनसहसीयकोमैनाहिजानोकोइ ॥ तवपादसुग लसुगंदमोकोहेमुनीवरआहि ॥ इमभापभरतसुपादपकरेभ योदुखउरमाहि ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तुमहीजाननयोग्यहो हेमुनिपरमदयाल ॥ शुद्धअशुद्धसुमेमनो तुमहोज्ञानविशा ल ॥ ३५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ ममराजसुनाहिंप्रयोजनहेरघु नाथप्रभूजगराजनराई ॥ हमकिंकरहैंमुनिपुंगवजूरघुनाथ वलीपदकेसुसदाई ॥ इहतेहमजावतहैंवनमेंमुनिरामपदां

नुजकोशिरनाई ॥ तहँराजसंभारनिवेदभलेहमल्यावहँराम सुपादमनाई॥ ३६॥ ॥**शंकरछंद**॥ ॥सुवसिष्टऔपुरवासिजेपुनदेशलोकअपार॥ मिलकैसभैहमरामकोदैंभालतिलकसवार॥ तिनऔधनगरीलेचलोंपदसेवहोंपुरमांहि॥इहभांतिवानीभरतसुनमुनिहरपयोउरमांहि॥३७॥ गरलाइभरतसुंचूममस्तकमुनिवडाईकीन ॥ मैजानियोसुभविष्यपूरवकिउंभयोमनदीन ॥ सुतत्वंसुमित्रापूततेहैंरामभक्तउदार॥ आतिथ्यकीनोमैचहोंसहसैन्यसहपरवार॥ ३८॥ ॥**चौपाई**॥ ॥ सैनासहसुनभरतकुमार ॥ अवतुमभोजनकरोहमार॥ रात्रिवसोतुमइहांहमारे॥ रामसमीपसुजाहुसकारे॥ ३९ ॥ मुनिवरजिउंआइसहैथारे ॥ तिंउंकरहैंहमदासतुहारे ॥ भरद्वाजसुनभरतसुवानी ॥ जाइहुत्योघरभीतरपानी ॥ ४० ॥ मौनगहीघरहोममझारी ॥ कामधेनुकोध्यानसुधारी ॥ सिमरनकर्योसुमुनिवरजवही ॥ आईकामधेनुतहँतवही ॥ ४१ ॥ दिव्यसुसर्वकामथेजेई ॥ धेनुरचेतिहठौरसुतेई ॥ सैनासहितभरतकोजोजो॥ वांछतरह्योरच्योतिनसोसो॥ ४२॥ विंजनगीतनृत्यवहुभांती॥ मानोस्वर्गवसवहुराती॥भूपतिसुतपुनसैनिकजेई ॥ त्रिपिभएमुनिआश्रमतेई ॥ ४३॥ ॥ **दोहा**॥ ॥प्रथमवसिष्टसुपूजकैमुनिवरभारद्वाज ॥ सैनासहितसुभरतकोपुनपूज्योमुनिराज॥४४॥ ॥**सवैया**॥ ॥मुनिआश्रमनाकसमानविपेदिनरात्रिसुखीइहभांतिविताई ॥ अभिवंदपदांवुजभ्रातसमेसुचलेसगलेमुनिआइसुपाई॥ गिरिचि

त्रसुकूटगएसगलेतहंसैन्यसभाकछुदूरठराई ॥ गुहऔरसुमंतसुभ्रातउभेसुअगारिगएवनभूमिसुहाई ॥ ४५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ मुनिमंडलपेखतसुउदारी ॥ ढूंढेरामतहांवनचारी ॥ रामभवननहिनदरसुपर्यो ॥ मुनिमंडलकोपूछनकर्यो ॥ ४६ ॥ हेमुनिसीतासहितसुरामा ॥ लक्ष्मणसंगवसेंकिहधामा ॥ तवबोलेमुनियौंमुखमाहि ॥ गंगाकेउत्तरतटमाहि ॥ ४७ ॥ रामभवनएकांतसुहाए ॥ सुंदरकाननचहुंदिशिछाए ॥ कदलीआम्रपनसफलवारे ॥ भूमिविपेलटकेंजिनडारे ॥ चंपककोविदारफुलवारी ॥ पुंनागादिविपुलपरवारी ॥ ४८ ॥ यांविधिमुनिनजेंवैदिखराए ॥ भरतअगारीगयेसुधाए ॥ मंत्रीसहितअनुजपुनसंगा ॥ भरतभयेअतिपुलकतअंगा ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ आश्रमसुंदरराघवकोअतिसेवततांहिमहांमुनिज्ञानी ॥ रूखनमैवनचीरसुकेंम्रगछालभलेतरुसोंलपटानी ॥ फूललतातरुसोंलपटीजनुहैपतिनीपतिसोंलपटानी ॥ कैकइनंदनसानुजवैअतिदूरतिहेरलयेसुभवानी ॥ ॥ ५० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मादिकजांकोभजेंमुनिजनऔसनकादि ॥ वैसोयेतरुतरपिखभ्रातपलोटपाद ॥ ५१ ॥ इतिश्रीमद्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ रामकिआश्रमकीढिगजाइसुकैकइनंदनरामपिआरे ॥ वज्रध्वजांकुशवारिजसेंपदचिन्हभलेधरमाहिनिहारे ॥ सानुजतांरजलेटपरेसुअहोहमधंन्यसुआपउचारे ॥ रामपदांबुजचिन्हत

जेवहभूतलयांवनमाहिदिखारे ॥ १ ॥ जांपदपंकजकीरज कोचतुराननलौंसुरढूंढतसारे ॥ वेदविचारतनीतफिरेंपुनढूंढ तहेंसनकादिकचारे ॥ प्रेमभरेइहभांतिउमाअतिकैकइनंदन रामपिआरे ॥ जातभयेढिगआश्रमकीउरआनंदनीरकेजां हिपनारे ॥ २ ॥ तहँपेखरमापतिरामवलीतनुश्यामभलेद्रिगवा रिजसे ॥ शुभशीशजटातरुछालनईतनुअंवरऔमुखवारिज से ॥ तरुणारुणश्रीपतिशोभितहेंमरदेपदसीयसुवारिजसे ॥ ज नकातमजासुविनोदकरेसुखिरेमुखपंकजवारिजसे ॥ ३ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ लक्ष्मणसेवतजांपदवारिज ॥ भरतहेरतिंहदौरे आरज ॥ हरषशोचयुगपदतिनआयो ॥ रामपदांवुजमेंलपटा यो ॥ ४ ॥ रामभुजागहिकीनउधार ॥ गरलायेद्रिगजावेवा रि ॥ अंकबीचपुनभरतविठाए ॥ पुनपुनरामगरेनिजलाए ॥ ॥ ५ ॥ वहुररामकीमाताजेती ॥ जाइपहूनीवेगसुतेती ॥ त्रि पावंतगऊआंजगजैसे ॥ रामपिखनहितगईसुतैसे ॥ ६ ॥ रा मसुमातनिहारीजवही ॥ उठवंदेतिनचरणसुतवही ॥ माता सुतकोकंठलगाए ॥ कीनविलापद्रिगनजलजाए ॥ ७ ॥ इत रमातकोलेनिजनामा ॥ सीयसहिततिनकीनप्रणामा ॥ वहु रवसिष्टतहांचलआए ॥ रामपेखगुरअतिहरपाए ॥ ८ ॥ सहाष्टांगपदकरीप्रणामा ॥ आजधंन्यहमभनेसुरामा ॥ य थायोग्यआसनबैठाए ॥ पुनरघुवरइहबैनअलाए ॥ ९ ॥ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ हैममतातमहाकुशलीअतिदुःखतकिंपुनमो हिवखाने ॥ रामकीबातसुनीजवहीतवआपवसिष्टसुवाक्यअ

लाने ॥ विरहेतवरामसुभूपतपेतवचिंतसुसिंधुभएगलताने ॥ रामसियालखमनभनेमुखभूपतिप्रानभएपुरहाने ॥१०॥ सुनकेगुरुवाक्यसुरामवलीजनुकानत्रिशूललगोअतिभारी ॥ अतिरोइसभ्रातकह्योमुखहाधरमाहिंगिरेअतिखाइतवारी ॥ तवरामविहालसुपेखतहींसभरोतभईनृपकीतहँनारी ॥ पुनरामवखानसुहामुखतेकहँतातगयेतजमेघ्रिणकारी ॥११॥ तातअनाथकियाहमकोअवकोधरगोदसुमोहिलडावे ॥ सीयसुमित्रजरोवतहैंतनविआकुलऔद्रिगतेजलजावे ॥ तवआपवसिष्टसुशांतकरमुखशांतहिंकेवहुवाक्यसुनावे ॥ सुनतातकीमृत्युसपूतवलीधरधैरयताहिकीकृत्यकरावे ॥ १२ ॥

॥ **चौपाई** ॥ ॥ यांविधिमुनिवरभाख्योजवही ॥ मंदाकिनीगएहरितवही ॥ करेस्नानसभकलमपटारि ॥ रामलियोकरभीतरवारि ॥ १३ ॥ जलकांक्षीराजाकोतवही ॥ दियोरामलक्ष्मणपुनसवही ॥ लक्ष्मणसहितरामवलधारी ॥ पिंडवनायेआपसवारी ॥ १४ ॥ इंगुदफलपिंन्याकनकरे ॥ मधुसुधारअतिसैंसंचरे ॥ हमरोअंन्नअहेजगजोई ॥ पितरनकापुनभाख्योसोई ॥ १५ ॥ यांविधिदूखनीरद्रिगजाए ॥ करसुस्नानवहुरगृहआए ॥ चिरंरोइसभआएतहां ॥ रामचंद्रकाआश्रमजहां ॥ १६ ॥ तादिनमैंकीनोउपवास ॥ अग्रमदिनसुगयेजलपास ॥ मंदाकिनिउज्वलजलमाही ॥ नाइरामबैठतटमाही ॥ १७ ॥ भरतसमीपरामकेगए ॥ हाथजोरयहवचनअलए ॥ रामरामहेप्रज्ञाधारी ॥ राजतिलकतुमगहो

मुरारी ॥ १८ ॥ तातराजयहआहितुमारो ॥ तुमसुज्येष्ठजिउं पिताहमारो ॥ क्षत्रिनकोयहधर्मकहीजे ॥ जोनिजप्रजासु पालनकीजे ॥ १९ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ बहुभांतियागसु तुमकरोपुनपूतनिजउपजाहु ॥ राजमैसुनथापकैपुनरामतुम वनजाहु ॥ वनवासकोअबकालनाहीरामहोहुदयालु ॥ म ममातदुःकृतजोकरेमनमाहिंनाहिंसमाल ॥ २० ॥ इहभांतभ रतवखानकैशिररामचरणनदीन ॥ करजोरसभकेपेखतेअष्टां गवंदनकीन ॥ तवरामतांहिंउठाइकैनिजगोदलीनबिठरि ॥ पु नरामभरतवखानयोद्रिगवहेप्रेमसुवारि ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनोवत्सअबतोहिबखानो ॥ जोतूंकहेसत्यमैजानो ॥ किंतुतातमुहआपवखानी ॥ चौदावरपअवधउरठानी ॥ २२ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ अबदंडकावनवासकरतुमआउ पाछेग्राम ॥ मैभरतकोघोंराजसगलोजोअहेधनधाम ॥ इ मआपभूपवखानयोतवराजहोयोसोइ ॥ यहदंडकावनमुहि दयोयहजानहैसभकोइ ॥ २३ ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ सुता तवाक्यदानकोअलंघ्यभ्रातजानिये ॥ कत्योकरेंसुतातकोहठं नभ्रातठानिये ॥ सुनातवाक्यलंघ्यकेसुतंतरंकरेसुजो ॥ सुजी वतोन्रतंभयोमुयोनरक्कपाइसो ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तातेराजकरोतुमभाई ॥ हमदंडकवनपालेंजाई ॥ वहुरश मप्रतिभरतवखानी ॥ सोतुमनीकेसुनोभवानी ॥ २५ ॥ तातमूढमतिकामुकआहि ॥ इस्त्रीजीतभ्रांतउरतांहि ॥ मत्त तातभाषेजगजोई ॥ सत्यगहीजंनाउरसोई ॥ २६ ॥ ॥ दो

हा ॥ ॥भ्रांतवाक्यजिमनागेहलोकविषेधीमान ॥ तिमभूपतिकोवाक्ययहहमकोनाहिंप्रमान॥ ३० ॥ ॥ **श्रीरामोवाच** ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ नतातनारिजीतिओनभ्रांतहोइतांकही ॥ नकामकोनमूढधीसुपूरवंपिताकही ॥ सुसत्यवाक्यभूपतीवरंसुदोनतांदये ॥ असत्यतेडरेवडेनरक्कतेअधिक्कये ॥ ३१ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ करोंसत्ययौंमोहिउचारी ॥ भूपतिसुनतसुभवनमझारी ॥ मैरघुवंशविषेजगजयो ॥ वनअसत्यनवाक्यसुकयो ॥ ३२ ॥ यांविधिरामवखान्याजवही ॥ बोलतभयेभरतपुनतवही ॥ जौवनवासअवश्यकअहे ॥ तौतुमसुनोभरतजोकहे ॥ ३३ ॥ मैवनजांउंधीरतनुधरों ॥ चौदावर्षवासवनकरों ॥ तुमपुरराजकरोसुखजाई ॥ सुनबोलेगिरिजारघुराई ॥ ३४॥ ॥ **श्रीरामोवाच** ॥ ॥ पिताराजतोकोंहैदयो ॥ वनोवासतिनमोहिअलयो ॥ उलटोकर्योंबनेअवनाही ॥ होइअसत्यवचनपुनतांही ॥ ३५ ॥ ॥ **भरतोवाच** ॥ ॥ मैभीचलोंसंगवनवास॥ सेवोंलक्ष्मणजिउंतवपास ॥ संगलेचलोनजोरघुराईतौमैतजोंकलेवरभाई ॥ ३६ ॥ यौंउरभीतरभरतसुधारि ॥ लैकरकुशासुधरणिखिलारि ॥ मरणआपनोउरमैधर्यो ॥ वैठकुशापूरवमुखकर्यो ॥ ३७ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ हेरहठीलेभरतकोरामहियेविस्माहिं ॥ नेत्रांतकसैननकरीगुरवसिष्टप्रतितांहिं ॥ ३८ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ अहेवसिष्टमुनीश्वरज्ञानी॥ रहेभरतप्रतितांहिवखानी ॥ अन्नासनजोकीनवखान॥ सो

तुमसुनउरअंतरमान ॥ ३९ ॥ ॥सवैया॥ ॥ कमलासनकी विनतीवसव्हैयहरामनरायणभूतलआए ॥ सुतरावणकेव धकाजजयेअजनंदनकेसुतरामकहाए॥ सुविदेहसुतायहजा नकिजोसभलोकनकीजननीयहमाए ॥ ढिगरामकिजोलघु भ्रातअहैयहशेषवलीनितरामसहाए ॥ ४० ॥ ॥ सवैया ॥ रावणकेवधकाजचलेवनकैकइकोअपराधनहै ॥ जोवरयां चनतांहिंकरेकछुनिपुरवाक्यसुतांहिंकहै ॥ देवनकोकृतआ हिसभोनहिरामकुभापतएववहै ॥ रामहटावनकोहठजोतु मदूरतजोउरमानकहै ॥ ४१ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ कुलसं गसुरावणमाररणेयहवेगसुआवहिंगेपुरमाही ॥ सुनकै गुरवाक्यसुकैकइनंदनहोइरहेविसमैउरमाही ॥ ढिगरामकि जाइसुवातकहीउरआनंदनैनखिरेमुखमाही ॥ निजपादुकदे हिसुरामवलीतिनपूजहुंराजासिंहासनमाही ॥ ४२ ॥ ॥ स वैया ॥ ॥ तिनकोतहिंसेवननीतकरोंउरकालपिखोंतवआव नको ॥ इहभांतिउचारसुपादुकवैतिनजोरदईपदपावनको ॥ पदरामउत्तारसुआपदईअतिसुंदरतांमनभावनको ॥ गहि कैकइनंदनपादुकवैउरआसकरीपुरजावनको ॥ ४३ ॥ कर रामप्रदक्षणवंदनजूपुनकैकइनंदनएहुवखानी ॥ उरप्रेमभरे द्रिगवारिवहेमुखमाहिभईसुगदागदवानी ॥ कृतऔधसमा पतिआदिदिनानहिआवहुजोमनुकीरजधानी ॥ मखसाच कहोंसुनरामवलीजरपावकदेहकरोंनिजर ॥ मुखनेमकरेरघुवीरवलीकरप्रेमभलेलघुवं

न्यवसिष्टसुभ्रातसमंविनकैकइऔरसभेतिनमाए ॥ पुनऔरअमातवजीरवडेपुरिजावनकेहिततांहिंचलाए ॥ द्रिगनीरसुव्याकुलजोरउभेकरकैकइरामइकंतसुजाए ॥ ४५ ॥
॥ **केकेईउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तवराजविघातनरामकियोममदुष्टमतीतवमोहितमाया॥क्षममेअपराधसुरामवलीसुक्षमागुणतेजगसाधनगाया ॥ तवब्रह्मसनातनवेदकहेंनहिंवापनहीतवरामसुमाया ॥धरमानुपरूपसुमायकएहरिमोहितहोइहलोकसवाया॥ ४६ ॥ जिमप्रेरतरामसुतूंजगमैतिमलोकशुभाशुभनीठकमावे ॥ तवनीतिअधीनसुविश्वअहैयहनाहिसुतंतरहोनसुपावे ॥ कृतकंचनिजिउंजगनाचकरेकपटीजिहभातिसुतांहिनचावे॥तवलोकउपावनकीशकतीतिमनाचकरेबहुरूपदिखावे॥ ४७॥ देवनकेहितकाजतुमैममप्रेरइहैमुखवातकहाई ॥ मैमनपापनिपापकियोवरमांगलईशिरमैवुरिआई॥देवनपेखसकेंतुमकोअजुमेउरमैपरतीतिसुआई॥पाहिनरायणत्वंजगमैजगनाथनमोममतेशरणाई॥ ४८ ॥ कटमोहसनेहसुपाशमहासुतऔगृहगोचरजोअधिकाई॥तवज्ञानअसीअतिउज्वलकैरघुनाथगहोतुमरीशरणाई ॥ सुनकैकइकीयहवाततवैगिरजामुखभीतररामअलाई ॥ तुमसाचकहीनहिझूठअहैइहरीतिसभाजगमोहिवनाई ॥ ४९ ॥ ममप्रेरतसारसुतीजगमैसुनतेमुखतेनिकसीइहभांती ॥ हितदेवनकेइहकाजकरइहमैतवदोपनहीममधाती ॥ धरजाहुरिदेममध्यानधरोउरभावनमोहिकरोदिनराती

सभठौरसनेहमिटेतुमरोमुकतीतुमहोवहिगीसुखदाती॥५०॥
॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ मैसमद्रिष्टसर्वमैरहों ॥ द्वेपीपियारोना
हिनगहों ॥ कल्पकअनुसारीमेरीति ॥ जिउंममभजेभजों
तिंउंचीति ॥५१॥ ममभायाकरमोहितज्ञान ॥ मनुजाकृत
मुहिलेहिंसुमान ॥ सुखदुखकोअनुसारीजाने ॥ तेनहिमेरो
तत्वपछाने ॥ ५२ ॥ भलोभयोममगोचरज्ञान ॥ तोहिभ
योभववंधनहान ॥ गृहमैभजोसुपादहमारे ॥ करमछुहेंगेना
हितुमारे ॥ ५३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ इहविधिभाष्योरामजी
उमाकैकईपास ॥ मुखपंकजतांकेखिरेभयोसुमनेहुलास॥
॥५४॥ ॥**कैकेईउवाच**॥ ॥**चौपई**॥ ॥शुद्धवुद्धपरमा
तमराम ॥ मेरीहैतेपदपरणाम ॥ तज्ञरामतूंआहिअनंता ॥
त्वंनिरगुणत्वंसर्वनियंता ॥ ५५ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ यां
विधिउस्तुतितांकरीकरप्रदक्षणाराम ॥ सौवंदनभूमैकरीमु
दितगईनिजधाम ॥ ५६ ॥ ॥**चौपाई**॥ ॥ भरतसुसैनाम
हितवजीर ॥ भ्रातसमेतसहितगुरुधीर ॥ शीघरगयोअयो
ध्यामाहीं ॥ रघुवरकोचितवेउरमाहीं ॥ ५७ ॥ पुरकेलोकसं
गथेजेते.॥ पुरीअयोध्याथापेतेते॥नंदगाममैगयेसुआप॥
पादुकधरीसिंहासनथाप.॥ ५८ ॥ भक्तसमेतसुपूजेनीत
रामबरोबरतामैचीत ॥ अक्षतगंधसुफूलचढावे ॥ नित्यरा
जउपचारनध्यावे ॥ ५९ ॥ ॥**सवैया**॥ ॥ फलमूलअहार
करेनिशिकोमनदांतजटाशुभशीशवनाई ॥ वटव्रत्तिधरीत
हँभ्रातसमंपुनआपभयोधरभीतरशाई ॥ भवभूतलराजकि

कारयजेविनपादुकवातकरेनहिकाई ॥ जगदंडइनामुसुहोइ जितोरघुवीरक्किपादुकमाहिजनाई ॥ ६० ॥ ॥ **चौपाई** ॥ रामागमनआशउरमाही ॥ गनेभरतदिननिजमनमाही ॥ रामविपेमनतांकोजूटो ॥ मनोब्रह्ममुनिध्याननछूटो ॥ ६१ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इतकैकइनंदनआइभलेनंदग्रामविपेमुनिरीति बनाई॥उतरामवलीगिरिचित्रविपेमुनिसोंमिलवासकियोसु खदाई ॥ शुभसीयसुभ्रातसमेतवसेसभलोकनवातइहैसुन पाई ॥ वनरामनिहारनकेहितजूसुलगीतहँआवननीतलुका ई ॥ ६२ ॥ रामनिहारसुभीरतहांउरधीरवडेमनकाजविचा री ॥ त्यागचलेगिरिचित्रतवैवनदंडककीमनभीतरधारी ॥ अ त्रिमुनीश्वरआश्रममैचलआपगयेसुमुकंदमुरारी ॥ भीरनही जनकीसुजहांफलफूलजरीलटकीतरुडारी ॥ ६३ ॥ ॥ **तो टकछंद** ॥ ॥ ढिगजाइपिखेमुनिरामतपी ॥ सुतपोवनमैं जनुकोटिपपी ॥ अभिवंदनरामसुजाइकही ॥ हमरामअहों मुखमाहिकही ॥६४॥ ॥ **श्रीरामोवाच** ॥ ॥सुनदेवकहो करंमोहिमया ॥ पितुआइसुलैवनमाहिअया ॥ वनदंडकवा ससुमोहिगहे॥ अजुधंन्यभयोतवदर्शलहे ॥६५॥ ॥ **दोहा** ॥ रामवाक्यमुनिसुनतहीउमासुउरहर्षान ॥ जानेरामपरा तमाभवभंजनभगवान ॥ ६६ ॥ ॥ **अत्रिरुवाच** ॥ ॥ **शं करछंद** ॥ ॥ श्रीरामतूंजगपूजहैंआनंदकारकआंहिं ॥ ममपुंन्यआश्रमकरनकेहितआगयोवनमांहि ॥ इहभांतितां मुनिभापकैलैपीठरामविठाइ ॥ करअर्घपूजारामकीवनमी

ठफलहँखवाइ ॥ ६७ ॥ पुनसीयलक्ष्मणकोदयेवहुभांतिकी नस्नेह॥ संतुष्टमुनिवरहोइकैमुखभाषयोपुनएह ॥ हैभारयामे वृद्धअतिअनुसूयहैइहनाम॥ अतिधर्मवंतीकीनतपइहकंदरा चिरराम॥६८॥ अंतररहेतिंहंजनकजापेखेसुमंदिरमांहिं ॥ श्रीकंजनैनसुरामजीभाष्योतवैसियजांहिं॥ वंदनकरोपदजा इकैपुनवेगआइसुठौर ॥ सत्येतिरामवखानसीतागईतांढिग दौर॥६९॥ तवदंडवतवंदनकरीअनुसूयासीताचीन॥गरिला इसियउरहर्षकैमुखबोलआदरकीन॥पुनदिव्यकुंडलदादयेजो विश्वकर्माकीन ॥ शुभदिव्यदोनपटंबरातिनदएआपनवीन ॥ ७० ॥ अंगरागलगाइपुनसियअंगनीठसवार ॥ नहिकां तितेतनकोतजेकमलाननेवलिहार ॥ सीतपतिव्रतधारकैचर रामकेअनुसार॥तवसंगकुशलीरामजीपुनजांहिंनगरमझा र॥७१॥ ॥दोहा॥ ॥लैअशीसमुनिनारितेसीतावाहि रआइ॥वैठीरामसमीपमैशोभाकहीनजाइ॥७२॥लक्ष्मण सीतारामकोवहुरसुफलनखवाइ॥ वोलेमुनिकरजोरकरपर महर्षउरआइ॥७३॥ ॥सवैया॥ ॥रामतुमेभुवनानिरंचे तिनरक्षणकेहितदेहधरे ॥ वामनतूंसुरमांहिंभयोनररामइहै सुवराहकरे ॥ तोहिनहीगुणलेपकछूमहमायसदातुमतेसुड रे॥अत्रिमुनीवरयौंमुखतेहरिपुन्यकथावनमेविथरे॥७४॥ कविरुवाच॥ ॥सवैया॥ ॥जिनकेगुणगावतहैंसनका दिकऔमुखमैचतुराननगावे॥गुणगावतनारदवीनलयेशि वपारवतीप्रतिनित्यसुनावे ॥ सुउचारतशेपहजारमुखानहि

अंतकवीजगभीतरपावे ॥ कविसिंहगुलावसुतारघुनंदनपुन्यकथासुनिपापमिटावे ॥ ७५ ॥ जिनकेयुगभ्रातवसेंनंदगांउंसुएकभयेतिनसंगसहाई ॥ जिनराजविभूतितजीछिनमैतनभीतरजांमुनिरीतिवनाई ॥ जिनकीअतिगोप्यकथाजगमैशिवऔरिपिमंडलगोप्यजनाइ ॥ कविसिंहगुलावसुतारघुनंदनऔधकथाजनभापसुनाई ॥ ७६ ॥ इतिश्रीमत्अध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेनवमोऽध्यायः ॥ ॥ ९ ॥ द्वितीयकांडंसमाप्तम् ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अरण्यकांडम्.

श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ अरण्यकांड प्रारंभः

श्रगणेशायनमः॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वनदंडकजांहरिवा सकरेमुनिमंडलकेसभदूखमिटाए ॥ करतानकमानविरा धहनेखरदूपणसेसुघनेअरिघाए ॥ जिहंब्रह्मसनातनवेद भनेशिवऔचतुराननकीरतिगाए ॥ पदपावनतांमनभावन कीहमबालकहैंशरणागतिआए ॥ १ ॥ ॥ श्रीमहादेवउ वाच ॥ ॥ परमातमसुंदरतांरिपिमंदररातिवसेपरभातभ ए ॥ हरिपावनपावनिनीरविषेभरअंजुलिऔइसनानकए ॥ करजोरभलेमनभावभरेमुनिपुंगवकीढिगरामगए ॥ वनदं डकजोमुनिमंढितहैमुनिपुंगवजूहमचांहिंजए ॥ २ ॥ तुम आइसुदेहिमहामुनिजूपथदेखनकेहितएह्नसुकीजे ॥ पथजा ननजेतवशिष्यभलेकरआइसुवैहमसंगसुदीजे ॥ सुनराम किवाक्यसुअत्रिमुनीहसवातकहीसुउमासुनलीजे ॥ सभ कोतुमपंथदिखावतहोतुमरेहितऔरसुकौनकहीजे ॥ ३ ॥ ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ तथापिरामलोककेनुसारतूंभयोजवै ॥ दिखाहिंतोहिपंथकोमुरारिशिष्यमेअवै ॥ बुलाइशिष्यवैमु

नीसुआपसंगहूंभए ॥ सप्रेमरामवारिओमुनीशभौनकोगए ॥ ४ ॥ सुक्रोशरामजौगएपिखीतहांमहानदी ॥ मुनीशशिष्य रामजीवखानिओसुयोंतवी ॥ उपाइपारजानकोकहोकुमार आहिको ॥ नदीतरेंसुकांहिंसोंपिखेंउपाइनाहिको ॥ ५ ॥ मुनीशशिष्ययोंकहीसुनावएकहैभली ॥ तरांहिगेक्षणेकमैसुनोसुरामजूभली ॥ चढाइरामसीयभ्राततनावमैकुमारका ॥ चुफेरनावकेलएवनाइनीरतारका ॥ ६ ॥ ॥सवैया॥ ॥ जिंहँनामउचारतरेभवसागरनाहिंलगेकछुरंचकवारे ॥ जिंहँनामसुनेभवफंधटुटेंसुमिटेंभवभीतरकेअघभारे ॥ अवचेलनवातकहांकहियेसुनजांगिरिजागिरिजाहरतारे ॥ रघुनाथवहीसुनपारवतीमुनिदारकवैक्षणमाहिउतारे ॥ ७ ॥ अभिनंदनकैरघुनाथवलीमुनिदारकवैपुनआपहटाए ॥ मुनिआश्रमवैमुनिवालगएपुनरामवलीवनपंथसिधाए ॥ वनघोरमहाझनकारितझीलसुडीलवडेम्रगपुंजसुहाए ॥ अतिसिंहसुव्याघरकोलवडेइतिरातसुराक्षसहैंतिहंछाए ॥ ८ ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ रामप्रवेशकीयोवनभारी ॥ लक्ष्मणप्रतियोंकह्योमुरारी लक्ष्मणसावधानअवचालो ॥ मेरोवचननमनतेंटालो ॥ ९ ॥ धनुपमाहिगुनलेहुचढाई ॥ करभीतरशरलेवोभाई ॥ आगेचालोंमैपथिमाही ॥ पाछेतूंधनुलैकरमाही ॥ १० ॥ दोनोमैसियचालेऐसे ॥ जीवईशमैमायाजैसे ॥ दृष्टिपसारोचारोओर ॥ वनमैराक्षसकोभयघोर ॥ ११ ॥ मैसुनिओसुपूर्वहीभाई ॥ तोहिअरिंदमदयोसुनाई ॥ यांविधिभापतदोनोभाई

योजनडेढगयेसुखदाई ॥ १२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तहँएक तलावसुरामपिखेबहुफूलरहेजहँतामरसा ॥ वहुभांतिविहंग सुगुंजतहैंअतिसुंदरहैंयुगसारससा ॥ अतिगुंजतभ्रिंगचुफेर फिरेंजलशीतलऔमधुजांहिरसा ॥ सरतीरगयेअचनीरभ लेतरुछायविपेरघुवीरवसा ॥ १३ ॥ पुनआवतरामपिख्योइ कराक्षसदीरघदेहभयानकभारी ॥ मुखदाडकरालसुगाजत हैंजिहंपेखसभैसुडरैंनरनारी ॥ जिहँमानुपआंहिंअनेकग्रथेअ सवामसुकंधत्रिशूलसुधारी ॥ महिषागजव्याघरखावतहैतिन पेखसुरामकमानसंभारी ॥ १४ ॥ रामअरोपकुवंडगुणंलघु भ्रातहँकोइहवातउचारी ॥ भ्रातपिखोयहराक्षसआवतदीरघ पीनजिसेतनभारी ॥ संमुखआवतहैहमकोजगभीरुणकोभ यदेवतभारी ॥ लेहुअरोपकुवंडगुणंभयदूरतजोसुविदेहकु मारी ॥ १५ ॥ इमरामवखानलयेशरपानसुआपखडेगिरि जागिरिसे ॥ पिखरामरमापतिभ्रातसियागिरिजावहुराक्षस घोरहसे ॥ भयदेवनकेहितवोलउठेतुमकौनअहोकटितूंणिक से ॥ शुभशीशजटातरुछालनईमुनिभेपधरेवनमाहिंधसे ॥ ॥ १६ ॥ तुमनारिसहायमहामदसुंदरमेमुखभीतरआइपरे ॥ ममग्रासमनोविधिनीठरचेकिहँहेतुकहोवनमाहिवरे ॥ सुनरा क्षसवाक्यउमाहरिजीमुसकावतहीइहवाक्यकरे ॥ हमरामअ यंममभ्रातपिखोलक्षमंनकहेंवलरूपवरे ॥ १७ ॥ इहसीयअहे ममप्राणप्रियापितुआइसुलैवनभीतरआए ॥ तुमसेलखराक्ष सघोरवडेतिनकीसिखिआहिततातपठाए ॥ सुनकयहराघववा

क्यउमाखलहास्यउठेमनमैहरपाए ॥ करधारत्रिशूलपसारमुखंपुनराघवकोयहवाक्यअलाए ॥ १८ ॥ मोहिनजानतरामतुमैसुविराधवलीसभलोकसुनाए ॥ भाजगएमुनिमेडरतेवनत्यागसुनोअबलौनहिआए ॥ जौमनजीवनआशतुमेइहछोडसियातुमजाहुपलाए ॥ नाहितरामकरोंतुमभक्षनदक्षनदेशकहोकिमआए ॥ १९ ॥ राक्षसयांविधिभाषउमापुनजानकिलेवनकेहितधायो॥काटदईभुजदोतिहँकीहसरामबलीशरएकचलायो॥क्रोधभरेपुनराक्षससोसुपसारमुखंहरिकीढिगआयो॥रामदयोशरतानतिसेकटपादउभेअतिदूरवगायो॥ २० ॥ मानअचंभसुराक्षससोअहिसेमुखसोंहरिखावनआयो॥राघवताकसुमुंडतिसेपुनआधशशीशरएकचलायो ॥ श्रोणितधारअकाशगईशिरराक्षसरामसुकाटवगायो॥ सीयसराहकरेतवरामकिप्रेमभरीसुउमागललायो॥ २१ ॥ तवदुंदुभिदेवनकेसुवजेनभकोटिअपच्छरनृत्यदिखावे॥उरआनंदऔउतसाहभरेगणगंधवकिंनरबाजवजावे॥सुविराधहिंकेतनतेइकसुंदरऔरभयोअतिरूपसुहावे ॥ विमलांबरकांचनभूपनहैंसुमनोरविऔरभयोइमआवे ॥२२॥ ॥**विद्याधरउवाच**॥ ॥**सैवया**॥

अभिवंदनवंदितआरतिहाभवकंदनहाअतिदीनदयाला ॥
अभिवंदनवंदनदंडसमंशरणागतिहासुप्रसन्नविशाला ॥ जलजायतनैनसुरामवलीविदिआधरहोंसुप्रकाशविशाला ॥
दुरवासअकारणक्रोधभरेमुहिश्रापदयोअतिशैसुकराला ॥
॥ २३ ॥ तेपदनीतसंभाररहेभवफंधनमेजगभीतरटारे ॥ ना

मकथातुमरीममवाककहेसुसुनैंपुनकानहमारे ॥ द्वैकरतेप
दसेवकरेंशिरतेपदपंकजवंदनधारे॥ हेभगवाननमोतुमकोज
गआनंदज्ञानस्वरूपमुरारे ॥ २४ ॥ आतमरामसियारमणे
जगकारकमैंशरणागतिआयो ॥ मैंभवसिंधुसुनाहिंवहोंअ
वतोहिवनेहरिलेहुछुडायो ॥ आइसुदेहिसुमेहरिजीउरचाहि
तहोंसुरलोकसुजायो ॥ रामइहैवरमोहिदिजेममबोधहरेन
हितेप्रभुमायो ॥ २५ ॥ ॥दोहा॥ ॥इहभांतीवरमागिओ
दयोरामपुनसोइ ॥ विद्याधरकेवाक्यसुनपरमप्रसन्नसुहोइ
॥२६॥ ॥श्रीरामोवाच॥ ॥सवैया॥ विदिआधरजाहुसु
देवपुरीनहिमायकतेगुणलेपकरे ॥ ममपेखनतेतवमोक्षभई
तुमहोसभतज्ञनमाहिवरे ॥ जगमोक्षप्रदायकमेभगतीसुअ
होविरलोजनकोइकरे॥ अवतूंममभक्तिसपंनभयोममआइ
सतेसभवंधहरे ॥ २७ ॥ राक्षसरामहनेवनमैंपुनश्रापविमो
ककरेक्षणमाहीं ॥ रामदयोवरतांहिंपुनाविदिआधरहोइगयो
नभमाहीं ॥ रामकिनामलयेअखिलारथपावतहैंजनयाजग
माहीं ॥ किंनभजेंगिरिजावहुरामसुकोविदजेभवमंडलमा
हीं ॥ २८ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे
अरण्यकांडेप्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥
॥ श्रीमहादेवउवाच॥ ॥चौपाई॥ ॥ गयोविराधस्व
रगकोजवही ॥रामसीयलक्ष्मणपुनतवही॥ रूपिसरभंगआ
श्रमहिगए॥ सर्वसूखजिहँभीतरनए ॥ १ ॥ आवतसीताल
क्ष्मणराम ॥ पेखउठेमुनितपकोधाम ॥ पूजनकीनोसनमुख

जाइ ॥ ऊत्तमआसनमैंबैठाइ ॥ २॥ कंदमूलफलभोजनदीनो ॥ तिनआतिथ्यभलीविधिकीनो ॥ ऋपिसरभंगसुभक्तिपरायन॥ बोलेरघुवरप्रतितपआयन ॥ ३॥ तपकोनिश्चयमैंउरधारि॥ बहुतकालइहिबस्योमुरारि ॥ तवदरशनकीइच्छाराम॥ त्वंपरमेश्वरपूरणधाम॥ ४॥ तपोसिद्धबहुपुन्यसुकीनोसोसभरामतोहिमैंदीनो ॥ मैंअवमुक्तभयोतवहेरे॥ यांविधिउमाऋषीश्वरटेरे॥५॥ ॥ सवैया॥ ॥सभपुंण्यदएरघुवीरवलीसरभंगभयोफलमांहिअसंगा ॥सुवनाइचितातिहिंमांहिचढेरघुनाथप्रणामकरीसरभंगा ॥ पुनरामहिंध्यानधयोंउरमैंतनुश्यामहाद्रिगकंजउतंगा ॥ तनुचीरधरेशुभशीशजटासुसरासनऔकटिमाहिनिखंगा ॥६ ॥ कौनदयालुवियोबिनरामसुचिंततकामदगोजगसारे ॥ मोहिभजेनितएकमनावहुजानममार्थआपपधारे ॥ जारतनूविधिलोकचहोअबदाशरथीरघुवीरनिहारे॥ औधपतीयहिराघवजोसहसीयवसेउरमांहिहमारे॥७॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ वामअंकजिहँसीयसुहाई ॥ मनोमेघसहतडिताआई ॥ यांविधिध्यानचिरंतिनधारे॥ सनमुखखडेसुरामनिहारे ॥ ८॥ बहुरोअग्निसुचितालगाई ॥ पांचभूततनुदयोजलाई ॥ दिव्यदेहधरऋषितपधारे ॥ लोकपतीकेलोकपधारे ॥ ९ ॥ दिव्यविमानचढेऋषिऐसे ॥भ्राजमानदूसररविजैसे ॥ दिव्यनारिनरचामरकरें॥ व्यजनसुचारओरतेफिरें॥ १० ॥ विष्णुदूतचौतरफीजावें ॥ विद्याधरआगेयशगावें ॥ दिव्यफूलमालागलसोहे

तेजतपस्यासभजगमोहे ॥ ११ ॥ पिखसरभंगगएनभमांहीं ॥ भएसुविस्मयऋपिमनमांहीं ॥ दंडकवासीऋपिगणसारे ॥ सरभंगासनमाहिपधारे ॥ १२ ॥ आएपेखनरामहिंसभही ॥ रामसियालक्ष्मणपुनतवही ॥ गिरिजावंदनतीनोकीनो ॥ मायाकरमानवतनलीनो ॥ १३ ॥ देहिंअशीशऋपीश्वरसारे ॥ रामहिंजोसभरिदमझारे ॥ हाथजोरऋपिरामहिंकव्यो ॥ धनुपनिखंगजाहिंकरगव्यो ॥ १४ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ भूमिभारकेहरणहिततुमउपजेरघुनाथ ॥ ब्रह्माजूविनतीकरीजोरउभयनिजहाथ ॥ १५ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ हमजानेंतुमविष्णुस्वरेश ॥ सियकमलालक्ष्मणयहशेश ॥ दरअवतारभरतउरजानें ॥ चक्रशत्रुघनविद्रुपपछानें ॥ १६ ॥ रामप्रथमप्रभुएहुसुदीजे ॥ ऋपिगणकोदुखदूरसुकीजे ॥ आइरघूत्तमआपनिहारो ॥ मुनिसेवतवनमैंपगधारो ॥ १७ ॥ लक्ष्मणसियसहचालोजवही ॥ दयाहोइगीहमपरतवही ॥ यांविधिमुनिगणविनतीकरी ॥ जोरेहाथरामतवहरी ॥ १८ ॥ जातभएपुनमुनिकेसंगा ॥ लैकरधनुकटिकसेनिखंगा ॥ पडेहाडशिरघनेनिहार ॥ रामकियोमुखएहुउचार ॥ १९ ॥ किनकेहाडपरेकिहँकारण ॥ किनकाटेमुनिकरोउचारण ॥ तवऋपिगनइहकीनवखान ॥ हैंरिपिहाडसुनोभगवान ॥ २० ॥ जेहरिध्यानप्रमत्तसुभए ॥ राक्षसतिनशिरकाटसुगए ॥ देखतफिरेंसुवनमैसारे ॥ जेराक्षसहैंनीचमुरारे ॥ २१ ॥ सुनमुनिवाक्यसभयअतिदींन ॥ रामतवैसुप्रतिज्ञाकींन ॥ राक्षसजेभुविमंडलमांही ॥ सभमारोंमु

निडरोसुनांहीं ॥ २२ ॥ ॥श्रीरामोवाच॥ ॥चौपाई॥ अबममसुनोऋषीश्वरवानी ॥ सकुलकरोंसभराक्षसहानी ॥ अबऋषिदंडकजांहिंअवास ॥ सुखीहोइदुखहोइसुनाश ॥ ॥ २३ ॥यांहितमैअवतारसुलीन ॥ ब्रह्मामोहिप्रार्थनाकीन॥ जनकनंदनीसीतानाम ॥ यहममनायाकेरसुकाम॥ २४ ॥ इनलक्ष्मणमिलमैसथारे ॥ करोंसुकार्यराक्षसमारे ॥ यां विधिभाषमुनिनसंगराम॥ किंचितकालवसेसुखधांम॥२५॥ पूजनकरेंऋषीश्वरसारे ॥ वनदंडकहैंजांहिंअगारे ॥ लक्ष्मण रामजनकजारानी ॥ कितिकवर्षतहँवसेभवानी॥ २६॥दे खतवैऋषिआश्रमसारे ॥ क्रमहीक्रमवनमांहिमुरारे ॥ ऋ षीसुतीक्षणआश्रमआए॥ ऋपिसंकुलप्रख्यातसुहाए॥२७॥ सभऋतुकेफलजांकेमांहीं ॥ हैसुखदाइकसभऋतुमांहीं ॥रा मागमनसुन्योतिनजबही ॥ सिप्यअगस्तसुतीक्षणतबही ॥ २८ ॥ आसनतेउठलेवनआए॥ राममंत्रजिहँहृदेसमाए ॥ विधिवतपूजनरामहिंकरे ॥ भक्त्युत्कंठदोऊदृगखिरे ॥२९॥ ॥सुतीक्ष्णउवाच॥ ॥चौपाई॥ गुणअनंतसी तापतिराम॥तोहिजपोंमैआठोजांम॥शिवविरंचितवपादल गांनें ॥ पोतभवाब्धिभ्रमलमैंजांनें ॥ ३०॥ यांतेपर्योंसुतेपद मांहीं ॥ रामदासमैंतेजगमांही॥ तुमसभजीवनदेखनहारे॥ कुटंबकूपमुहिपर्योनिहारे ॥ ३१ ॥ मलमयतनुमहिवंध्योनि हार ॥ तुममोक्षणहितअएमुरारि ॥ तूंसभभूतनमैंसमअ हे॥ तोहिविमुखतवमायागहे ॥ ३२ ॥ तवसुमंत्रसाधनधर

जंई ॥ तवमायातेमुक्तसुतेई ॥ सेवासमफलदेहुमुरारी ॥ तुम होकल्पतरुनकीवारी॥ ३३॥ ॥**अनंगशेखरछंद**॥तुहींप्रभो उपाइपालनाशहैंजगत्तकोस्वमाययाविरंचिईशनामतोहि जानिये॥सुनीरकुंभजिउंरवीसुभिनतोहिमानहैंविनष्टतांमती भईसुरामयौंपछानिये ॥ प्रत्यक्षअक्षगोचरंपिखोंसुतेपदांबु जंसुअंधकारतेपरेपदंसुतेवखांनिये ॥ सुज्ञानरूपतूंसदाअसँ ततोहिनापिखेंसुसंतमंत्रपूतजेतिनेंह्देसुभानिये ॥ ३४ ॥ तुँ हीअरूपरामरूपतोहिमैंपिखोंमनुष्यवेशमाययाकरेविडंबएह धारिये॥ दयासुनैनभीनयामुखारविंदसुंदरंसुचापवाणहैंधरे मनोजकोटिवारिये॥ सुजानकीसमेतछालएणकीतनूलियेसु भ्रातपादसेवहैकपीशदुःखटारिये॥गुणाअनंतश्यामशांतभा गधेयतोहिकोसुजोरकैकरंउभैसुवंदनाहमारिये॥ ३५ ॥ ॥**सवैया** ॥दिगदेशसुकालउपाधिविनारिपिजानतकेचितरूपतु मारे॥घनचेतनपूरणब्रह्मकेहैंनिगमागमगावतहैंगुणथारे॥ हमऔरनहींकछुचाहतहैंवनमाहिंपिखेंयहरूपमुरारे ॥ कचकुं चितशीशकलापजटाइहरूपवसेउरमाहिहमारे ॥३६॥ इह भांतिकहीरिपिपुंगवजोहसरामतवैयहबातवखांनी ॥ ममतो हिउपासननीठकरीउरउज्वलहोतभयोहमजानी ॥ हमहूंतव पेखनहेतुअएममसेवनसाधनजानतज्ञांनी ॥ शरणागतमे ममंत्रजपेंनिरपेक्षनकोहमहोवतभांनी ॥ ३७ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥तोहिकीयोसुस्तोतरजोई॥ यांहिपढजगभीतरकोई ॥ मेरीभक्तिलहेजनसोइ ॥ निरमलज्ञानतांहिउरहोइ ॥३८ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तूंममसेवनतेभयोमुक्तसुयांजगमांहिं ॥
देहअंतममरूपकोपावेंसंशयनाहि ॥ ३९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥
तेगुरुजोसुअगस्तमुनीमुनिनायकपेखनकीमनआई ॥ कछु
कालतहांहमवासकरेंवहुठौरसुनीअतिशैसुखदाई ॥ गिरिजा
सुनकैयहराममतोसुसुतीक्ष्णहैइहवातअलाई ॥ तुमप्रातच
लोहमसंगचलेंचिरकालपिखेहमहूंमुनिराई ॥ ४० ॥ गिरिजा
सुप्रभातभएहरिजीमुनिसंगचलेपथिपूछतजांवें ॥ सुअ
गस्तसंभापणकेहितवैरघुवीरचलीमनमैहुलसांवें ॥ गति
मंदचलेंपथिपावनमैघनविद्युतसूरशशीछवछांवें ॥ सुअग
स्तकिआनुजमंदिरकोवहुजातभयेमुखवातअलावें ॥ ४१ ॥
इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरंण्यकांडेद्वि
तीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ अनुजअगस्तसुतापसीअग्निजिह्वतिहंनाम ॥ सी
यसुतीक्षणलक्ष्मणोगएतिनाश्रमराम ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
अनुजअगस्तसुजोअस्थान ॥ तहँपहुचेतेदिनमध्यान ॥
विधिसोंतांऋपिपूजनकीनो ॥ मूलफलादिकभोजनदीनो ॥
॥ २ ॥ प्रातभएअगलेदिनमांहीं ॥ न्हातभएपावनजलमां
हीं ॥ अगस्तस्थानजातभएसारे ॥ सभऋतुकेफलजांहिंम
झारे ॥ सुंदरहरणचुफेरेंखरें ॥ वैरभावमनमैंनहिधरें ॥ पक्षी
नादकरेंचहुंओरा ॥ मोरनकीजामैघनघोरा ४ ॥ नंदनवन
जिहँपेखलजाए ॥ ब्रह्मरिपीगणजहांसुहाए ॥ देवऋपीगणभू
पितभयो ॥ मनोविधाताऌोकसुनयो ॥ ५ ॥ रामसुवाहि

रआश्रमखरे ॥ मुनिकेप्रतियहवचनउचरे ॥ तुमेसुतीक्ष्ण वेगसुजावो ॥ ममआगमनसुगुरुंसुनावो ॥ ६ ॥ सीता लक्ष्मणसंगसुराम ॥ बाहिरखरेनिवेदोधाम॥ महाप्रसादसु तीक्ष्णभाप ॥ गयोगुरूढिगपदअभिलाप ॥ ७॥ ऋषिसमूह जिहँठोरमुहाए ॥ बैठसनमुखकुशाविछाए ॥ रामभक्तबैठ करजोरे ॥ हर्षअगस्तकेहेतिनओरे ॥८॥ राममंत्रकोअर थसुनावें॥ शिष्यनकेसंदेहमिटावें ॥ पेखअगस्तमुनीश्वर आसन ॥ दंडप्रणामकरीपदपासन ॥ ९ ॥ होइसुतीक्षणनंम्र भवानी ॥ मुखभीतरयहबातवखानी ॥ ब्रह्मनसीतालक्ष्म णराम॥ बाहिरआइखरेतवधाम॥ १०॥ तवदरशनहितअति हितभरे॥ बाहिरखरेसुअंजलिकरे॥ सुनअगस्तमनमैहर्षाने॥ शिष्यसुतीक्ष्णप्रतियहभाने ॥ ११॥ ॥ **अगस्त्यउवाच** ॥ ल्यावहुशीघ्रतुमेकल्यान ॥ रामवसेंममहृदयस्थान ॥ तिनकोध्यानसुमैनितकरों ॥ पेखनकोउरआशाधरों ॥ ॥ १२ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥इहभांतिवखानसुआपउठेऋपि संगलियेनहिंवारलगाई ॥ उरभावभरीतिंहिंठोरगएजिहँआ पखरेगिरिजारघुराई ॥ कलिआनतुमेगृहरामचलोशुभआ जभयोमुखएहुअलाई ॥ ममप्रीतमआजअतिथ्यभएस फलंदिनआजभयोसुखदाई ॥ १३ ॥ रामनिहारउमामु निकोमनभीतरवैअतिसेहरपाए ॥ सीयसुभ्रातसमेतभले धरदंडप्रणामकरीऋपिपाए॥ वेगउठाइउमामुनिराजसुराम प्रातमजूगलिलाए ॥ रामसुसंगतिपाइमुनीश्वरआनंदको

जलनैनवहाए ॥ १४॥ करसोंकररामगहेमुनिपुंगवजातभए निजमंदिरमाही ॥ बहुपूजनतांकृपिराजकरेपुनरामविठाइ सुआसनमाही ॥ फलमूलखवाइसुभोजनजूशुभजोनिप जेअपनेवनमाहीं ॥ शशिआननरामइकंतजबेपुनबैठरहेसु खआसनमाही॥१५॥ करजोरकहीभगवानकृपीतवआवन कीनितवाटनिहारों ॥ चतुराननक्षीरनिधीविनतीदिनजांहि करीबहुनीतचितारों ॥ धरभारनिवारनकोउरमैपुनरावनको वधनीतविचारों॥ इहकाजसुश्रीहरिआवहिंगेमनआशइहैति हँरूपनिहारों १६ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ मैतपइहांसुकियोनिरं तर॥ मुनिनसमेतनपायोअंतर॥ तेरोचिंतनमैउरकीनो॥ प्रभु करुणाकरदर्शनदीनो ॥ १७॥ सृष्टिप्राकत्वंहीइकआहीं ॥ निर्विकल्पनिरुपाधिसदाहीं॥ मायाशक्तिसुतोहिकहीजे ॥ त वआश्रयपुनतोहिविषीजे॥ १८॥ त्वंनिर्गुणतोकोंसाअवरे ॥ मायाशक्तिनामतबपरे ॥ अव्याकृतवेदांतीभांने ॥ मूल प्रकृतिऔरेपुनठांने ॥ १९ ॥ केचितकेहसुमायानाम॥ के संस्तृतिकेबंधनधाम ॥ यांविधिबहुतनामवखांने॥ विनाविवे कनहोइसुहाने ॥ २० ॥ तुंहीकरेंसंक्षोभनजबही ॥ महतउ पावेमायातबही ॥ पुनमहतत्वजनेहंकार ॥ तीनप्रकारसु करेंउचार॥२१॥ ॥**सवैया**॥ ॥ सात्विकराजसतामसऔ जगभीतरवैपुननामकहाए ॥ तामसतेतनुमातरऔतनुमात रतेमहभूतउपाए ॥ राजसतेसभइंद्रियकोगणसात्विकतेमन देवबनाए ॥ लिंगमयीतनुसूत्रकहेंतिनमेलनतेपुनएहुरचाए

॥ २२॥ ॥चौपाई॥ ॥ स्थूलभूततेभयोविराट ॥ तांतेस्थावरजंगमठाट ॥ देवमनुष्यसुतिर्यककरे ॥ कालकरमकरह्वइअनुसरे॥ २३ ॥ तूंरजगुणतेब्रह्माभयो ॥ निखिलजगतपुनजांनिर्मयो ॥ सात्विकतेत्वंविस्नुकहीजे ॥ निखिलजगतकोपालनकीजे ॥ २४ ॥ रुद्रतुहींसातुमअनुसार ॥ निखिलजगतकोहोइसंहार ॥ जाग्रतस्वप्नसुपोपतिजेती ॥ बुद्धिवृत्तिगुणकीनीतती॥ २५॥ तांहिविलक्षणत्वंजगसाक्षी॥ चितअविनाशीवेदसुसाक्षी॥उरमैस्फटिकर्योजवचहें ॥ त्वंरघुनंदनमायागहें ॥ २६ ॥ प्रभुगुणवानिवतवत्वंभासें॥ सिमरणतेजनकेअघनाशें॥ द्वेविधिकीमायाबडभाग ॥विद्याविद्यातांहिविभाग॥ २७ ॥पंथप्रवृत्तिवर्त्तैजेई ॥भएअविद्यावशगततेई ॥ जेनिवृत्तिपंथहिंअनुसरे ॥ वेदांतार्थविचारणकरे ॥ तेरीभक्तिनिरतजनजेई ॥ विद्यामयभासेंपुनतेई॥जेइअविद्याकेअनुसारी ॥ तेईहैंभवमैसंसारी ॥ २८ ॥ विद्याभ्यासकरेंजनजेई ॥ मुक्तभएभवभीतरतेई ॥ तेरेभक्तसुजेजगअंतर ॥ तेरोमंत्रसुजपेंनिरंतर ॥ २९ ॥ विद्याप्रगटसुतिनकोहोई ॥ इतरकदाचितलहेनकोई ॥ तांतेजिनतवभक्तिसुगही ॥ मुक्तितिनेभवभीतरलही ॥ ३० ॥ वेमुखजेतवभक्तिरसायन ॥ तिनकोमुक्तिनकरुणाआयन ॥ रामबहुतनअवकहावखानो ॥ किंचितसारतत्वअवभानो ॥ ३१ ॥ संतनकीसंगतिहैजोई ॥ मुक्तिहेतुभवभाषीसोई ॥ समदर्शीनिर्वासीजेई ॥ संतकहीजेंयांभवतेई ॥ ३२ ॥ शांतदांततवभक्ति

सुधारे॥ उरकीकामनसगलनिवारे ॥ इष्टअनिष्टपाइजगमा
हीं ॥ हर्षविषादभजेंउरनांहीं ॥ ३३ ॥ सभकर्मनकोकरस
न्यास ॥ सदानिरंतरब्रह्माभ्यास ॥ समदमादिगुणउरमैध
रें ॥ सद्संतुसटनचिंताकरें ॥ ३४ ॥ तिनकोसंगसुहावेज
वही ॥ कथाश्रवणतेरुचिजनतवही ॥ उपजेभक्तिसुथारेमा
हीं ॥ तुहींसनातनथांजगमाहीं ॥ ३५ ॥ तेरीभक्तिवंतजन
जेई ॥ ज्ञानविपुलपावेंपुनतेई ॥ मोक्षपंथयहअहेनिरंतर ॥
कोविदभजेंनपावेंअंतर ॥ ३६ ॥ तांतरामभक्तियहथारी ॥
प्रेमलक्षणामोहिमुरारी ॥ होइसदातवभक्तनसंगा ॥ करे
निरंतरजोभवभंगा ॥ ३७ ॥ आजजन्ममेसफलसुराम ॥
तोह्निपिखोंहरिपूर्णधाम ॥ आजसफलममभएसुयागा ॥ तो
हिपिखोंहरिमैवडभागा ॥ ३८ ॥ दीर्घकालअतिमैतपकीनो ॥
तोहिविखेमनआननदीनो ॥ तांकेफलमैआजसुपाए ॥ तेप
दपंकजवारिचढाए ॥ ४० ॥ राघवसीयसमेतदयालु ॥ मेउ
रमंदिरवसोविशाल ॥ ऊठतबैठनचलतनिरंतर ॥ तेसिम्रतिमे
परनअंतर ॥ ४१ ॥ ॥ मदराछंद ॥ ॥ इहभांतिउमासुअग
स्तमुनीमुखराघवकीअतिभाषवडाई ॥ चांपनिखंगदियोहरि
कोघरभीतरन्यासधरेसुरराई ॥ खड्गदियोमणिभूपितजोभुवि
भारहनोतुमराक्षसराई ॥ जांहिततेंअवतारलियेमनुजाकृतकी
तुमदेहवनाई ॥ ४२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ योजनद्वैइततेसुनरा
मसुपावनकाननजांहिमझारी ॥ हैइकपंचवटीवरआश्रमगो
तमिकतटमाहिंमुरारी ॥ आश्रमतांतुमवासकरोसहभ्रातसमे

तविदेहकुमारी॥ देवनकेशुभकाजतहांवसआपकरांतुमराम उदारी ॥ ४३ ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ अगस्तभाषितंवचो सुनेस्तवोतिऊत्तमा ॥ मुनीसुंभाषकैचलेउमासुवैरघूत्तमा॥ अगस्तपंथजेकहेसुजांहितांहिमैचले ॥ समस्तपंथआपही सुजानहैंउमाभले ॥ ४४ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेत्रितीयोऽध्यायः॥ ३ ॥ **श्री महादेवउवाच** ॥ ॥ **अनंगशेखरछंद** ॥ सुजांहिरामपं थमैसुशैलश्रिगकेसमंजटायुपंक्षिराटकोसुरामजीनिहारकै॥ कह्योअचंभहोइकैकुवंडआनभ्रातजूसुराक्षसोनिहारिओक स्योहरीपुकारकै ॥ इतोवखानलक्ष्मणंकह्योहनोंसुयांहिको ऋपीसुदंडकावनेभखंइनेसुमारकै ॥ सुनेजटायुकानमैसुरा मवाक्ययोंकहेभयोसुभीतचित्तमैकहैसुतांउचारकै॥१॥सुरा ममोहिनाहनोसखासुतोहितातकोजटायुनाममेकहेंसुगृध्रमो पछानिए॥वसोंगुपंचवाटिकाकरोंगुकाजथारिआकमानवा नकिंधरोकरोनप्रानहानिए॥ शिकारकोसुजाहुजोकदासमे तलक्ष्मणंसुसीयप्राणप्राणलौसुरक्समोहिठानिए॥ उमासुगृ ध्रवाक्यजेसुनेरघूत्तमेजवैसनेहवाक्ययोंकहेकहोसुगीधमा निए॥ २॥ ॥ **सवैया**॥ ॥ इहिवासकरोसुजटायुभलेवन भीतरतूंहमरेनिकटाई॥इमभाखगएपुनपंचवटीसुउमागलमा हिंजटायुलगाई॥सहसीयसुभ्रातसमेतगएरघुवंशमणीगिरि जारघुराई ॥ शुभपंचवटीसुगुदावरितीरकरेनिजमंदिरवास वनाई॥३॥ ॥**चौपाई**॥१॥ तांहिंनदीउत्तरतटमांहीं ॥ ती

नोवसतभएवनमांही ॥ जांहिकांतिपिखनंदनलाजे ॥ रामरमापतितहांविराजे ॥ ४ ॥ ॥**तोटकछंद**॥ ॥ घनछायकदंवसुजाहिंघने ॥ पनसाकदलीसफलाहिंवने ॥ घनआम्रसमाकुलदेशभए ॥ सभकालहुकेफलजांहिनए ॥ ५ ॥ अलिआहिइकंतसुरोगनही ॥ जनकात्मजालक्ष्मनसही ॥ तहँरामसुवाससुखेनकरे ॥ सुरलोकसुरेशसमानवरे ॥ ६ ॥ फलमूललिआवतभ्रातवनं ॥ रघुवीरसियापदसेवमनं ॥ धनुवाणनिखंगसुधारवरं ॥ निशिमाहिकरेअतिजागरणं ॥ ७ ॥ नितन्हाहिगुदावरिनीरभले ॥ पथिदोनहुंवीचसुसीयचले ॥ लघुभ्रातगुदावरिनीरअने ॥ करप्रेमसुसेवतपादतिने ॥ ८ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ एकसमेश्रीलक्ष्मणनामा ॥ जाइइकंतजहाश्रीरामा ॥ विनयवंतजोरेनिजहाथा ॥ पूछतभयोउमारघुनाथा ॥ ॥ ९ ॥ भगवनमोक्षगतीहैजोई ॥ तुमतेसुन्योचहोंमैसोई ॥ कमलनैनतुमकरोवखान ॥ ज्ञानसहितजोईविज्ञान ॥ १० ॥ भक्तिसहितअतिदृढवैराग ॥ मोप्रतिकहोसुतुमवडभाग ॥ तुमविनवक्ताऔरजुहोई ॥ भूतलमाहिंपिखोंनहिसोई ॥ ११ ॥ ॥**श्रीरामउवाच**॥ ॥ कहोंभ्रातनीकेसुनलीजे ॥ गोप्यनतेअतिगोप्यकहीजे ॥ जांहिज्ञानकोनरपहिचाने ॥ करेसकलनिजवंधनहाने ॥ १२ ॥ प्रथमैकहोंसुमायारूप ॥ वहुरज्ञानकेहेतुअनूप ॥ वहुरोज्ञानसहितविज्ञान ॥ वहुरपरातमकरोंवखान ॥ १३ ॥ जांकोजानमिटभयभारो ॥ यहलक्ष्मणउरअंतरधारो ॥ तनअनात्ममैआत्मज्ञान ॥ यहीसुमायाकरीवखा

न ॥ १४ ॥ तांहींकरहोवेसंसार ॥ तांकेरूपसुद्दुउरधा
र ॥ इकविक्षेपावर्णसुआन ॥ रचेविक्षेपसुजगतमहान
॥ १५ ॥ लिंगादिकयहजगहैजेतो ॥ सूक्ष्मथूलरच्यो
तिनतेतो ॥ दूसरज्ञानरूपआवरयो ॥ आतमाहिसुबं
धनकरयो ॥ १६ ॥ रज्जुभुजंगभ्रांतिकरजैसे ॥ कीयेविचार
रहेनहितैसे ॥ काननैनमनकरजगभासे ॥ सर्वअसत्यस्वप्न
जिउंनाशे ॥ १७ ॥ तरुसंसारमूलअज्ञान ॥ तांहींक
रहैतनुअभिमान ॥ ततमूलकबंधनसुतदारा ॥ आतममा
हिसुभयोविकारा ॥ १८ ॥ तनसुस्थूलभूततनुमात्रा ॥ भयो
प्रगटलक्ष्मणविख्याता ॥ यांविधिपिंडरथूलउपायो ॥ यांमैआ
तमअतिदुखपायो ॥ १९ ॥ अहंकारबुद्धींद्रियप्रान ॥ चिदा
भासमनमायाजान ॥ यहीक्षेत्रतनुकोविदभांने ॥ इनेविल
क्षणआतमजांने ॥ २० ॥ यहीपरात्मजानोवीर ॥ साधनना
हिंसुनोअवधीर ॥ जीवपरातमहैपरयाय ॥ कियेविचारभे
दनहिपाय ॥ २१ ॥ मानाभावदंभनहिकीजे ॥ हिंसामाहि
नहीमनदीजे ॥ परक्षेपादिकसहेनिरंतर ॥ वक्रततागतिकरेनअं
तर ॥ २२ मनवाणीपुनततीशरीर ॥ करेभक्तिसेवेगुरुधी
र ॥ बाहिरभीतरउज्वलरहे ॥ भलीक्रियामैथिरतागहे ॥
॥ २३ ॥ मनोवाक्यकायापरदंडा ॥ विषयवासनाकरेसुखंडा
॥ निरहंकारविकारनधारे ॥ जन्मजरादिकदोषनिहारे ॥
॥ २४ ॥ पुत्रसुदारधनादिकसारे ॥ करेसनेहनजगतमझारे ॥
इष्टअनिष्टअहजगजोई ॥ पाइविकारभजेनहिंकोई ॥ २५ ॥

मयिसर्वात्मस्वात्मराम ॥ बुद्धिलगाइतजसभकाम ॥ जन
कीभीरंजहांनहिहोई ॥ सेवेशुद्धदेशअतिसोई ॥ २६ ॥ प्राक्ृ
तजनकीसंगतिजोई ॥ करेकदाचितभूलनसोई ॥ आत्म
ज्ञानेउद्यमधारे ॥ वेदांतनकेअर्थविचारे ॥ २७ ॥ इनकरल
हेसुआतमज्ञान ॥ इनविपरीतसुहैअज्ञान ॥ बुद्धिप्राणमन
तनहंकार ॥ इनेविलक्षणआतमसार ॥ २८ ॥ चिदानंदआ
तमनिजजाने ॥ नित्यशुद्धअतिबुद्धपछाने ॥ जांहिज्ञानकर
यौंउरजाने ॥ सोईज्ञानभ्रातहममाने ॥ २९ ॥ यहिविज्ञान
दृढमैजान ॥ क्वैअपरोक्षनिजातमभान ॥ आत्मापूरण
सर्वनिवासी ॥ सतचितआनंदहैअविनाशी ॥ ३० ॥ बुद्ध्यादि
कसुउपाधिविहीनो ॥ नहिपरिणामसुरंचकचीनो ॥ स्वयंप्र
काशअनावृतजोई ॥ देहादिककोभासेसोई ॥ ३१ ॥ एका
द्वितीसत्यचिद्ज्ञान ॥ स्वयंप्रकाशअसंगसुजान ॥ द्रष्टापूर्ण
लक्षणगाए ॥ विनविज्ञाननजान्योजाए ॥ ३२ ॥ श्रोत्री
आहिअचारयजोई ॥ करउपदेशनिगमकोसोई ॥ एकज्ञान
तबउरमैभासे ॥ जीवपरात्मभेदविनाशे ॥ ३३ ॥ तबहांमूलअ
विद्याजोई ॥ लीनहोइआत्ममहिसोई ॥ कारयकारणहोंहिंसु
हानी ॥ यहीअवस्थामुक्तिवखानी ॥ ३४ ॥ रघुनंदनयह
मोक्षसरूप ॥ तोप्रतिभाख्योभ्रातअनूप ॥ दृढवैरागज्ञान
विज्ञान ॥ मैपरमात्मकह्योवखान ॥ ३५ ॥ परमेभक्तिवि
हीनसुजेते ॥ यांकोलहेंकदापिनतेते ॥ यद्यपिनैनवंतनरहोई
सम्यकराग्निनपेखेसोई ॥ ३६ ॥ जोनरकरमैदीपकगहे ॥ नि

१ संघट.

खिलपदारथसोनिशिलहे ॥ इंउंहीजेममभक्तिसुयुक्ता ॥
लहेंपरातमतेईमुक्ता ॥ ३७ ॥ मेभक्तीकेकारणजेई ॥ किं
चितकहोंसुनोअबतेई ॥ मेरीभक्तिवंतजेअहें ॥ प्रथमैसंग
तितिनकीगहे ॥ ३८ ॥ एकादशीकरेउपवास ॥ ममपर्वन
कोदृढअभ्यास ॥ मोकोममदासनकोसेवे ॥ करउपवासमो
हिमनदेवे ॥ ३९ ॥ मेरीकथासुनेअरुकहे ॥ करव्याख्यानप्री
तिममगहे॥ मोमैनिष्ठामेरीपूजा॥ मोहिभजेमुखऔरनदूजा
॥ ४० ॥ यांविधिकरेनिरंतरजोई ॥ मेरीभक्तिअखंडितहोई
तांतपरेनसाधनआन ॥ मेरीभक्तियहीपहिचान ॥ ४१ ॥ मे
रीभक्तियुक्तजनजोई ॥ लहेज्ञानविज्ञानसुसोई ॥ दृढवै
राग्यलहेपुनसोइ ॥ तांतिमुक्तवेगवहुहोइ ॥ ४२ ॥ तेरेप्रस्नन
केअनुसार ॥ भ्रातकीयोमैसर्वोचार ॥ यांहिंविपेमनजो
जनलावे ॥ सोक्षणभीतरबंधमिटावे ॥ ४३ ॥ मेरीभक्तिवि
मुखमनजांको ॥ लक्ष्मणएहुकहोनहिंतांको ॥ मेरीभक्तिवा
नजनजोइ ॥ कहोवुलाइतांहिंकोसोइ ॥ ४४ ॥ ममउपदेश
पढेजनजोई ॥ भक्तिसहितश्रद्धाउरहोई ॥ वहुअज्ञानपट
लसुनिवारे ॥ क्षणभीतरसभबंधनटारे ॥४५॥ जोममभक्त
अहेयोगीश्वर ॥ विमलसुज्ञानशांतिजिनकेउर ॥ मेरीशेव
निरंतरकरे॥ विमलज्ञानउरअंतरधरे ॥ ४६ ॥ तिनकोसंगक
रेसदजोई ॥ उद्यमवंतसदामतिहोई ॥ मेरीसेवामैधीलावे ॥
मुक्तिवहीकरभीतरपावे ॥ ४७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैपरमा
तमरामजोवेदवखानेजांहिं॥ भक्तिज्ञानकरमोपिखेविनानि

१ आवर्ण

हारेनाहि ॥ ४८ ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सिंम्रतिवेदपुराननमैपरमातमकैजिनकोजगगायो॥ शंभुभ जेजिनकेपदपंकजऔचतुराननारदगायो ॥ व्यासवसिष्ट अगस्तऋपीश्वरभांतिअनेकअनेकसुनायो॥सोकविसिंहगु लाबपरातमरामधरेतनुभ्रातबतायो ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमद ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तिहँ कालविपेरजनीचरनोइकडोलतथीतिहँकाननमांहीं ॥ ढिग पंचवटीशुभतीरनदीमुनिवासनमेशुभथाननमाहीं॥ कमलां कुशवज्रध्वजाहरिकेपदचिन्हपिखेजुउमाधरमांहीं ॥ पदसुं दररेखनिहारमुठीअतिकामवध्योतिहकेउरमांहीं ॥ १ ॥ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ शनेशनेपदरेखनिहारे॥गईरामकेभवन मझारे ॥ पेखरमापतिरामहठीले ॥ सीयसमेतसुपरमरसी ले ॥२॥ मनोमनोजरामइहभांती ॥ पेखमनोजलगोतिहँछा ती॥उमाराक्षसीरामअलाए॥किनकोसुतकोहितवनआए॥ ॥ ३ ॥ शीशजटातनुवलकलधारी॥ कामकौनतेविपनमझा री॥सूर्पणखामेकरैवखान॥राक्षसिकामरूपणीजान ॥ ४॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ मैभगनीवलिरावणकीसभराक्षसकोज गमेंवडुराई ॥ काननमेखरभ्रातसमेतवसोंवनभूपतिआप पठाई ॥ भोजनमैमुनिमांसकरोलिखभ्रातदईवनकीठकु राई ॥ सुंदरतूंकहुकौनअहेंपदपेखतमैतुमरेढिगआई ॥ ५॥ तवरामकह्योगिरिजामुखतेइकउत्तरकोशिकदेशवखाने ॥

१ कहे.

इकऔधपुरीतिहँमध्यविराजततांपतिभूपसुरासुरजाने ॥ ह
महैंतिनकेसुतनारिइहैजनकातमजासभलोकवखाने ॥ ल
घुभ्रातइहैलक्ष्मनकहैंअतिसुंदरपेखमनोजलजाने ॥ ६ ॥
हमसोंकछुकामअहैतुमरोअतिसुंदरितूंममदेहिवताई ॥ सु
नरामकिवाक्यउमामदनारतिराक्षसियोंमुखमाहिअलाई ॥
ममसंगरमोगिरिकाननमैमदनारतिमैतुमरीढिगआई ॥ दृग
कंजनहींतवत्यागसकोंमदनागलगीतनदेहिवुझाई ॥ ७ ॥
तवरामकटाक्षनसीयपिखीइसकैमुखभीतरयौंतिहंभाषे ॥ म
मनारिइहैअतिसुंदरिहैतुमनाहिंकरोहमरीअभिलाषे ॥ तुम
सौंकनकोदुखनीतदहेअवनाहिंवनेतुमसोंघरराखे ॥ अतिसुं
दरमेलघुभ्रातअहैढिगजाहितिसेसुवहीदुखनासे ॥ ८ ॥ तु
मरेअनुसारसुहैभरतातिहँसंगरमोगिरिकाननमांहीं ॥ इहभां
तिकह्योहरिजीजवहीवहुदौरगईलखमंनजहांहीं ॥ उरभ्रात
कीआइसमानभलेभवमेभरतासुकह्योमुखमाहीं ॥ अवढी
लकरोनहिंसंगचलोहमकेलकरेंवनकीपरछाहीं ॥ ९ ॥ वन
घोरनिशाचरिकाममुठीइहभांतिवकेअपनेमुखमाहीं ॥ हस
रामकिभ्रातकह्योमुखतेसुमहोदरितूंसुनियोमनमांहीं ॥ सुप
तिव्रततूंदशकंधरकोभगनीहमतोइनदासकहांहीं ॥ पुनदास
नितूंजगहोवाहिंगीवडमोहिवरेदुखतेउरमांहीं ॥ १० ॥ क
लिआनितुमेतिनकीढिगजाहिवहीजगभीतरराजनराई ॥ सु
नकैयहिवातउमाकुटिलामनदौरतसोहरिकीढिगआई ॥ अ
तिक्रोधभरीमुखरामभनेकिममोहिभ्रमावततूंदुखदाई ॥ तुम

१ कामकरकेपीडीत. २ खेल.

सौकिनिकोमम दुःखकह्योतुमहेरतसीयसुजांउंचवाई ॥ ११ ॥ इहभांतिवखानभईगिरिसीगिरिजासठिसीयसुखावनधाई ॥ तवरामकोआइसपाइसुमित्रजनारिगहीखंगधारदिखाई ॥ कटकानउभेपुननाककटीलघुविक्रमपीठसुलातलगाई॥ करिघोरध्वनीतनश्रोणवहेअतिरोवतिसोखरओरसिधाई॥ १२॥ जाइपरीखरकेपदमैमुखमांहिबकेपरुपाक्षरवानी ॥ कानसुनाककटेकिंहतेभगनीप्रतियौंखरआपवखानी ॥ तोहिकर्योजिनयोंजगमैयमकेमुखजाइपर्योहमजानी ॥ भाषतिनेक्षणप्राणहनोसमकालजुहोइसुतानकमानी ॥ १३ ॥ ॥ सूर्पणखोवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ लिखजोवनभ्रातदयोहमकोअवतांवनमैसुनरामसुआए ॥ लक्षमंनतिनेसहछाजतभ्रातसुसीयभलीरनिसीछविपाए ॥ अवतीरगुदावरिवासकरेंवनदंडककेभयदूरमिटाए ॥ तिनभ्रातसुप्रेरसुनोखरभ्रातसुयोंहमरेनककानकटाए ॥ १४ ॥ तूंतुभयोकुलराक्षशकीअरुवीरकहावतहैंजगमाहीं ॥ मारतिनेतिनमांसभखोंअरुश्रोणितपानकरोंमुखमाहीं ॥ नातरप्राणतजोंअवहींखरजावहुंमैयमकेघरमाहीं ॥ वेगचढेसुनकैखरदूपनक्रोधभयोतिनकेउरमाही ॥ १५॥ दशचारहजारसुराक्षसकीवलक्रोधभरेतिनप्रेरचलाई ॥ खरंतीनशिरापुनदूपनजोसरदारवडेहरिकीढिगजाई ॥ धुनिवाजनकीवहुघोरभईधरधूरिउडीरविमंडलछाई ॥ तवरामकिओरगएसगलेघनविद्युतआयुधकीचमकाई ॥ १६ ॥ सुनरामकुलाहलदेतनकोलक्ष्मंन

१ तलवार. २ राक्षस. ३ राक्षस

इहैमुखबातअलाई॥ध्वनिघोरसुनोवनदैतनकीयहराक्षसको
ध्वंजिनीचढिआई ॥ अवहोइगुसंगरघोरइहांममसंगइहैअ
रिकीबलआई ॥सुमहाबलत्वंजनकातमजागहिकंदरजाइर
होसुखदाई ॥ १७ ॥ मैवधआजकरोंक्षणमैयहराक्षसकीव
लआवतसारी ॥ तूंइहवीचनभापकछूबलितोहिसुगंदसुआ
हिहमारी ॥ मानतवैसहसीयलईलक्ष्मनगयोगिरिखोहम
झारी॥रामनिखंगकसेकटिमैपुनलीनकुवंडसुपाणिसंभारी॥
॥ १८ ॥ राक्षसआयपरेतवहीकरआयुधकीवरपावरपाई॥
केचितमारतहैंतरुवाअरुकेचितशैलसुदेहिंचलाई ॥ रामसु
आयुधधारसभैंकटितीरनसोंअतिदूरवगाई ॥ बानहजारल
एकरमैसभराक्षससैनसुमारगिराई॥ १९॥ खरदूखनऔपु
नतीनशिरापहिराधिकमैसभनायकमारे॥तबलैलघुभ्रातवि
देहसुतापुनआइतहांजहंआपमुरारे ॥ अरपीतवसीयसुराघ
वकोहतराक्षसपेखभएविसमारे॥ मुखकंजप्रभाअवनीढुहि
ताविगसीमिलरामपतंगनिहारे॥२० आयुधघावसुरामकले
वरधोवतिहैइतसीयसुहेली॥सूर्पणखाहतराक्षसपेखसुदौरग
ईउतलंकइकेली॥जाइसभामहिरावणकेपदपासपरीढुखमां
हिदुहेली॥ रावणकीभगनीतरफैधरतीरनदीमछुलीजनमेली
॥ २१॥रावनपेखतयाभगनीअतिरोवतिनैनसुंनीरपनारे॥ऊ
ठसुऊठकह्योमुखतेकिननाककटीपुनकानतुमारे॥शक्रकुवेर
यमोवरुणातनखेहकरोंतिनकीकटनारे॥ रावनकीगुनिएवंति
यांतवसूर्पणखामुखमांहिउचारे॥२२॥त्वंमतिमूढप्रमत्तसदा

१ गला २ वाता

मद्पानकरेंकछुसारनपावें ॥नारिअधीनसुदीनभयोसठचार
नकोनहिदेशपठावें॥चारसुचक्षुविहीनसदासठराजकहोकिंहिं
भांतिकमावें॥ मारलएत्रिशिराखरदूषनत्वंघरभीतरमंगलगा
वें॥२३ क्षण आधविखेबलवंतत्रइेदशचारहजारसुराक्षसमा
रे॥असुरारिबडेजगरामभएजनथानविषेमनकेडरटारे॥ नहिं
जानततूंइहवातकछूइहतेमतिमूढसुमोहिउचारे ॥ पिखलाज
भईदशकंधरकोपुनपूछतरावणआपविचारे ॥ २४॥ कौनसु
रामहतेकिमराक्षसकौननिमित्तभयोवनमाहीं॥आपभलेतिहं
मूलहनोअबक्रोधभयोहमरेउरमाही ॥बीरसुमैजनथानकदा
चितआपगईसुनदीतटमाही ॥ पंचवटीइकथान अहेमुनिपूर्व
वासकर्योजिंहंमाहीं ॥ २५॥ तहंआश्रमएकमनोरमथोमुहि
जाइपिखेतहंरामहठीले ॥ द्रिगकंजप्रभाधनुबाणधरेतनची
रजटाशिरमाहिंरसीले॥ लघुभ्राततिसेलक्षमनकहेंअतिसुंद
रताहितथाविधिडीले॥कमलासमसुंदरितापतिनीद्दगवारिज
सेतनकांचनकीले॥२६॥ गंधवदेवनहीनरनागनमाहितथावि
धिकीहमदेखी॥राजननाहिसुनीकबहूंबनद्योततिथीवहुयांवि
धिलेखी॥मैतुमरेहितलेनलगीतिनरामइहैमनजानिविसेखी॥
रामहिप्रेरसुभ्रातबलीममनाककटाइदईतुमपेखी॥२७॥ तब
मैंदुखिरोवतदौरगईखरभ्रातसमीपसुजाइपुकारी ॥ रणके
हितराक्षसलैवहुतेतहँदौरगएजहँरामहँकारी ॥ क्षणमैतिन
नाशकेरसगलेरणराक्षसजेजुहुतेवलभारी ॥ सुनमेमनयों
जबरामचहेक्षणमाहिहनेविधिकीविश्वसारी ॥ २८॥ जोवन

तौसफलौतुमरौंजबहौवहिसीयसुनारितुमारी ॥ उद्यमतूंइह भांतिकरैंजिहिंभांतिमिलैवहुप्राणपिआरी ॥ जानकिकंजप्र भाहगनीसभलोगनभीतरसुंदरिसारी ॥ रामहुतेनहिंआनस कोकछुपेखतनाबलबुद्धितिहारी ॥ २९ ॥ छलकैरघुवीरहंदूर नयेतबपावहिंगोवहिप्राणपिआरी ॥ सुनकैयहवातदशोधन तांअरुमानकियोभगनीहितकारी ॥ करशांततिसेदशमौलि तवैपुनआपगयोनिजभौनमझारी ॥ उराचिंतवढीहगनीदन हीइहभांतिवितीतभईनिशिसारी ॥ ३० ॥ एकलराममनुष्य तिसेसहसैन्यहन्योखरसोकिहंभांती॥थोबलवंतवडोजगमैक रआयुधऔतरुणातिहंगाती ॥ कैनहिरांमनराधपकोसुतमे वधचाहिलगीतिनछाती ॥ हैचतुराननकीविनतीहरिमानुपरू पलयोहमजाती ॥ ३१ ॥ रघुकीकुलमैहरिजीनिपजेमुहिमा रहिंजौपरमातमरामा ॥ इहभूमहिंराजतजौंक्षणभंगुरराज विकुंठलहौंनिजधामा ॥ नहिराक्षसराजकरौंजगमैहनराम लहौंशुभसीयसुवामा ॥ इहभांतिविचारकर्योघरमैभलराक्ष सराजसुरावणनामा॥३२॥ ॥शंकरछंद॥ ॥गिरिजाप रातमरामकोहरिजानकीनविरोध॥विनवैरवेगनहरिमिलतिनदेखिओउरशोध॥करभक्तिजोहरिसेवहैनहिवेगपावेसोइ॥ मैभजोंतांअतिवैरकरहरिवेगराजीहोइ॥३३॥ ॥इतिश्रीम दध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेपंचमोऽध्या यः॥५॥ ॥७॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥सवैया॥ ॥इह भांतिविचारकर्यौनिशिमैपरभातभएचढकैरथमाही॥सुमरी

चकिआश्रमजातभयोइककारजधारमतीमनमाही॥ सुमरी चतहांमुनिसेअतिराजतचीरधरेजटहैंशिरमाही ॥ गुणभास कजोगुणहीनसदापरमातमध्यावतहैउरमाही ॥ १ ॥ सुसमा धिविरामभईतिहंकीतवतांहिपिखेघररावणआए ॥ तवपूज नतांहिकयोंतिनकोअतिआदरकैगलमाहिलगाए॥ अतिथो करतांसुखआसनमाहिविठाइमरीचसुवैनअलाए ॥ इहआ वनतेरथवैठइकांकिनरावनमेकछुकाजजनाए ॥ २ ॥ कछु चिंतपरायणतेमनभासतकारजतूंचितवेंमनमाही ॥ अव मोहिकहोवहुकाजकरोंअतिगोपनहींजवतेंमनमाही ॥ कछु न्यायअहेतवनाथकहोकछुपापनहोइसुमेजगमाही ॥ सुन केइहभांतिमरीचकथातवरावनवोलउठेमुखमाही॥३॥ **रावणउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ हैदशस्यंदनऔधपतीअति भूपवलीविदिताखिलमांहीं॥ रामअहेतिहँकोसुतज्येष्टसुसत्य पराक्रमलोकनमांहीं ॥ भूपदयोतिहंकोवनवासजुआइवसे वनदंडकमांही ॥ नारिसमेतसभ्रातअहेवहुतीनमिलेसुफिरें सुखमाही॥ ४॥ हैअचलौवनघोरविपेशुभआश्रमवीचसुपं चवटीसो॥नारिअहेअतिसुंदरितांविधिनाइहभांतिनऔरठटी सो॥रामहनेअपराधविनावनराक्षसमोहिलगीउचटीसो॥मा रखरंसुखसोंविचरेंभगनीगहिमेतिननाककटीसो॥५॥ निरदो पनिशीलवतीभगनीअतिदुष्टतिनेगहिकानवटाए॥कछुमोहि सहाइकरोवनमेअवमोहिवनेतिहँनारिलिआए॥वनतूंवनकां चनकोमृगवाजवराघवकोछलदूरलिजाए॥लक्षमनचलेतिहँ

१. एकेना

पीठपिछेतवरावणजानकिकोवनपाए ॥ ६ ॥ करमोहिस
हाइसुतूइतनीपुनपूर्वजिउंसुवसोघरमाही ॥ सुनिरावनकी
इहवाततवैसुमरीचकहेअपनेमुखमाही ॥ किनतेउपदेशसुए
हुकुयोंवहुमूलउपारततेजगमाही ॥ तुमतांहिंहनोवहुशत्रुअ
हेवहुनाशचहेतुमरोभवमाही ॥७॥ रामपराक्रमयादभएसुन
रावणमैडरहोंमनमांहीं ॥ वालहुतोजवरामवलीमखकौशि
कराखनआइतहांहीं ॥ एकहिंवानसुवाहुहनेपुनदूसरमैइहसा
गरमांही ॥ योजनसौइहँआइपयोंमनव्याकुलऔतनकीसु
धनाही ॥८॥ वहुवानचितारचितारतहीमुहिरामदिखेसभठो
रमझारी॥ वनदंडकपूरववैरचितारसुराजनफेरगयोइकवारी
अतितीक्षणश्रृंगभयोम्रगमैममसेम्रगवावहुतेपरवारी॥ जन
कातमजारघुवीरवलीलखमंनसभीसुपिखेवनचारी ॥ ९ ॥
मारनकोमनमोहिकियोतवरामविलोकसुमेमनमाही ॥ मे
उरवानहनेरघुनंदनश्रोणितजावतमेमुखमाही ॥ औरगएव
नभागसभैपुनमैगिरयोइहसागरमाही ॥ तांदिनतेइहठौरव
सोंमुनिभेपधयोंसुडरोंउरमाही ॥ १० ॥ अवरामकुध्यान
धरोंनिशिवासरभोगनतेसुडरोंउरमाही॥ रतनारथराजतथा
रमणीइहकानपरेतुडरोंउरमाही ॥ इहशंकउठेइहरामअहेस
भकारयमोहितजेजगमाही ॥ जवसोइरहोंनिशिमांहितवैअ
तिरामचितारतहोंमनमाही ॥ ११ ॥ सुपनेजवरामनिहारत
होंशरतानडराइसुमोहिजगाए ॥ अथतूंसुनुवातकहोंहितकी
शुभहोवतरामसुंवैरमिटाए ॥ दशकंधरराक्षसकोकुलजोतु

मपालकरोवहुभांतिसुहाए ॥ तवहेतकहौंउरमानकह्योतुम रामपरात्मवैरवढाए॥ १२॥ तजवैरभजोकरप्रेमभलेकरुणा निधिरामपरातमगाए॥ युगआदिविखेमुनिवाकनतेसुउदंत सबैहमहैसुनपाए ॥ परमेश्वररामाहिंपैविनतीचतुराननआ पकरीढिगजाए॥ तवईशकह्योतवकारयजोसुकरौंविधिजां हिंनिमित्तसुआए॥ १३॥ चतुराननतोमुखएहकहीकमलायत लोचनभूमिपधारो॥तुमदाशरथीवपुधारहरीदशकंधरकौरण मंडलमारो॥ इहतेहरिमानुपरामभएवहुआहिंनरायणयौंउर धारो॥निजमायभएवहुमानुपसेतिनकोवनभीतरनाडरभारो ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भूमीभारमिटानहितमनुजभएजग दीश ॥ तुमसुखसोंनिजघरवसोवैरतजोअवनीश ॥ १५ ॥ सुनमरीचकेवचनकोवोलेरावणफेर ॥ मानीनातिनकीकही लीनोकालसहेर ॥१६॥ ॥ मदिराछंद ॥ ॥ जोपरमातम रामअहेविनतीविधिनातिनजाइकरी॥ मारनकेहितआइइहां पुनमानवकीतिनदेहधरी ॥ सोइकरेवहुढीलनहीकछुसिंहम नोरथईशहरी ॥ मैअवढीलकरौंनकछूवनजांउंवनेमुहिसीय हरी ॥ १७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वधरामकरेरणभीतरजोत वमैपरमात्मकोपदपाऊं॥नहिंरामहनोरणभीतरजोतवजान किकोघरभीतरल्याऊं ॥ अवतूंमृगरूपसुधारतहांपुनमैवनमै तिनकीढिगजाऊं॥तुमआश्रमतेनयदूरतिनेपुनसानुजरामसु एहुवताऊं ॥ १८ ॥ पुनपूरवज्यौंघरमाहिवसोइतनेपरतेक छुहोतनहाने ॥ अवतूंभयदायकफेरकछूवनकोविदमोहिमरी

चवखाने ॥ तबतेशिरकाटदुटूककरोंअसिधारहरोंतुमेरेतनप्रा
ने ॥ सुनवाक्यमरीचस्वमृत्युलखीअववातवनेखलकेवचमा
ने ॥ १९ ॥ जवरामहनेवनभीतरमेतवमेंभवसागरतेछुटजा
वों॥ दुपटातमरावणमोहिहनेतवमेंनरकागनिकीगतिपावों॥
इहभांतिविचारकियोगिरिजाउठवेगकह्योतुमसंगसिधावों॥
प्रभुरावनजोकछुमोहिकहोशिरजोरकरोंनहिनाथहटावों २०
इहभांतिउचारसुवेठरथंतवराघवआश्रमकीढिगआए ॥ सु
मरीचभयोमृगकांचनकोशुभराजतविंदुसुबीचसुहाए ॥ रत
नाशिरश्रिंगकरेछलकेशुभनीलमणीखुरनैनवनाए॥ दुतिदा
मनिसीतनपैलशकेवनवीचफिरेसियरूपदिखाए॥२१॥ क्षण
धावतऔपुनआश्रमकीढिगआइतहांक्षणमैटिकजाए ॥ पुन
आइसमीपडरेउरमेंभयभारभयेकछुदूरपलाए ॥ इहभांतिभ
योमृगवाछलकेपुनसीयसमीपपुनापुनआए॥इहभांतिफिरेढि
गआश्रमकीउरचाहतहैखलसीयलुभाए॥ २२ ॥ इतिश्रीमद
ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेपष्ठमोऽध्यायः
॥श्रीमहादेवउवाच॥सवैया॥ अथरामपरातमरावणको
कृतजानलियोसगलोमनमाही॥पुनरामइकंतकह्योसियको
सुनसीयकहोंतुमकोवनमाही ॥ दशकंधरभिक्षुकरूपधरेतुम
रीढिगआवहिगोवनमाही ॥ अवतूंकरछायकिसीयभलेपुन
आपरहोदुरपावकमाही ॥ १ ॥ ममआइसमासनद्वादशतूंव
सपावकमेंउरमानकही॥ पुनरावणकेवधतेउपरंतसुमोहिमि
लेंइहझूठनहीं ॥ सुनरामकिवाक्यरचीछलकीसियसोहरिके

ढिगआइबही ॥ तबआपधसीसियपावकमैअतिलीनभईन
हिजातिलही ॥ २ ॥ छलकीसियसाछलकोम्गवापिखहास
उठीअपनेमुखमाही ॥ ढिगरामकिजाइअधीनभईपुनएहक
ह्योनिजआननमाही ॥ इहरामपिखोम्गकांचनकोरतनांग
नभूपितहैतनमाही ॥ बहुबिंदुविराजतयांतनमैडरतोनहिरंच
सुकाननमाही ॥ ३ ॥ अवफांधतिनेमुहिदेहिपतीकरखेलन
घासचुगेफुलवारी ॥ तबरामसरासनलैकरमैलघुभ्रातसमी
पसुएहुउचारी ॥ बनतूंयतनोकरसीयरखोजनकातमजाभम
प्राणपियारी ॥ इहहैंछलवंतबडेखलराक्षससीमुगधातुमरीर
खवारी ॥ ४ ॥ चितहोइइकागरसीयरखोसुअनिंदतआहिप
तिव्रतवारी ॥ लक्षमंनकह्योम्गपेखतवैम्गनाहिंसुनोतुमरा
ममुरारी ॥ सुमरीचअहेनसंदेहकछूम्गयांविधिकोनरचेमुख
चारी ॥ गिरिजासुनभ्रातमुखांबुजतेतवरामरमापतिएहुउ
चारी ॥५॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥जुमरीचअहेतुहनोक्षणमैं
म्गजौतुवनेसियकेहितआने ॥ तुमसीयकुपालननीठकरोइ
मभापलईकरमाहिकमाने ॥ म्गकोअनुधावनरामकीयोअ
चलोनिगमागमनीतबखाने ॥ जिनमाहिंरहेनितमायसदाज
गदाकृतजांसभलोकभुलाने ॥६॥ सुविकारविहीनचिदातम
जोपरिपूर्णऔम्गकेहितधाए ॥ हरिसेवककेअनुकूलसदागि
रिजाभुविमंडलवेदनगाए ॥ छलजानउमासियकेहितरामध
एम्गकोवलपादउठाए ॥ वलिनातररामपरातमजोम्गजान
कितकछुचाहतपाए ॥७॥सुसमीपकदाचितडीठपरेक्षणधाव

तलीनकदाचितहोई॥पुनदूरदिखावतरूपउमाहरिध्यानधरेद्द
गहेरतओई ॥ जगधन्यमरीचसुभागजगेपरमातमढूंढनतां
तनजोई॥तबरामनिहारउमामनमैंहरिजानलख्योखलराक्षस
सोई ॥ ८ ॥ शरएकहनेमृगरूपवहीधरपूरवरूपगिरेधरमाहीं
मुखमाहिमरीचकिश्रोणवहेस्वरउच्चसुंदेरकत्यो मुखमाहीं॥वि
धिहामृतुमोहिभईखलनेलक्ष्मनरखोतुममोवनमाहीं॥ सम
रामउचारगिरागिरिओवहुश्रोणतपीवतजांमुखमाहीं ॥ ९ ॥
मरणेजिंहनामचितारतहीतजदेहमिलेनररामपियारे॥ अब
क्यौनमिलेवहुराक्षसजोहरिहेरतहैहरिहीतिहँमारे॥तिहँकेतन
तेइकज्योतिउठीसभकेपिखतेमिलिराममुखारे ॥ विसमैसुर
होइरहेसगलेमिलकैइहभांतिविचारविचारे ॥ १० ॥ कृतकौ
नकर्योइनराक्षसऔपदकौनलह्योइनयांजगमाही॥ मुनिहिं
सकनीचमहाकपटीसुमिल्योननछोडपरातममाही ॥ अथ
वाइहरामप्रभावअहेकछुराक्षसकीकृतकोफलनाही ॥ शर
रामशरीरहन्योइहकेपुनरामचितारतथोउरमाही ॥ ११ ॥डर
रामकेछोडदईसगलीग्रहकीकृतरामभजेउरमाही॥हृदिराम
कुध्यानधरेसदहीसभपापमिटाइदएतनमाही ॥ द्रिगरामनि
हारतराममिल्योसुमरीचहन्योहरिजोवनमाही॥ द्विजराक्षस
पुण्यअपुण्यनकीगनतीनहिहैहरिकेघरमाही॥१२॥ अंतकले
वररामभजेवहुराममिलेयहसाचनिहारी ॥ आपसमोइम
भापसभैसुरआपगएसुरलोकमझारी ॥ रामवढीउरचिंतव
डीमरतेखलराक्षसकीनउचारी ॥ हालक्ष्मनसुमोसमदा

क्यकह्योइनराक्षसतुंडमझारी ॥ १३ ॥ सुनमोसमवाक्य विदेहसुतावधकोउपजेतिहँचित्तमझारी ॥ इहचिंतवढीहरि केमनभैवनवेगहटेसुमुकंदमुरारी ॥ सुनवाक्यमरीचसियाडर पीदुखसिंधुवहीलक्षमंनउचारी ॥ लक्षमंनसरासनलैकरमै वनवेगधसोतवभ्रातपुकारी ॥ १४ ॥ राक्षसपीडदईतिन कोमुखहालक्षमंनसुरामकहेंहैं॥नाहिसुनेनिजकाननतूंवलिबु द्धिकहांममदूखदहेंहैं ॥ तांलक्षमंनसुएहुकह्योइहराघवनामु खवाक्यकहेंहैं॥कोइकराक्षसरामहनेमरतामुखभीतरएहकहे हे ॥१५॥ ॥ **दोहा** ॥ ,॥ क्रोधकरेंजबरामजीहनेत्रिलोकीए क ॥ सोकिमदीनसुबोलहैंसुरपूजैंधरटेक ॥ १६ ॥ **सवैया** ॥ ॥ क्रोधभरीलक्षमंननिहारसुसीदृगभीतरजावतवारी ॥ भ्रातकुनाशचहेंउरमैदुरबुद्धिमहालक्षमंनितिहारी ॥ कैकइ नंदनतूंपठयोन्त्तरामकोतौउरअंतरधारी ॥ जानकिनातुम हाथचरेंविपप्राणतजोंजरआगमझारी ॥ १७ ॥ रामनजान तथातुमकोपतिनीदमरींवनलेवनआए ॥ रामविनानहिमैप रसोंतनजानकियोंमुखसाचअलाए ॥ कैकइनंदनऔतुमको किहभांतिछुहेजनकात्मजाए ॥ योंमुखभापसुबाहुहनेउरजा नकिनैननंनीरवहाए ॥ १८ ॥ सोसुनकैलक्षमंनतवैकरकान ढपेदुखहैउरमांही ॥ मोप्रतियोंमुखभापतहैंधिकपावहिंगीदु खतूंजगमांही ॥ योंमुखभापसियाअरपीवनदेविनकोसुगयो वनमांहीं ॥ दूखलगोउरभीतरतांहरुएहरुएवनरामजहांहीं ॥ ॥ १९ ॥ खलअंतरपाइसुरावणनेतवभिक्षुकरूपधर्योतनमा

हीं॥जनकातमजा।ढिगआइखरोपुनदंडकुमंडलहैकरमांहीं॥त
वसीयविलोकसुआपउठीलखसंतकयौंपुनपूजनतांहीं॥ फल
मूलदएतिनखावनकोपुनस्वागतआपकह्योमुखमांहीं॥२०॥
॥ **तोटकछंद** ॥ ॥ मुनिजूतुमभोजनवैठकरो ॥ सुखठौ
रवसोदुखदूरहरो ॥ पतिमेवनमैअविआवहिंगे॥तवसेवविं
शेपकरावहिंगे॥२१॥ ॥**भिक्षुरुवाच**॥ ॥**सवैया**॥वारि
जनैननिकौनतुमेअरुकोपतिहैतुमरोजगमाही॥काननमैकि
मवासकरेबहुराक्षसनित्यफिरैंजिहँमाही ॥ मोहिकहोसभतूं
कलिआननिहैरजवंशनकेघरमाही ॥ उंनतअंगसभैतुमरेक्ष
पिनारिनकेयहलक्षणनाहीं ॥ २२ ॥ ॥ **सीतोवाच** ॥ ॥
॥**सवैया** ॥ औधपतीइकभूपबलीदशस्यंदनजासभलोकव
खाने॥हैंसुतरामवडेतिनकेशुभलक्षणऔवलकेसुनिधाने ॥
मैपतिनीतिनकीजगमैजनकातमजामुहिलोकवखाने ॥ भ्रा
तअहैलघुजोतिनकोलक्षमंनकहेंवलवुद्धिसमाने ॥ २३ ॥
॥ **चौपाई** ॥ पितुआज्ञाउररामसुधारी ॥ आएदंडकविप
नमझारी ॥ चौदांवरपंकरेंवनवास ॥ तुमनिजनामसुकरोप्र
काश ॥ २४ ॥ ॥**भिक्षुकउवाच**॥ ॥**चौपाई** ॥ पौल
स्यजरावणमुहिभाने ॥ राक्षसराजासभजगजाने ॥ तेरे
कामसुमोहितपायो ॥ तोकोंलेवनमैवनआयो ॥ २५ ॥
॥**सवैया**॥ ॥मुनिभेपधरेवनरामफिरैतिहँसंगकहांसुखतेव
नवारे ॥ अवमोहिभजोतजदुःखसभेसभभोगनभोगहुजेज
गसारे ॥ सुनसीयसुरावणवाक्यतवैमनभीतभईमुखएहुउ

चारे ॥ इममोखलआपततूंवनमैरघुवीरवलीतुमकोरणमारे ॥ २६ ॥ आवहिंगेअबसानुजरामजुतूंक्षणभीतरठांढरहेहै ॥ कोममधर्पणशक्तअहेहरिनारियथाशशकोनगहेहै॥राघवबाणविभिनतनूधरमाहिंगिरेंफलबोललहेहैं ॥ सीयकहीसुनकेगिरिजादशकंधरक्रोधसुदेहदहेहै ॥ २७ ॥ तजभिक्षुकरूपस्वरूपगत्योगिरिसोतनहैमुखभीतरगाजे ॥ दशआननऔपुनर्वासभुजातनकीद्युतिसोंघनकीद्युतिलाजे ॥ तिनहेरडरीवनदेविसभेअरभूतदशोदिशकोउठभाजे ॥ तबफोरधरानखवंदनसोंसधराउत्नकीगिरिसीकरछाजे ॥ २८ ॥ तोलधराथमाहिधरीअतिवेगचलेनभमंडलमाही ॥ हारघुवीरहहालक्ष्मनकहेजनकातमजामुखमाही ॥ रोवतिदीनभईउरमैधररूपनिहारतनैननमाही ॥ सीयकुक्रंदनदीनमहासुजटायुसुन्योनिजकाननमाही ॥ २९ ॥ वेगउठेसुजटायुबलीनखतीक्ष्णतुंडकुपेउरमाही . ॥ तिष्टसुतिष्टकह्योमुखतेइहकोतुमजावतहेवनमाही ॥ तूंजगनाथकीनारिहरीखलनाथनहींअपनेघरमाही ॥ कूकरज्योंपुरुडासवलीअतिपावननीचहरेमखमाही ॥ ३० ॥ इहभांतिउचारसुचोंचचलाइसुतोडदयोरथरावणको ॥ पदकेनखतीक्ष्णफेरदयेखगतोरदयोधनुवाहनको ॥ तजसीयसुरावनखड्गलयेसुजटायुजुटेगललाहनको॥करक्रोधकटेतिनपक्षउभेशिरशेपरत्योसुवतावनको ॥ ॥ ३१ ॥ इतजाइजटायुपरेधरमैकछुप्राणरहेतिहँकेतनमाही ॥ उतरावनऔरचढेरथपैगहिसीयगएनभमंडलमाही ॥

मुखरामहिरामसुसीयकहेअतिरोवतिरक्ष्यकपावतनाही ॥ मुखहारघुवीरपुकारतिहैमुहिरामनिहारननादुखमाही ॥ ३२ ॥ राक्षसलैवनमोहिचलेपतिनीतुमरीतुमलेहुछुडाई ॥ हालक्ष्मंनसभागवडेंअपराधिनिकोतुमलेहुवचाई ॥ वाक्यशिलीमुखमोहिहनेतुमदेवरमोहिपिखोअवआई ॥ रोवतियोंसियऊचमहाडररामहिंकेरथवेगचलाई ॥ ३३ ॥ वेगप्रभंजनजातभयोसियकोदशकंधरलैनभमाही ॥ सीयनिहारअधोमुखवानरपंचविराजतथेगिरिमाही ॥ भूषणलाहिकछूतनतेपटपाडसुवांधवगाइतहांही ॥ रामकहेंइकनारिगईसुहरीदिशदक्षणयांपथमाही ॥ ३४ ॥ तवलंघपयोनिधिलंकगयेदशकंधरसीयधरीपुरमाही ॥ सुअशोकवनीअतिसुंदरमैंशुभतालतमाललगेजिहंमाही ॥ तहँराक्षसियांरखवारिकरेंदशकंधरमातपिखेउरमाही ॥ कृशदीनभईअतिआरतहैनहिवालगुंदावतहैशिरमाही ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ शुशकवदनअतिव्याकुलाहाहारामपुकार ॥ राक्षसिमैसीतावसेविलपतिनैननवारि ॥ ३६ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ **श्रीमाहादेवउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इहराक्षसकामुकरूपधरेछलकोम्रगवावनराघवमारे ॥ तवरामहटेवनतेघरकोअतिदूराहिंतेलघुभ्रातनिहारे ॥ मुखसूकरहेअतिदीनभएलक्ष्मंनवलीवनपंथमझारे ॥ वहिजानसभाविधिरामवलीमनआपनमाहिविचारविचारे ॥ १ ॥ लक्ष्मंननजानतवातकछूवनमैसिय

जोछलकीसुवनाई ॥ जनप्राकृतजिउंअवशोचकरोंसुकरों लक्ष्मंनकीआजठगाई ॥ जवमैअवतूशनिमंदिरमैतजशोक रहोंवनमैठहराई॥तवराक्षसकोटिमरेंकिहँभांतिपिखोंअवऔ रसुरीतिनकाई ॥ २ ॥ कामुकजिउंदुखभारभएसियशोचकरों वनमैअकुलावों ॥ ढूंढतढूंढतसीयवनेतवमैअसुरायनमैंकुप जावों ॥ रावणकोकुलकेसहमास्सुपावकमैनिजजानकिपा वों ॥ मोहिधरीगहिमैतिहिंकोपुनऔधपुरीसुखसोंघरजावों ॥३॥ चतुराननमेविनतीसुकरीममानुषरूपसुआपसवारे॥ गहिमानुषभावसुंवासकरोंकछुकालइहांअवभूमिमझारे ॥ जगमानुपभावकिमेचरयासुनहेंभवमंडलजीवउदारे ॥ त जवंधनतेभवमोक्षलहेंनसहेंभवभीतरतेदुखभारे ॥ ४ ॥ यौं मनमैठहिराइभलेतवआवतरामसुभ्रातनिहारे ॥ काहितजा नकितोहितजीलक्ष्मंनकहाइमरामउचारे ॥ कैकिनराक्षस सीयहरीअथवाजनकातमजागयोमारे ॥ रामकह्योजव योंमुखतेकरजोरसियावचभ्रातउचारे ॥ ५ ॥ हालक्ष्मं नकह्योमुखराक्षससोहरिजीहमहूंसुनपाए ॥ तेवचसोसुन सोअवनीदुहितामममजाहुसुएहअलाए ॥ रोइउठीतवमोहिक ह्योवचराक्षसकोतुमकिंउंदुखपाए ॥ रामकहेनहियोंकवहीं मुखशोभिनितूंसुपिखोघरआए॥६॥ इहभांतिकह्योजवमैति हँकोतवफेरकह्योतिनयोंमुखमाही ॥ अवसोनाहिंवाक्यवखा नसकोंवहुआहिअवाच्यसुतेढिगमाही ॥ करसोंमुहिकानद वेतवहीतुमपेखनकोसुअयोवनमाही ॥ तवरामकह्योलक्ष

मंनउमासुनतद्यपितोहिकियोकछुनाही ॥ ७ ॥ तुमजोपित वाक्यसुसत्यगहेपुनत्यागकर्योंनिहँकोवनमाही ॥ अवकैकि नराक्षससीयहरीअथवाकोऊखाइगयोमुखमाही॥ इहचिंत यढीरघुवीरवलीकरवेगअएनिजआश्रममाही ॥ जनकातम जातिहंनाहिंपिखीसुविलापकरेंदुखहैउरमाही ॥ ८ ॥ ॥ शंक रछंद ॥ हाजानकीअतिसुंदरीकहंगईआश्रमछोर॥ कैलीनतूं वनमैंभईममहासहितमनतोर ॥ इमरामढूंढेंजानकीवनमा हिंपावेंनाहिं ॥ वनदेवीयोतुममेंकहोकहंजानकीअवआहि ॥ ९ ॥ मृगपादपालिविहंगमोतुमदेहुमोहिवताइ ॥ इहभांतिवि लपसुरामजीसियहेरहैंनहिपाइं॥सरवज्ञसोरघुनंदनापरसीय पावेंनाहि॥आनंदसोअतिशोचहैंअतिअचलदौरेजांहिं॥ १० ॥ **चौपाई** ॥ निरममनिरहंकारसुरामा॥ सदानंदचितअद्वैधा मा॥ ममजायासीतायोंकहें॥ दुखसागरकोअंतनलहें॥ ११॥ यांविधिमायानरतनधारी ॥ फिरेरघुतमविपनमझारी॥ जां पदपंकजभजेविधाता ॥ मुनिसनकादिकऔरिपिसाता ॥ १२ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ हैअसंगसहसंगसोमूढपछानेराम॥ तत्त्वज्ञानीरामकोलखेंपरातमधाम ॥ १३ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ यांविधिसियहरिवनमेंटोले॥ लक्ष्मणसहितसुव्याकुलडोले॥ नभकीओरनडीठपसारे॥ सूरयतेउरलज्जाधारे॥ १४॥ शंक रछंद ॥ रथचक्रचापसुकूवरंभूभगनरामनिहार॥ यहदेखल क्ष्मणभ्राततूंइमरामकीनउचार॥ कोलेचल्योथोजानकीतिहं जीतलीनीआन॥ कछुभूमिआगेरामजोपुनगएएहुवखान॥

॥१५॥ ॥सवैया॥ तनुहैगिरिसोमुखश्रोणभरेतिनपेखसुराघवएहुअलाई ॥ जनकातमजाशुभलक्षणजोलक्ष्मनसुनोइनहैवनखाई॥पिखयांहिनिशाचरप्राणहनोंअवसोइरत्योसुइकंतअघाई॥अबबानसरासनमोहिदिजेरघुनंदवनेनहिढीलगाई॥१६॥सुनरामकिवाक्यजटायुडरेअतिदीनभएमुखएहुउचारी॥नहिमारहुमोहमदैवहनेकलयानतुमेसुमुकंदमुरारी॥मुहिनामजटायुसुतेपतिनीजनकातमजागुणशीलउदारी॥दशकंधरसोवनमाहिहरीतिहँसंगभिरेहमरामसुभारी ॥ १७॥ मैतिहँवाहनस्यंदनचापसुकाटभलेधरमाहिवगाए ॥ मारगयोमुहिप्राणतजोंपिखभागभएतुमहूँअवआए ॥ यौंसुनिरामजटायुकथाअतिदीनखगेशगलेअसुआए ॥रामछुहेतिहंहायनकैअतिदुःखभयोजलनैनवहाए॥१८॥आहिशुभाननमेपतिनीवनकांहिहरीसुजटायुसुटेरो॥ तूंममकाजहत्योवनमैप्रियबांधवतूंजगभीतरमेरो ॥रामहिंगीधकहेवतियांमुखमाहिसुश्रोणितजाइघनेरो ॥रावणराक्षसराजकैंहहरिसीयगयोतुमशोधसवेरो ॥ १९॥ दिगदक्षणसीयगईतुमरीअवजोरनहींममबोलनको ॥ अवप्राणतजोंतुमरामअएहमरेजगबंधनखोलनको ॥ तुमईश्वरतेपदकंजनकीइहुरेणकहांजगलोकनको॥ इहरूपनिहारमिटेअघभारफिरोवनमैसियटोलनको ॥ २० ॥चौपाई॥ भलाभयातुमरामनिहारे॥ मरणसमेजनकेअघटारे॥ त्वंपरमात्माविष्णुअनूप॥ मायाकरभएमनुजसरूप ॥ २१॥ अंतकालतवदर्शनपाए॥ रघुसत्तममेवंधमि

टाए ॥ मोतनरामलगावोहाथ ॥ मैंतपदजावोंरघुनाथ ॥ २२ ॥ रामतथातिनहाथलगाए ॥ भूमिपरेखगप्राणविलाए ॥ रामबंधुजिमशोचअपारी ॥ रोवेंरामजाइदृगवारी ॥ २३॥ लक्ष्मणकेकरचितावनाई ॥ रामहाथकरअग्निलगाई ॥ लक्ष्मणसहितनाइजलराम ॥ देहिंतिलांजलिलैखगनाम ॥ २४॥ वहुरमेधम्रगरामसुमार ॥ आमिपखंडसुआपसवारे ॥ श्राद्धरामतिहंकोतवकरयो ॥ भिन्नभिन्नत्रिणमाससुधरयो ॥ ॥ २५॥ भक्षणकरेंसजातीसारे ॥ त्रिपतिखगेश्वरहोइउदारे ॥ श्राद्धकरेंइहमंत्रउचारी ॥ पुनजटायुकोकहेंमुरारी ॥ २६ ॥ गच्छजटायूमेपदवीर ॥ मेस्वरूपपावोतुमधीर ॥ सर्वलोकयहवातनिहारे ॥ रामचंद्रइहभांतिउचारे ॥ २७ ॥ **सवैया** ॥ तवदिव्यतनूधरवैखगनायकदूसरजिउंनभसूरचरे अतिसुंदरजाइविमानचढ्योसभभूपणहैंतनमाहिधरे ॥ दरचक्रगदामुकटांगदवारिजलोगनकेतमदूरकरे ॥ तनपीतपटंवरयौंलसकैजनुमेघनकेसहविद्युफिरे ॥ २८ ॥ ॥ **दोहा** ॥ चतुविंष्णुकेपारपदतैसेतांहिस्वरूप ॥ पूजेंसर्वजटायुकोरघुवररूपाअनूप ॥ २९ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ उस्तुतिकरेंयोगिगणसंगा ॥ भयोजटायुसरूपउतंगा ॥ बहुरजटायुजोरनिजहाथ ॥ उस्ततिकरतभयोरघुनाथ ॥ ३० ॥ ॥ **जटायुरुवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ अगणतहैंगुणपुंजतुमारे ॥ अप्रमेयतुमब्रह्मउदारे जगउत्पतिसंयमथितिकारण ॥ उपरमपरमपरातमतारण ॥ ॥ ३१ ॥ रामचंद्रममहोइप्रणाम ॥ तमकोनाथम्आठोजाम ॥ त

मअपारसुखरामरसाल॥रमाकटाक्षसुकरेविशाल॥३२॥सुरपतिचतुराननदुखजोई ॥ तुमेनिवारकऔरनकोई ॥ नरवरतुमकोसदाप्रणाम ॥ तुमवरदायकपरमअकाम ॥ ३३ ॥ बानसरासनतेकरसोहे ॥ तीनभवनतरुणामनमोहे॥ वांछतफलकेतुमदातारी॥रविशतसुंदरप्रभातुमारी॥३४॥ मृतःसुरागसुनिलयतुमारे ॥ तुमशरण्यमैशरणतिहारे ॥ भवबनदावानलतवनाम ॥ भवमुखदेवभजेंश्रीराम ॥ ३५ ॥ दनुजपकोटिहजारविनाशी॥तनुयमुनासमप्रभाप्रकाशी॥ मैशरणागततुमरीदेव॥तुमपरिपूरणअलेखअभेव॥३६॥गिरेसुजेजगविषयमझारे॥तिनतुमदूरसुराममुरारे॥ विषयनतेवेमुखजनजेई॥सदानिहारेंतुमकोतेई॥३७॥ भवसागरतारणपदनाव ॥ शरणगहीतुमरेअबपाव ॥ शिवगिरिजामनकीननिवास ॥ गिरिवरधारणतुमसुखरास ॥ ३८ ॥ सुरवरऔदानवसिरदारे ॥ सेवेंसगलसुचरणतुमारे ॥ देवनकेप्रभुवरदातारी ॥ रघुनायकमैशरणतिहारी ॥ ३९ ॥ **सवैया** ॥ परकेधनऔपरनारनतेजिननीतविरागरहेउरमाही ॥ परकेगुणहेरप्रसंन्नसदापरकेहितमैसुरमेउरमाही ॥ सुवहीसुखसेवतहैंतुमकोशरणागतमैतुमरीजगमाही ॥ मुखअंबुजमंदप्रसन्नहसेसुलभोमणिइंद्रसुनीलसमाही॥ ४० ॥ नवनीरदश्यामसुकंजप्रभादृगशोभितरामप्रफुलतुमारे ॥ गुरुकेगुरुईश्वररामतुमेहरिब्रह्मशिवादिकरूपसवारे ॥ गुणतीनमयीतुमरीशकतीपुनतांकरहैतुमहूंयहधारे ॥ रविज्योंजलभाज

नमाहिभयोसुरनायकहैंगुणगायकथारे ॥४१॥ रतिकेपतिकेशनकोटिसमाअतिसुंदरतूंजगमाहिसुहावें॥शतपंथसुगोचरभावनयारघुनाथसदाअविदूरसुहावें ॥ यतिकेपतिजेउरशाँतसदातिनकेउरमैनितरूपदिखावें ॥ रघुनाथतुमैपददासलहैतुमआरतकेसभदूखमिटावें ॥४२॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ यौंउस्तुतिसुकरीखगनाथ॥ भयेप्रसन्नतांहिरघुनाथ ॥ श्रीमुखकह्योताहिकल्यान॥ तूंमेरोहैंभक्तप्रधान॥ ४३॥ मोहिविष्णुकोजोपदसार॥तांमैतूंअविवेगपधार ॥ तोहिकरीममउस्तुतिजोई ॥यांकोपढेलिखेवाकोई ॥४४॥ सुणेसुपावेमोहिसरूप॥ मोहिपरायणभक्तअनूप ॥ यांविधिरामकह्योतिहंजवही ॥ हर्पभयोखगवरउरतवही ॥ ४५ ॥ ॥**दोहा**॥ ॥ रघुनंदनकोरूपजोविष्णुसनातनआदि ॥ सोधरतांपदमैगयोपूजेंजांब्रह्मादि ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तवभ्रातसमेतसुरामरमापतिऔरवनांतरमांहिगए ॥ तहँसीयकुशोधनरामकरेमनव्याकुलऔउरदुःखनए॥ वनराक्षसरामसुएकपिखेजठरेमुखहैदगदूरभए ॥ भुजयोजनलौतिहॅव्यापरहीइहभांतिकुरूपसरूपकए ॥ १ ॥ नामकबंधकहेंतिहँकोशुभजीवनकोवनभीतरमारे ॥ तांभुजभीतरआइपरेलघुभ्रातसमेतसुराममुरारे ॥ तांभुजमंडलमांहिअयेयुगभ्राततवैखलरूपनिहारे॥पेखहुभ्रातुसुराक्षसकोहसरामतवैइमवाक्यउचारे ॥ २॥ शिरपादनहींइ

सराक्षसकोजठरेमुखहैपुनबाहुपसारे ॥ भुजभीतरआइपरे जनजोतिहँखाइरहेवनघोरमझारे ॥ हमआइपरेइसिकीभुज मैखलराक्षसयांवनमैहममारे॥ कहिंपंथनहीअबिजावनको रघुनंदकरैंकछुकौनविचारे ॥ ३ ॥ खावहिगोहमदोनहुंकोहम तेअबनाहिकछूबलहोई ॥ यौंसुनकैलक्षमंनकह्योअबऔ रविचारकरोनहिंकोई ॥ होइइकागरएकइकाहमकाटधरेंइह कीभुजदोई ॥ रामतथाकहिलीनअसीभुजदक्षणताहिंकटी हरिसोई ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लक्षमणवांमभुजाकट डारी ॥ दैतअचंभाभयोसुभारी ॥ तुमदेवनमैकौनप्रधान ॥ जिनमेरीभुजकीनीहानि ॥ ५ ॥ कहोअहोतुमभूमनि वासी ॥ कैदिविदेवसुतेजप्रकाशी ॥ कंजनैनश्रीरामर सीले ॥ हसकरबोलेछैलछबीले ॥ ६ ॥ सरयूतीरअयोध्या अहे ॥ पुरीमनोहरसुरनरकहें ॥ तांकोपतिदशरथवरराई ॥ सुरपतिकीजिनकीनसहाई ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैतिनको सुतपूरवोभाईयहममनाल ॥ रामनाममेरोकहेंलक्षमणइहै विशाल ॥ ८ ॥ ममपतिनीशुभजानकीसीतासुंदररूप ॥ मृ गयाकोहमथेगएराक्षसहरीअनूप ॥ ९ ॥ तांकोशोधनह मकरेंआएयांवनमांहिं ॥ तेभुजभीतरमैपरेप्राणपियारेआं हिं ॥ १० ॥ प्राणहितारथतेभुजाकाटीभुजबलधार ॥ विक टरूपतनमैधरेतुमहोकौनउचार ॥ ११ ॥ कबंधउवाच ॥ चौपाई ॥ ॥ मैअबधंन्यभयोजगमाहि ॥ रामतुमेआ एमोपाहि ॥ मैगंधर्वनकोथाराजा ॥ यौवनरूपपरमशि

रताजा ॥ १२ ॥ गर्वभयोमेरेउरमाहि ॥ विचरोमैसभलो
कनमाहि ॥ मोहिपिखेंसुरनारीजबही ॥ ह्योंजाइतिनको
मनतबही ॥ १३ ॥ मेतपकरब्रह्मावरदीनो॥ मोहिअबद्धरघू
त्तमकीनो ॥ अष्टावक्रसुजोमुनिराई॥एकसमेहेयोंमैजाई॥
॥ १४ ॥ तांकोदेखहस्योंमैजबही ॥ क्रोधभयोमुनिवरपुन
तबही ॥ मोकोएहुबखानीबानी ॥ दुष्टअसुरतूँहोहुमलानी
॥ १५ ॥ मैपदवंदनतांपुनकरी ॥ शापअंतभाष्योमुनिवरी॥
तपकरयोतेतांतनअैसे ॥ पावकहोइविधूमसुजैसे ॥ १६ ॥
त्रेतायुगदशरथवरनामा ॥ होवेंगेभूपतिअजधामा ॥ आ
दिनरायणलैअवतारे ॥ होसीसुततांभवनमझारे ॥ १७ ॥
वैवनआवेंगेपुनजबही ॥ काटेंगेतुमरीभुजतबही ॥ तांकरते
रोशापविलावे ॥ पूरवरूपबहुरतुमपावें ॥ १८ ॥ यांविधि
शापजबैतिनदयो ॥ राक्षसतनुमैपावतभयो ॥ एकसमेसु
रपतिवरराई ॥ तिनकौदौरामैरुखसाई ॥ १९ ॥ तिनेवज्रमे
शीशलगायो ॥ रामशीशमेकुक्षिगिरायो ॥ पादधसेमेकुक्षि
सुजाई ॥ रामरहीनहिमेगतिकाई ॥ २० ॥ कमलासनकोवर
थोभयो ॥ वज्रघावकरनहितनगयो ॥ तबतिनसंगदेवथे
जेई ॥ दयायुक्तपुनभएसुतेई ॥ २१ ॥ **तोटकछंद** ॥ अमरे
श्वरयांमुखनाहिअहे ॥ यौंप्राणकहोकिहँभांतिरहे ॥ तबमेसुर
नायकएहकही ॥ जठरांतरतेमुखहोइसही ॥२२॥ भुजयोज
नलौतवहोइनए ॥ इमभापसुआपसुरेशगए ॥ वनतांदिन
तेइहठौरवसों ॥ भुजआइवरेमुखमाहिंग्रसों ॥ २३ ॥ तुम

मोभुजकाटदईवनमै ॥ अवजीवननांसमझोंमनमै ॥ इहखा तविखेभरकाठघने ॥ मुहिआगलगाइसुरामवने ॥ २४ ॥ तनमोहिसुआगजलाइजबे॥गहिपूरवरूपसुनाथनबै॥नवयोपितमारगतोहिकहों॥तवपादकृपापदसोइलहों॥२५॥तहँरामसुभ्रातसमेतभले ॥इकखातउपारसुतांहिडले॥ भरकाठसुपावकरामदयो ॥ निकस्योतिहँतेइकरूपनयो ॥ २६ ॥ जिहँकंद्रपकेसमशोभअहे ॥सभभूषणहैंतनमाहिगहे ॥ कररामप्रदक्षणप्रेमभरे ॥ अष्टांगप्रणामसुपादकरे ॥ २७ ॥ ॥ **दोहा** ॥ जोरउभयकरआपनेभक्तभरेउरभार ॥ गदगदवाणीतांभईउस्तुतिकरेअपार॥ २८ ॥ ॥ **गंधर्वउवाच** ॥ ॥**चौपाई**॥ उस्तुतिकोमनभयोहमारो ॥ रामनहीतवगुणकोपारो ॥ तुमअनादिमनवाकअतीत ॥ भजेंयोगिवरजांकोचीत ॥ ॥ २९ ॥ हैअव्यक्तरूपतवसूक्षम ॥ देहदुहूँतेरहितरघूत्तम ॥ दृष्टारूपतुमारोएक ॥ कोइकलहेंसुपाइविवेक ॥ ३० ॥ औरतुमारोदृश्यसुरूप ॥ जन्यअनात्मप्रभूअनूप ॥ सूक्ष्मतेरोरूपुसुजोई ॥ दुर्विज्ञेयजगतमेंसोई ॥ ३१ ॥ चिदाभासबुद्धीपुनदोई ॥ मिलकरजीवकहावेसोई ॥ बुध्यादिकसाक्षीप्रभुनाथ॥ तूंपरब्रह्मसुश्रीरघुनाथ॥ ३२ ॥ तोहिविखेकल्पेंसंसार ॥ मूढमतीतोकोंनविकार ॥ हिरण्यगर्भसूक्ष्मतेरूपा ॥ स्थूलदेहवैराटस्वरूपा ॥ ३३ ॥ सूक्ष्मरूपभावनाभासे॥मंगलध्यानदूखसभनाशे॥भूतभविष्यअहेपुनजोई ॥ रामतुमेबिनजगतनकोई ॥ ३४ ॥ यहिब्रह्मांडकोशतनथारो॥ म

हदादिकआवृतसुउदारो ॥ समगुणोत्तरजाकोरूप ॥ सोवैरा
जधारणाऽनूप ॥ ३५ ॥ तुहींएकसभठौरेंअहें ॥ लोकअ
वयवतुमारेकहें ॥ हैपातालतोहिपादनतल ॥ पाणिआहिसु
लोकमहातल ॥ ३६ ॥ रामरसातलगुल्फसुजाने ॥ जानुन
लातलतोहिवखाने ॥ सुतलवितलतेउरूउचारे ॥ अंतलरा
मतेजघनउदारे ॥३७॥ रामनाभितेअहेअकाश ॥ उडगणतें
उरभएप्रकाश ॥ ग्रीवातेमहलोककहीजे ॥ वदनरामजनलो
कभनीजे ॥ ३८ ॥ तपोलोकतेकंबुकहावे ॥ सत्यलोकतेशी
शसुहावे ॥ इंद्रादिकसभलोकसुपाला ॥ रामअहेंतवभुजा
विशाला॥३९॥दिशासुश्रोत्रअश्विनौनासा॥ तवमुखरामसु
अग्निप्रकाशा ॥सवितानयनचंद्रमनगाए॥भ्रूवोभंगतवका
लवताए ॥ ४० ॥ बुद्धिवृहस्पतिरामतुमारी ॥ रुद्रअहंकृत
कीनउचारी ॥ यमदाडापुनवाणीवदा ॥ औनक्षत्रदंतकोभे
दा ॥४१॥ हासारामतुमारीमाया ॥ सृष्टिकटाक्षरामतवगा
या ॥ पूरवभागधर्मतेगायो ॥ पृष्टसुभागअधर्मवतायो ॥
॥४२॥ ॥ **गीयामालतीछंद** ॥निमेपऔउनमेपरामसुरा
तिदिनतवभापिए॥समुद्रकुक्षिसुतेरोआ नाडीनदीसभआखि
ए॥रामावलीतरुऔपधीपुनरेतवृष्टिवखानिए॥ महिमातुमा
रोज्ञानहैइहथूलवपुतवजानिए ॥ ४३ ॥ इहतवपूजोधरेमन
महिलाइनीकेभावनी ॥ विनखेदपावेमोक्षसोनहिऔरकृत्य
कमावनी॥ इहहेतुरामरथूलतवपुनीतमेउरभावहीं॥ जिहँध्या
नतेरसप्रेमउपजेरोमसभपुलकावहीं ॥ ४४ ॥ ॥ **चौपाई**

मुक्तहोइनरयांजगतवही ॥ स्थूलरूपतवभजेसुजबही ॥ यहिसुस्थूलरूपजोथारो ॥ याँकोभीअवरहोविचारो ॥ ४५ ॥ यहिजोरूपप्रत्यक्षनिहारों ॥ मैइहकोउरअंतरधारों ॥ धनुपचाणतनुस्यामविराजे ॥ शीशजटातनुवलकलछाजे ॥ ४६ ॥ तरुणशांततनसीयनिहारो ॥ सदावसोउरकरुणाधारो ॥ शिवसर्वज्ञमदासभवानी ॥ भजेंयहीतनुनिजरजधानी ॥ ॥४७॥काशीविखेमरतजनकाल॥ तारकमंत्रकहेंसुविशाल॥ रामनामयहभाषेकान ॥ तारकब्रह्मसुकीनवखान ॥४८ ॥ जनकातमजापतीमुरारे ॥ त्वंपरमात्मामैउरधारे ॥ तेरीमायामोहेसारे ॥ जानेनहितवतत्वविचारे ॥ ४९॥ रामनमस्तेसदकल्यान ॥ त्वंपरमात्मातेपदध्यान ॥कौसलनायकरामउदार ॥ भ्रातसंगपदसेवनहार ॥ ५० ॥ रक्षरक्षजगनाथउदारे॥मायाहरेनज्ञानहमारे॥ तवकरुणानिधिरामउदारे॥ भीनेनयनसुवचनउचारे॥५१॥ ॥ **श्रीरामउवाच॥** ॥ **चौपाई** ॥ भक्तियुक्ततेकीनवडाई ॥ मेगंधर्वहर्षअधिकाई ॥ योगिगंम्यमेपरमस्थान ॥ तहांजाहितूंबैठविवान ॥ ५२ ॥ वाक्यकदंवकत्योतवजोई ॥ भक्तिसहितइहपढेजुकोई॥ अज्ञानजभववंधनजोई ॥ क्षणभीतरवहुत्यागेसोई ॥ ५३ ॥ ॥ ॥**दोहा**॥ अनुभवकैअनुमेयजोमेरोचेतनरूप ॥ तांकोपावेंपाठकात्यागेंभ्रमतमकूप ॥ ५४ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेनवमोऽध्यायः ॥ ॥ ॥९॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **सवैया**॥ गंधवसोवर

पाइभलेचलतेतिहँरामहिवातउचारी ॥ तेपुरभागअहेशवरी शुभआश्रमजांकदलीफुलवारी ॥ तेपदपंकजसेवकहैभगती पथमैतिहँबुद्धिउदारी॥ तोहिकहेवहिवानसभाचलरामतहांतु मजाहुमुरारी ॥ १ ॥ इहभांतिवखानविवानचढहरिकेपद जावनहेतपधारे॥ तनुसूरजसोचमकैनभमैंकविरामकहेफल योंविसतारे॥रामतजेवनघोरतवैजहंसिहसुव्याघरबोलतभा रे ॥आश्रमभीलसुतारघुनायकजाइभलीविधिसोंपदधारे॥ ॥ २ ॥ शवरीतवरामनिहारतहीसहभ्रातभलीछवआवतभा ई ॥ हरपीउठआसनतेशवरीतवरामफिलवनकेहितआई ॥ह रिपादप्रणामकरीशवरीपुनप्रेमकुनीरचल्योंहगजाई ॥ ५[illegible] रामअएतुमआनंदसोंसुखआसनमैतिनलीनविठाई॥३॥ल घुभ्रातसमेतसुराघवकेतिनप्रेमभरीपदनीरपखारे ॥ अरघा दिकपूजनतांहिकरेहरिपादननीरसुतांशिरधारे ॥ पुनदिव्यफ लादिकभीलसुतासुधारससेतिनआपनिकारे॥हरिकेहितजे तिनसंचधरेवहुआनदएतिनराममुरारे॥४॥पुनपादनकूलच ढाइभलेघसचंदनतांतिनअंगलगाए॥ इहभांतिअतिथ्यकर्यो तिनकोपुनसानुजआसनमाहिविठाए ॥ कविसिंहगुलावत वैशवरीकरजोरउभेइहवैनअलाए ॥ इहआश्रममेगुररामर हेवहुकालभलेतपतांहिकमाए॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ मैतिन शेवनकरोंसुनीत ॥ रहोंसमीपइकागरचीत ॥ बहुतहजारव र्षयोंभए ॥ तेकमलासनकेपदगए ॥ ६ ॥ जानसमेमुहिएहु वखानी ॥ तूंइहांहींवसकल्यानी ॥ दाशरथीहरिरामहठीले ॥

ब्रह्मसनातनपरमरसीले ॥७॥ कृपिपालनराक्षसवधकाज॥ आवहिंगेवनमैसुरराज॥ तूंनिनध्याननिरंतरधार ॥ रामनाममुखमाहिउचार ॥ ८ ॥ चित्रकूटगिरिमैअवआए ॥ मुनिसमआश्रमवसेंसुहाए॥आवहिंरामइहांसुनजौलौ ॥ एकुकलेवरराखसुतौलौ ॥ ९ ॥ रामहेरतनुअपनोदाहि ॥ जावहिंगीहरिकैपदमाहि ॥ यांविधिगुरमुहिभाप्योजैसे ॥ करतभईरघुवरमैतैसे॥१०॥तेरेध्यानविपेमनुदीनो॥तवआगमनप्रतीक्षनकीनो॥सफलभयोगुरमुखोंउचार॥रामलख्योमैदर्शतुमार॥११॥ ॥दोहा॥ तेरोदर्शनरामजीपायोमूगुरुनाहि॥यांपितमूढाहीनमैअप्रमेयतुमआहि॥१२॥तवदासनकेदासजेसौगुणउत्तरकीन॥तांदासीअधिकारनहिकहाकहोंपरवीन॥१३॥ ॥**चौपाई**॥ मनवाणीकेअहोअगोचर॥ किंहँविधिभयेसुमेदृगगोचर॥उस्तुतिकरनहिजानोंराम॥होहुप्रसन्नरूपकेधाम॥ ॥१४॥ ॥**श्रीरामउवाच**॥ नरनारीमुहिनाहिविशेपे॥जातिनआश्रममेरेलेखे॥मोहिभजनमैभक्तिसुकारण॥वहीकरेसभवंधनिवारण॥१५॥ वेदाध्ययनयज्ञतपदान ॥इनकरनहिमम होवेभान ॥ भक्तिविहीनकरेकृतजोई ॥ मेरोदर्शनतांहिनहोई ॥ १६ ॥ भापोंभामनिभक्तिअगाधन ॥ करसंक्षेपभक्तिकेसाधन ॥ संतनकीसंगतिहेजोई ॥ प्रथमसुसाधनभाप्यो सोई ॥ १७ ॥ दूसरमेरीकथाअलाप ॥ तृतीयसुमेरेगुणकोजाप ॥ व्याख्याममवचननकीजोई ॥ चौथोसाधनजानसु सोई ॥ १८ ॥मेरोरूपसुजानअचारय ॥शेवेंनिशिदिनजेज

गआरय ॥ कपटनहीमनभीतरठाने ॥ पंचमसाधनएहुवखाने ॥१९॥ पुन्यशीलयमनियमउदारे ॥ मेरेपूजनमैमनधारे॥ षष्टमसाधनभाष्योसोई ॥ कोविदकरेनिरंतरजोई ॥ २० ॥ शुभममनंत्रउपासनजोई ॥ सप्तमसांगपछानोसोई ॥ सभ भूतनमैममतिकरे ॥ पूजाममभक्तनविसतरे ॥ २१ ॥ करेविरागसुअरथनमाही ॥ शमदमधारनिजमनमाही ॥ अष्टमसाधनएहुकहीजे ॥ नवमोतत्वविचारभनीजे ॥ २२ ॥ नवविधएभक्तीकेसाधन ॥ जांकोप्राप्तसुहोइमहाजन ॥ पुंस्त्रीतिर्यकआदिजुहोई ॥ मेरीभक्तिलहेपुनसोई ॥ २३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ प्रेमलक्षणाभक्तिजोउपजेजनमनमाहि ॥ मेरोतत्वज्ञानपुनभासेतिनमनमाहि ॥ २४ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ मेरोज्ञानभयोतिनजवही ॥ यहीजन्ममुक्तीतिनतवही॥ भक्तिमोक्षकोकारणआहि ॥ तांविनऔरसुकोईनाहि ॥२५॥ पूरवसाधनजिनकोहोई ॥ क्रमकरसगललहेपुनसोई ॥ तांतेभक्तिमोक्षहढहोई ॥ बंधनसगलनिवारेसोई ॥ २६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ममभक्तीसंयुक्तूंभईजगतकेमांहि ॥ यांहीतेहमभीलनीआएतवघरमाहि ॥ २७ ॥ मेरोध्यानसुधारकेभईमुक्ततूंआज ॥ अवरनकारणचाहीएभएसगलतवकाज॥ ॥ २८ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तूंजवजानतसीकमलाहगतोममदेहिसुआजवताई ॥ कांहिंहरीकिंहँठोरअहेममप्राणप्रियाशशिसीवदनाई ॥ तूंसभजानतरामसदाशवरीइहआंतसुवातअलाई ॥ तूंसर्वज्ञसनातनहैंजगकारणतेसवरीचलि

जाई ॥ २९ ॥ तद्यपितूंहरिपूछतहैंमुहिलोकनसोतनुयांज
गधारी ॥ हैजिहठौरसुतेपतिनीतुमभाषतहोंसुनराममुरारी ॥
रावननेतवसीयहरीअवलंकवसेजलसागरपारी ॥ आहिन
जीकसरोवरएकसुपंपकहेंअतिउज्जलवारी ॥ ३० ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ ऋष्यमूकतहँपरवतएक ॥ रच्योविधाताअरथ
नटेक ॥ तहँसुग्रीववसेकपिनायक ॥ चारसुमंत्रीजांहिसहाय
क ॥ ३१ ॥ पवनवेगकपिहैंवलधारी ॥ भयोसुडरतिहँचीत
मझारी ॥ वालीभाईतेडरपावे ॥ ऋपिभयवालीतहांनआवे ॥
॥ ३२ ॥ तहँतुमजाहुरामवलधारी ॥ ताँकिसखासुवनोमुरारी ॥
तेसुग्रीवकार्यसभकरे ॥ तवदासोतेसत्यउचरे ॥ ३३ ॥
तवआगेरघुनंदनश्याम ॥ अग्निप्रवेशकरोंमैराम ॥ जारकले
वरतेपदजावों ॥ दोघटिकारहुदर्शनपावों ॥ ३४ ॥ ॥**सवैया**
इहभाँतिवखानसुरामवलीपुनपावकमाहिधसीतहँसोई ॥ क्ष
णभीतरजारकलेवरसोभववंधनकारणथोजगजोई ॥ वनरा
मप्रसादसुमोक्षलहीशवरीजिहँपावतकोविदकोई ॥ फलको
दुरलंभसुहैजगमैजवरामप्रसन्नउमाजगहोई ॥ ३५ ॥ **चौपा
ई** ॥ अधमसुजातिभीलनीजोई ॥ भईमुक्तभवभीतरसोई ॥ रा
मभक्तव्राह्मणपुनजोई ॥ किंउंनहिमुक्तसुवहुजगहोई ॥ ३६ ॥
भक्तिरामकीयांजगजोई ॥ मुक्तिविधायकभवमैसोई ॥ काम
धेनुसीसाजगमाही ॥ किंउंनहिंकरोभक्तिहरिमाही ॥ ३७ ॥ **स
वैया** ॥ रामकिपाइनसेवकरोजगभीतरहेजनप्रेमलगाई
ज्ञानअनेकसुमंत्रविचारसुदूरतजोभवभीतरभाई ॥ रामसु

श्याममहातनुसुंदरजांहिभजेसभहीअघजाई॥ तांहिभजेतुमनीतजनाजगभीतरजोजनकोसुखदाई ॥३८॥ ॥अनंगशेखरछंद ॥ विराधजांहिमारयोनिवारयोकलेशदासवासदंडकाकरेमुनीशटेकयोमथा ॥ कटेनिषंगधारयोउधारयोजटायुकोसुयोजनायतीभुजाकबंधदेहजांमथा ॥ सुतांहिरामचंद्रकीउदारपावनीमहाअपारधारगंगसीअरण्यकांडकीकथा ॥ गुलाबसिंहदाससामनोमलानिवारणीउधारदेवगीरतेबनाइकेकहीतथा ॥ ३९ ॥ ॥इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअरण्यकांडेदशमोऽध्यायः॥१०॥ इति अरंण्यकांडसमाप्तं॥ ७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥

श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ किष्किंधाकांड प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ ॥**सवैया**॥ मैथिलकीदुहितापदवीव नडोलतजोरघुवीरनिहारे ॥ काननकेसरिकेसुतसोंजिनवात करीजगनाथमुरारे॥ सूरयकोसुतमीतकर्योअरुजांहिपुरंदर कासुतमारे ॥ सोरघुनायकदासनकेशुभकाजकरेविघनाक टडारे ॥ १ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ तव लक्ष्मणअरुरामरसीले ॥ शनेशनेअतिसुंदरडीले ॥ पंपा सरकेतटमैगए ॥ पेखसरोवरविस्मयभए ॥ २ ॥ कोशप्रमा णअहेविस्तारा॥ जलअगाधअतिउज्वलसारा॥ सुंदरकमल जहाँअतिखिरे ॥ कुमुदअनेकप्रभाविसतरे ॥ ३ ॥ ॥ **सवै या** ॥ वत्तिकऔपुनहंसघनेचक्रवाजिहँशोभतहैंचहुँओरा॥ कोकिलकाजलकुक्कुटऔपुनक्रौंचसुनादकरेंघनघोरा ॥ की रकपोतअनेकरटेंअतिशोभतसारसकेघनजोरा ॥ फूलल तातरुयौंनिरखैंजनुनागरनारिचितेंदृगकोरा ॥ ४ ॥ फलभा रभरेतरवासगलेशुभसंततिसेसुलटेधरमाही ॥ जलउज्वल जिउंमनसंतनकोपुनवारिजगंधधसीतिनमाही ॥ भ्रमहार

कवैजलपानकरेरघुवीरतहाँतरुकीपरछांहीं ॥ तहँसानुज रामसुतूणकसेपथिशीतलमाहिंचलेतटजांहीं ॥ ५ ॥ **चौपाई** ॥ रिष्यमूकपरवतढिगदोऊ ॥ जातभएलक्ष्मणहरिसोऊ॥ धनुपवाणकरभीतरधारे ॥शीशजटावलकलहिंसवारे ॥ ६ ॥ नानावृक्षनओरनिहारें॥गिरिकीशोभावहुतउचारें॥ वानरचारसहितसुग्रीव ॥ तांपरवतशिरवसेसदीव ॥ ७॥ पिखलक्ष्मणअरुरामसुआए ॥ परवतशिखरचढ्योपुनजाए डरसुग्रीवकह्योहनुमान ॥ आवतकौनदोऊवलवान॥ ८ ॥ जाइपिखोतुमतिनउरत्रांई॥ वटुकीआकृतिदेहवनाई॥क्यायह वालीआपपठाए॥मेरेमारणकेहितआए॥ ९॥ तिनसोंजाइसु वातकरेहु ॥ तिनकोचीतसगललखलेहु॥ जेवहुदुष्टचित्तलख पावें॥ करसैननकरमोसमझावें ॥१०॥ **दोहा** ॥भलेजानतिन मोहिपिखहासीदंतनिकार॥यांविधिजानेहमसहीतिनकोसार असार ॥ ११ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ हनूमानमुखतथाउचार ॥ लीनोवटुस्वरूपतनधार॥ अतिसुनम्रतिनकीढिगगयो ॥ कर प्रणामपुनपूछितभयो ॥ १२॥ पुरुपसिंहतुमकौनसुदोई ॥ तरुणबीरवनआएजोई ॥ आठोदिशाप्रकाशोभाई ॥ दोसूरयसमप्रभासुहाई॥ १३॥तुमत्रिलोकिकेकरतादोई॥मेरी मतियांविधिकीहोई॥तुमसुप्रधानपुरुपजगकारण॥जगतस्व रूपजननकेतारण॥ १४॥मायामानुपभएअकार॥मैजानततु मकोअवतार॥जगउपजावनपालनहरणू॥ लीलाकरोसुतुम दोतरणू॥ १५॥स्थावरजंगमजोजगहेरे॥तुमसुतंत्रप्रेरकतिन

केरे ॥ भूमीकोसभभारसुहरणो ॥ निजभक्तनकोपालनकरणो ॥ १६ ॥ याहिततुमलीनोअवतार ॥ तुमपरमेश्वरक्षत्रिअकार ॥ नरनारायणसेजगदोई ॥ मेरीमतियांविधिकीहोई ॥ १७॥रामकीयोतबभ्रातउचार॥पेखोलक्ष्मणवटूसुचारु॥शब्दशास्त्रहैसगलोजोई ॥ वारअनेकसुन्योइनसोई॥१८॥इनेसुजोजोमुखतेकथ्यो ॥ शब्दअशुद्धनतांमैलथ्यो ॥ पुनरघुवीरकथ्याहनुमान ॥ ज्ञानरूपवैश्रीभगवान ॥ १९ ॥ मैहोंदाशरथीजगराम ॥ यहमेअनुजसुलक्ष्मणनाम ॥ सीताद्वुतीसुनारिहमारी ॥ पितुआयसशिरपरहमधारी ॥ २० ॥ तीनोदंडकविपनमझार ॥ हमआएसुनब्रह्मकुमार॥ राक्षसकिनेसुहरीपियारी ॥ मेपतिनीवद्धजनककुमारी ॥ २१ ॥ **दोहा** तांकिढूंढनहेतुहमआएयांवनमाहि ॥ तुमबटुरूपीकौनहो मोहिकहोमुखमांहि ॥ २२ ॥ ॥ **बटुरुवाच** ॥ ॥ **चौपाई** सुग्रीवनामवानरकोराजा ॥ हैमतिमानबडोशिरताजा ॥ चारमंत्रितिहँसंगपियारे ॥ गिरिशिरवसेसुकपिशिरदारे ॥ ॥ २३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ बालीकोलघुभ्रातहैरघुवरकपिसुग्रीव ॥ बालीपापीकादयोडरतरहेतिहँजीव॥२४॥ इनकोनारिसुतांहरीबालीपापीभ्रात ॥ तिहँडरयांगिरिमैवसेकपिनाथकविख्यात ॥ २५ ॥ ॥**चौपाई**॥ ॥मैसुकंठकोअहोंवजीर ॥ वायुपूतममकहेंसुधीर ॥ हनूमानममनामवखाने॥ अंजनिमातसगलजगजाने॥२६॥ ॥**दोहा**॥ ॥ सहसुकंठसखिताकरोंकहोरघूत्तमजोइ ॥ पतिनीहरीसुनाशप्रतितोहि

सहायकहोइ ॥ २७ ॥ मैअवजावोंवेगतहँढीलनहीकछुआ
हि ॥ चलोरघूत्तमवेगतुमजोरुचिहैउरमाहि॥२८॥ ॥ श्री
रामउवाच ॥ ॥सवैया॥ ॥ हमहूँतिहँकेसंगहोनसखाचल
केइहठौरसुनोअबआए ॥ जगमीतकुकारजहोइजितोकरहों
सगलोशिरलौंबलल्लाए ॥ हनुमानतबैनिजरूपगह्योकर
जोरउभेतिनरामअलाए ॥ अबमोहिसुकंधचढारघुनायक
वेगचलेंनहिंढीलसुहाए ॥ २९ ॥ तिंहँठौरचलेंअबवेगसु
नोजहँसंगअमातवसेकपिराई ॥ तबरामतथामुखभापभले
हनुमानसुकंधचढेयुगभाई ॥ हनुमानसुकूदचढेक्षितितेगिरि
शीशविखेनहिंढीललगाई ॥रघुनाथतहाँलघुभ्रातसमाक्षण
बैठरहेनिवडीतरुछाई ॥ ३० ॥ हनुमानकपीश्वरपासगएकर
जोरउभेइहवातअलाई ॥ लघुभ्रातसमारघुवीरअएडरदूरत
जोसगलोकपिराई ॥अबवेगउठोमिलराघवकोतिनसोंसखि
तातुमरीसुबनाई॥करतूंसखितासहवेगतिनेसुनराजनपावक
पासजलाई॥३१॥हरपेशुभग्रीवसुनीबतियांपुनआपरघूतम
कीढिगआई॥ तरुकोमलशाखसुछीनलईकररामकिहेतुसुदी
नविछाई॥हनुमानदईलक्षमन्नतबैलक्षमन्नसुकाढदईकपिरा
ई॥पुनबैठगएतिंहँठौरतबैकपिनायकऔहरिजीहरपाई॥३२॥
आदहुँतेरघुवीरकथालक्ष्मंनसभातिहँभापसुनाई॥ रामदयो
वनवासपिताअरुसीयगईवनमाहिचुराई ॥ यौंलक्ष्मंनकिवा
क्यसुनेतबएकपिनायकबातअलाई ॥सीयसुशोधनमैकरहों
बलबुद्धिजहाँपहुचेरघुराई॥३३॥अरिघातनमैंसुसहायकता

तुमरीकरहोंबलमैरणमाही ॥ इकऔरसुनोतुमरामकहोंजु
पिखीइहमैनिजनैननमाही ॥ कपिचारसमेतसुएकसमेइह
बैठुहुतोगिरिकेशिरमाही ॥ इकनारिसुलोचनराक्षसकोगहि
जावतथोनभमंडलमाही ॥३४॥ मुखरामहिरामपुकारतथीपु
नपेखहमैगिरिकेशिरमाही ॥ निजभूपणतारसुफारपटंबरडा
रदएसुधराधरमाही ॥ अतिरोवतिथीदृगनीरघनोगहिराक्ष
सतांहिगयोनभमाही ॥ गहिभूपनमैरघुनंदनवैइहथापधरेगि
रिकंदरमाही ॥ ३५ ॥ अबलौइहआंहिंपिखोनिजनैननहैंतिन
केकिनहीसुविचारे ॥ इहभांतिउचारसुआनवहेकपिनाथभले
रघुनाथदिखारे ॥ पुनरामसुहाथनखोलगिरापिखभूपणहामु
खमाहिंपुकारे॥ ह्रदिभूपणधारसुरोतभएजनुप्राकृतरोवतलो
कमझारे ॥३६॥ लक्ष्मंनदयोबहुधीरतवैअरुवाक्यइहैसुकहे
मुखमाहीं॥ दिनकेतकमाहिंलहोसीयकोतुमकिंउंबहुशोचक
रामनमाही ॥ कपिनाथसहायकहेहमरोहममारहिंरावण
कोरणमाही॥ तबआपसुग्रीवकह्योमुखतेप्रणभापतहोंसुसु
नोवनमाही ॥ ३७ ॥ ॥ **सुग्रीवउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥
यहहैरामप्रतिज्ञामेरी॥ बहुतकहेउरलाजघनेरी ॥ रावणको
रणभीतरमारी ॥ तेकरदेउंसुजनककुमारी ॥ ३८ ॥ ॥ **शं
करछंद** ॥ हनुमानपावकदारुलैतहँजालयोपुनआप ॥
रामओकपिनाथकेढिगधर्योसाक्षीथाप ॥ तबभएमीतपर
स्परंगलमिलभुजापसार ॥ निहपापदोनोचीतमैजिमगंग
यमुनावारि॥ ३९ ॥ तबरामकेढिगवैठकेसुग्रीवकीनउचार॥

सुनसखेनिजमैहालुतोकोंकहोंराममुरारि॥सुनोतुममनलाइ कैममवालिकीनाजोइ ॥ मायाविनामसपूतमयकोपरमदुर मदसोइ॥ ॥४०॥ ॥ **चौपाई** ॥ एकसमैकिष्किंधाआ यो ॥ वालीकोतिनआइबुलायो ॥ सिंहनादतिनकीनउ चारा ॥ वालीक्रोधभयोउरभारा ॥ ४१॥ ताम्रसुनैनक्रोध अतिलाली ॥ निकसेपुरतेवीरसुवाली ॥ वालीतांउरमुष्टिल गाई ॥ राक्षसडर्यौसुचल्योपलाई ॥ ४२ ॥ अपनीगुहप्र तिभाग्योजवही ॥ वालीपाछेधायोतवही ॥ मैतवसंगधयो तिनगयो ॥ वालीकाअनुगततवभयो ॥ ४३ ॥ गिरिकंदरम हिसोधसगयो ॥ वालीमोप्रतिवचनअलयो ॥ तूंरहुवाहिर मैधसजावों ॥ रहोतवीलौंजौलौंआवों ॥ ४४ ॥ यांवि धिभापगुहामहिगयो ॥ मासएकवाहिरनहिअयो॥ मासोप रतगुहाकेद्वारा ॥ निकसीशोणितकीवहुधारा ॥ ४५ ॥ तिन कोदेखतमतनभयो ॥ मैउरजान्योवालीमुयो ॥ गुहकेद्वार शिलाइकमार ॥ मैआयोनिजभौनमझार ॥४६॥ वाली राक्षसनिश्चयमारा ॥ गुहावीचमैकीनउचारा॥सुनकैवातदु खीसभहोए ॥ छातीताडसुवहुविधरोए ॥ ४७॥ मोकोंराज तिलकसभभापें ॥ रामहुतीनहिमेअभिलापे ॥ राजवला तकारतेदीनो ॥ कपिमंत्रिनमुहितिलकसुकीनो ॥ ४८ ॥ ॥ **शंकरछंद**॥मैराजकीनोकपिनकोसुनरामकिंचितकाल॥ शीशछत्रसुमेफिरेयुगदुलेंचौरविशाल॥ जिहँकालवालीआ यपिखपुनमोहिरोपसुकीन ॥ वहुत्रिप्टकारसुमेकयौंकुपमुष्टि

छातीदीन ॥ ४९ ॥ तजमैंसिंहासनताहिंकोभयभीतभाग्योरा म॥जगलोकसगलेमैफिर्योनहिराखिओकिनसाम॥रिष्यमूक सुपर्वतइहरह्योमैडरडार ॥ नहिआइबालीयांहिमैंऋपिशाप काभयभार ॥ ५० ॥ दिनताहितेममभारयावहुमूढभोगेआ प॥ त्तनारिमेरीऔगृहंवहुदहेमेउरताप ॥ अवपादतेलहिसु खीहोयोयोंकहेकपिवैन॥ सुनमित्रकेदुखदुखीहोएरामवारि जनेन ॥५१॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तववैरीकोमारहोंजाँहिंहरीतव नारि ॥ योंरघुपतिजवहीकह्योकपिपतिकीनउचार ॥ ५२ ॥ राजनवालीअतिवलीकैसेमारोताहि॥ मानुपकीगिनतीकहाँ देवडरेंउरमाहि ॥ ५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनारामतेकथा वखानो ॥ जाँकरतुमवालीवलजानो ॥ एकसमेदुंदुभितिहँनामा ॥ वडादेहराक्षसवलधामा ॥ ५४ ॥ किष्किधाप्र तिनिशिकोआयो ॥ महिपरूपतिनदेहवनायो ॥ वालीकोर णहेतुवुलायो ॥ सोसुनवालीकोपवढायो ॥ ५५ ॥ युद्धहेतु वालीतबगयो ॥ महिपशृंगततांगहिलयो ॥ वलकरधरणी माहिगिरायो ॥ पादएकतिहिंदेहदवायो ॥ ५६ ॥ हाथनसों तिहँशीशमरोर ॥ रामदेहतेलीनातोर ॥ तोलनकरतिनदूरव गायो॥रामशीशवहुईहाँआयो॥ ५७ ॥ योजनएकतहाँतअ यो॥ ऋपिमतंगआश्रमढिगपयो ॥ रक्तवृष्टितहँभईअपारा ॥ पेखमुनीश्वरक्रोधसुधारा ॥ ५८ ॥ वालीकोतबशापलगा यो ॥ क्रोधभरेमुनिएहुअलायो ॥ मेरेपर्वतआवैंजवही ॥ भग्नशीशतूँमरेंसुतवही ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऋपिमतं

गवडश्रापयौंदीनोरघुवरताहि ॥ ऋष्यमूकयाँपर्वतेबाली आवेनाहिं ॥ ६० ॥ ॥ सैवया ॥ ॥ इहजानवसोंइहठौर विपेसुनरामसभोउरतेडरडारी ॥ शिरदुंदुभिकोइहठौरपर्यौतु मरामचल्लोअवलेहुनिहारी ॥ जवताँहिनिक्षेपनतेशकतीतव वालिहनोतुमहोवलधारी ॥ इहभांतिवखानदिखातभयोशिर थोवहुभूधरसोअतिभारी ॥ ६१ ॥ पिखरामहसेमुखमाँहित वेपुनपादअंगूठसुँशीशचलाए॥दशयोजनजाइपर्योजवहीक पिनायकचीतअचंभसुआए॥ शुभग्रीवकहेमुखधन्यसुधन्य सुमंत्रिसभैमुखएहुअलाए॥ वलपेखनकीपुनऔरकथाकपि नायकराघवपाससुनाए॥६२॥इहतालरघूत्तमसातपिखोइक एकहिंआनहलावतवाली॥ धरमाहिंगिरैंइनपातसुनोइकपा तरहेनहितालनडाली ॥ इकसायकछिद्रकरोसभकोहमजान हिंतौउरमारहुवाली॥कहिरामतथाधनुहाथलयोअरुसायक एकलयोवलसाली॥६३॥भेददयेसभतालतवैरघुनायकसा यकएकचलायो॥फोरकितालनभूधरभूपुनसायकरामनिषंग हिंआयो॥ होइरहेविसमैशुभकंठसुरामकहेउरमैहरपायो॥रा मसुतूँजगनाथअहेंपरमातमयाँजगजाँहिंउपायो॥६४॥ कृत पूरवपुन्यप्रफुल्लभएममरामयतोतवसंगतिपाई॥जगतोहिमहा तमनीतभजेंभवबंधनतेसभदेहिंमिटाई ॥ अवकाहिसुमैभव चाहिकरोंबलिरामलहोंतवमोक्षसहाई॥सुतनारिसुराजधना दिकजेसभमायकहेंइममेमनआई॥६५॥अवदेवनदेवनऔ रचहोतुमहोहुप्रसन्नमहावलधारी॥ जगआनंदतेपदमोहिल

हेकृतभागहुतेकछुमोहिअपारी॥ मृदहेतुयथानरधावतकोनि धिसोइलहैजगमैंजिमसारी ॥ यहिमायकबंधनआहिजितो वहुदूरभयोअवमोहिमुरारी॥६६॥ ॥चौपाई॥ यज्ञदान तपकरेसुजोई ॥संसृतिबंधनजीरणहोई ॥उलटोबंधनदृढतो गहे॥जांकरजीववहुतदुखलहे ॥ ६७ ॥ तेपदपेखनतेसुन धीर ॥ बंधनमिटेसुश्रीरघुवीर ॥ अधोक्षणतोमैमनलागे ॥ मूलाज्ञानअनर्थसुभागे ॥ ६८ ॥ तांतेतोहिविपेमनमेरो ॥ सदारहेनहिऔरसुहेरो ॥ रामरामजिहँवाणीगावे ॥ सो क्षणभीतरपापमिटावे ॥ ६९ ॥ ब्रह्मसुहत्याऔमदपान ॥ सर्वपापक्षणभीतरहान ॥ रामनहीअरिजीतनचहों ॥ दार सुखादिकनाउरगहों ॥ ७० ॥ तुमरीभक्तिसदाममहोइ ॥ बं धनसगलमिटावेजोइ ॥ तुमरीमायाहैबलवंत ॥ जगउपजा योजाँभगवंत ॥ ७१ ॥ मैहोंदासतुमारोराम ॥ आयोहैंतु मरीअवसामं[1] ॥ निजपादनकीभक्तिसुदीजे ॥ भवसंकटते रक्षणकीजे ॥ ७२ ॥ तवमायाममहरसुज्ञान ॥ मीतउदा सीअरिउरमान ॥ पूर्वभएसुमेउरमाही ॥ आजुनहीरघुवर मनमाही ॥ ७३ ॥ अवतेपदकेदर्शनपाए ॥ सर्वब्रह्ममेरेउर आए ॥ मित्रकहाँसुकहाँअरिमेरे ॥ सर्वब्रह्ममेरोमनहेरे ॥ ७४ ॥ तवमायानरगहेसुजौलौ ॥ गुणविशेपहोवैपुनतौ लौ ॥ जौलोमायावलैभगवान ॥ तौलौहोइनतत्वसुभान ॥ ७५ ॥ कृतअज्ञानअनिकताजौलौ ॥ कालजन्यभयहोइ सुतौलौ ॥ यातेजोउअविद्यागहे ॥ सोउअंधेरेतममहिवहे

[1] सरण.

॥ ७६ ॥ मायामूलसगलसुविकारा ॥ यहिमेरोसुतयहिमदा रा॥ ताँतेमायालेहुहटाई ॥तवदासीमायारघुराई ॥७७॥ **सवैया** ॥ तवपादविखेमतिमोहिलगेतवनामकथामुखमाहिंउचारों ॥ तवसेवकसेवकरोंकरसोंवलतेतनुकीतनुसंगतिधारों ॥ तवशेवकऔगुरकेपदकोंनिजनैननथाँजगनीतनिहारों ॥ जनमादिकतेममकानसुनेंपदसोंतवमंदिरमाहिंपधारों ॥ ७८ ॥ खगईशध्वजाधरतेपदधूरिमिलेजगपावनतीरथसारे ॥ फिरभूमिविखेजलपावनकैजगदोपहरोंनिजअंगपखारे ॥ शिरनीतप्रणामकरेहमरोजगपावनजेपदकंजतिहारे ॥ हमसेकपिकीगनतीसुकहांशिवऔकमलासनवंदनधारे ॥ ७९ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेप्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ यौंरघुवरकीसंगतिपाए ॥ कपिनायकसभपापमिटाएं ॥ भयोविरक्तपेखकपिराम ॥ हसकरबोलेसुखकेधाम ॥ १ ॥ मायामोहिकरीजगजोई ॥ कार्यहितविस्तारीसोई ॥ सखेवखानेतूँममजोई ॥ सत्यअहेसंशयनहिंकोई ॥२ ॥ परसभलोककहेंगेराम॥ कीनोकोसुग्रीवहिंकाम॥ अग्निसाक्षिधरभुज़ापसारे ॥ बनकेसखानकाजसवारे ॥ ३ ॥ यौंअपवादकरेंगेमेरो ॥ सखेनयामैसंशयहेरो ॥ ताँतेजाहुभलेसुखपावो ॥ बालीकोरणहेतुबुलावो ॥ ४॥ एकहिंबानताँहिंकोमारों ॥ राजतिलकतवमस्तकधारों ॥ तवकपिनायकतथावखानी॥ रामहरीतिहँमेरीरानी ॥५॥ किष्किंधासुग्रीवसुगयो ॥ सिंह

नादपुरकेढिगकयो ॥ वालीकोरणहेतुबुलायो ॥ सुनवाली उरकोपसुआयो ॥६॥ताम्रसुनयनलालअतिभए॥वेगनगरते वाहिरगए ॥ जहँसुग्रीवकीसथोखरो ॥ वेगजाइतिंहँठौरे परो ॥ ७ ॥ मुष्टसुकंठतासउरमारी ॥ पुनवालीनिजव लहिंसंभारी ॥ वालीक्रोधभयोउरभारा ॥ वहुमुष्टनसुग्रीव प्रहारा ॥ ८ ॥ पुनतिनवालीकोवहुमारा ॥ परसपरंयोंभ योआखारा ॥ एकरूपदोनोअतिलरे ॥ रामहिंभेदजानन हिंपरे ॥ ९ ॥ वाणनमारेश्रीरघुराई ॥ मतसुग्रीवनाशहो जाई ॥ तवसुग्रीवंश्रोणमुखजाए ॥ भयव्याकुलरणछो डपलाए ॥ १० ॥ वालीगयोसुसभामझारी ॥ कहिसुग्रीव सुराममुरारी ॥ वैरीभाईवालीनाम ॥ किउँमरवाएताँतेरा म ॥ ११ ॥ जोममहननचाहिहरितोही ॥ निजहाथनकर मारोमोही ॥ तवहींममउतसाहुसुदीनो ॥ सत्यसंधतुमवच नसुकीनो ॥ १२ ॥ शरणागतवत्सलतवनाम ॥ काहितक रीउपेक्षाराम ॥ सुनसुग्रीववचनरघुराई ॥ नैननीरचल्यो वहुजाई ॥ १३ ॥ रामअलिंगनताँकोकरयो ॥ मतभय करोसुमुखोंउचरयो ॥ एकरूपपेखेदोभाई ॥ मित्रघातशंका मनआई ॥ १४ ॥ यांतेवाणनमोहिचलाए ॥ अवतवचिन्ह सुकरोंवनाए ॥ जांतिभ्रममेरोमिटजाई ॥ तूँवालीकोजाहि वुलाई ॥ १५ ॥ अववैरीकोमुयोनिहारें ॥ रामसुगंदसुतोहिउ चारे ॥ तेअरिकोक्षणडारोंमार ॥ यांविधिरामदिलासाधार ॥ १६ ॥ लक्ष्मणप्रतिपुनरामवखानी ॥ गलेकरोसुग्रीव

निशानी ॥ फूलनकीगलमालापाई ॥ बालीप्रतिइनदेहिप ठाई ॥१७॥ लक्ष्मणताँगलमालाधारी ॥ जाहिजाहियहिकी नउचारी ॥ बहुआदरकरताँहिपठायो ॥ बालीकोपुनताँहिंबु लायो ॥ १८ ॥ अद्भुतशब्दजाइतिनकयो ॥ बालीसुनकर विस्मयभयो ॥ क्रोधभयोबालीबलवाना ॥ बाँधकमरतिन कीयोपयाना ॥ १९ ॥ आवतबालीकोगहितारा ॥ हाथजोर तिनकीनउचारा ॥ अवनहिजाहुनाथबलवान ॥ शंकामेउर भईमहान ॥ २० ॥ अवहीतुमरणमारभगायो ॥ पुनसुग्रीव वेगचलआयो ॥ कोन्नलवानसुभयोसहायक ॥ सुनबोले बालीकपिनायक ॥२१॥ शुभ्रूशंकादेहिमिटाई ॥ मेकरतजो बैठघरजाई ॥ आवोंवेगताँहिंरणमारी ॥ कौनसहायकताँ बलकारी ॥ २२ ॥ जौकोआहिसहायकताँको ॥ सहसुग्री वहनोगोवाँको ॥ मेबलकोसुरनरजगजाने ॥ तेरोमुखकिम भयोमलाने ॥ २३ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ शोचकरोतुमकिंउरभा मिनिमाररिपूअवहीघरआवों ॥ मोहिबुलावतसोरणमैइह जानकहोघरक्योंठहिरावों ॥ सूरकहावतमैजगमैयशचंद्रकलं कनहीअवलांवों ॥ सुंदरितूँघरभीतरजाहिसुमैतुमकोयहिसा चअलावों ॥२४॥ ॥**तारोवाच**॥ ॥**दोहा**॥ मेरेतेइकऔरतु मसुनोराजवरआप ॥ योग्यहोइसुनकैकरोतुमपतिरविपरता प ॥२५॥ अंगदमृगयाकोगयोसुनबनभाख्योमोहि ॥ सुनो कानदैसोअबैनाथवखानोतोहि ॥ २६ ॥ **चौपाई** ॥ औध पतीदशरथवरराजा ॥ तासुतरामबडोसिरताजा ॥ लक्ष्मणभा

ईसीतानारी ॥ तिनमिलआयोविपनमझारी ॥२७॥ तहँराव
णसीताहरगयो ॥ रामविरहउरव्याकुलभयो ॥ सीताशो
धनकेहितदोई ॥ ऋष्यमूकगिरिआएसोई ॥२८॥ हनुमतराम
सुग्रीवमिलाए ॥ वनेसखाढिगआगजलाए ॥ रामप्रतिज्ञा
योंमुखगाई ॥ भाईलक्ष्मणजाँहिसहाई ॥ २९ ॥ वालीको
मारोंरणमाही ॥राजसमपौंतेभुजमाही ॥योंनिश्चयकरदो
ऊआए ॥ जोमैसुन्योसुदियोसुनाए ॥ ३० ॥ ॥ **सवैया** ॥
इकऔरसुनोअवहीतिहँकोतुममारभगाइदयोरणमाही ॥
अवफेरवुलावतसोरणमैकिनधीरदईतिनकेउरमाही ॥ तु
मवैरतजोतिहँसोंउरमैंशुभग्रीवकुआनभलेघरमाही ॥ युव
राजदिजेतिहँभालविखेअरुरामकीसामगहोजगमाही ॥
॥३१॥ वलिअंगदमोहिसुराजरखोसभवानरकोसुकरोप्रति
पारे॥इहभांतिवखानपरीपदमैंद्रगसांजनतांहिसुजावतवारे॥
अतिरोइउठीउरभीतमहाँपतिकेपदतांकरभीतरधारे ॥ पुनवा
लिअलिंगसनेहकीयोमुखभीतरताँइहवाक्यउचारे॥३२॥ना
रिसुभावतितूँडरपीडरनाहिअहेकछुरंचहमारे॥ जौलक्षमन्न
सुरामअएवहुरामअहेसुमुकंदमुरारे॥ रामकिसाथसनेहवने
ममतूँउरमाहिनशंकविचारें ॥ रामनरायणहैजगमैतिनआप
लयोभवमैअवतारे ॥३३॥ धरभारनिवारनकाजभयेद्विजमं
डलपूरबमोहिसुनाए॥ नहिआपनऔपरपक्षतिनेवहुहैपरमा
तमश्रीरघुराए॥शिरवंदपदांवुजपूजनमैसुकरोंग्रहभीतरताँहिं
लिआए॥ पदसेवककेवहुसेवकहैंभगतीहरिसंगसुदेतमिलाए

॥३४॥ जबआपसुग्रीवअयोधनआवहिताँहिंतवृक्षणभीतर मारों॥युवराजकह्योतवजोमुखतेतिहँकोपुनउत्तरएकुउचारों॥ वहुमोहिवुलावतहैरणमैअवमैंकिंहँभांतिसुराजप्रचारों॥ ज गमैसभलोकसुशूरगनेयशचंद्रहिंनाहिंकलंकसुधारों॥३५॥ उरभीतरमानसुभीतमहांइहभांतिवखानतनाहिंसुवाली॥ ग जगामिनिनाउरशोचकरोघरमाहिरहोसुखसोंमिलआली॥ इहभांतिसमोधकरीपतिनीवहुशोचकरेद्रिगनीरविशाली॥ रविकेसुतकेवधकाजगयोचलआपजहांरणभूमिकराली॥ ॥३६॥ ॥**चौपाई**॥ ॥वालीआवतदेख्योजवही॥ भ योसुकंठक्रोधउरतवही॥ गलमैफूलनमालसुहाई॥ प तंगसमानपर्योतहंजाई॥३७॥ वालीउरद्वैमुष्टिप्रहारा॥ पुनसुग्रीवहिंवालीमारा॥ तिहंसुग्रीवबहुरतिहंवाली॥ भिरेमतंगमनोवलशाली॥३८॥ ॥**सवैया**॥ ॥रामनि हारप्रहारघनेशुभग्रीवकरेअरिकेउरमाहीं॥ अंगदतातकरे उततेइहभांतिभिरेरणमंडलमाहीं॥ रामनिहारसुवानधर्यो करशक्रशरासनकेगुणमाहीं॥ कानलुतानकमानरुपेहरि जाइखडेतरुकीपरछाहीं॥३९॥**शंकरछंद**॥हरिहोइतरुकी ओटमैपुनहेरवालीवीर॥ हृदयतांकिताककैरघुनाथछोड्यो तीर॥ अतिभेदछातीतांहिंकीशरकरेश्रोणितपान॥भूकंपशब्द महानकरकपिगिरवैवलवान॥४०॥ द्वैघटीलौतनमूर्छता पुनपाइचेतनधीर॥ आगेखडेद्रिगसोंपिखेद्रिगकंजसोरघुवी र॥ धनुटेकवामेहाथसोंशरदक्षहस्तफिराइ॥तनचीरपाटविरा

जहींशिरजटामुकुटसुहाइ ॥ ४१ ॥ सुविशालवक्षकपाटछाती शोभहैवनमाल ॥ नवदूरवादलश्यामसुंदरभुजापरमविशाल ॥ सुग्रीवलक्ष्मणसेवहैंदुहुंओरतेबलधार ॥ वालीविलोकसुरामकोपुनकीनएहुउचार ॥ ४२ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ कोकौनमैअपराधतेरोरामजांकरमारयो ॥ तवकीननिंदतकरमयहिनहिराजधर्मविचारयो ॥ तरुखंडओटदुराइतनुकोवीरनाशरघाइहैं ॥ चोरजिउंदुरमारमोकोंकौनतूंयसपाइहैं ॥४३॥ संतानक्षत्रीकोहुतोमनुवंशजन्मकहावतो ॥ युद्धमोहिसमक्षकीनेरामतौफलपावतो ॥ सुग्रीवकार्यकोकयोंपुननाहिकीनोमोहिको ॥ दशकंधनारिसुतेहरीक्योंमारयोहरिमोहिको ॥४४॥ इहहेतुतेंसुग्रीवकीवनशरणलीनीआइकै॥ ममलोकवनमैजेफिरेंतिनकह्योमोहिसुनाइकै ॥ राममेबललोकमैविख्यातछान्योनाकही ॥ इहुदाहुछातीकोदहेतुमरामजान्योसोनही ॥ ४५ ॥ कुलसंगरावणबांधकैसहसीयलंकउठाइकै ॥ जोचाहितोघटिदोनमैदिखलावतोतेल्याइकै ॥ धरमिष्ठभावेंआपकोसभलोकमाहिपुकारकै ॥ कोधरमकीनोरामतैनेब्याधजिंउकपिमारकै ॥ ४६ ॥ ॥ सवैया ॥ वानरमासअभक्षमहासरहैंइहतेनहिकाजतुमारे॥ बानपरीम्रगमारनकीदुरराजनकेपथदूरविसारे ॥ शीशजटातनचीरधरेसुतपोधनकेवहुभेपसवारे ॥ पूतपुरंदरयौंजलपेतबरामवलीमुखवाक्यउचारे ॥ ४७ ॥ ॥ नराजछंद ॥ सुधर्मगोपतासदासुलोकमाहिमैचरों ॥ करेकुवंडसायकंसंभारआपने

धरों ॥ अधर्मकारिणंहनोसुधर्मपालहोंसदा ॥ विलंबनासहों हरेअधर्मपेखहोंयदा ॥ ४८ ॥ ॥ **सवैया** ॥ दुहिताभगिनी अनुजापतिनीसुतनारिसभैयहिआहिंसमाने ॥ इनमाहिरमे मतिमूढसुजोवहुपातकवंतसुवेदवखाने ॥वहुहैवधलायकरा जनकोयहधर्मसभैक्रपिमंडलजाने ॥ खलतूंलघुभ्रातकिना रिरमेवलकैनहिंधर्मसुरंचपछाने ॥ ४९ ॥ इहतेहमधर्मवि चारभलेवनगोचरतेउरमैशरमारे ॥ खलतूंकपिजातिनजान तहैंमहदातमडोलतलोकमझारे ॥ सभलोकपुनीतकरेंफिर कैनिजदासनकेदुखदूरनिवारे ॥ अबतूँपुत्तवक्रितबोलतहैंइ मभापगहीहरिमौनमुरारे ॥ ५० ॥ सोसुनकैउरभीतभयोक पिरामनरायणताहिपछाने ॥ पूतपुरंदरशीशनिवाइसुप्रेमभ रेमुखवाक्यवखाने ॥ रामनरायणईशमहाअवतूंभगवंतसु मैउरजाने ॥ सोक्षममेअपराधभयोकछुनिष्ठुरवाक्यजुमोहि अलाने ॥ ५१ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ तेशररामसुमेउरलागे ॥ नयननिहारोंतुहितेआगे ॥ त्यागोंप्राणभागअतिमेरे ॥ दु र्लभदर्शनपेखोंतेरे ॥ ५२ ॥ जांहिनामव्याकुलमनकहे ॥ मरणसमेनरपरपदलहे ॥ सोतुमखरेआजुममआगे॥भाल भागमेरेअतिजागे ॥५३॥ तुमैपुरातनपुरुपपछानों॥सीताको पद्माउरजानों॥रावणकेवधहितअवतार॥ तैंलीनोविनतीमु खचार॥५४॥आयसदीजेमोहिनरायण ॥गयोचहोंतुमरेअव आयन॥मोसमवलअंगदयहिवाल॥तांपरकरुणाकरोविशा ला ॥ ५५ ॥ तीरनिकारोउरतेराम ॥ हाथलगावोकरुणाधा

म ॥ रामतथातिहँवाननिकार ॥ हाथलगायोकरुणाधार ॥ ५६ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ तववानरदेहतजीकपिनायकहोइ सुरेशगयोक्षणमाही॥ शररामहत्योपुनशीतलपानछुहाइदये तिहँकेतनमाही ॥ तजदेहशितावसुकीसतैवपुनवेगगयोह रिकेपदमाही ॥ परहंसलहेंपदजोदुखकैवडुअंगदतातलत्यो पलमाही. ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहे श्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ **श्रीम हादेवउवाच** ॥ ॥**दोहा**॥ वालीमार्योरणविखेरामपरा तमआप ॥ किष्किंधाप्रतिभगेसभकपिउरवढिसंताप॥ १ ॥ **सवैया** ॥ ॥ अंगदतातमुयोरणमेंइमआइकहीकपिमंदिर तारा ॥ अंगदकेपरिपालनकेहितआजुकहोसभवोलसिदा रा ॥ पालहिंगेपुरकोसगलेहमचारसुद्वारनवाँधकिवारा ॥ वानरराजकरेसगलोसुनभामिनिअंगदवालतुमारा ॥२॥ प तिकीम्रतुताँहिसुनीजवहीअतिशोकभयोतिहँचीतमझारे ॥ अतिरोवतिभालसुपाणिहनेपुनशोकभरीउरभीतरमारे॥ धन मालसुअंगदराजपुरीनहिरंचकहैकछुकाजहमारे ॥ अवही मरणाममलोकभयोपतिसंगचलोंजहँजांहिपियारे॥ ३॥इह भाँतिउचारसुरोवतिहैकचखोलघनीतहँधूरलगाई ॥ जिहँठो रपर्योरणनाथकलेवरशोकभरीसुतहाँचलआई॥तनशोणित धूलिसुपूररहेपतिपेखधरासुधदेहभुलाई ॥अतिरोवतिनाथह नाथकहेमनव्याकुलताँपदमैलपटाई ॥४॥ इहभाँतिविलाप करेपतिपादनरामखरेतिनपासनिहारे ॥ तुमजाँशरसोंपति

मोहिहनेशरसोइहनोमुहिराममुरारे॥पतिचाहितमोहिचलोंप
तिलोकसुआपगयेजहँनाथहमारे ॥ सुनमोविननारघुना
थतिनेसुखहोवतहैसुरलोकमझारे ॥ ५ ॥ ॥चौपाई ॥ ॥
नारिवियोगदुःखअतिभारा ॥ रामसगलतवआहिनिहारा॥
वालीप्रतिअविमोहिपठावो ॥ पतिनीदानरामफलपावो ॥
॥६॥ ॥शंकरछंद॥ ॥त्वंभोगराजसुग्रीवमिलहरिरुमाप्या
रीनारि ॥ हैरामदीनोराजतोकोंनाहमेरोमारि ॥ इहभांतिता
राविलपतीपिखरामपरमकृपालु ॥ संवोधकीनोताँहिंकोकहि
तत्वज्ञानविशाल॥७॥ किंशोकभीरूतूँकरेंप्रतिशोकलायकना
हिं॥कहुसत्यमोकोभामिनीपतिजीववातनुआहि॥त्वकमांस
हाडसुशोणमयतनपंचभूतकजोइ॥करकालकरमसुजोभयो
वहुपर्योंआगेसोइ ॥८॥जौजीवमानेंतूंपतीवहुरोगविनजग
आहि ॥ नहिमरेजन्मेवृद्धक्षयथिरचलेवैठेनाहिं॥ नहिनारिपु
रुपनपुंसकोवहुजीवसभगतआहि॥अद्वितीयैकअकाशसम
नहिलेपहैकछुताँहि ॥९॥ ॥दोहा॥ ॥ नित्यज्ञानमयशुद्धहै
जीवसनातनरूप ॥ ताराशोचनकीजियेतजोसुभ्रमतमकूप
॥ १० ॥ ॥तारोवाच॥ चौपाई ॥ ॥ देहकाष्टवतजौज
डराम ॥ जीवसनातनचेतनधाम ॥ सूखदूखतवकाँकोहो
ई ॥ रामविचारकहोममसोई ॥११॥ ॥ श्रीरामउवाच ॥
ताराप्रश्नकर्योतुमअैसो ॥ कोविदकोइककरेसुजैसो ॥ अ
हमादिककोदृढसंवंध ॥ तनुइंद्रयसोंभयोभिसंध ॥१२॥ जौं
लौंहैतौलौंसंसारा ॥ हैआविद्यकविनाविचारा ॥ मिथ्या

रोपितवेदव्रताए ॥ तदपिनिवृत्तिआपनहिपाए ॥ १३ ॥ विषयध्यानजिँउंजाग्रतिकरे ॥ स्वप्नेमाहिअनरथनपरे ॥ अजाअविद्याअरुताँकार्य ॥ अहमादिकसभअहैंनआर्य ॥ १४ ॥ यहिसंसारसुआहिअसारी ॥ रागद्वेषकरव्याकुल भारी ॥ मनहीयहसंसारभनीजे ॥ मनहीबंधनरूपकहीजे ॥ १५ ॥ आत्मामनकेहोइसमाने ॥ बंधनआपनमाहिसुमा ने ॥ जिमसुस्फटिकउज्जलोअहे ॥ लालकुसमकीसंगतिगहे ॥ १६ ॥ लालवर्णतिहँभीतरहोई ॥ वस्तुविचारेवर्णनकोई ॥ वुधींद्रियकीसंगतिधारी ॥ आत्माभयोसुतिमसंसारी ॥ १७ ॥ आत्माआत्मलिंगमनयोग ॥ पाइलिंगतनुजनेसुभोग ॥ भोग भोगगुणवाँध्योजोई ॥ परवशफिरैसुजगभैसोई ॥ १८ ॥ आदि सुमनरागादिककरे ॥ पाछेतेवहुकर्मनधरे ॥ सात्विकराजस तामसभेद ॥ पाइयोनिवहुलहेसुखेद ॥ १९ ॥ याँविधिकरमनके आधीना ॥ भ्रमेजीवजगजिमजलमीना ॥ प्रलयअवधियाँ विधिदुखपावे ॥ वहुरोजाइप्रकृतीसमावे ॥ २० ॥ प्रथमवास नावासितजोई ॥ मनअरुकर्ममिलेपुनदोई ॥ अजाअविद्याके वशपरयो ॥ सृष्टिकालवहुरोनिस्सरयो ॥ २१ ॥ याँविधिजी वभ्रमेवहुवारा ॥ घटीयंत्रजिमदुःखअपारा ॥ उदयहोहिंजव पुण्यकमाए ॥ संतनकीसंगतितवपाए ॥ २२ ॥ मेरेभक्त शांतउरजेई ॥ मोमेंमतिउपजावेंतेई ॥ पुनममकथाश्रवण रुचिहोई ॥ दुर्लभयाँहिजगतमैजोई ॥ २३ ॥ वहुरोतत्व रूपविज्ञान ॥ विनाखेदहोवैतिहँभान ॥ वाक्यअर्थकोज्ञानसु

जोई॥गुरुप्रसादकरउपजेसोई॥ २४॥ तनुइंद्रयमनप्राणअहं
कृत ॥ इनतेंभिंनस्वरूपअनाकृत ॥ सत्यानंदसुएकअनूप॥
ताँकोजानसुआतमरूप ॥ २५॥ होवैंमुक्तवारनहिलागे ॥
बंधनसर्वसुजगकेत्यागे ॥ मोहिवखान्योभामिनिजोई॥ स
त्यअहैसंशयनहिकोई ॥ २६ ॥ याँविधिमोहिवखान्योसार
करेनिरंतरयाँहिविचार ॥ ताँकोदुःखजगतकेजेई ॥ नाहिंक
दाचितछुहेंसुतेई ॥ २७ ॥ तारातूँपुनएहुनिरंतर ॥ मोहिक
ल्योहेरोउरअंतर ॥ नाहिंछुहेंतोकोंदुखजाला॥करमबंधतेभि
टेंकराला ॥२८॥ सुभ्रूतेपूरवभवमाही॥ उत्तमभक्तिकरीमो
माही ॥ ताँतेमेरोदर्शनपायो ॥ अबतेंबंधनसगलमिटायो
॥ २९ ॥ मेरोरूपध्याइमनमाही ॥मोहिकल्योहेरोउरमाँही ॥
पतितप्रवाहकार्यहैजोई ॥ करोंनिरंतरलेपनहोई ॥ ३० ॥
इहभाँतश्रीरामवखानी ॥ सुनतारासीतापतिवानी ॥ तनुअ
भिमानशोकनिजत्यागी॥श्रीरघुवरकेपाइनलागी॥३१॥आ
त्मसुअनुभवलहिहर्पानी ॥ जीवनमुक्तभईदुखहानी ॥ राम
परातमनरअवतार॥ ताँकीसंगतिपाइउदार ॥ ३२ ॥ बंध
अनादिदूरविनिवारे ॥ मुक्तभईकिल्विपसभटारे ॥ मुक्ति
कल्पद्रुमरामउदार ॥ उमाफिरेंवेविपनमझार ॥३३ ॥ स
वैया ॥ सुनकैशुभग्रीवसुएवतियांमुखरामकहीउरअंतरधा
री॥ सुअनंदभयोउरभीतरसोनिखिलोजुअज्ञानसुदूरनिवा
री॥पुनवारिजनैनसुरामभलेशुभग्रीववुलाइसुएहुउचारी॥
सुनभ्रातवडेशवकीकृतजोसुततांहिंवुलाइकराइसुसारी ॥

॥३४॥ दोहा ॥ ॥मेरीआइसुमानैककरोसगलकृतसोइ ॥ ऊर्द्धदेहकेहेतुकरवेदवखान्योजोइ ॥ ३५ ॥ सवैया ॥ मानसुग्रीवबुलाइवलीकपिवालिकिदेहसुलीनउठाई ॥ फूलनकेसुविमानविखेशुभनीरनवाइउठाइसुपाई॥ राजनके उपचारवडेसभताँहिसमैतिनलीनमँगाई ॥ ब्राह्मणमंत्रिवजीरघनेपुनदुंदुभिभेरिअनेकवजाई ॥ ३६ ॥ वानरकेसरदारवडेपुनअंगदऔपुरवासिघनेरे ॥ अंगदमातरुमाविललातचुचातसुनैनपतीकरटेरे ॥ चंदनकाष्टवनाइचितापुनअंगददाहुकर्योदुकनेरे ॥ नीरसुँनाइतिलोदकदानदयोपुनअंगदलेपितमेरे ॥ ३७ ॥ शंवरनाइपटंवरलैपुनरामसमीपसभैचलआए॥रामपदांवुजवंदनकैशुभग्रीवतवैइहवैनअलाए॥वानरराजकरोमहराजविभूतिवडीसुपरेहमपाए ॥ मैतवदाससुपादभजोंलक्ष्मंनजिमेपदसेवकमाए॥ ३८ ॥ योंशुभग्रीवकह्योजवहीतवरामहसेसुखएहुवखानी ॥ वेगचलोपुरभीतरतूंमभआइसुलैतवप्रीतसुजानी ॥ वानरराजकरोसगलोअभिपेककरोअपनीरजधानी ॥ मीतनमैपुरमाहिंवरोंदशचारसमाउरमैइहुठानी ॥ ३९ ॥ चालहिंगेपुरभीतरतेसुगरीवसुनोयहभ्रातहमारे॥अंगदकोयुवराजदिजेकरआदरताँकरियोप्रतिपारे॥ पावसकेदिनसानुजमैगिरिशीशवसोंपुरतेसुकिनारे ॥ किंचिततूँपुरमैवसकेसियशोधनकोपठियोहलकारे॥ ४०॥ रामपदांवुजवंदनकैशुभग्रीवचलेउरआइसुमानी॥ देवकहोनिजदासहिंजोकरहोंप्रभुसोगमनोंरजधानी ॥ रामकिआइ

सुमानगएकपिनायकऔलक्ष्मंनभवानी ॥ जाइपुरीकृतसो इकरीरघुनायकजोमुखमाहिवखानी ॥ ४१ ॥ कोसनराज सुपाइकपीश्वररामकेभ्रातकुपूजनकीनो॥ रामसुभ्राततवैपुर तेचलरामकेपंथविपेमनदीनो ॥ पादप्रणामकियोहरिकोपुन आइखडोढिगरामअधीनो ॥रामसभ्रातचढेशिखरेगिरिपेख तिसेवडभूरिनवीनो ॥ ४२ ॥ शुद्धसफाटककोतहँकंदरदीप तशोभतभावतराजे ॥ बूँदनआतपवातनिवारकमूलफलादि कैंहेंढिगछाजे॥ राघववासकेहेतुकंर्योरुचभ्रातवलीलघुसंग विराजे ॥ वेजगपालकभ्रातउभेगिरिजानभ्रजेंनरजेनिरला जे ॥४३॥ ॥ **शंकरछंद** ॥ अतिदिव्यमूलसुपुष्पफलजहँल टेअवनीडाल॥ मुक्तासमानसुऊजलेजलभरेतालविशाल॥ वहुवरणमृगसुविहंगसोहैंशोभगिरिहँअपार ॥ रघुकुलोत्तम रामजीतहँवासकीनमुरारि ॥४४॥ ॥इतिश्रीमदध्यात्मरामा यणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

॥**श्रीमहादेवउवाच**॥ **सवैया**॥पावसकेदिनरामतहाँमणि कंदरमंदरवासकिये॥मूलफलादिकभोजनकैमनतोषभरेशुभ नीरपीये॥ वातचलेजलमेघफिरेमुखगाजतऔसहविज्जुली ये॥कांचनकक्षमनोगजडोलतरामनिहारअचंभहीये॥१॥धा वतआवतएणविहंगमरामनिहारतहीहरपावें॥वैवनवासिनि वासतह्वोंढिगखोलमनोमुनिध्यानलगावें॥चित्रलिखेजनुएण विहंगमनाहिंकदाचितअंगडुलावें॥जानपरात्मरामफिरेंगिरि सिद्धमृगादिह्वैसेवकमावें ॥ २ ॥ ध्यानसमाधिविरामभएइक

ठौरइकंतहुतेरघुराई॥ प्यारभरेमनहोइअधीनसुमित्रजआप कह्योतहँजाई ॥ पूर्वसुवाक्यतुमारसुनेगयोचीतसंदेहसुमो हिविलाई॥ किंहँभाँतभजेंसुक्रियामगतेइहजाननकोहमरेउर आई॥३॥ **चौपाई**॥ योगीकिंहँविधितोहिअराधें॥क्रियायो गउरसाधनसाधें ॥ क्रियासुनामउपासन जोई ॥ योगीकहेंमु क्तिपथसोई ॥ ४ ॥ नारदव्यासयहीबहुभाषें ॥ कमलासन मुखयहीप्रकाशें॥वरणाश्रमजगभीतरजेई॥ मुक्तिविधायक तिनकोएई ॥ ५॥ शूद्रस्त्रीलौहैंजगजेते ॥ मुक्तिलहैंइहपंथ सुतेते ॥सुखसाधनयहअहेउदार॥ ऋपिगणकरेंसुरामउचा र ॥ ६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ नाथतुमारोभक्तहोंहैसभकोउपकार ॥ तवसेवनसुखसाधनोतुमहीकरोउचार ॥ ७॥ ॥ **श्रीरा मउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ मेरीपूजाबहुविस्तारा ॥ अंत नहींतिहँकोकछुपारा ॥ तद्यपिमैंसंक्षेपवतावों ॥ क्रमतेसग लसंदेहमिटावों॥८॥प्रथमहिंकरेसुएहुप्रकारा॥ अपनेसूतरके अनुसारा॥पाइजनेऊहोइद्विजाती॥ गुरुपदभजेसदादिनरा ती ॥९॥ गुरुतेलेइमंत्रविधिजैसे ॥ मोकोभजेकहेंगुरुजैसे॥ ह्रदयमाहिंवापावकमाही॥पूजेमोहिप्रेमउरमाही॥१०॥प्रति मामैवारविकेमाही॥ वाशिलशालग्रामकेमाही॥होइनिराल सपूजनकरे॥मेरोनामसदामुखररे॥११॥ प्रथमैप्रातहिंन्हावै नीर॥ अपनोकरेसुशुद्धशरीर॥ मंत्रपढैन्तकासुलगावे ॥जो विधिवेदसुप्रथमबतावै ॥ १२ संध्यादिकजेकरमवखाने ॥ ते सभकरेवेदजिमभाने ॥ पूर्वकरेसंकल्पविधान॥ कर्मसिद्धि

हितनरभतिमान ॥ १३ ॥ मेवपुजानकरेगुरुपूजा ॥ तां
मेभावनआनेदूजा ॥ शिलामाहिसुस्नानकरावे ॥ प्रतिमाप
रह्नमालफिरावे ॥ १४ ॥ वहुविधिफूलसुगंधचढावे ॥ यांवि
धिपूजसिद्धतापावे ॥ कपटनहीमनभीतरधारे ॥ पूजनकरेने
मप्रतिपारे ॥ १५ ॥ प्रतिमामैभूपनपहिरावे ॥ मेरेउरआनंद
उपावे ॥ घृतआहुतपावकअनुसरे ॥ स्थंडिलमैरविपूजन
करे ॥ १६ ॥ श्रद्धाप्रीतिदेइममवारि ॥ सोभोगोंमैलक्ष्म
णप्यारि ॥ परजोभक्षभोज्यकरल्यावे ॥ अक्षतगंधसुफूचढा
वे ॥ १७ ॥ तांपरमैनहिंकिंउंहर्पावों ॥ प्रेमसहितउरभोग
लगावों ॥ पूजाद्रव्यसर्वधरआगे ॥ तौमेरेपूजनकोलागे ॥
॥ १८ ॥ चैलाजिनकुशतलेविछाई ॥ वैठेमेसनमुखमनलाई ॥
मंत्रयुक्तपुनकरेसुन्यास ॥ वाहिरभीतरशुद्धप्रकाश ॥ १९ ॥
केशवआदिन्यासपुनजेई ॥ मातृककरपुनकरेसुतेई ॥ तत्व
न्यासवहुरोवहुकरे॥ उरकेसभकिलविपपरहरे ॥ २० ॥ ममभूर
तिपंजरकोन्यास ॥ मंत्रन्यासपुनकरेप्रकाश ॥ प्रतिमादिकमै
तैसेकरे ॥ आलसनाउरअंतरधरे ॥ २१ ॥ सनमुखवामेकलश
टिकाइ ॥ पुष्पादिकदक्षणसुवनाइ ॥ अर्घ्यदानपुनपाद्यप्रदान ॥
मधुपरकादितथाअचमान ॥ २२ ॥ पात्रचारशुभधरेवनाई
॥ मरेविपेभलेमनुलाई ॥ मोरीकलाजीवजिहँनामा ॥ रविस
मउज्जलचेतनधामा ॥ २३ ॥ देहसकलमैव्यापकजोई ॥ हृदय
कमलमैध्यावेसोई ॥ प्रतिमादिकमैकरेअवाहन ॥ मेरीकला
दूखवनदाहन ॥ २४ ॥ पाद्यअर्घ्यअचमनसुस्नाना ॥ पटप

हिराएभूषणनाना ॥ यावतशक्तकरेउपचार ॥ बाहिरभोगसु
कपटविसार ॥ २५॥ जौविभूतिघरमाहिंनिहारे ॥ तौपूजाम
मयाँहिंप्रकारे ॥ कसतूरीकुंकुमबहुभाँती ॥ अगुरचढावेचं
दनजाती ॥ २६ ॥ फूलसुगंधसुफलहुँअपारी ॥ मोहिचढा
वेमंत्रउचारी ॥ दशावरणपूजापुनकरे ॥ आगमजिहिंविधि
ताँहिंउचरे ॥ २७ ॥ करनीराजनदीपजगावे ॥ धूपसुबहु
नैवेद्यचढावे ॥ श्रद्धाकरदेवेमुहिजोई ॥ मैभोगोंश्रद्धायुत
सोई ॥ २८ ॥ श्रद्धाविनईश्वरनहिंखाए ॥ भावेंभोगसुला
खलगाए ॥ होमकरेपुनपावकमाँहीं ॥ मंत्रविधानपढेमुख
माँहीं ॥ २९ ॥ कह्योअगस्तसुमारगजैसे ॥ कुंडबनाइधरा
मैतैसे ॥ मूलमंत्रकरहोमसुकरे ॥ वापुनपुरुषसूक्तसुउचरे
॥ ३० ॥ करेउपासनवाजगपावक ॥ होमेचरुघृततंडुलया
वक ॥ जांबूनदसमदिव्यसुरूप ॥ दिव्यसुभूषणधरअनूप
॥ ३१ ॥ होमकालअसमोकोध्यावे ॥ पावकमाहिअहूती
पावे ॥ पार्षदनबलीआँदेआप्त ॥ होमशेषपुनकरेसमाप्त
॥ ३२ ॥ मेरोध्यानबहुरजपकरे ॥ धारेमोनन्वथाउचरे॥
मुखसुवासहितदेतांबूला ॥ सहितप्रीतिप्रीतिहुँसभमूला ॥
॥ ३३ ॥ गीतनृत्यमेरेहितकरे ॥ पाठकरेसुस्तुतिविसतरे ॥
दंडसमानसुवंदनधारे ॥ ध्यावेमोहिसुचीतमझारे ॥ ३४ ॥
भावनरूपप्रसादअपारे ॥ मोहिदयोलैशिरपरधारे ॥ करमै
धारसुदोपदमेरे॥शीशनिवाइसुयौंमुखटेरे ॥३५॥ घोरभवा
ब्धिघनोदुखभारी ॥ तौंतिराखोमोहिमुरारी ॥ करदंडवतविस

जनकरे॥ प्रत्यकज्योतिसिमरउरधेरे॥३६॥याँविधिकह्योउपासनजोई॥ करेसुविधिवतयाँकोकोई॥ मोरअनुग्रहइहपरलोक॥पाइसिद्धिसोत्यागेशोक ॥ ३७॥ दिनदिनमैजोमेरोभक्त॥ पूजेयौंमेप्रेमप्रसक्त ॥ विनसंदेहपाइवहुमोको ॥ लक्ष्मणसाचवखानोतोको॥३८॥ **शंकरछंद** ॥शुभपरमगोपसुपावनोपथहैसनातनभ्रात॥ संक्षेपसहितबनाइकैभाष्योतुमेसाक्षात॥भलपठेयाँहिनिरंतरंपुनजोसुनेमनलाइ॥सुसमस्तपूजनजोकरैफलताँसमानसुपाइ ॥ ३९॥ **चौपाई** ॥ इहविधिरामपरातमघालु ॥ क्रियायोगशुभकह्योविशाल॥ शेशअंशपूछ्योनिजभ्रात ॥ रामभक्तलक्ष्मणविख्यात ॥ ४० ॥ पुनप्राकृतवतराममुरारि॥दुखीहोइमुखकीनउचारि॥ हासीतेइहभाँतिपुकारें ॥ प्राणजाँहितूँनाहिंनिहारें ॥ ४१ ॥ याँविधिवहुतविलापसुकीन ॥ उमाभएपुननिद्रालीन ॥ ताँहिंसमेकिष्किंधामाँहीं ॥ हनूमानबोलेमुखमाँहीं ॥४२॥ कपिनायकसुग्रीवइकांत ॥ हनूमानतिहँकहेवृतांत ॥ राजनसुनअबतोहिबताऊँ ॥ तेरोहीहिततोहिसुनाऊँ ॥ ४३॥ ॥**सवैया**॥ रामकरेउपकारसुपूरवतेंकपिमूढसुहेंविसराए ॥ वीरप्रसिद्धसुलोकतिहूँवहुअंगदतातसुतेहितघाए ॥ अंगदमातभजेपदतेशुभराजदयोशिरछत्रफिराए॥ सोवहुरामवसेंगिरिमैसहभ्रातबलीतुमदीनभुलाए ॥ ४५ ॥ तेपथनीतनिहारतहैंवहुकाजवडोतिहँतेअकुलाए॥त्वंकपिजातिसुनारिरमेंमदनातुरह्वैकछुसारनपाए ॥ शोधनसीयकुतोहिकह्योअवलौंभटना

हिंसुबोलपठाए ॥ जानतहैंकपिबालिजिवैंअबतूँतिनतेनि
जप्राणखुहाए ॥ ४५ ॥ सुनकैहनुमानकीबातनकोकपि
नाथडर्योमुखुँएहुअलाई॥ हनुमानकह्योतवसाचसहीडरडा
रसुमेहितबातसुनाई ॥ ममआइसवेगदशोदिशिकोसुसहस्र
दशोकपिदेहिपठाई॥कपिसातहुँदीपनमाँहिंजितेसभल्याबहिं
वेगसुजाइबुलाई॥४६॥ एकहिंपक्षविषेसगलेकपिपुंगवआ
वहिंढीलनलावें ॥ आइसमेटसुजेकपिमूढसुपक्षवधीकक
छूदिनलावें ॥ साचकहोंहनुमानसुनोतिनप्राणहनोंयहदंडसु
पावें॥ आइसदैघरमाँहिंगयोकपिमारुतऔरनपाससुनावें
॥४७॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ आइसलैकपिराजकीमंत्रिवरीहनु
मान ॥ वानररीछबुलाइकैभेजेदैसनमान ॥४८ ॥ **सवैया**
वायुसमानसुवेगवडेजिनकेगुननाहिंसुजातगिनाए ॥ भूध
रकेसमडीलबडेहनुमानवहीकपिदूतबुलाए ॥पत्रदएलिखताँ
करमैंकपिराजहुँतवहुद्रव्यदिवाए ॥ आदरमानकीयोवहुतो
हनुमानअमातसुदूतपठाए ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामा
यणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेचतुरथोऽध्यायः ॥ ४ ॥
॥ **श्रीमाहदेवउवाच** ॥ **सवैया** ॥ मणिशृंगसुभूधरशीश
विषेरघुनाथविराजतरातिजुआई॥ विरहेसुविदेहसुताउरमैं
रघुनाथतबैइहबातअलाई॥ लक्ष्मंनसुसीयहरीकिनराक्षस
जीवतहेकिमरीविषखाई॥ दिनआजवितीतअनेकभएसुनमैं
अवलोकछुसारनपाई ॥ १ ॥ ममप्राणप्रियाजगजीवतिहैइ
हभाँतिकहेजनकोइसुनाई ॥ सुजितेतितजानकिजीवतिकैं

कछुयाँजगमैंजवसारसुपाई॥सुनभ्रातहरोंवलकैतईतेजिम सिंधुसुधासुहरीसुरराई ॥ कविसिंहगुलाबभजेपदकोहरिचाहतकीरतिगंगवधाई ॥ २ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ लक्ष्मणसुनोप्रतिज्ञाभाई ॥ जनकातमजाजाँहिंचुराई ॥ बलवाइनसुतऔकुलसंगा ॥ भस्मकरोंरणताँहिंसुअंगा ॥ ३ ॥ चंद्रमुखीहासीतेप्यारी ॥ वसतीराक्षसभवनमझारी ॥ दुखआरतमुहिनाहिंनिहारें ॥ किउँकरप्राणसुअपनेधारें ॥ ४ ॥ चंद्रमुखीविनचंद्रतपाए ॥ भानसमानउभ्रदवदाए ॥ चंद्रजानकीकोछुहिआवो ॥ शीतलकिरणसुमोहिलगावो ॥५॥ दयानहींसुग्रीवसुराई ॥ योमैंदुखीनपेखेआई ॥राजअकंटकजगमैंपायो ॥ नारिनमैंवसमोहिभुलायो॥ ६ ॥ कपिकृतघ्नमुहिपयौंसुभान ॥ कामुकसदाकरेमदपान ॥ शरदऋतूआईपिखरूढा ॥ सीयशोधहितअयोनमूढा ॥ ७ ॥ पूरवमैउपकारसुकए॥ कपिकृतघ्नतेसभविसरए॥ अवसुग्रीवहिंडारोंमारे॥ वाँधवसहितसहितपुरसारे ॥ ८ ॥ वालीमार्योमैंरणजैसे ॥ अवसुग्रीवहनोपुनतैसे ॥ [illegible] मा ॥ तवबोलेलक्ष्मणवलधामा ॥ ९ ॥ **सवैया** ॥ अब आइसमोहिदिजेरघुवीरहनोढुपटातमताँकपिराई ॥ इहभाँतिउचारसुतूँणकसेतलवारलईधनुलीनचढाई ॥ लक्ष्मनवलेइहभाँतिपिखेतवश्रीरघुवीरहिंवातअलाई ॥ ममहैशुभग्रीवसुप्रीयसखासुतऐसिकरोतिनकीढिगजाई ॥ १० ॥ बालिजिवेंनहिंताँहिहनोशुभग्रीवकुतूँवहुभाँतिडराँईं ॥ भूलगए

उपकारतुमेइहभाँतिसुनिष्ठुरवाक्यअलाईं ॥ जोशुभग्री वकहेमुखतेगहितेबतियाँबलिवेगसुआँईं ॥ जोकरतव्यसुहो इकछूपुनसोमिलकेममसंगकमाँईं ॥ ११ ॥ **चौपाई** ॥ भीमपराक्रमलक्ष्मणबाला ॥ भापतथामुखगयोकराला ॥ किष्किधाप्रतिवेगसुधाए॥क्रोधभरेजनुदेतजलाए ॥ १२ ॥ **दोहा** ॥ किष्किधालक्ष्मणगएपुनसोवेरघुबीर ॥ विरहे व्याकुलसीयकेभएसुविकलशरीर ॥ १३ ॥ **चौपाई** ॥ वेसर्वज्ञसदाविज्ञान ॥ पद्मानायकहैंभगवान ॥ परसीता हितशोचेंऐसे ॥ प्राकृतमानवशोचेंजैसे॥बुद्ध्यादिककेसा क्षीसारे ॥ मायाकारयसदानिआरे॥ १४ ॥रागादिकतेरहित उदारा ॥ मायाकेनंहिंतिनेविकारा ॥ ब्रह्माकह्योवचनजग जोई ॥ कयोंचहेंहरिसत्यसुसोई ॥ १५ ॥ दशरथघरलीनो अवतारा ॥ ताँतपकोफलदयोउदारा ॥ मानुपवेपआपहरि धारा ॥ चाहेंलोगनकीनउधारा॥ १६ ॥ मेमायाबाँधेजनजे ई ॥ किंहेंविधिमुक्तहोंहिंपुनतेई ॥ याँविधिविष्णुसुआपवि चारी ॥ चाहतहैंनिजकथाविथारी ॥ १७॥ मेरीकथासुगंग उदारे ॥ लोकनकेसभपापनिवारे ॥ नामरमायणपावनहोई ॥ याँहितभएमनुजहरिसोई ॥ १८ ॥ क्रोधमोहपुनकामवि कारा ॥ याँहितकीनेअंगीकारा ॥ ततततकालविपेहरिकरें॥ लोकनमाँहिंमोहविस्तरें॥ १९ ॥ सबगुणतेहैंसदाविरक्त॥ पर भासेंमानोआरक्त ॥ ज्ञानशक्तिविज्ञानस्वरूप ॥ साक्षीगुण केसकलअनूप ॥ २० कामादिककोलेपनकोई ॥ नभजिउँ

निर्मलहैहरिसोई ॥ मुनिकेचितयौंकरेंविचारा ॥ कैजानैतिहँ सनतकुमारा ॥ २१ ॥ निर्मलभक्तताँहिकेजेई ॥ जानतराम नरायणतेई ॥ भक्तनकेपुनमनअनुसारा ॥ लेभगवानजग तअवतारा ॥ २२ ॥ याँविधिरामकथामैभाषी ॥ अवसुन यहिलक्ष्मणकीसाक्षी ॥ लक्ष्मणकिष्किंधाढिगजाए ॥ धनु पशब्दकरकपनहराए ॥ २३ ॥ ताँकोपेखमूढजेकीशा ॥ गढकं दौरचढेवहुशीशा ॥ किलकिलशब्दसुकीनउचारे ॥ पादप औकरपाथरधारे ॥ २४ ॥ **सवैया** ॥ वानरजातिमवास भईलक्षमंनतबैपिखएहुउचारे ॥ थापदएहमहींपुरमैहमसों अबएहफडेहथियारे ॥ मैइनकोनिरमूलकरोंइहभाँतिउचारकु दंडसँभारे ॥ अंगदजानसुबातइहैलक्षमंनअएकपिदूरनिवा रे ॥ २५ ॥ अंगदजाइसुताँपदमैअतिदीनभयोअभिवंदन धारे ॥ रामकिभ्रातदयालुभएगललाइमिलेभुजदंडपसारे ॥ हेसुतजाइकपीशकहोममआवनयौंमुखमाहिंउचारे ॥ को पभरेरघुवीरपठेइमजाइकहोनिजभौनमझारे ॥ २६ ॥ अंग दभापतथामुखतेशुभग्रीवकुजाइनिवेदनकीनो ॥ बाहिरद्वार खडेपुरकेलक्षमंनलएकरचापनवीनो ॥ नैनसुलालकरालभ एअतिक्रोधभरेमुखलालसुकीनो॥वानरराजसुयौंसुनकैतनु कँपतऔसुभयोडरजीनो ॥ २७ ॥ मंत्रिवरीहनुमानबुलाइक ह्योसमझाइसुएहुविचारो॥अंगदकोसँगलैहनुमानसुतूँअवि जाहुभयोसुविगारो ॥ जोरउभैकरपादपरोलक्षमंनविनेकर क्रोधनिवारो॥शांतकरोशुभवातनकैपुनमंदिरआनहुधारपि

यारो॥२८॥इहभाँतिपठाइहनूमतकोपुनआपवुलाइकह्योति नतारा॥-गजगामिनितूँचलताँपथमैलक्ष्मणकुक्रोधभयोअ तिभारा॥मृदुबोलसुशांनकरोतिनकोपुनताँहिलिआवहुभौन मझारा॥ समपावकक्रोधभयोतिनकोजिहँभाँतिहरैनहिजी वहमारा॥ २९ ॥ ॥**चौपाई**॥ मध्यहवेलीताराजाए॥ खडीभईमुखतथाअलाए॥ हनूमानअंगदपुनधीर॥ गएज हाँलक्ष्मणहरिवीर॥ ३०॥ ॥**सवैया**॥ ॥जाइप्रणाम करेपदमैकरजोरउभेमुखएहुअलाए॥ हैंसुखसोंरघुवीरभले तुमहूँसुखसोंपथभीतरआए॥ भागमहाँघरमाहिंचलोउरभी तरतेसभशंकमिटाए ॥ राजत्रियादिनृपंपिखएपुनऔरक छूप्रभुकाजवताए॥ ३१ ॥ ॥**चौपाई**॥ सोहमकरेंशीश परमानी॥ हनूमानइहभाँतवखानी॥ लक्ष्मणकोपुनकरफ रलीनो॥ मारुतनंदनप्रेमसुकीनो॥३२॥ लेआयोतिनकोपु रमाँहीं॥ राजभवनकेपथकेमाँहीं॥ यूथपकेजोभौनउदारे॥ आवतलक्ष्मणपंथनिहारे॥ ३३ ॥ राजभवनप्रतियाँविधि गयो॥ सुरपतिभौनसमानसुनयो॥ तारामध्यहवेलीछाजे ॥ तारापतिसमवदनविराजे ॥ ३४ ॥ सर्वाभरणधरेतनु सोहै॥ मदरकतांतनैनमनमोहै॥ लक्ष्मणकोअभिवंदनधार ॥ हसकरएहुसुकीनउचार॥३५॥**सोरठा**॥ देवरतेकल्यान पाहिनिरंतरदासको॥तूँभक्तनकेप्राणसाधुभावतेरोकहें॥३६॥ **सवैया**॥ दशहूँदिशदूतपठाइदएमहिमंडलकेकपिनाथवुला ए॥ कनकाचलकेसमहैजिनकोतनदेवरपेखघनेकपिआए॥

तुमरोअतिसेवकवीरबडोकपिनायकपैकिमक्रोधबढाए ॥ इ
हबातनलाइकहैतुमकोसुनरामजिनेशिरछत्रफिराए ॥ ३७॥
॥ **कामनीमोहनाछंद** ॥ रामराजीवनैनंभजेनीतही ॥
बातसीशोधंकीराखहैचीतही ॥ जानकीशोधकैशत्रुकोमार
णो ॥ काँमश्रीरामकोशीशदैसारणो ॥ ३८ ॥ ॥ **सवैया** ॥
इहभाँतिविचारकरेकपिनायकनींदकरेनकबीनिशमाँहीं ॥ ज
गजाँदिनराघवकाजसरेद्रिगनींदकरेप्रभुताँदिनमाँहीं ॥ ब
हुकालसुदूखभरेतनुपैइनमीतलहेअबहीजगमाँहीं ॥ तुमदू
खमिटाइसुराजदयोगुनगावतहैतुमरेघरमाँहीं ॥ ३९ ॥
॥ **चौपाई** ॥ दीरघकारयमैमनलायो ॥ रघुपतिसेवाहितन
हिंआयो॥नानादेशनिवासीजेई ॥ आवहिंगेदवरकपितेई
॥ ४० ॥ रघुसत्तमपठएपलवंगम॥ दशहजारचाराल्हदअंग
म ॥ सभदिगवानरल्यावनकाजे ॥ शैलसमानजिनेतनछा
जे ॥ ४१ ॥ सभदिगवानरसहसरदारा ॥ कपिनायकले
करेनवारा ॥ दंतसमूहसभैचुनमारे॥ रावणकोरणमाँहिसँहा
रे ॥ ४२ ॥ ॥ **दोहा** ॥ तेरेसाथसुजाइगोअबहीकपिसर
दार ॥ भवनसुपावनकीजियेअंतहपुरपगधार ॥ ४३ ॥ पे
खातुमसुग्रीवकोसुतदाराकोधीर ॥ दानुअभयदेजाँउँबलितु
मसेवकहरपीर ॥ ४४ ॥ तारावचनसुसुनलहीलक्ष्मणभए
कृपालु ॥ क्रोधसुदूवरताभएगएसुभौनविशाल ॥ ४५ ॥
॥ **सवैया** ॥ वानरराजजहाँशुभग्रीवसुरामकिभ्राततहाँपग
धारे॥ नारिकेसंगविनोदकरेकपिमाँहिंपलंघभुजागलडारे॥

आवतपेखसुलक्ष्मणकोउरभीतमहापडुकूदकिनारे॥ क्रोधभ
योलक्ष्मंनतवैपिखताँद्रिगथेमदसोंअरुणारे ॥ ४६ ॥ क्रोध
भयोलक्ष्मंनकहेकपिदुष्टतुमेअबरामबिसारे ॥ बाणउसास
नतोहिचितारतअंगदतातजिनेरणमारे ॥ मैवधतोहिकरोंअ
बहीपथिबालिकिजाहुसुवेगपधारे ॥ भाँतिअनेककहेलक्ष
मंनसुपेखउमाहनुमानउचारे ॥ ४७ ॥ **हनुमानउवाच ॥
कवित ॥** लक्ष्मनबादकैनकोजियेविषादकछुऐसेकपिराई
कोनमुखतेवखानीये ॥ सुनीएसुशेशअंशतोहितेदशांशराम
सेवकप्रवीनसुग्रीवउरआनीये॥रामकाजहेतुकपिराजहैसु
जागसदारामभूलगएसुउलाहनेनठानीये॥ वानरनिहारआ
एकोटहूँहजारपुनआइहैंअनेककछुढीलनपछानीये ॥ ४८ ॥
सीयशोधकाजजाँहिंखाँहिंफलमूलबलिकरेंनरसोईकपिदल
इतआवतो॥करेगोकपीशरामकारजअशेपतबजानीयोजिहु
तोअरिजीवतोनजावतो॥ हनूमानवाक्यसुनगुनकेनिधानप्र
भुलक्ष्मनलाजउररह्योसरमावतो॥ अरघसुपादकैकपीशल
क्ष्मनपाइपूजेगरेलाइलीयोपाहनोसुहावतो ॥ ४९ ॥ बो
लेकपिराईरघुराईकोसुदासुमैहोंवानरकोराजदीयोनाथमेउ
वारकै ॥ रामतजआपनेसुतीनोलोकजिनेक्षणआधहींके
बीचचहेंभुजाबलधारकै ॥ करोंगोसहाइरघुराइकीनिवाइ
शिरवानरमिलाइरणकोटसुहजारकै ॥ कागदपठाएहैंसुअ
एहैंअनेककपिरणतेनफिरेंभटफिरेंअरिमारकै ॥ ५० ॥ स
वैया ॥ लक्ष्मंनतवैशुभग्रीवकह्योकछुनिपुरवाक्यजुमोहि

उचारे ॥ अवसोक्षमहेकपिवीरवलीतुमसोजुकहेकरप्रेमपि
आरे ॥ चलिएशुभग्रीवसुकाननमैजहँरामविराजतहैंसुमु
रारे ॥ इकलेवनसीयवियोगवडोरघुनायकहैंवनमैदुखिआ
रे॥ ५१ ॥ **चौपाई**॥ तवसुग्रीवमानउरमाँहीं ॥ लक्ष्मणसहि
तचढरथमाँहीं ॥ वानरसभैसुलीनवुलाई ॥ चलेकपीशजहाँ
रघुराई ॥ ५२ ॥ **सवैया** ॥ इतभेरिम्रदंगअपारवजेंइतवा
नररीछलँगूरसुहावें॥व्यजनाइकचारुफिरावतहैंइकवीरवली
शिरछत्रझुलावें॥इतअंगदऔहनुमानचलेइतओरचलेनल
नीलसुजावें ॥ इहभाँतिगएकपिराजतहाँजहँरामविराजतभू
धरछावें ॥ ५३ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्व
रसंवादेकिष्किंधाकांडेपंचमोऽअध्यायः ॥ ५ ॥ **श्रीमहादे
वउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ रामहिंदेखसुद्वारिगुहासुशिला
तलऊपरछाजतहैं ॥ हेम्रगछालसुश्यामतनूपुनशीशजटासु
विराजतहैं ॥ नैनविशालसुमंदहसेंमुखपेखसरोजसुलाजत
हैं॥सीयवियोगसुचीततपेम्रगपक्षिनिहारसुजागतहैं॥१॥दूरहुँ
तेरथतेउतरेशुभग्रीववलीलक्षमनसुभाई ॥प्रेमभरेरघुवीरकिं
पाइनमाँहिंपरेगिरिजाढिगजाई ॥रामकपीशमिलेगलमैपुछि
क्षेमलयोहरिपासविठाई॥रामकर्योशुभग्रीवकुपूजनपारवती
हरिरीतिदिखाई॥२॥जोरउभेकररामकिपासकह्योशुभग्रीवभ
लेशिरनाई॥देवपिखोकरुणाकरकैयहिवानरसैन्यवडोप्रभुआ
ई॥ केइकुलाचलमैजनमेगिरिमन्दरमेरुसुदेहसुहाई ॥ दीपअ
नेकनिवासकरेंकहिआवतहैंविनवेरलगाई॥३॥केअसंताचल

कउदयाचलकेइभएसरितातटमाँहीं॥ केकुशद्वीपभएरघुनाय ककेइभएगिरिमंदरमाँहीं॥भूधरकेसमदेहवडेफलहारकरेंकपि एवनमाँहीं ॥कामगरूपधरेंसगलेकपिसैननकीगननाकछुनाँ हीं ॥ ४ ॥ देवनकेवलअँशनतेइहवानररूपभएजगमाँहीं ॥ हेकिनकोगजसोबलरामविशारदहेंसभसंगरमाँहीं ॥ केचित हैंदशनागवलीगजआयुतहेंबलमैइनमाँहीं ॥ लाखकरोरग ज्ञानधरेंबलहेकिनकेवलकीमितिनाँहीं ॥ ५ ॥ केचितअंजन कूटसमापुनकेचितहेमसमानविराजें ॥ केचितलालमुखांबु जसेपुनकेचितदीरघवालसुराजें॥ उज्वलकेचितफाटकसेपु नकंबुसमानसुकेचितछाजें ॥ आवतहेंरणचाहिभरेकपिरा मपिखोघनसेमुखगाजें ॥ ६ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ रामतेरी आइसकेसभैहेंकरनहारचाहतनकछूफलमूलहीअहारहें ॥ए जोपिखोरामतुमलागतपहारसोसोजांववाननामकोटिरीछ सिरदारहै ॥ येहैहनूमानवलवानसुविख्यातप्रभुवायुकोकु मारनीतिमंत्रमैउदारहै॥एहैंनलनीलसुगवाक्षसुगवयजानो रामगंधमादनसुवलकोनपारहै ॥ ७॥ शरभसुमैंदवद्रुविं दगजपनससुवलीमुखदधिमुखएईपहिचानिये ॥ येहीतुसु षेणअहेतारनामयाँहिकहेंपिताहनूमानकोसुकेसरीपछानि ये ॥ एहेंसिरदारमेरेखासकीसुचलेंलारपुरकेनिवासीहेंप्रधा नकैवखाँनिये॥ सभहेंउदारतेजपुंजकोअधाररामबाहिंसुसं ग्रामकेसुरेशसममानीये ॥८॥ औरजेइवानरउदारवडेरा मचंद्रकोटिकहजारकछुअंतनहीपाईय ॥ देवअंशसूतसभ

वानरसपूतप्रभुनाथकाजकरैंवलिमुखतेवताईये॥एजोपिखो रामतुमलागतसुहावनौंसुवालीकोकुमारनामअंगदसुनाई ये॥वालीसमवीरअतिधीरसुसंग्रामकरैयाँहींकेभरोसेरणखं भसुगडाईये ॥ ९ ॥ वानरअनेकऔरशूररणपरैंदौरनाथ काजप्राणकीनचिंतमनधारहैं ॥ अरिवधकाजकपिरणमैंसु जागसभकोपवीरभरेसुउखारगिरिमारहैं॥ आइसुसुदीजिये नवेरकछुकीजियेसुवानरअधीनप्रभुआइसनिहारहैं ॥ उमा तवरामहरपाइउरनैनभरमिलकैकपीशमीतवातयौंउचारहैं ॥ ॥१०॥

कपिपठियेविचारकै॥ सुनकैसुरामवाक्यभएपुलकातकपिप ठएसुतीनवारतीनहींप्रकारकै ॥ वलिऔविचक्षणपठाएदिग दक्षणगुलावसिंहनामनाँहिंकहितउचारकै॥अंगदसुजांववंत केशरीकुमारनलशरभसुपेणमैंदद्रुविंदसुधारकै ॥ ११ ॥ क

हींलावना॥भूमीअंतहेरसीयसारलैसवेरकहोकहोंवेरवेरदिन तीसमाँहिंआवना ॥ विनासीयदेखीदिनजाँहिंजुविशेपीतिँहँ प्राणअंतदंडकपिभूमिमैंगडावना ॥ वानरपठाइकपिराइशि रनाइहरिवैठोढिगआइउमालागतसुहावना ॥ १२ ॥ दे खहनूमानपथिकीनहैपयानप्रभूलीनहैवुलाइवातकहीसमझा इकै ॥ लेहुकपिमुंदरीप्रतीतिहितसुंदरीसुरामनामलिखी दीजोजानकीकोजाइकै ॥ काँमहैमहानयाँमैंतूँहींहैंप्रमानक पिसत्तमसुजानवलिकीजोमनलाइकै॥कहोंवलिजानतेरीप

थमैकल्यानसदाजाहुवीरवेगतूँगजाननमनाइकै॥१३॥ऐसे कपिराइंद्रीएवानरपठाईसीयशोधकाजगएमौरअंगदसिधा रियो॥ विंध्यवनमाहिफिरेंसीयकीनपावेंसारगिरिकेसमानए कराक्षसनिहारियो ॥भीषणअकारम्रगहाथीकोअहारकरेरा वणविचारकपिदलकिलकारियो॥ वानरउदारकरमुष्टकप्रहा रथलिक्षणहींकेवीचतांहिंकोपकरमारियो॥१४॥एहुनदशान नवखानगएकाननसुऔरवनभारोनशुमारकछुकीजिये ॥ जानकीकीआशालागीप्यासातनभारीजागीपावेंनाँहिंवारी कपिकहेंकाहिपीजिये॥ मूकमुखकंठतालुभएहैंविहालकपिम हावनभ्रमेकहेंकौनभाँतिजीजिये॥एकपिखीदरीतहाँत्रिणसों अवरीमुखएककहेंयाँहिंमाँहिंनीरपेखलीजिए॥१५॥पिखेंपल वंगमसुनिकसेविहंगमसुगीलेछदक्रौंचहंसहनूयौंउचारीहै ॥ याँहिंगुहाद्वारवरोसभसोविचारकहोंसभनपुकारयाँहिंभीतर सुवारीहै ॥ ऐसेतुवखानआगेभएहनूमानपाछेचलेकपिजा तिकहेंकहाँजलधारीहै॥ आपसमैंहाथफरेजाँहिंचलेजीयडरे देतनादिखाईकछुवडोअंधकारीहै॥१६॥ चौपाई॥ याँविधि दूरगएकपिजवही ॥ पेखेनीरतलावसुतवही ॥ मणिसमानउ ज्वलजहँवारे ॥ कल्पद्रुमनसेद्रुमपरिवारे ॥ १७ ॥ लटकेंडा लभूमिफलभरे ॥ मधुकेजहाँसुछातेखरे॥ सभगुणवंतसुभो ननिहारे ॥ मणिमुक्तापटपूरेसारे ॥ १८॥ जाँमैंभोजनवहुत प्रकारा ॥ मानुषनाँहिंसुकोरखवारा ॥ भौनप्रभापिखकपि विसमए ॥ ताँमहिंकौतकदेखेनए ॥ १९॥ दिव्यकनककेआ

सनमाँहीं ॥ नारिपिखीइकदूसरनाँहीं ॥ तनकीप्रभासगलत मवारे ॥ चीरवसनउरईशाचितारे ॥ २० ॥ पद्मासनदृढयो गकमाए ॥ ताँकोपिखकपिसगलडराए ॥ गएसमीपभ क्तिउरभीने ॥ जोरदोइकरवंदनकीने ॥ २१ ॥ देवीपिखसुकी शअलाए ॥ कौनतुमेकिहँकारणआए ॥ किनकेदूतकहाँतेआ ए ॥ ममसुस्थानसुकिंउँपदपाए ॥ २२ ॥ दोहा ॥ ताँकेव चनसुसुनतहीतबबोलेहनुमान ॥ समाचारदेवीसुनोनीकेक रौंवखान ॥ २३ ॥ कवित ॥ अयोध्याकेराजादशरथशिर ताजाताँकेबडेसुतभामिनीसुलोकरामगाएहैं ॥ आज्ञासु नरेशकीनीमानउरलीनीनिजनारिलघुभ्रातलैसुबडेबनआए हैं ॥ नारिताँहिकाननसुहरीहैदशाननसुसीयपथआयेशुभग्री वसोंमिलाएहैं ॥कह्योकपिराईसभकपिनबुलाईसीयशोधका जजाहुमीतभावकैपठाएहैं ॥ २४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ शोध तसीयलगीतनप्यासवरेगिरिकंदरयौंहमआए ॥ तूँकिहँकाज वसेंइहठौरसुकौनअहेंहसदेहिवताए ॥योगिनितौपिखकीशन कोहरपीउरमैंइहवैनअलाए ॥ पूर्वनीरसुपानकरोतुममूलफ लादिकलेहुसुखाए ॥ २५ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ आवोपास मेरेतुमैकहोसुवृत्तांतपुनसुनकैसुकीशगएफलमूलखावने ॥ खाएफलपीनोजलभएवलवंतकपिकरेंमधुपानभएहीएहरषा वने॥हीएहरपाएकपिताँकोढिगगएपुनखरेआगेजोरकरलाग तसुहावने ॥ योगिनीउदारजाँहिंरूपहैअपारवहुकरकैविचा रलगीहनूकोवतावने ॥ २६ ॥ हेमाहुतोनामवहुरूप

कीसोधामविश्वकर्माकीतनूजापूजाईशकीकरेनई ॥ ताँहिं नृत्यकीनोसुमहेशमनलीनोतिनहोइकेक्रिपालदिव्यपुरीजग एदई॥वरषअनेकइहवासकीनेएकटेकभूमलोकछोडवहुब्रह्म लोकमेगई ॥ तिनकीसहेलीमैइकेलीईहाँवासकरोंमोक्षत्वाहि जगीतिनसंगनाहिंहौंगई ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मैंवटीगं धर्वकीस्वयंप्रभाममनाम ॥ ब्रह्मलोकजातीकयोहमातप करधाम ॥ २८ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ईहाँवासकीजीयोसुजी जीयोअराधहरिशूनथानहोइइहजीवनरहाइहैं॥ त्रेतायुगआ एअवतारहरिपाएवहुदशरथसुतहोइरामयोंकहाइहैं ॥ भूम भारहारकाजतजेंगेसुतातराजचीरपटधारवहुवनमेसुआइ हैं ॥ सीयताँहिंभारयासुहरीजाइआरयासुशोधनकेकाजव हीवानरपठाइहैं ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याँहिंगुहाकेभीत रआँवें ॥ पूजेंतूँफलमूलखवाँवें ॥वहुरगुफातजजावहिंराम॥ जाइकरेंतूँपदपरणाम ॥ ३० ॥ वहुरविष्णुकेभौनसुजाँवें ॥ योगीयाँहिंयतनकरपाँवें ॥ अवमैरामनिहारनजाँवों ॥ च लोंसुवेगनवेरलगाँवों ॥ ३१ ॥ तुमअवनयनमिलावोसारे॥ चलोगुफातेवाहिरवारे॥सुनसुवानरननयनमिलाए॥पूरवजि मकपिवाहिरआए ॥ ३२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ भामिनिभा मिनित्यागगुफावहुआपगईजहँराममुरारे ॥ भ्रातविराज तपासतिनेढिगएकसुवानरकोसिरदारे ॥ पेखप्रदक्षणताँहिं करीपुनवंदनरामपदांवुजधारे ॥ रोमभरेउतसाहुउमामुख माँहिंगदागदवैनउचारे॥३३॥ ॥स्वयंप्रभोवाच॥ ॥सवै

या ॥ राजनराजसुदेखनकेहितआइइहाँतवपादनदासी॥मैं
तपकीनहजारसमावहुकंदरअंदरशमविलासी ॥ आजभयो
फलताँतपकोप्रभुरूपपिख्योजगमैंअविनाशी॥वंदतिहौंपदपं
कजकोतुममायपरेपुनमायप्रकाशी ॥ ३४ ॥ भूतनमाँहिंअ
लक्ससदातुमवाहिरअंतरएकसभागे॥मायकनाततनीतुमहीं
तिहँतेतुममानुपसेतनलागे ॥ जानसकेंनहिमूढतुमेनटचारु
समानसजोतनवागे॥ सेवकजेतुमरेपदकेवहुजानतेंहेंजगते
वहुजागे॥ ३५॥ सेवकसेवबतावनकेहिततेंअवतारलियाज
गमाँहीं ॥ तामसयोनिसुमैंजगमेंकिंहँभाँतिलखोंतुमकोभव
माँहीं॥ तेवलतत्वस्वरूपभलेजनकेचितजानतलोकनमाँहीं॥
रूपइहैजगपावनजोनितरामवसेहमेरेउरमाँहीं ॥३६॥ राम
सुतेप्रदमोहिपिखवहिमोक्षसुआपहिंदेंहिंदिखारे ॥ जेधनपुत्र
कलत्रसुरासुखपानकरेंसुभएमतवारे॥ तूँधनआँहिंअकिंचन
कोधनवंतकहाँतवनामउचारे ॥ त्वंगुणहीनअकिंचनवित्तस
दाअभिवंदनआहिंहमारे॥ ३७॥ ॥ **चौपाई** ॥ आत्मारा
मतुहींजगमाँहीं॥ तूँनिरगुणगुणतेरेमाँहीं ॥ कालरूपईश्वरतूँ
आँहिं॥ आदिअंतमध्यतवनाँहिं॥३८॥ सभभूतनमैंतूँसमअ
हे॥ त्वंपुरपोत्तममैंउरलहे॥तेरोदेवाचरणसुजोई॥लोकविडंब
नलखेनकोई॥३९॥ तेरोनाहिंपिआरोकोई॥द्वेपविपयतुमरेन
हिंहोई ॥ तेरीमायाढाँपेजेई॥तुमकोसंम्यकलखेंनतेई॥ ४०॥
तुमअजन्मपुनजन्मतुमारे॥देवत्रियकअरनरनमझारे॥जन्म
सुकरमादिकतेजेई॥हैंअत्यंतविडंवनतेई॥४१॥तोकोंअक्षरवे

दवखाँनें॥जनिकल्याणकथाहितठानें॥कौसलराजतपहिंफल दान॥केचितजन्मसुकरेंवखाँन॥ ४२॥ केच्चितकहेंकुसल्यामाता ॥ विनतीकरीभएविख्याता ॥ राक्षसदुष्टभएभूभारा ॥ मारणहितलीनोअवतारा॥ ४३॥ विनतीचतुराननथीकरी ॥ याँहितभएजन्मजगहरी॥ केचितऐसेकरेंवखाँन॥ त्वंपरिपूरणहैं भगवान॥४४॥तेरीकथासुनेंअरगावें॥ तेरघुनंदनतेपद्पावें॥ तेरेपादपोतआलंबा ॥ पाइतरेंभवनाहिंविलंबा ॥ ४५॥त्वमायागुणमेउरवंधा याँतिभईसुमैप्रभुअंधा ॥ त्वंगुणभिन सुगुणनअधारा ॥ कैसेजानोंरूपतुमारा ॥ ४६ ॥ उस्तुति कैसेकरोंतुमारी ॥ वाणीकेनहिंविपयमुरारी॥ ताँतेतपदकरों प्रणामा॥ बाणशरासनधारीरामा॥ ४७॥ लक्षमणसहितसुदेवविराजे ॥ सहसुग्रीवनिखिलतमभाजे ॥ याँविधिकरीव डाईजवही ॥ भएप्रसन्नउमाहरितवही ॥ ४८ ॥ ॥ दोहा॥ स्वयंप्रभाहिंनिजभक्तपिखबोलेहसभगवान ॥ जोवरचाहो चीतमैंसोमुहिकरोवखान॥ ४९॥ स्वयंप्रभापुनरामप्रतिभापे वचनविशाल ॥ भक्तिसुराघवदीजियेतुमभक्तनपरघालु ॥ ॥ ५० ॥ जहँजहँजन्मोकर्मवशतहँतहँभक्तितुम्हारि ॥ नव भक्तनकोसंगसदहोवेमोहिमुरारि ॥ ५१ ॥ ॥ सवैया॥ मूढनकोनहिमंगकदाप्रभुहोवहिमेइहलोकमझारे ॥ जोभक हमुखरामसदामनराषसुश्यामलरूपचितारें ॥ सीयसुभ्रात समेतसदाशरऔरशरासनहेंकरधारे ॥ पीतपटंवरऔमुकटामणिअंगदनूपुरहारसवारे ॥ ५२ ॥ ॥दोहा॥ कौस्तुभम

णिगलमैलसंकुंडलकानसुहाँहिं॥ इहीवसेउरमैसदारामऔर वरनाँहि॥ ५३ ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ स्वयंप्रभाऐसेहीहोई ॥ तूँमनमैचाहतिहैंजोई ॥ पावनवदरीखँडस्थान ॥ तहाँजाहिदर्शनमलहान ॥ ५४ ॥ तहँवसमोकोंउरमैभजें ॥ वहुरोयाँहिकलेवरतजें ॥ मोहिपरात्माकोतवपावें ॥ वहुरोभवसागरनहिंआवें ॥ ५५ ॥ सुनिराघवकीयाँविधिवानी ॥उमाताँहिंअम्रतसममानी ॥ आश्रमवदरीखंडसुजाई ॥ स्मर्योरघुपतिप्रेमलगाई ॥ ५६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ उमाकलेवरत्यागकेगईरामकेधाँम ॥ गिरिजाकाननमैफिरेंमोक्षकल्पद्रुमराम ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेषष्टमोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित** ॥ तरूनकिमूरखरेवानरलंगूरसीयसारनाहिंपाईभईचिंतासभकीशके ॥ हूएक्रूपसारेतिनअंगदउचारेगएतीशदिनसारेजनहैंअधीनईशके ॥ दरीमैजुभ्रमेमाससीयाकीनभईआशप्राणतेउदासकाजकरेनकपीशके॥ जाँहिराजधानींजवहोंहिंप्राणहानीतवमारेंशुभग्रीवसभचलेनसुरीशके॥१॥वालीहुनोतातसुविख्यातजिनवैरकीनोताँकोसुतजानमिपपाइमोहिमारहै ॥ मोहिसोंनताँहिंप्रीतिवैरअतिचीतद्रिढमारतोसुतवहीजुरामनउवारहै ॥रामकोनकाजकीनोजाँतिसुखहोतोजीनोइहैशुभग्रीवसुवहानाउरधारहै॥ मातकेसमानकहीवेदऔपुरानवडेभाईकीसुनारिभजेपापीनविचारहै॥२॥सुनोकपिपुंगवनजाँहिंपुरपुंगवसुमरेंहमईहाँवन

पावकजलाइके॥अंगदसुनैनजलपेखबलवंतकपिनीरनैनभर
सभकव्योहैसुनाइके।काहेकोसुकरोशोकयौंकहेंमहानयहिक
रेंरछपालतेरेप्राणकीसहाइकै ॥ फेरगुहापरेंबलिवासईहाँकरें
सभभोगसुमहानरहेंयाँहिंमैसुहाइकै ॥ ३ ॥ **सवैया** ॥ इह
भाँतिविचारकरेकपिअंगदमारुतनंदनएसुनपाई॥नयकोवि
दआपसुबातकहीपुनअंगदकोगलमाँहिंलगाई ॥ इहकौंन
विचारकरोबलिअंगदनीतिबुरीतुमहैठहिराई॥तुमराजकुमा
रउदारबडेअतिवल्लभतूँबलिहैंकपिराई ॥ ४॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥
लक्ष्मणतेतुमराम्नकोपिआरेहोउरमाँहें ॥ राघवतेडरनाँहित
वकपिनायकडरनाँहिं ॥ ५॥ **कवित** ॥ तेरोहितचाहोंबीरऔ
रनविचारोंधीरसाथतेरेचलोंचितशंकनाहिंधारिये॥एजुगुहा
वासकपिकेंहेंहेंमवाससभझूठोउरजानोतवनीकेसुउचारिये॥
तीनलोकमाँहिंरामबाणतेअभेदनाहिंछाडजाँहिंकपिजिनसं
गसुविचारिये ॥ सुतऔरनारीइनग्रामकेमझारीऊँहाँजाँ
हिंतजपासतवरहेंननिहारिये॥६॥ गोपइकबातहैसुकरोंतेवि
ख्यातसुतसुनोमनलाइपाछेमनमानेमानिये॥रामनरनाँहिंसु
नारायणप्रगटजगसीयामायारूपउरलक्ष्मीपछानिये॥लक्ष्म
णशेपधारजगकोअधारप्रभुवेदऔपुरानमैसहस्रशीशभा
निये॥राक्षसननाशहितविनतीपितामाधारीमायातनधारीला
कपालकवखानिये॥७॥विष्णुजोवैकुंठवासीताँकेहमदाससभ
होयोहरिमनुजपरातमासुहावना ॥ ताँहिंकीजुमायाजिनलो
कहैभ्रमायातिनकरेहमकपिफलमूलहीसुखावना ॥ पूरवअ

राधहरिरामहीकीमयाकरभएपारपदसुवैकुंठलाइभावना ॥ अवतिनेसेवकरपापपरहरिसभपाइसुवैकुंठवासहम्नसुखपावना ॥८॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ अंगदकोइहभाँतिसुबोधगएगिरिविंध्यमहावनवीरा ॥ ढूँढतवैजनकातमजासुमहेंद्रगिरीगयेसाइरतीरा ॥ पेखसमुद्रअपारतहाँभयदायकजाँहिंअगाधसुनीरा ॥ वानरचीतमहाडरपेकेंहेंकाहिकरेंउरमाँहिंअधीरा ॥ ९ ॥ सागरकेतटबैठगएबहुचिंतबढीसभकेउरमाँहीं ॥ बैठविचारकरेंसगलेइकमासगयोभ्रमतेगुहमाँहीं ॥ रावणन्याहिंपिखेअवलोपुनसीयकिसारनहींजगमाँहीं ॥ तीक्षणदंडकपीशअहेवहुप्राणहनेसुगयेपुरमाँहीं ॥ १० ॥ शुभग्रीवहनेइहतेसुभलोइहठौरमरेंकछुधारउपाए॥ इहभाँतिविचारउपारकुशाकपिपावनआसनलीनविछाए ॥ तहँबैठगएसगलेकपिवैद्यगक्षाजुमरेंमनमैठहिराए॥ पुनताँहिंसमेगिरिकंदरसेनिकसेखगएकभयानकआए ॥ ११ ॥ गृध्रनराजवडोशिरताजसुभूधरसोजिहँकोतनभारे ॥ वानरकेशिरताजवडेकुशआसनमाँहिंसुताँहिंनिहारे ॥ भोजनआजदयोबहुतोजगनायकयोंमुखमाँहिंउचारे ॥ एकहिंएकसुवानरकोसुकरोंदिनएकहिंएकअहारे ॥ १२ ॥ ॥ **कवित** ॥ ॥ सुनकैसुगृध्रवानीभएहैंमलानीमुखखाइगोसुगीधतनकपिनउचारियो॥ सीयकोनशोधलीनोरामकोनकाजकीनोऔरकपिनायककोकाजनसवारियो ॥ हितनकमायोहमव्यथायमलोकपायोधंन्यसुजटायुजोईरामहितमारियो ॥ योगीकोदुरापपदपायोहैजटा

युखगडारकैसुदेहहरिलोकमैपधारियो ॥ १३ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ उमासुनीसंपातीवानी ॥ भ्रातकथामुखकपिनवखानी॥ पूछ्योवहुरभलेहितलाई॥ तुमहोवानरकौनसुभाई ॥ १४ ॥ नामजटायुभ्रातमेभाना ॥ सुधासमानपरोममकाना ॥ मेरेतडरतुमकोनाँहीं॥कहुपलवंगमजोमनमाँहीं ॥१५॥ तिनमेअंगदकीशप्रधान ॥उमालगोतबकरनवखान॥दशरथपूतरामयशटीको॥लक्षमणभ्रातजाँहिकोनीको ॥ १६ ॥ सीयभारयाताँकीप्यारी ॥ ताँसहआएविपनमझारी ॥ रावणदुष्टमहाहंकारी ॥ ताँहिंहरीवहुजनककुमारी ॥ १७ ॥ रामचंद्रमृगमारणगए ॥ लक्षमणताँकेपाछेधए ॥ रामरामसियकरीपुकारा ॥ सुनतजटायुभयोरुपभारा ॥ १८ ॥ रावणसाथभिर्योरणभारी ॥ रावणमार्योखगसंभारी ॥ रामनिमित्तमुएखगराजा ॥ रामदाहलोकरेसुकाजा ॥ १९ ॥ हरिसायुज्यजटायूपाई ॥ राममिलेसुग्रीवहिंजाई ॥ अग्निजलाइभएवहुमीता ॥ पुनसुग्रीवकहीसभरीता ॥ २० ॥ रामचंद्रवालीरणमारा ॥ भालसुकंठराजकपिधारा ॥ वानरवृंदसुग्रीवपठाए ॥ ढूँढोसीयजगतमेजाए ॥२१॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इकमासअवाँतरआउसभैनहिंप्राणहरोंकरदंडतुमारे ॥ इहभाँतिवखानपठाइदएहमआइपरगिरिकंदरभारे॥ इकमासवितीतभयोहमकोनहिंसीयसुरावणनैननिहारे ॥ अवप्राणतजेंकुशडारतलेसरतापतिकेपुनवैठकिनारे॥२२॥ जोतुमजानतहोखगराजनसीयकथाहमदेहि

सुनाए ॥ अंगदवैननकोसुनकैहरपेउरमैखगराजअलाए॥ वानरप्राणसमानजटायुसुभ्रातहुतोलघुमेउरभाए ॥ बीतह जारगएवरपावहुभ्रातउदंतसुमैअवपाए ॥ २३॥ वाक्यसहा यकरोंतुमरीसुनवानरआजभएदुखभारे ॥ भ्रातहिंनीरसुदा नकरोंअवलेचलियेमुहिनीरकिनारे॥दैजलफेरकहोंवतियाँस भकारयजाँकरहोंहिंतुमारे ॥ वानरभापतथामुखतेखगआन धरेजहँऊजलवारे॥२४॥ न्हाइजटायुकुनीरदयोपुनवानरताँ हिंसुलीनउठाई ॥ फेरतहाँतिनआनधर्योंखगवानरभाषतदेहि सुनाई ॥ वानरकोहरपावतहीतवसीयकथाखगराजबताई॥ पावनसीयकथागिरिजावहुभापतहोंसुनियेमनलाई॥ २५॥

॥ **चौपाई** ॥ लंकानामपुरीमनमोहे ॥ गिरत्रिकूटकेशिरपर सोहे॥ तहाँअशोकवनीमहिसीता॥ राक्षसीआँराखतहैंनीता ॥२६॥ सौयोजनपैंडोयहिजानो॥ लंकाजलनिधिमध्यपछा नो॥ विनसंदेहलंकमैदेखों॥सीतातहाँभलीविधिपेखों॥२७॥ वानरसंशयकरहुविनष्ट॥ गृध्रस्वभावदूरममदृष्टि ॥ शतयोज नसागरविस्तारा ॥ याँकोजोकपिलाँघनहारा ॥ २८ ॥ सो मिथिलेशतनूजादेखे ॥पुनआवेवलधारविशेषे॥ रावणदुष्ट तमखलभारा ॥ जिनमेरोभाईलघुमारा ॥ २९॥ एकाकाति हँमारोंजाई ॥ विनापंखनहिंपारवसाई ॥ सागरतरपुनदेइ सुसारा ॥ ताँकोकरोसुयत्नविचारा ॥ ३० ॥ **दोहा** ॥ रावणकोरघुनाथपुनमारहिंगेवलधार॥ सीयशोधपहुचाव नीयहिहैकाजतुम्हार ॥ ३१॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥सिंधुइहाँशत

योजनवीचसुजोकपिजाइसकेवलिपारे ॥ देवनकीगमना हिंजहाँवहुजाइवरेपुनलंकमझारे ॥ सीयनिहारसुवाक्यउ चारमहाबलिआवहियाँहिकिनारे ॥ आपसमैकपिसोतुम वानरवैठभलोविधिलेहुविचारे ॥ ३२॥ ॥ इतिश्रीमदध्या त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेसप्तमोऽध्यायः ॥७॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **दोहा** ॥ अथकौतकआविष्टतसं पानीप्रतिकीश ॥ पूछतभयेउदंतसभकहाभूतखगईश ॥ १ ॥ उमाकह्योसभआपनोसंपातीवृत्तांत ॥ पूर्वसुतिनकोजोभ योसुनोचीनएकांत ॥ २ ॥ **कवित** ॥ हमओजटायुभाईभये गरवाईतनयौवनअंधेरवलकहाँलौवताईये ॥ उडेरविमंडल कोपेखेंबलआपनोभीयोजनहजारवहुपारनहीपाईये ॥ रवि केप्रतापसोंजटायुतनतापभयोसूरयअछादयाँहिंतापकोमि टाईये ॥ मनधरदोऊनिजपंखनपसाररविछादयोसुमोहिजनु राहुसेसुहाईये॥३॥**सवैया**॥ सूरयकेकरदाहभएपरमैसुगियों गिरिकेशिरमाँहीं ॥ कीशसुनोअतिदूरहिंतेअतिमूरछतासुभ ईतनमाँहीं ॥ वीतगएदिनतीनजवैतवप्राणभएसुकलेवरमाँ हीं ॥ पीरमहाँतनधीरगयोपरहीनभयोसुधनामनमाँहीं ॥ ४ ॥ ॥ **कवित** ॥ कौनदेशकौनगिरिकाननसुकौनधरजान्योसुन जाइकछुभ्रांतचित्तव्हैगयो ॥ हरूएउघारेनैनवैननउचारसकों आश्रमनिहारसनेसनेढिगमैगयो ॥ चंद्रनामथोमुनीशनीतउ रईशभजेमोहिपिखकपिविसमादउरसोभयो ॥ कहुरेसंपाती उतपातयहकाहेतेसुछदनविहीनतोहिकहोकिनहैकयो ॥५॥ तूँ

तोहुतोबलवानपूरवपछानमेरीजरेपरकाहेतसुकहोसमझाइ के॥ भयोजोईसमाचारकह्योविसतारसभसुनकैमुनीशउरर ह्योविसमाइकै॥फेरमैमुनीशकोउचार्योविचारकरतजोंयहदे हवनपावकजलाइकै॥पक्षहीनजीवनोसुक्षीणभयोमरोअब सुनकैमुनीशउरदयावसीआइकै ॥६॥ वचनसुनीजोमोहिभा खोजोखगेशतोहिसुनकेकरीजोसुतचीतजोसुहाइहे॥देहमूल दुःखजानकर्मदहकोनिदानकर्मनकोमूलतनअभिमानआइ है॥ देहअभिमानकोसुहेतुहैअविद्याअजजडरूपमिथ्यातोंहि वेदयोंसुनाइहै॥चेतनकीछायाजवमिलेमाँहिमायातवहोइकै अभेदलोहपावकसुहाइहै॥७॥ **चौपाई** ॥ वहुरोदेहतदातम पाइ ॥ चेतनवतपुनदेहसुहाइ॥ देहोहंयाँविधिमतिजोई॥अ हंकारतेआतमहोई ॥ ८ ॥ तौंमूलकयहहैसंसार ॥ सुखदुख हैजाँमाँहिअपार ॥ आत्मानिरविकारहैजोई ॥ मिथ्याभयोऽ भिमानीसोई ॥ ९ ॥ देहोहंपुनकर्मकमाँऊँ ॥ इनकोफलआ गेमैपाँऊँ ॥ इमसंकल्पकरेयहिप्रानी ॥ कर्मकरेफलमैअभि मानी ॥ १० ॥ फलवाँध्योयहभजेविकारा ॥ भ्रमेअधोर्द्ध वारंवारा ॥ पुण्यपापकेहोइअधीन ॥ फलभोगेहरपेउरदीन ॥ ११ ॥ मैजगपुण्यसुवहुतकमाए ॥ यागदानवहुभाँतिकरा ए ॥ भोगोंफलतिनकोसुरमाँहीं ॥ इमसंकल्पकरेमनमाँहीं ॥ १२ ॥ भोगेतहाँवहुरचिरकाल ॥ स्वर्गलोकमैभोगविशा ल ॥ क्षीणपुंण्यहोवेतहँजवही ॥ गिरेअधोमुखतहँतेतवही ॥ १३ ॥ प्रथमैपरेसुचंद्रमझारे ॥ पुनहोवै [illegible] व

हुरोगिरसुधरकेमाँहीं ॥ परेसुयवत्रीहीकेमाँहीं ॥ १४ ॥ वसे
सुवहुदिनअन्नमझारे ॥ वहुरचतुर्विधभोज्यप्रकारे ॥ चारप्र
कारभोज्यहैजोई ॥ भोगेपुरुषजगतमैसोई ॥ १५ ॥ ॥ दो
हा ॥ रेतहोइनरतनुविषेनारीरक्तसुहोइ ॥ ऋतुवतिनारीयो
निमैसिंचेजौनरसोइ ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ योनिरक्तमै
मिलेसुजवही॥ परिवृतहोयजरायूतवही॥ दिनइकमाँहिंकलि
लसोहोई ॥ रूढस्वरूपहोइपुनसोई ॥ १७॥ पांचरात्रिमैवुदवु
दकार ॥ होवैवीर्यसगर्भमझार ॥ सप्तनिशाहैमांसाका
रा ॥ लोहूभरेसुपक्षमझारा ॥ १८ ॥ रात्रिपचीसजाइपुनज
वही॥अंकुरहोहिंतौहिंततवही ॥ ग्रीवाशिरपुनऔरस्कंधा॥
पृष्ठवंशपुनउदरकबंधा ॥ १९ ॥ मासवितीतहोइपुनजव
ही॥ पंचप्रकारअंगतिंहँतवही॥ पाणिसुपादपार्श्वकटिजानु॥
युगलमासवीतेहुँईभानु ॥ २० ॥ होंहिंवितीततीनजवमा
सा ॥ अंगनसंधिसुहोंहिंप्रकाशा॥ चारमासजवजाँहिंविला
ई ॥ तवअंगुलिउपजेंखगराई॥२१॥ नासाकरणनयनलौजे
ते ॥ पांचमासमैहोवैंतेते ॥ दंतपांतिनखगुह्यप्रमान॥ पंचम
मासविषयहिमान ॥ २२ ॥ षटपुनमासवितीतेंजवही ॥ छि
द्रहोंहिंखगराजसुतवही ॥होवैंकाननविवरउदारा ॥ गुदउप
स्थपुननाभिअकारा ॥२३॥ सप्तममासरुमावलिकेश ॥ अ
ष्टमभिन्नअवयवसुवेश ॥ वधेगर्भजठरेस्त्रीसोई ॥ नवम
मासचैतन्यसुहोई ॥२४॥ ॥ दोहा॥ ॥ मातखाइजलअन्न
जोताँकोरससुविशाल ॥ नाभिनालिकरभोगईगर्भमाँहिं

वहुवाल ॥ २५ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ कर्मअधीनवधेउरमैज ठरानलतेनहिंवालमरे ॥ पूरवलेजनमाकरमाजठरांतरवाल सुयादकरे ॥ यौंउरमाँहिंसुवोलकहेजठरागनितेतनुताँहिज रे ॥ योनिहजारअनेकधरीदुखयोनिनमैवहुभाँतिभरे ॥ ॥ २६ ॥ सुतदारसुबंधुकरोरभएपशुवांधवनाकछुजातगि नाए ॥ सुकुटंबभरेनिशिवासुरमैकरनीतअनीतसुद्रव्यमि लाए ॥ कृतिव्यर्थकरीभवभीतरमैसुपनेसुनहीहरिकेगुण गाए ॥ अबताँफलदुःखसुभोगतहोंजठरानलमेतननीतत पाए ॥ २७ ॥ क्षणभंगुरदेहविषैवसकैजगभीतरमैवहु पापकमाए ॥ हितआत्मकेनकरेकवहीतिहँतेइहभाँतिसुमैदु खपाए ॥ नरकाभमहाँगरभानलतेनिकसोंकबियौंमुखमाँ हिंअलाए ॥ अवतेउपरंतनभोगभजोंहरिपूजनमैकरहोंशिर नाए ॥ २८ ॥ ॥ **गयामालतीछंद** ॥ ॥ इहभाँतिकी नकरारतहँपुनजन्मऔसरआइयो ॥ योनियंत्रप्रपीडियोवहु भाँतितहँदुखपाइयो ॥ इहभाँतिदुःखसुभोगनिकस्योनरक तेजिमपातकी ॥ जनुपूतिव्रणतेकीटगियौंसुसारनाकछुआप की ॥ २९ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ ताँउपरांतदुःखवहुभारी ॥ होंहिंसुवालकदेहमझारी ॥ यौवनमैदुखआँहिंसुजेते ॥ अ नुभवकरेसकलजनतेते ॥ ३० ॥ तैंखगवरसभआपनिहारे ॥ याँतिमैनहिंकीनउचारे ॥ याँहिंभाँतितनुमैहंगहे ॥ करअध्यास नरकदुखलहे ॥ ३१ ॥ गर्भवासलौंदुःखअशेश ॥ अभि निवेशतेहोंहिंखगेश ॥ ताँतेतनुदोनोतेन्यारो ॥ आत्माकोउरअँ

तरधारो॥ ३२॥ प्रकृतिपरेतौंकोउरमान॥त्यागेदेहादिकअभिमान ॥ आतमज्ञानवानजगजोई॥ जाग्रनआदितजेजनसोई ॥३३॥ सत्यज्ञानपुनशुद्धस्वरूप॥ वुद्धशांतघनआनंदरूप॥ चित्स्वरूपआतमजोजाने॥ मोहाज्ञानहोंहिंसभहाने ॥ ३४॥ देहरहेअथवापुनजाई॥ योगीकोदुखहोइनराई ॥ सुखदुखसभप्रारब्धाधीन॥योगीभयोपरमपदलीन॥ ३५॥ तांतैंहैप्रारब्धसुजौलौं॥ देहसहितखगरह्मोसुतौलौं॥ सुखसेतींधीरजउरधारो॥सर्पकुंचसमदेहनिहारो॥३६॥ औरकहोंसुनियोंखगसोई॥ जाँमैंतेरोअतिहितहोई ॥ त्रेतायुगमैंश्रीनारायण ॥ आवेंगेदशरथकेआयन ॥ ३७ ॥ दाशरथीवहुरामकहाँवें ॥ रावणकेवधहितवनआँवें ॥ सीतानामनारिलैसाथ ॥ लक्ष्मणभ्रातसहितरघुनाथ॥ ३८ ॥भ्रातजाँहिंगेविपनमझारी॥आश्रमरहिंसीजनककुमारी ॥ तस्करजिमरावणचोराई॥ लंकामैंराखेगोजाई ॥३९॥ कपिसुकंठकीआइसमानी॥ ढूँढेंगेताँकपिवलवानी॥ आवहिंगेवहुजलधिकिनारे कारणवशसंगमिलैंतिहारे ॥ ४० ॥ तवसीताकीस्थितीसुजोई॥ तुमतिनप्रनिभाखीजोसोई ॥ तवतेरेनूतनपरहोई ॥ पुनउपजेंसंशयनहिकोई ॥४१॥ ॥ **संपातिरुवाच** ॥ **सवैया**॥ ॥ चंद्रमुनीश्वरमोहिसुबोधकयौंइहभाँतिदयाउरधारी ॥ कोमलमेपरएहुनवीनभएतुमवानरलेहुनिहारी ॥ जावतहोंशमहोइतुमेयहिसाचुपिखोंसुविदेहकुमारी ॥ वैठविचारकरोसगलोजिंहँभाँतिपरोतुमसागरपारी ॥ ४२ ॥ जिंहँनामभजेजगसिंधु

तरेंखलपावतहैंपदरामसुरारे ॥ तुमतौंजगनाथकिदूतभएअ तिसेवकरामकिनीतपियारे ॥ तुमकिंवलधारतनामनमैल घुनीरधकिंनहिंपावतपारे ॥ इहभाँतिवखानगएनभमैजन कातमजासगलीकहिसारे ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामा यणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **सवैया** ॥ खगराजगएनभमंडल मैहरषेकपिपुंगवतौमनमाँहीं ॥ उतसाढुवक्योसियदेखनको तटनीरधबोलउठेमुखमाँहीं ॥ झषमीनतिमिंगिलपूररह्योजि हँपेखतजीवडरेतटमाँहीं ॥ जनुआहिअकाशगंभीरवडोकपि पैठसकेनहिंकोतिहँमाँहीं ॥ १ ॥ आपसमैकपिदेखतबैकिंहँभाँ तितरेंमुखकीनउचारे ॥ अंगदबोलउठेतबहीकपिआजसुनो तुमवाक्यहमारे ॥ होवलवंतसभेकपिवीरमहाँकृतविक्रमआँ हिंतुमारे ॥ कौनकरेरघुवीरकुकारजजाइउलंघसुसागरपा रे ॥ २ ॥ **शंकरछंद** ॥ सुग्रीवआइसपालकैइनवानरनदे प्रान ॥ उठमोहिआगेहोइठाढोजोअहेबलवान ॥ वहुवानरन केप्राणराखेरामकपिसिरदार ॥ [illegible] हिंवीचविचार ॥ ३ ॥ इहभाँतिअंगदबोलसुनकपिरहेमौनसुहो इ ॥ मुखहेरहैंतेपरस्परनहिंबोलहैकपिकोइ ॥ तवपुनः [illegible] चनकहिंदवानरनसनमान ॥ सुग्रीवकारयसिद्धहितवलकरो मोहिवखान ॥ ४ [illegible] युवराजकेयहवाक्यसुनबललगेकरनवखान ॥ दशवीशऔपु नतीशचालीकहेंएकपचास ॥ पुनसाठसत्तरयोजनाकपिएकक

रहिंप्रकाश ॥ ५॥ अश्शीतनव्वेयोजनाकपिकहेंनिजवलसार ॥ सुनजांम्रवानभलूकनायककीनएह्रुउचार ॥ सौयोजनाते न्यूनमैकछुजाउँवानरछाल॥जवभएपूर्वसुवामनातवकरेकर मविशाल॥ ६ ॥ वलिभूमिमापीपादत्रयक्षणरहेहरिठहिराइ ॥ एकीशवारसुभूमिफिरमैदईडिंडिमवाइ॥अवभयोवूढोशक्ति नाकिहँभाँतिलाँघोंवारि॥अंगदवखान्योवाहुवलमैजाउँजल निधिपार॥७॥फिरआवनेकीशक्तिहोइनहोइगतिकरतार ॥ सुनवाततांकीजांववानसुआपकीनउचार ॥ यद्यपिसमर्थसुतूँ अहेंतवभेजनोनहिसार ॥ वलवानसुंदरवालिकोसुतसैन्यको सिरदार ॥८॥ अंगदउवाच ॥शंकरछंद ॥ जवभेजनोन हिमोहुकोभीलेहुदर्भविछाइ ॥ नहिंकार्यकीनोकिनेजीवनत जेंप्राणचढाइ॥तवजांववानसुकह्योवहुसुतदेउँतोहिदिखाइ॥ सोकरेकार्यअनूपअतिवलिदेहितांहिंपठाइ ॥९॥ इहभाँतिभाषभलूकपतिसुवुलाइकहिहनुमान॥सुतकाहिमौनीतूँभयोयहि आहिकाजमहान॥वलिअज्ञजिमनहिंमौनधारोवलदिखावो आप॥ वलवंतवायुकुमारत्वंपुनवायुतुल्यप्रताप॥ १० ॥श्री रामकार्यसुहेतत्वंमहताजन्योमहवीर ॥ सुनजन्मकालनिहार भानूउदयजिउँमुखकीर॥फलपक्कजानसुखानहितत्वंगयोगग नमझार॥अतिवालयोजनपंचशतपुनगिर्योत्वंधरभार॥११॥ तेदेहकोवलकौनभापेवर्णियोनहिंजाइ॥उठरामकार्यसुकीजि येहमलेहुआजवचाइ ॥ तवजांम्रवंतसुवाक्यसुनहनुमानहर्ष अखंड॥अतिसिंहनादसुकीनइमजनुफोडहैब्रह्मंड॥१२॥गिरि

केसमानसुहोगयोजनुवढीवामनदहे ॥ हनुमानवोलिवानरोत्त
मसुनोमेवचएह॥ मैलंघजलनिधिपारलंकाभस्मछारउडाइ
लैआँउँसीतारामकीकुलसंगरावणघाइं॥१३॥ वावाँधरावण
जेवरीगलधारवाँवेहाथ॥ गिरिसहितपुरीउठाइकैतहँधरोंजहँ
रघुनाथ॥ वादेखआँवोंजानकीजिहँहेतुभेजेराम॥ सुनवाक्य
व ेरि ि ेर ँ १४॥ सुतदेखआवोजानकी
कल्यानतेरीचाँहिं ॥ वहुजीवतीहैलोकमैवाजीवतीहीनाँहिं ॥
पुनरामसोंमिलभुजाकोवलकीजियेरणवीर॥ अवजाहि
ल्यानखेमैवेगपूतसमीर॥१५॥ तुज व पु
छेहोइ॥ आशीरदैकपिमौरभेज्योविघ्नहोइनकोइ॥सुमहेंद्रगि
रिकेशीशचढकपिभयोअद्भुतरूप॥नगइंद्रसोतनसोभयोपुनहे
मवर्णअनूप॥ १६॥ मुखलालजिउँफलविंवकोभुजतुल्यजि
मअहिशेष ॥ इहभाँतिभयोसुवायुसुततिहँपिखेंभूतअशेष
सुनउमासीतासारहितकपिभएरूपविशाल॥
तिलकींतिहँक्षणअंजनीकेवाल ॥ १७ ॥ ॥ **चौपाई** ॥
थाकांडकिष्किंधाजोई ॥ कहीगुलाबसिंहसभसोई ॥ याँको
पढेजुप्रेमलगाइ ॥ रामभक्तिउपजेउरआइ ॥ १८ ॥ इति
श्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेनव
मोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ इतिश्रीकिष्किंधाकांडम्समाप्तः ॥

श्री
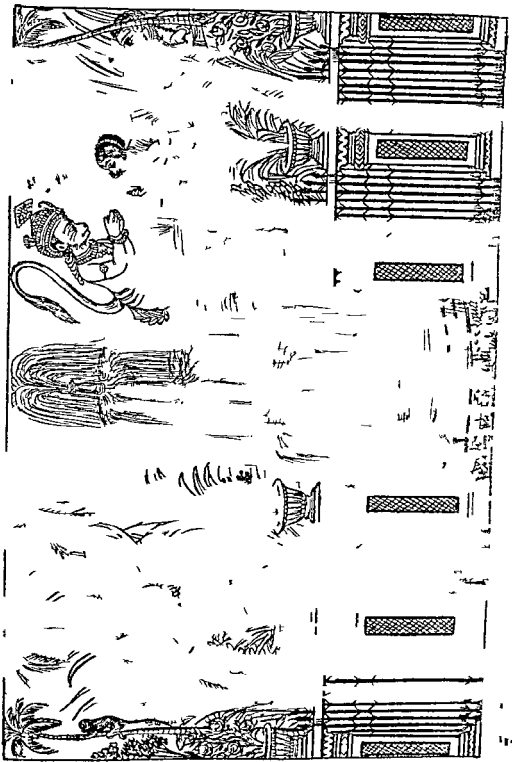
श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ सुंदरकांड प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दोहा ॥ सीताशोधीलंकमेरावण नगरजराइ ॥ जाँहिंसुनायोआइहरिताँहिंनमोरघुराइ ॥ १ ॥ ॥ सवैया ॥ मकराउरगाजिहँमाँहिंघनेशतयोजनहैजिहँको सुविथारा ॥ जलसागरलाँघनचाहितहैगिरिजाकपिवीर सुवायुकुमारा ॥ रघुवीरकुध्यानधर्योउरमैहनुमानतबैइहवा क्यउचारा ॥ सभवानरनैननआजपिखैंनभभीतरवेगसुगौन हमारा॥ २॥ ॥ कवित ॥ अमोघरामवानकेसमानमैगगन जाँउँचाहिमनऐसीसीयअबहीनिहारीये ॥ होवोंगोकृता रथसुपेखपदसीताजूकेकरोंकाजवेगनहिंढीलसुविचारीये ॥ प्राणअंतनामएकवारहीउचारजिनतरैनरनारिभवसागरअं पारीये॥तिनहींकोदूतमोहिमुद्रिकाउतारदईरामउरधारक्युंन तरोंतुच्छवारीये ॥ ३ ॥ सवैया ॥ ॥ इहभाँतिवखानजबैह नुमानपसारभुजाअतिपुंछवढाई ॥ रिजुकंधरढीठअकाशध रीपदआपसमैयुगलीननिलाई ॥ दिगदक्षणकूदअकाशच

ढवलवायुसमानभयोअधिकाई ॥ गतिदेवनिहारभएविसमै कपिकुंजरकीगणनाइकमाई ॥ ४ ॥ जबजावतवायुसमान पिख्योकपिदेवनतौमनएहुविचारी॥मतियाँहिंपरीक्षणआज करेंसुरमंडलयौंमुखमाँहिंउचारी ॥ बलवंतमहाकपिजावत एसुसदागतकेसमहैबलकारी ॥ गढलंकप्रवेशकिलाइकहैकि नहींइहजाननचाहिहमारी ॥ ५ ॥ इहभाँतिविचारसुनागन कीजननीसुरसाजिंहँभाखतनामा ॥ सुरकौतिकवंतकह्योति हँकोसुनमातकरोतुमएहुसुकामा ॥ विघनाकरियेपथिजाइ अवैकपिजावनएहुहनूमतनामा ॥ वलबुद्धिनिहारसुयाँक पिकीफिरआउतुराकरआपनधामा ॥ ६ ॥ शंकरछंद ॥ इ हवाक्यसुनकैवेगदौरीविघ्नहितहनुमान ॥ तवरोकमारगकी शकोमुखएहुकीनवखान ॥ मतिवंतत्वंमुखमाहिंमेरेपरोभा खोंतोहि॥भलदेवतारचभक्षदीनोक्षुधालागीमोहि॥७॥हनुमा नभाख्योमातमैअबरामकार्यसुजाँउँ॥जाजानकीकीसारमैग ढलंकतेपुनल्यांउँ ॥ सियकुशलरामवखानकैसभसारताँहिंसु नाइ॥पदवंदनाअवभापहोंफिरिपरोंगोमुखआइ॥८॥सुरसा सुसुनकैवाक्ययोंपुनकीनआपवखाँन ॥ कहँजाँहितूंकरवं चनामेआहिभूखमहाँन ॥ सुप्रवेशकरमुखजाहितूंनहिंखाँउं गीवलधार ॥ सुनवोलियोहनुमानमातालेहुवदनपसार ॥ ॥ ९ ॥ सुप्रवेशमुखकेमाँहिंकरमैजाँउकाँममहान ॥ इमभाप योजनदोइकोतनुकीनतवहनुमान ॥ सुरसासुयोजनपंच कोमुखकीनहनुमतपेख ॥ दशयोजनाहनुमानरूपसुकियो

आपविशेप॥ १०॥ मुखविंशयोजनकोकियोसुरसासुनागन मात॥द्वतत्रिंशयोजनकेभएहनुमानतवविख्यात॥ पंचाशयो जनकोजवैसुरसासुमुखविस्तार ॥ हनुमानतवपुनहोगयोअं गुष्टसोआकार॥११॥सुप्रवेशकरमुखनिकसियोपुनखडोआ गेआइ॥सुप्रवेशकरमुखनिकसिओमैमातलागोंपाइ॥ इहभाँ तिभापतवायुसुतपिखताँहिंकीनउचार॥सुतयाहिरामसुकार्य करतेआहिवुद्धिउदार॥१२॥ देवनपठीमैतातवलदेखनेके काज ॥ वलिहारिसीयनिहारकैपुनदेखहैंरघुराज ॥ तवग ईदेवसुलोकमैइमभाषनागनमात॥ पुनहनूमानखगेशजिम उडगयोमारगवात ॥ १३ ॥ मैनाकगिरिमणिकांचनेभोकी नजलधिउचार ॥ भलजातहैवलवंतएहुसुपेखपवनकुमार ॥ श्रीरामकार्यसुहेतजावेकरोताँहिंसहाइ॥श्रीसगरपूतनमैवधा योनामसागरपाइ ॥१४॥ अवभएतिनकेवंशमैयहिरामदश रथपूत ॥ तिंहिकाजहितहनुमानजावेवलीजिमपुरहूत ॥अ ववेगजलतेउठोभलविश्रामकरयहिजाइ ॥ जलमध्यतेनग निकसतववहुशिखररूपवनाइ॥१५॥ मणिशृंगशोभेताँहिंके पुनआपधारअकार॥मैनाकतवहनुमानकोमुखएहुकीनउचा र ॥ मैनाकमेजलनाथभेज्योतेविश्रामसुकाज॥शुभसुधासे फलपक्वयहितुमखाइजावोआज ॥ १६ ॥ विश्रामकिंचित कीजीयेपुनजाहुसुखीपधार ॥ हनुमानसुनकरवाक्यताँकिए हुकीनउचार ॥ किंहँभाँतिभोजनमैकरोंनगजाँउँरामसुका ज ॥ विश्रामकोनहिकालमोकोवेगजाणोआज॥ १७॥ इह

भाँतिभापछुहाइगिरशिरहाथपवनकुमार ॥ कछुदूरआगेजौ
गयोनिहँभयोविघ्नअपार ॥ याराकुमातासिंहिकातिंहँगहीताँ
कीछाहि ॥ साघोररूपाराक्षसीजलमध्यवासाआहि ॥ १८॥
आकाशगामीछायगहिपुनलएताँकोखाइ ॥ तिहँग्रस्तहनुमत
चिंतउपजीयहिभयोअवकाइ ॥ किनवेगमेरोरोकियोयहिवि
घ्नकारीकोइ ॥ मेविस्मयंअतिहेदईनहिदेखियेअवसोइ॥ १९॥
इहचिंतकरहनुमाननीचेनीरदृष्टिपसार ॥ वहिघोररूपासिंहि
काजलमाँहिंलईनिहार॥ कपिवेगदौरसुनीरमैहतपादप्राणनि
कार ॥ दिगदक्षिणापुनकूदकैकपिगयोगगनमझार ॥ २० ॥
तवदक्षकूलसमुद्रकेपुनपरोहनुमतजाइ ॥ बहुभाँतिपक्षिसु
बोलहींद्रुमरहेपर्वतछाइ ॥ फलभारसोंतरुभूमिलटकेलताफू
लअपार ॥ सुत्रिकूटगिरिकेशिखरमैपुनपिख्योनगरउदार
॥२१॥ प्राकारवहुविधशोभईअतिनमनपरिखाआँहिं ॥ अ
सलंकमैकिंहँभाँतिपैठोंचितिओमनमाँहिं ॥ रात्रिसूक्ष्मरूपक
रमैवरोंलंकमझार॥सुप्रवेशयाँमैकठिनहैरावणकरेप्रतिपार॥
॥ २२ ॥ इहभाँतिचिंतसुचीतमैतहँरह्योठाढोहोइ ॥ रविदुरेनि
शानिहारकैकपिचालिओपुनसोइ ॥ धररूपसूक्षमघोरपुरमै
वरेकपिवलवान ॥ तहँपुरीलंकाराक्षसीधरवेशथीदरवान॥
॥ २३ ॥ पेखीतिहँहनुमानकोअतिडाटकीनवखान ॥ तुमकौ
नवानररूपधरकरलंकनीअपमान ॥ क्याकरनकोउरचाहि
तोधसचोरजिउँपुररात ॥ इमभापनयनसुलालकीनेहनीकपि
कोलात ॥२४॥ हनुमानवज्रसमानमुष्टीवाममारीताँहिं ॥ झट

गिरीधरमैंश्रोणितोपुनवमैसोमुखमाँहिं ॥ उठलंकभाख्योताँ हिंकोहनुमंतकपिवलवान ॥ निपपापलंकातैंजितीअघजाहि तेकल्यान ॥ २५ ॥| विधिमोहिभाष्योपूर्वहीयुगजाँहिंजौचौ वीश ॥ त्रेतायुगेअजनंदकेघररामव्हैजगदीश ॥श्रीयोगमा याजानकीवहुजनकभौनमझार ॥ सुनवेनतीमैंहैकरीवहुलेइ गोअवतार ॥ २६ ॥ भूभारहारणकाजहरिसहभ्रातऔसह नारि॥ प्रभुभक्तवत्सलजाँहिंगेवहुरामविपनमझार ॥ हरल्या इसियदशकंधरोवनकपटवेषअनीत ॥ पुनरामऔसुग्री वहुइहैंसखानिर्मलचीत ॥ २७ ॥ सियशोधकोकपिभेजहै सुग्रीवबुद्धिप्रकाश ॥ तिनमाँहिंवानरएकनिशिकोआइगोत वपास ॥ तूँडाटहैंतवताँहिंकोवहुकरेमुष्टिप्रहार ॥ दुखहोइगो तेतनविपेमुखजाइलोहूधार ॥२८॥ रावणतदाध्रुवमारियेवि नशंकतूँडरधार ॥ तुमजितीलंकापुरीताँतेजितेसर्वविचार ॥ दशकंधअंतःपुरीमैंइकक्रीडकाननआहि ॥ तिहँबीचआहि अशोकवनिकादिव्यपादपजाँहिं ॥ २९ ॥ तिहँबीचएकसुशिं शपातरुआहिरूपउदार ॥ तिहँतरेजनककुमारिकाढिगराक्ष सीरखवार ॥ तिहँपेखवेगसुजाइकैकहुरामकोसभसार ॥ इ मभापगिरिजालंकनीमुखफेरकीनउचार ॥ ३० ॥ ॥ **दोहा** ॥ धन्याहंचिरकालतेअघस्मृतिभईराम ॥ जाँतेभववंधनमिटैं लहेरामकोधाम ॥ ३१ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ रामभक्तकोसंगम जोई ॥ दुर्लभभयोआजमुहिसोई ॥ दाशरथीरघुवरश्रीरा म ॥ सदाप्रसन्नरहेहृददिधाम ॥ ३२ ॥ ॥ **सवैया** ॥ तटसा

गरनेजबपौनकुमारसुकृदचल्योनभमाँहिंभवानी ॥ अवनीदुहिताअरुरावणकेद्रिगवामभुजातवहीफरकानी ॥रघुवंशशिरोमणिकीभुजदक्षणताँहिंसमैफरकोइरपानी ॥ इहभाँतिधसेगढलंकहनूकविसिंहगुलाबसुकीनवखानी ॥ ३३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणउमामहेश्वरसंवादेसुंदरकांडेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥श्रीमहादेवउवाच ॥ शंकरछंद ॥ तवअंजनीकेपूतरात्रीवरेलंकमझार ॥ भलफिरनलागोनगरमैधरसूक्ष्मोआकार॥ पुनसीयशोधनकाजसोकपिधस्योभूपनिवेश॥नहिंपिखीतिनतहँजानकीतिनपिखेघरसभदेश ॥१॥ पुनलंकनीकेवचनचिंततगयोवनहिंअशोक ॥ अतिजाँहिंशोभापेखकैवनलजैंजेसुरलोक ॥ शुभदेवतावनवृक्षलागेरत्नकीसोपान ॥ मृगबालजाँमैखेलहैंपुनकरेंपक्षीगान॥२॥प्रासादजाँमैंहेमकेधरलटेफलसोंडाल ॥भलसुधाकेरसजाँहिंसिंचैंदेवताअलवाल॥तहँजानकीकोढूढईतरुतरुविपेहनुमान ॥ घनलीढमंदिरचैतकोअतिजाँहिरूपमहान ॥३ ॥ तिहँदेखविस्मयहोरह्योमणिथंभजाँहिंहजार॥तिहँदेखआगेगयोकिंचितपौनकोसुकुमार॥तबहेरियोतरुशिंशपाअतिनिबिडजाँछिदछेम॥आतपदिखाईदेतनहिंखगवनेवर्णसुहेम॥४॥तरुतलेजनककुमारिकाढिगराक्षसीभयकार॥हनुमानदेखीभूतलेजनुदेवताअवतार॥ शिरएकबेणीदूवरीपटरहीमलनसुधार॥मधभूमसोईशोचतीमुखरामरामउचार ॥५॥ न्नातानकोईपावतीउपवासदूबरिदेह ॥ पिखताँहिकोहनुमानभाख्योजानकीहैएह ॥कृतकृत्ययाँजगमैभ

योश्रीजानकीपिखआज ॥ परमातमारघुवीरकेमैकरेआइस्र काज॥८॥पुनकिलकिलाअसशब्दह [illegible] शब्दचकितसुलीनतरुछदभयोवायुकुमार ॥ दशकंठआवतदे खिओवहुलीनसंगसुनारि ॥भुजविंशदशमुखशोभईतनुस्या मनीलपहार ॥७॥तिहँपेखकपिविस्मयभयोदुर्गयोपातनमाँहिं ॥ गिरिजासुनोदशकंठरावणयोंचितमनमाँहिं ॥ किहँभाँति राघवहाथतेमैमरोंयाँजगमाँहिं ॥ कोभयोकारणरामजोहि तसीयआयोनाँहिं ॥८॥ इहभाँतचीनचिताएईदिनरात्रिराव णसोइ ॥ दिनताँहिंअंत्यमरात्रिमैइहस्वपनभीतरजोइ ॥ क पिदूतरामहिंपठ्योहैगढलंकमैवहुआइ ॥ तरुबैठसीतहिंपेखई वहुतनकदेहवनाइ ॥ ९ ॥ इहभाँतिअद्भुतस्वप्नपिखतिहँचि तयोंमनमाँहिं ॥ मतहोइस्वपनोसाचयहअवयोंकरोंमैताँहिं॥ शितवाक्यशरसियफोरकैतिहँकरोंदुखीशरीर ॥ कपिपेखभा खेरामकोइमआइहैरघुवीर॥१०॥तवगयोसीयसमीपयाँवि धिचीतमाँहिंविचार ॥ ध्वनिकिंकिणीकीसुनीसीतानूपरनझ नकार॥अतिलीनहोईसीयनिजतनुभईउरमैभीत॥भरनयननी चेमुखकर्योअरुरामअप्योंचीत॥११॥दशकंधसीताहेरकैपुन एहुकीनवखान॥मुहिपेखसुभ्रूवृथात्वंकिंभईहैभयमान ॥ स हभ्रातरामवसेवनेवहुवानरनकेमाहि॥तिँहँकदाकेचितदेखहैं कवनजरआवेनाँहिं॥१२॥मैवहुतभेजेचारियापुनरामदेखन काज॥यहुयलकरतिनपेखिओनहिपेखियेजगआज॥कैगएन गरअयोध्यप्रतिकैमरेहैंविपखाइ॥सुनजानकीमैभेजचारेल

इखवरमंगाइ ॥ १३ ॥ क्याकरहिंगीतूँरामकरनाहिंतोहिचाहे राम॥तुहिसुदादीनअलिंगनापुनवसेतेरेधाम॥हैदृदयनाहिंस्ने हताँकोतेविषेसुनसीय॥मैसाचभाखोंजानकीकिहँकाजअैसे पीय॥१४॥तवरचेभोगसुभोगईपुनजानतोगुनतोहि॥शुकृत घ्ननिर्गुणअधमहैनहिंकरततोमैमोह ॥ मैतोहिल्यायोलंकमैतूं शोकव्याकुलआँहिं॥ अवलौनआयोरामसुंदरिजोरनाँहींताँ हिं॥१५॥निस्सत्वनिरममूढमानीकहेपंडितआप॥हैनराधम तोहितेंअतिविमुखमाइनबाप॥क्याकरेंगीतिहँसंगभामिनिरा मनागुनवान॥सुगुलावसिंहसुतीनछंदनलखेयशभगवान ॥ ॥१६॥ भजमोहितोकोंचाहितोमैराक्षसनशिरदार॥गंधर्वदेव सुनागकिंनरयक्षकीवहुनारि॥शिरदारतिनकीहोंहिंगीजवभ जेंमोहिपियारि॥सुनवचनरावणजोकहेसियजगेक्रोधअपार ॥ १७ ॥ त्रिणओटकरमुखभूमिसनमुखलगीकरनवखान ॥ खलभेपलीनअतीतकातुहिरामतेडरमान ॥रेरामजववनमैग एपुनगएलक्ष्मणभ्रात ॥ ममद्वारितंडुलयाचनातैनेकरीवि ख्यान ॥ १८ ॥ जिमश्वानपूतसुआहुतीखलहरेयज्ञनमाँ हिं ॥ तिमनीचमेहरल्याइत्वंअवपाइगोफलताँहिं ॥ शररा मछातीफोडतेरीपठैगेयमधाम ॥ धिक्जानहैंतवनीचरावण मनुजहैंश्रीराम ॥ १९ ॥ शरवाँधपंजरशोषसागरभ्रातल क्ष्मणलार ॥ तवपेखहैंरणमारणेतवआँइंगेवलधार ॥ गढ सैन्यवाहनपूतसहतुहिमारकैसंग्राम॥ भलिभातश्रीरघुवीरले केजाँहिंगेमुहिधाम ॥ २० ॥ सुनसीयवाक्यकठोररावणको

१ साध

धलीनोधार॥सियमारनेकोआइयोखलखड्गहाथउभार ॥ आरक्तनयननिहारकैमंदोदरीगहिहाथ ॥ पतिभलाचाहिनिवारिओइहयोग्यनाँहींनाथ॥२१॥यहिमानुषीअतिदीनदुःखितकृपणकृष्यशरीर॥पतिछाडदीजेयाँहिंकोनहिमारिचेरणधीर॥गंधर्वदेवसुनागकीपरमाँहिंतेरनारि ॥ मदमत्तजाँहिंविलोचनावहुचहैंतुह्मिभरतार॥२२॥ बोल्योसुतबदशकंठरावणराक्षसीभयकार॥जिहँभाँतिमेवशहोइसीताकरोसोइप्रकार॥डरदेहुवेगसुयाँहिंकोपुनदेहुआदरमान॥दोमासहीकेबीचहीजवकरमोसनमान ॥२३॥ तवसर्वसूखसमेतलंकाराजभोगेसोइ ॥ दोमासजाँहिंवितीतजौनहिमानहैयहिकोइ ॥ तवकरोप्रातअहारमेराजानकीकोमार ॥ इमभापस्वस्त्रीसंगलैपुनगयोभौनमझार ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवसभआईराक्षसीसीयनिकटभयकारि ॥ दीरघहाथनिकारकैडाटतकरतउचार ॥ ॥२५॥ ॥ शंकरछंद ॥ इककहेसीतेव्यथायौवनगयोतोहिविशाल ॥ मिलसंगरावणसफलकीजेजावतोहैकाल ॥ इककहेऔरसुकोपकरकिंतोहिलाईवार॥क्रुतजानकीकोखंडखंडसुडारियेअवमार ॥ २६॥ इकऔरसीतामारणेहितलैउठीतरवार ॥ इकदेतिगारींऔरआईखानवदनपसार ॥ इहभाँतिसियडरपाँवहींतहँराक्षसीविकराल॥त्रिजटासुताँहिंनिहारकैपुनकहेवाक्यविशाल॥२७॥तुमसुनोदुष्टाराक्षसीममवाक्यतुमहितकाम ॥ भयदेहुनाहीजानकीतुमकरोचरणप्रणाम॥ अबस्वप्नआयोमोहिकोमैपिखेराममुरारि ॥शुभनयनपंकजसेखि

रेऐरावतेंअसवार ॥ २८॥ लक्ष्मणसमीपसुशोभईगढलंक
दयोजलाइ॥ संग्रामरावणमारिओबहुबाणछातीघाइ॥आ
रोपसीताअंकबैठेरामशिखरपहार॥ रावणदिगंवरतेलमलव
हुन्हाइगोवरतार॥ २९ ॥सभपुत्रपौत्रनसंगलैनरवदनकीक
रमाल ॥ इहभाँतिपेखेलंकपतिअवआइओतिहँकाल ॥ बैठो
विभीपणरामकीढिगहर्षचीतवढाइ ॥ सेवाकरेपदरामकी
अतिप्रेमह्रदयलगाइ॥३०॥कुलसंगरावणमारहैंवहुरामहरि
अवतार॥देराजलंकविभीपणपुनजानकीलैलार॥मनुराजधा
नीजाँहिंगेनिजअंकसीताधार॥घनश्यामनैनसुकंजसेतनुमा
धुरीआगार॥३१॥यहिवाक्यत्रिजटाकेसुसुनसभराक्षसीडर
कोन॥तबहोइचुपकीरहीसगलीभईनिद्रालीन॥अतिराक्षसिन
करडरीसीताचीतव्याकुलहोइ ॥ रुषमूरछातनमोभईनहिंपा
इरक्षककोइ॥३२॥भरनयनजलउरचिंततीपुनएहुकीनउचार
॥ सुप्रभातमेरोखाँहिंगीयहिराक्षसीतनमार ॥ सुउपाइकौन
सुमरणमेरोआजहीजगहोइ ॥ इमदुःखमग्नविमुक्तकंठा
जानकीचिररोइ ॥ ३३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ तरुकीशाखालं
वकरमरणोधार्योजीय ॥ मरणउपायहिमाद्रिजेजानेनाही
सीय ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवा
देसुंदरकांडेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥
शंकरछंद ॥ विनरामयाँहिंशरीरकोमैहनोपासीपाइ ॥क्या
जीवनेफलहोइवीचसुराक्षसनविलखाइ ॥ मेआहिवेणी
लाँवीयाकरफासिगलमैढार॥मैमरोंयाँविधिजानकीमतलई

उरमैधार ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हनूमानसियपेखगतिमन मैकीनविचार ॥ जाँहितआयोमैइहाँमेरफासिगलडार ॥ ॥ २ ॥ सनेंसनेतबबोलिओसीयबचावनकाज ॥ सीता काननजोपरेकथाकहीरघुराज ॥ ॥ ३ ॥ श्रीहनुमानउवाच ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ इक्ष्वाकुवंशेउपजिओइकभ पदशरथवीर॥पतिअयोध्याभाखिएवहुडुतोगुणीगहीर ॥ स मदेवपूतसुचारताँकेविदितजगतमझार॥अतिरूपसुंदरमदन सेवहुआँहिंगुननअधार॥ ४॥ श्रीरामलक्ष्मणभरतऔशत्रुघ्न चौथेआँहिं॥पितुमानआइसवडोरामसुआइओवनमाँहिं ॥ सुसीयनारिसुसंगलीनीऔरलक्ष्मणवीर ॥ वेवसेपंचवटी विपेशुभगौतमीकेतीर ॥ ५॥ पुनहरीजनककुमारियातहँदुष्ट रावणजाइ ॥ श्रीरामपुनलक्ष्मणगएवनएकलीकोपाइ॥सि यशोधराघवकरनलागेभयोदुःखअपार ॥ सुजटायुपक्षीरा जपेखपेरधरणमझार ॥ ६॥ तिंहँवेगसुरपुरभेजआएरिष्यमू कपहार ॥ सुग्रीवसोंपुनमित्रताहरिकरीभुजापसार ॥ ति ननारिहरतामारवालीरामकरीसहाइ ॥ सुग्रीवमीताहिंकाज कीनोशीशछत्रफिराइ ॥ ७ ॥ कपिबलीसगलबुलाइकरसु ग्रीववानरराज॥दिशिचारताँहिंपठाइदीनेसीयशोधनकाज॥ तिनमाँहिंमैसुग्रीवमंत्रीपहुचिओइहठौर॥ संपातिवचनउलं घसागरयोजनाशतदौर॥८॥ धसलंकसीतहिंढूढिओमैसग लघरनमझार॥पुनआयमध्यअशोकवनिकावचनलंकचिता र॥पिखशिंशपातरुतरवैठोवेटिआमिथिलेश ॥ श्रीरामकीपट

राणीआउरशोचपाइकलेश॥ ९॥ कृतकृत्यअवमैहोइओकर
काजराममुरारि ॥ इमभाखचुपकाहोइओकपिवुद्धिवंतउदा
र॥विस्मयभईउरमाँहिसीताकथासुनयहिकाँन॥क्यामोहिसु
न्योसुव्योममैयहिवायुकीनवखाँन ॥ १० ॥ वाभयोस्वप्नोमो
हिवामुहिभ्रांतिवासतआहि॥दुखनींदनाँहींस्वपनकैसेजानती
भ्रमनाँहिं॥किनकरणअंमृतडारिओयहिवचनमोहिसुनाइ॥
॥प्रियवचनभाषोशुभकृतीमैपिखोंआगेआइ॥११॥ दोहा॥
उमाजानकीवचनसुनहनुमतपवनकुमार ॥ शनैशनैतरुतेत
रेआएधरणिमझार॥१२॥ शंकरछंद ॥ गृहघटकसमआ
कारसीताखडोआगेआइ॥मुखलालसुंदरशोभईतनपीतवर
णसुहाइ ॥ अभिवंदसीताजोडदोकरखडोआगेआइ ॥ इह
अहैरावणदुरीसीतापेखउरशंकाइ ॥१३॥ मुहिमोहनेंहितआ
इओवनकपटकपिआकार॥ इहचिंतनीचेमुखकरेसियमौन
लीनीधार॥पुनवोलिओहनुमानमाताशंकनाकरकाइ ॥ मैं
नाहिंहोंतिहँभाँतकोतजशंकमोमैजोइ॥१४॥ श्रीरामकौसल
राजकोयहिदासमाताआहि॥मंत्रीअहोंसुग्रीवकोजोवानरन
कोनाह ॥ श्रीवायुकोमैपूतहोंजोआहिसभकेप्राँण॥सुनजान
कीहनुमानप्रतिपुनएहुकीनवखाँन ॥१५॥ वानरनअरुमान
वनकिहँभाँतिसंगतिहोइ ॥ तूँरामदासवखाँनहैंकिहँभाँतिजाँ
नोंसोइ॥ तवदूरठाँढेमारुतीपुनएहुकीनउचार॥श्रीरामसवरी
वाक्यआएरिष्यमूकपहार॥१६॥सुग्रीवथोतिहँपर्वतेतिहँपिखे
लक्ष्मणराम॥ढरमोहितहिंपठाइओतिनरिदेजाननकाम॥धर

ब्रह्मचारीरूपमैतहँगयोजहँरघुराइ ॥ तवजानतिनकोशुद्धउर मैलिएकंधउठाइ ॥ १७ ॥ सुग्रीवकेढिगआनकेमैसखादियेव नाइ॥ वालीहरीसुग्रीवजायायौंसुनीरघुराइ॥इकवाणवाली मारकेसुग्रीवदीनोराज ॥सुग्रीवलीनेवोलकपिसहवानरनशि रताज॥१८॥सभदिशाचालेकपिवलीतवशोधनेकेकाम॥तव चल्योमोपिखवोलसादरआपभाख्योराम॥हेपवननंदनकाज मेरोकरेंगोतूँधीर॥ मेकुशलभाखोजानकीकोसहितलक्ष्मणवी र॥१९॥मेमुद्रिकासुप्रतीतिहितलेजाहुदीजोसीय॥ममनामअ क्षरपेखकरसुप्रतीतिकरहैजीय ॥ इमभाषरामउतारअपनी दईमोकोछाप ॥ मैयत्नकरयहिल्याइदीनीदेखदेवीआप ॥ ॥ २० ॥ इमभाषगिरिजासुंदरीसियदईपवनकुमार ॥ कर जोरठाँढोहोइओपदवंदनातिहँधार ॥ तिहँपेखसीताचीतहर षीरामनामनिहार ॥ तवमुद्रिकाशिरधारसियहगजाइआनँ दवारि॥२१॥ ॥ **सवैया** ॥ कपितेंममप्रानन्दानदियोमति मानवडोतुमहैंजगमाँहीं ॥ तुमसेवकहोरघुवीरहिंकेअरुराम प्रतीतिकरेंतुममाँहीं ॥ नहिमेढिगकौनपठावतरामसुमानव नाँहिंइसोजगमाँहीं ॥ हनुमानपिखेममदूखमहाइहभाँतिसु भोगतमैजगमाँहीं ॥ २२ ॥ सभरामकिपासमुजाइकहोजि हँभाँतिदयाममऊपरधारे ॥ कपिसत्तमतोहिकुसाचकहोंयुग मासरहेंअवप्राणहमारे ॥ नहिंआवहिंगेजवरामवलीतवखा वहिगोमुहिराक्षसमारे॥ इहतेअववेगसुजाहिहनूतुमरामकि पासकहोसभसारे ॥ २३ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ वानरनायकसं

गलैकपिकीसैन्यमिलाइ॥रामचंद्ररणमेंभिरेंऊधमपरममचा
इ॥२४॥ सहपुत्रनसहसैन्यपुनरावणकोरणमार॥ मोहिछुडा
वहिंरामजवतौयशरामनुसार ॥ २५ ॥ ॥सवैया ॥ जिहँ
भाँतिछुडावहिंमेंहरिजीदशकंधरकोरणभीतरमारे॥सुतसुक्र
तवाक्यनआजलहोअववेगकरोवहुजाइपुकारे ॥हनुमानक
ह्योतवहीगिरिजातुममातसुनोयहिवाक्यहमारे ॥ मुहिदेख
तरामसुभ्रातसमाचढआवहिंगेकरआयुधधारे ॥ २६ ॥
कपिनायकऔतिनसैन्यलिएदशकंधरकोरणभीतरमारें ॥
तुमकोरघुवीरसुऔधपुरीसुलिजावहिंगेमतशंकविचारें ॥
कहिजानकिवेकपिसैननलैकिंहँभाँतितरेंसरितापनिवारे ॥ इ
हरामकुआवनआहिअसंभवयोंसुनकैहनुमानउचारे ॥२७॥
॥ **दोहा** ॥ मोहिस्कंधनमाँहिंचढलक्ष्मणरामसुहाँहिं ॥ सै
न्यसहितसुग्रीवपुनआवेनभकेमाँहिं ॥ २८ ॥ ॥ **सवैया** ॥
इहभाँतितरेंजलसागरकोअरुमारहिंगेगणराक्षससारे ॥ तु
मदेतकरेंसुसँग्रामवलीअवआइसदेचलहोंपयिभारे॥पिखरा
घवकोलक्ष्मंनसमाअववेगलिआवहुँपासतुमारे॥ जिहँभाँ
तिसुरामप्रतीतिकरेंअवआपदिजेकछुमोहिविचारे ॥ २९ ॥
कमलाद्रिगसीयविचारकियोमणिकेशनतेतिनआपनिकारी॥
इहजाँनतरामसुभ्रातसमाइहपेखपतीजहिंराममुरारी ॥ ग
हुप्राणनकेसमपालकरींमणिहैइहराघवकीअतिप्यारी ॥ इ
कऔरकहोंहनुमानसुनोसुसुनावहुजोभयोवीचपहारी ॥
॥ ३० ॥ **शंकरछंद** ॥ ॥ शुभचित्रकूटसुपर्वतेइककालभे

एकांत ॥ मेअंकशीशनिधायरघुवरसोइरहेनितांत ॥ ऐंद्र काकसुआइकरनखतुंढवारंवार ॥ मेपदांगुष्टसुलालपिखति नमांसजानविदार ॥३१॥ तवरामजागेनाथमेरपादमैव्रण पेख ॥ किनकीनयहिअपकारमेरोभयेकुपतविशेष ॥ इमभाप आगेपेखप्रभुइककाकहैविकराल ॥ बहुवारमेपददौरहैनखतुं डहेंतिहँलाल॥३२॥त्रिणएकरामसुकोपकरलैदिव्यअस्त्रसुजो र॥प्रज्वलतसोत्रिणरामलीलाकाकपरद्योछोर॥त्रिणपीठआ गेकाकहैसभदेवलोकनजाइ॥इंद्रब्रह्मावरुणऔशिवसकेनाँ हिंबचाइ॥३३॥हररामपदमैआगियोप्रभुरामदयासमुंद॥नि जशरणआयोहेरकैपुनकह्योराममुकुंद॥सुनअस्त्रआहिअमो घमेइकनयनदेकरयाहि ॥ सव्यदेकरगयोकाकसुपौरुपीइम आहि॥३४॥किहँहेतुमोहिविसारबैठरामचंद्रप्रवीन॥सुनजान कीकेवाक्यएहनुमानउत्तरदीन॥सुनदेविजौतुहिजीवतीइहठौ रजाँनैराम॥करभस्मलंकक्षणेकमैहनराक्षसनसंग्राम॥३५॥ सियकह्योराक्षससंगकैसेलरोगेतनुएह॥औरवानरहोहिंगेत वतुल्यतेलघुदेह॥तबसीयकेयहिवाक्यसुनगिरिजातबैहनुमा न॥ दिखलाइदीनोरूपनिजजोआहिपरममहान॥३६॥ स वैया॥गिरिमंदरमेरुसमानवडेगणराक्षसजाँवलतेडरपाए॥ हरखीसियपेखहनूमतकोकपिकुंजरकोयहिवाक्यअलाए॥तु महाबलवंतवडेजगमैतनुराक्षसपेखहिंलेहुलुकाए ॥ पथितै शमहोइसदाकपिकुंजरसारकहोसवरामहिंजाए ॥ ३७ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ तवदेखणेतपारणाममभूखउरमै

भारिया ॥ अबकरोंगोमधुफलोंकरजबहोइआइसुथारिया ॥ सियकह्योमेरीदृष्टिगोचरअलपफलकछुलोजिए ॥ मैपरी होंइनबंदमैकछुनाअखारोकीजिए॥३८॥ जबखाइकछुफल बंदसीताहनूमानपधारिओ ॥ कछुदूरआयोताँहितमनवी चएहुविचारिओ ॥ जगदूतआयोकाजकोवहुस्वामिकाज अदूपणो ॥ कछुऔरकरनहिंजायजौवहुअधमदूतनभूपणो ॥ ३९ ॥ कछुऔरकरपिखरावणंकछुवाततासोंकीजिये ॥ फिरजाउँराघवदेखनेहिततौकछूयशलीजिये ॥ इमधारम नमैफरआयोलग्योवृक्षउपारने ॥ सुअशोकवनमैशोकडा योंलगोराक्षसमारने ॥ ४० ॥ तरुसीयछायाछाडकैस भऔरवनसुउपारिया ॥ वनपाटतोकपिदेखकैढिगआइ राक्षसनारिया ॥ श्रीजानकीकोपूछहैंकपिकौनउद्धटहैवरे ॥ सियकह्योतुमहीजानहोछलनीचराक्षसजोकरे ॥ ४१ ॥ मै दुःखशोकसमाकुलाकछुसारनाँहींपावती ॥ योंसुनतराक्षस नारितेसभभागीयाँडरपावती ॥ हनुमानकीनोकर्मजोति नजाइभाष्योरावणे॥सुनदेवआयोकोवलीकपिरूपताँडरपा वणे॥ ४२ ॥सियसाथतिनकरवारतासुअशोकवनीउपारीया ॥ प्रासादचैतसुतोरिओकपिआहिअतिबलकारीया॥ प्रासा दपालकमारकैनिर्भीतबैठोहैतहाँ॥ सोसुनतरावणकोपउठ्यो सुकह्योसेवकहैंकहाँ॥४३॥शंकरछंद॥दशलक्षकिंकरभेजि ओदशकंठराक्षसराज॥हनुमानमहलउखारबैठोवैररावणसा ज ॥ कृतलोहथंभसुआयुधंतनुआहिगिरिआकार॥सुहलाइ

वैठलंगूलकोमुखलालनयनपसार ॥ ४४ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ जवैताँहिंदेखघनेशत्रुआए ॥ करेंसिंहनादंहनूताँसुनाए ॥ ०
माकिंकरनदेखयोंवायुवाला ॥ मनोसूरसोहेप्रतापीकराला
॥४५॥ सवैया ॥ रावणकिंकरकोपअएहनुमानहिंकोवहुशस्त्र
प्रहारे ॥ कोपभयोहनुमानवलीउठलोहकुथंभसुहाथसँभारे ॥
राक्षसयाँविधिताँहिहनेगजराजमतोजिममछरमारे॥ रावण
वातसुनीजवहीअतिक्रोधभयोतिंहँचीतमझारे ॥४६॥ पंचसि
दारसुऔरपठेहनुमानवहीपुनमारगिराए ॥ सातअमातनके
सुतरावणकोपभएउरआनपठाए ॥ पूर्वजिऊँहनुमानवहीरण
भीतरकोपभलीविधघाए ॥ मारुतनंदनमारसभैअरलोहकु
थंभसुहायफिराए ॥ ४७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पूरवठौरसुवैठपु
नऔरनकोपथिहेर ॥ अक्षकुमारसुआइओजनुयमआन्येघ
र ॥ ४८ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पेखहनूतिनकूदअकाशचढेकर
लोहकुथंभसँभारे ॥ फेरफिरनभमंडलतेकुपरावणकेसुतके
शिरमारे ॥ सैन्यहनीसगरीतिंहँकीकिनजाइकह्योसुअक्षैरण
मारे॥राक्षसराजसुकोपभरेमघवाजितकोयहिवाक्यउचारे॥
॥ ४९ ॥ सुतमैअवजाँउँतहाँरणमैंजिहँठौरअहेजिनमेसुत
मारे ॥ अवहीतिहँकोरणमाँहिंहनोंनहिंवाँधसुल्यावहुँभौन
मझारे ॥ मघवाजितवापकुआपकह्योउरकोसभशोकसुदेहु
निवारे ॥ ममजीवनकाहिनिमित्तसुनोइहदुःखितवाक्यसुआ
पउचारे ॥ ५० ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ सुब्रह्मपासडारवेग
वाँधताँहिंल्याइहों ॥ वखानइंद्रजीतयोंचलेंनवेरलाइहों ॥

गयोसुवायुपूतकेसमीपकोपरावणी ॥ निहारताँहनूसुथंभ लीनवाँहिद्राहिनी ॥ ५१ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ खगराजसमा नतवैहनुमानसुकूदअकाशचढ्योबलधारे॥ नभबीचफिरेइह भाँतिहनूमघवाजितताँहिंशिलीमुखमारे ॥ शरपाँचदएकपि केशिरमैपुनआनभलेरिदमाहिप्रहारे ॥ षटपादनमैइकपुंछह न्योमघवाजितकेहरिज्यौंललकारे ॥ ५२ ॥ तबकोपभयोहनु मानवलीनभमंडलमूसलहाथउभारे ॥ मघवाजितकोरथ औरतुरंगमसारथिताँक्षणभीतरमारे ॥ घननादवडीउरलाज भईकुपऔरभएरथमैअसवारे॥तिनबाँधलियोहनुमानउमा चतुराननफासकरेसतकारे ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रावण ढिगलेजानहितहनूचलाएबंध ॥ हर्षेपुरकेसगलजनविपति नजानेअंध ॥ ५४ ॥ कवित ॥ जाँहिंनामभजजगबंधन लौकिकतजकोटिरविभासुरसुरामपदपाएँहैं ॥ तिनहींकिपा दकंजधाररिदकंजहनुमानबलवाननाहिंफासकैफसाएँहैं ॥ सर्वबंधहीनरामसेवकप्रबीनबलभयोनहोक्षीणइहघातमैन आएँहैं ॥ रामबलधारीचहेंकथाविसतारीगढलंकनिजसेव कतेकौतकदिखाएँहैं ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमा महेश्वरसंवादेसुंदरकांडेतृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥ श्रीमहादेवउ वाच ॥ सवैया ॥ फासपरीगलआवतहैहनुमानमनोडरभौ ननिहारे ॥ देखनआवतताँहिंमहाजनमूठहनेसुतलाशिरमा रे॥ फासगईचतुराननकीक्षणसंगमकैवरतेसुनिहारे ॥ जान हनूलघुजेवरिजावतकारयगौरवमारसहारे ॥ १ ॥ जिहँठौरद

शाननमध्यसभामघवाजिततांहितहाँपहुचाए ॥ जिनवानर राक्षसमारदियेगलफासपरीसुपिखोकपिआए ॥ सुअमातन साथविचारभलेकछुलाइकदंडसुदेहुकराए॥ इहलौकिकवान रनाँहिंअहेमघवाजितभाषसुभौनसिधाए॥ २॥ ढिगआहिव जीरप्रहस्तवडोतिहँपेखसुरावणवाक्यअलाए ॥ सुप्रहस्तपुछो तुमयाँकपिकोइहठौरकहांकिंहँकारणआए॥ इहकौननिमित्त कहाँतिचलेकिनहैइहकोइहठौरपठाए॥ वनकाहिनिमित्तसुना शकरपुनकाहिनिमित्तसुराक्षसघाए॥ ३॥तबसादरताँहिंप्रहस्त कहेकपिकौनहितूंइहठौरपठाए॥मुखसाचकहोइहराजसभाडर नाहिंकरोहमदेहिंछुडाए॥ हरषेहनुमानसुनीबतियाँतवरावण ओरखरोमुखचाए॥ पिखरावणलोकत्रिकंटककोहनुमानतबै इहभाँतिसुनाए ॥४॥ पुण्यकथारघुनंदनकीकहनेहितरामचि तेमनमाँहीं ॥ सुनदेवनकेरिपुरामकुदूतसुमैहरिजीसभकेउर माँहीं ॥ जिनकीपतिनीनिजनाशनिमित्तसुलोहिहरीवनदंडक माँहीं ॥ जिमपावनआहुतिश्वानहरेकछुअंतरपाइसुयज्ञ नमाँहीं ॥ ५ ॥ सोरघुनाथसुग्रीवकिसाथमतंगधराधरमीत भएहैं॥ वालिनमारसुएकहिंवानसुग्रीवकिशीशहिंछत्रदएहैं॥ वानरराजबुलाइमहाँकपिकोटिपतीइकठौरकएहैं ॥ सानुज रामसमेतकपींद्रसुमाहिंप्रवर्षणकोपभएहैं॥ ६ ॥ सियशोध नकोकपिनाथबुलाइसुवानरदेशनदेशपठाए॥ तिनमैइकपौन कुमारहनूम्सियढूँढतहौंतुमरेपुरआए॥वनवारिजनैननिसीयपि खीकपितेवनपारसभैफलखाए॥शरचापलिएममारनकोव

हुआइपरतवराक्षसघाए ॥ ७ ॥ तनुरक्षणकेहितदैतहनेसभ
जीवनकोतनराजनप्यारे ॥ चतुराननफासुवाँधहमेंइहल्या
वनभेघननादतुम्हारे ॥ विधिकेवरमेछुहिफासगईदशकंठनही
अवलेहुविचार ॥ मिपवंधनकेइहठौरअयोहितभापनधीक
रुणारसभारे ॥ ८ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ वीचारराव
णलोकगतिपिखराक्षसीमतिनागहो ॥ संसारतेजोमोक्षकर
णीदेविमनिउरमैगहो ॥ विधिवंशउत्तमत्वंभयोविस्रवातेपितु
भानिये ॥ सुपुलस्तदादाआहितेसुकुवेरबांधवजानिये ॥ ९ ॥
सवैया ॥ तनुआतमवुद्धिनराक्षसहैंद्विजदेहसभैतुमरीजग
जाँने॥पुनआतमवुद्धिनराक्षसहैंघनआनंदत्वंइमवेदप्रमाने॥
तनुवुद्धिसुखादिकतोहिनहींसुविकारविहीनहिवेदवखाँने ॥
सुअज्ञानजनेभववंधनतेवहुझूठअहेगुणसापसमाने ॥ १० ॥
॥कवित॥कहोंरक्षराईतोहिविरूयानकाईसुविकारहेतुद्वैततव
रंचनाहिंठानिये॥सर्वठौरज्यौंआकाशलेपतउदासतनुमाहिति
मसूक्षमसुआपकोपछानिये ॥ देहअक्षप्राणतनआतमपछा
नसभभएवंधवानइहनीठउरआनिये ॥ अक्षरआनंदचिदकंद
अजआपपिखवंधनविहीनजनवेदकैवखानिये ॥ ११ ॥ भूमि
कोविकारतनुआतमनधारनहिप्राणनिजआतमसुपौनहैनि
हारिये॥अहंकारकोविकारमनआतमानिहारनाहिवुद्धिआत
माप्रकृतिजाउचारिये ॥ आतमाआनंदघननाहिंहैविकारअ
न्यदेहतेविलक्षणसुनीकेकैविचारिये ॥ विनोपाधिआत्तमानि
रंजनसुजानमनराक्षसकेगईजगवंधकोनिवारिये॥ १२॥सा

धनसुँबंधहानकरोंमैवखानअबसावधानहोइकैसुरावनसुनीजिये ॥ वुद्धिमलहरोतुमज्ञानउरधरोपुनयाँहिंकेनिमित्तसेवविष्णुजूकीकीजिये ॥ शुद्धतत्वज्ञाननिजआतमपछानपदपूर्णमहानअबपाइवेगलीजिये ॥ गौणीपरेरामअबभजिएसुकामतजभूलचूकगएअबवैरडारदीजिए ॥ १३ ॥ जोशरणपरेरामताँहिंसोंसनेहकरेजानकीकोपूजअबसंगताँहिंलीजिये॥ बाँधवमिलाइरामपाँइंपरोजाइनाथभूलचूकगएअबमोहिवखशीजिये ॥ लेहिंतेउवारवेतोदयावंतहैंउदाररामभगवंतममकस्योसोईकीजिए॥विनारामसेवकरकाहूँकेनकाजसरेकैसेभवसिंधुतरेदूखहींपईजिए ॥ १४ ॥ जौनसेवकरेंतोअज्ञानआगजरेंनिजआतमकेसाथतोहिआपवैरठानिओ॥आपकोलेजाहिंअधोअधनिजपापबद्धमोक्षकीनशंकाउरहोइमोहिजानिओ॥ अंम्रतसमानहनुमानजोवखानकरेसुनकैदशाननसुकोधउरमानिओ॥करेंद्रिगलालजनुपावककरालसुचबाइदंतमालहनुमानकोवखानिओ ॥ १५ ॥ कपिदुष्टमतितेरीतेंनलखीगतिमेरीनीचसुअभीतमोहिकैसैकवखानहैं ॥ कौनहैरेरामशुभग्रीवकोननामजानोंउभेमारडारोंतवमोहिबलजानहैं॥ तोहिकोसुमारपुनजानकीउतारशिररामलक्षमनहनोंकाहूँकीनकानहै॥ हनोंकपिराईजोईभएहैंसहाईबलवानरकीमारोंतवमोकोतूँपछानहैं ॥ १६ ॥ सुनकैलंकेशवानीकोपिओभवानीहनूमानताँहिंउपमासुपावककीदीजिए॥ रावणकरोरमेरेजोरकेसमाननाहिंरामचंद्रदासमैसुएहीजानलीजिए ॥ सुनहनूमान

वाककोपकैलंकेशइकराक्षसबुलाइकह्योवेगएहुकीजिए ॥ दैतसुतनारिसभलेहियोंनिहारअबयाँहिंकपिकुंजरकोखंडखंड कीजिए ॥ १७ ॥ आयुधउठाइपयौंदैतइकधाइतिंहेंदौरआप जाइसुविभीपणनिवारिओ ॥कीशअन्यराजकोनमारनउचितनाथराजनकोदूतयाँहिंबनेनाहिंमारिओ ॥ रामपासबात कौनकहैगोविख्यातजबरामकोपछानयहिदूतहीविदारिओ॥ वधकेसमानकछुआनहीविचारकरयाँहिंकेशरीरपरचिन्हबनेधारिओ ॥१८॥ पेखयॉशरीरशुभग्रीवरघुबीरकछुभुजाबल होइगोतुलैरतबआइकै॥सुनकेविभीषणकीवातलीनीमानतिनराक्षसनराजकह्योदैतनबुलाइकै ॥ वानरकोमानसुलंगूल मैमहानसदातॉहिंकेसुसाथदीजैपाटलपटाइकै ॥पुरिमैभ्रमाइपुंछपावकजराइपिखेंशाखाम्रगहालदिजतॉहिंपैपठाइकै ॥ १९ ॥ पुरपाटशाणताटरेशमीदुशालेसभपुंछसोंलपेटलाइ खाशगीविछावणे ॥ तेलसोंभिगाइदीएपुंछलपटाइकछुपावकजराइलगेदैतविगमावणे॥ जेवरमोंबाँधहनुमानवलवान खलचारचोरभाखेंलगेपुरिमैभ्रमावणे ॥ ढोलकोवजाइपीठईटकोचलाइशिरठींगाइकमारलगेगारीकोसुणावणे॥ २० ॥ वायुकोकुमारउमासहेशिरमारकछुमनमैविचारसोंईचलेगो दिखाइकै ॥ चांदपौरगएधाइबंधनछडाइहनुमानतनआप नोसुसूक्ष्मबनाइकै ॥ गिरिसोअकारकैउपारपुरद्वारलीयो लोहथंभहाथपयोंफेरकिलकाइकै ॥ द्रुतेरखवारेहनूमानस भमारपुनअंजनीकुमारराजभौनचढेधाइकै ॥ २१ ॥ कूद

१ पश्चिमद्वार

कूदकैअटारीहनूमानजारीकिलकारपुंछपावकसोंपुरकोंत्रजारहै ॥ पीछेपावकजराइआगेभागेपारखाइपरतोजराइसुमहाजनकोमारहै ॥ हाइसुतहाइपतिहाइमाइभाइबापराक्षसकीनारीयोंहिमालजापुकारहै ॥ भौनशिरचरेंतहाँपावकसोंजरेंफिरभूमिआइपरेंजनुदेवतापधारहै ॥ २२ ॥ औरपुरजायोंसभलोगनकोमार्योसुविभीपनकोजानघरएकहीउबारिओ ॥ कूदजलसिंधुपरपुंछकोडुबाइकरहोइसावधानहनूमानकिलकारिओ ॥ पौनआगमीताकरीविनतीसुसीताभएपावकसुसीतानलंगूलकपिजारिओ ॥ जाँहिंनामलेनहारपापनउत्तारसभतीनतापपावकतरतझटभारिओ ॥ २३ ॥ **दोहा** ॥ तिनरघुवरकोदूतयहिउत्तमपवनकुमार ॥ प्राकृतपावकताँहिंकिमसकेसुगिरिजाजार ॥ २४ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुंदरकांडचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित** ॥ सीयढिगजाइफेरशीशकोनिवाइहनुमानकह्योमाइमुहिआइसुदीजिए ॥ वेगतहाँजाऊँसमाचारसुसुनाऊँतोहिपिखेंरघुवीरअबईहाँहीअनीजीए ॥ ऐसेभापतीनसुप्रदक्षणावनाइदईकरकैप्रणामकह्योमातसुनलीजीए ॥ देवितकल्यानअबकरोंमैपयानरघुवीरकोलिआऊँनिजनैनसोंदिखीजिए ॥ १ ॥ लक्षमणसंगसुअनंगसेसुहाइरहेवानरकेराईकपिकोटिनमिलाइकै ॥ सुनकैसुबातसीयरहीबिलखाइजीयफेरतिनकह्योहनूमानकोसुनाइकै ॥ तूँतोअबजाँहिंसुखीहोंहिंपंथमाँहिंकपितोहिकोनिहार

दुखदियेथेभुलाइकै ॥ यांतिउपरांतअवजीवनोसुजातमेरो रामवातसुनेविनमरोंविपखाइकै ॥ २॥ झूलना ॥ कहोसौ म्यश्रीरामकोजाइकेजीपुरीलंकमैजानकीजीवतीहै॥दिनोथो डिओंमैतजेप्राणकोजोनहींखावतीनीरनापीवतीहै॥लिखेलो हकालेमवियोगतेजोघनेदुःखसोंजीवसंतावतीहै॥वहीजात हैदुःखकैसिंधुमैजोधरेधीरआलंवनापावतीहै॥३॥ चलेजाँदि नानाथसंकेततेजीभलेसूखसोंतीनआरण्यआए ॥ पिखेहेम कूरंगमैपापनीजोकहानाथकोआनलेवानधाए॥हतोहाविधे रक्षसौमित्रमोकोंपर्योवैनअभागतेकानमोरे ॥ पुनःसौम्यसे ताँहिकभ्रातकोजोवुरावोलमैतोरिओताँहिंओरे ॥४ ॥ नहीं चाहितीहेमकूरंगकोजौहनूमाननादौरतेनाथमेरे ॥ हुतीराम सामीपएजानकीजोहुतोकौनसामर्थजोमोहिहेरे ॥ कहोंजो डकैहाथसौमित्रसेतींकहोजानकीतोहिकोंनैकवारी ॥ क्षमा कीजियेमेवुरेवैनकीजोतुहींरामकोभ्रातमेसूखकारी ॥ ५ ॥ ॥ **हनुमानउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ जौमनहैइहभाँतिसु नोतवमोहिसकंधनमैचढलीजे ॥ रामकेसाथमिलाँउँतुमेक्ष णभीतरमातसुवेरनकीजे ॥ जौरुचिहोइचलोअवहीजवराम रिसेंतवमोवखशीजे ॥ सिंहगुलावकहेगिरिजापतिपारवती सियवाकसुनीजे ॥ ६ ॥ ॥ **सीतोवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ रामसुकाइसुसागरकोअथवाशरपंजरसेतुवनावें॥वानरसै न्यमिलाइसुआइकिरावणकेरणशीशउडावें ॥ फेरलिजाव हिंमेपुरिमैरघुवीरतबैजगमैयशपावें ॥ मैअवप्राणरखोंह

ठकैतुमवेगचलोपथिवेरनलाँवें ॥ ७॥ इहभाँतिचलेहनुमानत वैसियपादनमैअभिवंदनधारे॥गिरिकेशिरकूदचदेहनुमानसु जावनहेतमहोदधिपारे ॥ गिरितेकपिकूदअकाशचढेपदभा रधसेगिरिभूमिमझारे ॥ गिरियोजनतीशउचानद्रुतोभयोभू मिसमानहनूपदमारे ॥८॥सुतमारुतमारुतवेगअकाशचले मुखमैघनसोकिलकारे ॥ सुनकैउतवानरबोलउठेनभआव तहैयहिवायुकुमारे ॥ मुखगाजतऔहरपेउरमैपलवंगमयाँ विधिवैनउचारे ॥ किलकारनतेहमजानतहैंहनुमानअएकर कारजसारे ॥ ९ ॥ ॥कवित॥ ॥अंजनीकुमारयहिआव तनिहारलेहुऐसेकपिकहेंहनुमानझुकेआइकै ॥ ऊपरपहार जहाँवानरअपारखरेतहाँतिनआइएद्रुकह्योहैसुनाइकै ॥जा, नकीनिहारसुअशोकवनीपारसुतरावणकोमारपुरलंकमैज राइकै॥रावणसोंबातकरताँकोअभिमानहरफेरकूदआयोक छुहाथमैदिखाइकै ॥ १० ॥ चलेरघुराईकपिराईकेसमीपअ वहनूमानकह्योसभसमाचारपायोहै ॥ सुनकैसुकीशवात भएपुलकातसभअंजनीकुमारकोबनाइगललायोहै ॥ चूंवत लंगूलकेईफूलमननाचेंकेईकेईपुनभापेंकछुफलमूलखायोहै॥ मिलकैसुहनूमानचलेवलवानकपिरामशुभग्रीवगिरिमनमै तकायोहै ॥ ११ ॥पथिमैसुग्रीववनपेखललचानेमनमधुवन नामसमनंदनभनीजिये ॥ अंगदकोवोलकपिकहेंसमझाइ हमभूखलागीवडीखाँहिंआइसुजुदीजिए ॥ फलतोरखाँहिंक [illegible]

हरषाइफेरचलेंवेगधाइलघुभ्रातकेसमेतरघुराइकोपिखीजि
ए ॥ १२ ॥ कीएहनूमानकाजयाँहिंकेप्रसादमधुफलमूलखा
इकपिसत्तमतुराइकै ॥ सुनीयौंभवानीजवअंगदकीवानी
कपितोरफलखाँहिंमधुपीऍंहरपाइकै ॥ रखवारेजेनिवारेंगा
रीआँनिकारेंदधिमुखजोपठाएतिनदएसुहटाइकै ॥ मधुपी
ऍंमतवारेजेईताँहिंकोसुमारेमूठनप्रहारशिरलातमारेंधाइकै
॥ १३ ॥ दधिमुखकोपकैसुगयोशुभग्रीवढिगमातुलकपीशके
सुजाइकैपुकारिओ॥ लीनेरखवारेसंगटूटेजिनअंगअंगजोई
मधुवनचिरकालप्रतिपारिओ ॥ तहाँवरेकपिधाएमधुपीएफ
लखाएअंजनीकुमारयुवराजसोउजारिओ॥ सुनेकपिराईमु
खबोलेहरपाईसीयदेखहनूआएहमऐसेनिरधारिओ॥१४॥
विनासीयदेखेमधुवनकोनिहारेऐसोकोऊवलवंतकपिनैन
मैनआयोहै ॥ वायुकेकुमारकरेकारजमुरारिसुसंदेहनाहिं
रंचतिनवागममखायोहै ॥ सुनीशुभग्रीववानीभएहरषा
नीहरिरामघनश्यामकपिनाथकोअलायोहै ॥ सीयकथाहै
उदारजाँहिकेमझारकपिराजनसुऐसोतुमकहामुखगायोहै
॥ १५ ॥ उमाकपिनाथरघुनाथकोअलाएवचदेवसुविदेह
जानिहारकपिआएहैं ॥ अंजनीकुमारलारवरेमधुवनकपि
इरडारमेरोमधुकाननलुटाएहैं ॥ रखवारेमारेतिनवागतेनि
कारेमधुकाननउजारेसभतोरफलखाएहैं ॥ विनाकाजकरेतेरे
मधुवनकौनहेरेदेवदेखआएसीययाँतेजानपाएहैं ॥ १६ ॥
॥ दोहा ॥ वनपालकतुमडरोजिनजावोआइसुमान ॥ मम

समीपलैआउतुमअंगदऔहनुमान ॥ १७ ॥ ॥ कवित ॥ सुनशुभग्रीववाक्यभएपुलकातकपिवायुवेगगएसुपठाएक पिनाहके ॥ अंगदउदारतुमवायुकेकुमारचलोआइसुकपे शबलिहारिजय्येराहके॥ चहेंकपिराईरघुराईलक्ष्मनभाईदर शतिहारेमनभएउतसाहके ॥ आइसकपेशमानचलेबलवान कपिकूदकैअकाशपथिभूखउरलाहिके॥१८॥ हनूमानअंगद अगारीतेपिछारीभएरामशुभग्रीवकेसमीपगएधाइकै॥कीनी अष्टअंगसुप्रणामतिनरामपुनधाइजाइगहेपदकंजकपिराइ के॥ देखीसीयथारीसुअरोगतनसारीहनूमानरघुनाथकोसुक त्योहैसुनाइके॥ राजनकेराईरघुराईसीयशोचवंतकुशलपठा योसुविदेहजाअलाइकै ॥ १९ ॥ वनाशोकमाँहींतरुशिंशपा कीछाँहींरामबैठीहैइकेलीनसहेलीमनभानीआँ ॥ रहेंराक्ष सीचौफेरेअन्नकेसुनाँहिंनेरेभईनाथदूबरीसुपीएनाँहिंपानी आँ ॥ हाइरामरामसीयाकहेसभजाँमतनुअंबरमलीनशोच करेकुमलानीआँ॥ केशनकीएकबेनीशोचजलजाइनैनीदेखी जाइमोहिमतिप्राणनाशठानीआँ॥२०॥दोहा॥वृक्षशाखमैबै ठमैसूक्ष्मरूपबनाइ॥कीनोताँहिंसुबोधमैकथासुनाथअलाइ ॥ २१ ॥ ॥ कवित ॥ जनमबखानेथारेदंडकपधारेदशकं ठसीयहरीसुकुरंगरामजोधए ॥ शुभग्रीवमीतभएबालीतन प्राणहएसीयशोधकाजकपिराजदूतहैंगए ॥ महाबलवंतस भदेशमैनिहारेंसीयतिनमैसुएकहमलंकगढमैअए ॥ अंज नीकेपूतशुभग्रीवकेवजीरहमरामरघुराजकेसुदार

॥ २२ ॥ जानकीनिहारीफलेभालभागभारीकीएयतनअधिकअबलीएफलपाइकै॥ऐसीसुनबानीहरषानीसुविदेहजाचितारेचहुँओरदृगरहेविगसाइकै ॥ अमृतसमानशुभअक्षरमहानकिनकानमैहमारेवचदीएहैंसुनाइकै॥साचजोवखान्योदयापालयहिकाहूँजनरामदूतदरशदिखाएमोहिआइकै॥२३॥ वानरअकारधरसूक्षममुरारिमैनेदूरहीतेवंदनासुजानकीकोधारीआ॥जोरेहाथमोहिपेखपूछ्योसुविशेषसीयकहीसमझाइमैनेभाषकथाथारीआ॥फेरदीनीसुंदरीकोमुंदरीनिकालसोईदीनीप्रभुआपदेखीजनककुमारीआ ॥ पेखीजबमुंदरीप्रतीतीतयसुंदरीसुमोहिप्रतिरामतिनवातहैउचारीआ ॥ २४ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ जिहँभाँतिपिखीहनुमानतुमेमुहिराक्षसिआँदिनरातिडराँवें ॥ रघुवीरहिंपाससभाविधितूँहनुमानयथारथजाइसुनाँवें ॥ तबमोहिकह्योरघुवीरसीयातुमकोनिशिवासुररामधिआँवें ॥ इहआवनकीइमढीलभईरघुवीरनहींतवसारसुपाँवें॥२५॥कवित॥अबजाऊँमाततेरोसारसुसुनाऊँसभसुनकैसुरामतवसारहरपाइहैं॥रामकपिराईलक्ष्मनतिनभाईकपिसैनकोमिलाइसुसमीपतोहिआइहैं॥कुलकेसमेतसुदशाननकोमाररणमनुरजधानीपुनतोहिकोलिजाइहैं ॥ दीजेकोनिशानीपुनऐसेमैवखानीजिंहँहेररघुनाथनाथमोमैपतीआइहैं॥२६॥ऐसेममवाक्यसुनदीनीतिनोचूडामणिकेशपासिमाहिहुतीऔरसुनलीजिए॥ चित्रकूटमाँहिंभयोकाककोवृतांतजोईरामरघुवीरकोसंदेसवहीदीजिए॥नैनभरवारितिनो

कीयोहैउचारनाथनाथसुखधामकोसुकुशलभनीजिए॥लक्ष
मणपासकहोहाथजोरमेरेअतिकहेवचखोटकुलचंदवखशी
जिए॥२७॥रामज्यौंत्तराँहिंमोहिकोजिएउपाइसोइकृपाकेनि
धानतुमकुलमैप्रधानीआँ ॥ ऐसेमुखोचारअतिरोइदृगजाइ
वारिशोचसिंधुवहीभईदूखगलतानीआँ ॥कयौंमैसंवोधमा
तशोचकोतूँरोधनाथनाथवलयथासभताँहिंकोवखानीआँ ॥
मातायौंपठायोआयोनाथतेसमीपअवआवनकेकालमैअ
शोकवनीभानीआँ ॥ २८ ॥सुअशोकवनपाररखवारेमा
रसुतरावणविदारवक्रुराक्षसविदारकै ॥ रावणसोंवोलचा
लताँकोवलतोलतालजालगढलंकआयोकाजतेसवारकै ॥
हनूमानवाक्यसुनगुनकेनिधानप्रभुरामहरपाइउरकह्योहैउ
चारकै ॥ हनूमानकाजतैंमहानकरेऐसेजगदेवतातेहोइनाहिं
वडेदुखधारकै ॥ २९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तोहिकियोउपकार
जोताँहिंवरोवरजोइ ॥ मैहनुमाननिहारहोंपावोंनाहींसोइ ॥
॥ ३० ॥ ॥ कवित ॥ ॥ मोहिसरवंशजोईदेऊँहनूमानसोई

ण्यसँबूहजितेयुगकोटिनकेनहिंजातबताए ॥ जगसुंदरकांड किपुण्यकथाकविसिंह गुलाबसुदीनसुनाए ॥ इतिश्रीमद्ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुंदरकांडेपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

॥ इतिश्रीसुंदरकांडम्समाप्तः ॥

श्री

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ युद्धकांडप्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ सागरसेतुबनाइजिने गढलंकपतीरणमंडलमारे ॥ सीयउधारउबारविभीषणराज विभीषणकेभुजधारे ॥वानरसैन्यजिवायदईचढमाँहिंविमान स्वदेशपधारे ॥ ताँपरमातमराघवकोकरजोरउभेअभिवंदह मारे ॥ १ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ सोरठा ॥ सुनीयथा रथवातहनूमानगिरिजाकही ॥ रामहर्षविख्यातपुनःरामताँ सोंकहे ॥ २ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ दुहसाध्यअहेजगदेवनको हनुमानअएकरकारजसोई ॥ जगतोविनयाँहिंसुकारजको मनमाहिंचितारसकेनहिंकोई ॥ शतयोजनभीमपयोनि धिकोतरपारपरेबलकाँमाहिंहोई ॥पुरराक्षसलंकसुपालतहैसु पिखोंनहिताँहिंविध्वंसकजोई ॥ ३ ॥ कवित ॥ सेवककोका जकरआयोहनुमानसभसुनशुभग्रीवतोहिकहोंसमझाइकै ॥ हनूमानकेसमानदूतभुविमंडलनभयोनहिहोइगोसुपिखोंम नलाइकै॥मोहिरघुवंशलक्ष्मनशुभग्रीवसभकरेरक्षपालसा

रजानकीकील्याइकै ॥ करेसभभाँतिइनकारजएकाँतममजा नकीकीसारयहल्यायोहैवनाइकै॥४॥

रकीडरेमननक्रझषमगरतिमिंगलभयानकी ॥ योजनअशी तवीशपारपरेंकैसेअरिमारसुसंग्राममैसुपिखोंकविजान की॥सुनकैभवानीरघुनाथकीसुवानीयहिकहीकपिनाथवात लाइकसिआनकी ॥नक्रऔतिमिंगलअपारजाँहिंधारमाँहिं लाँघजलसिंधुहमजाँहिंसुअचानकी॥५॥अबैलंकजाँहिंगेसु घाँहिंगेदशाननकोकारजविनाशिनीनचिंतउरधारिये॥ वलहै अपारभुजवानरसिदारआएमहाशूरबीररामनैनकैनिहारिये ॥ रामतोहिकाजपरेंआगमाँहिंधाइकपिसागरतरनकेउपाइ कोविचारिये ॥ लंकाकेनिहारेदशकंठरणमारेपिखोकहीहैसु नाइमतिएहुहैहमारिये ॥६॥तीनलोकमाँहिंवलिऐसोकोनि हारोंनाँहिंगहेधनतेरेरहेआगेठहिराइकै ॥ जीतहैहमारीरणमं डलमझारीरघुवीरअवदीजिएसंदेहकोमिटाइकै ॥शकुनउदा रजीतकेंहवारवारशुभग्रीववचकहेसेववीरयजनाइकै ॥ रा मजीउदारधारचीतकमझारवचकहितभवानीहनूमानकोसु नाइकै॥७॥ ॥दोहा॥ जाँहिंकाँहिंसुप्रकारहमलाँघेंजलनि धिपार॥लंकापुरीस्वरूपजोकीजेमोहिउचार॥८॥दानवदेव असाध्यहैताँहिरूपउरजान॥जीतनहेतउपाइकोफेरकरेंहनुमा न॥९॥ ॥कवित॥सुनीरघुवीरवानीहाथजोरकैभवानीअं जनीकुमारलगेरामकोसुनावने ॥ देवज्योंनिहारीअवंकरों तेउचारीदिव्यपुरीहैअपारीबागवनेघनसावने ॥ हैत्रिकूटगि

रिशीशलंकपुरीजगदीशहेमकीअटारीकोटकिंगुरेसुहावने ॥ परषाअपारभरीऊजलसुवारिनाथविनपरवानीमाँहिंपय्येन हींजावने ॥ १० ॥ उपवनशोभाजाँहिंमाँहिंहैअपारनाथवा पीओंहजारगृहचीतेमनमानिये ॥ जांबूनदथंभजहाँमणि नसोंखचेअतिकांतिहैअपारमुखकैसेकैवखानीये ॥ पश्चम केद्वारगजवाहिनीहजारोंरहेंउत्तरकेद्वारअश्ववाहिपहिचानी ये ॥ अरबुदसंख्यासुपदातीदिनरातीरहेंपूरवसुद्वारअतिसा वधानजानीये ॥ ११ ॥ रथअसवाररहेंदक्षणसुद्वारप्रभुराक्ष सहजारभुजवलमैविशालहैं ॥ रथीऔपदातीगजवाजीके सवारघनेमध्यकीसुडेवढीपसारिकालजालहैं ॥ आयुधवि शारदसुलामघनवारदसेसदादिनरातिगढलंकप्रतिपालहैं ॥ मोरचेहजारजहाँतोपनकोपारनहींधीरनकेचीतढिगगएहूँते चालहैं १२॥ ऐसेगढलंककोकलंकमैलगाइआयोसुनोरघुवी रतहाँकाजतोहमारिआ॥ रावणकीसैन्यकीचौथाईनाथघाई वललंकतोजलाईहेमकोटतोविदारिआ॥तोपनकोतोरतारमो रचेसुफोरफारभक्तसुविभीपणकोगेहमैउबारिआ॥देवतेनिहा रेंतेपसारेमुखपाहिकपिढीलननिहारोपिखोलंकगढमारिआ ॥१३॥ कीजियेपयानबातछोडियेसयाननाथवानरलवाइत टसागरकेजाइहैं ॥ सुनहनूमानवाक्यधनुपचढाइबाँकआपर घुनाथकपिनाथकोअलाइहैं॥सुनोकपिराइसभसैनाकोवुला इमुखदेहितूंअलाइअबसैनकोचलाइहैं॥ जीतकोमुहूरतसुयाँ हींसमेचढेहमजाँइंगढलंकमाहिंजीतरणपाइहैं ॥१४॥ ॥दो

हा ॥ सप्रकारबुरधर्पजोलंकाराक्षसधाम ॥ जीतोंयाँहिंमु
हूरतेरावणहनसंग्राम ॥ १५ ॥ कवित ॥ ॥जानकीकोल्या
ऊँगढलंकजीतपाँऊँसुनकपिनकेराईभुजफुरेममदाहिनी॥वा
नरजेवेगधारीचलेंसभसैनाथारीसुनोकपिनाथवातवनेगी
निवाहिनी ॥ अगारीपिछारीकपियूथपउदारीचलेंआस
पासपालेंचलीजाइमाहिवाहिनी ॥ हनूमानकोसवारहोइमै
अगारीचलोंअंगदकेभ्रातममचलेंतुमसाहिनी ॥ १६ ॥ ग
जऔगवाक्षगवमैंदवद्रुविंदनलनीलऔसुषेणजांववानव
लधारीआ ॥ चलेंतेचौफेरेकोईआवनेनपावेनेरेसैनाअरिघा
तिनीकीकरेंप्रतिपारीआ ॥ ऐसेतुअलाइभटवानरवताइलघु
भ्रातकोलवाइचेढरामवैमुरारीआ ॥ कपिनाथकेसमेतरघु
नाथसैनावीचवरणीनजाइकांतिभईहैअपारीआ ॥ १७॥ दो
हा ॥ वानरराजसमानसभभुजवलजिनहिंअपार॥ कामरू
पगिरिजासभेवानरसुरअवतार ॥ १८ ॥ सवैया॥ ॥कपि
नायकरामचढेजवहीगढकांचनजीतनकोजगमाहीं॥ थरराइ
उठीसगलीधरणीखरराटपर्योगरवेगिरिमाहीं ॥ वसुधाद्रिढदि
ग्गजदंतदिएठहरातनहीधरकैसुउताहीं॥ विधिलौडमढोलउठ
सगलेकपिभूधरसेउचटेधरमाहीं ॥ १९ ॥ कपिखेलतकूदत
गाजतहैंइहभाँतिचलेदिशिदक्षणमाहीं॥ हरिधावतजावतखा
वतहैंफलपानकरेंमधुकोंहरपाहीं ॥ कपिदौरसुरामअगारीक
हेंहममारहिंरावणकोरणमाहीं ॥ इहभाँतिचलेकपिपुंगवते
जिनकेवलकीगननाकछुनाहीं ॥ २० ॥ हरिकेअसवारभएह

रिजूहरिशोभतदोहरिकेदलमाहीं॥ शशिसूरसुहावतज्योंगिरि
जानभमंडलतारनकेगनमाहीं॥ कपिसेनचलीवहुभीरभईस
भछादलईधरणीजगमाहीं॥धरमारतपुंछउभारतहैंतरुशैलउ
खारलएकरमाहीं॥२१॥शैलनमैकपिकूदचढैंपुनमारुनवेगच
लेकपिजाहीं॥वानरसोंधरपूररहीहरपातचलेगननाकछुनाहीं
रामकरीप्रतिपालचहूंदिशिसैनगईसुदिवानिशिमाहीं॥कानन
भाँतिअनेकपिखेपुनसव्यमलैगिरीकेपथिमाहीं॥२२॥सव्यम
लैगिरिलाँघउभेवहुभीमपयोनिधिकेतटआए॥ वायुकुमारति
उत्तरकेकपिनाथकिहाथसोंहाथमिलाए॥नीरकितीरहिंजाइभ
लेरघुनाथकपीश्वरवैनअलाए॥ सागरकेतटमाहिंअएनहिंपा
रपरेंविनकीनउपाए॥ २३॥ इहठौरनिवासकरेसभसैन्यसुता
रणकारणलेहिंविचारे ॥ सुनकेरघुवीरकिवाक्यतवैकपिनाय
कआपसमुद्रकिनारे॥ सभसैन्यवसाइदईक्षणमैंशिरदारथपे
तिनकेरखवारे॥ तववानरवैठपयोनिधिकेतटभीमपयोनिधि
नैननिहारे ॥ २४॥ जिहँमाहिंतरंगअपारउठेंझपनक्रभयंकर
जाँहिंमझारे ॥ सुअगाधवडोनभकेसमहैइहसागरहेरभएड
रभारे॥ किहँभाँतितरेंइहसागरकोजलनाइककोघरआहिअ
पारे॥जलसागरवीचनहोइकवीरणरावणकोअवडारतमारे॥
॥ २५ ॥ इमचिंततव्याकुलहोइसभेकपिरामसमीपसुवैठरहे॥
रघुवीरचितारविदेहसुतादुखसागरधारअपारवहे ॥ वहुभाँ
तिविलापकरेंहरिजीसुरकारजकोनरदेहगहे ॥ विनद्वैतचिदा
तमऔपरमातमजाँहिंसनातनवेदकहे॥२६॥इहभाँतिपछान

तरामस्वरूपसुजोजगमैजनतत्वविचारी॥ नहिंताँहिंछुहेदुख पुंजकवीपुनहोंहिंकहाँनिजराममुरारी॥ दुखऔरसुखंडरक्रो धमहामदमोहसुलोभहिमाद्रिकुमारी ॥ सुअज्ञानकिलिंगजु आँहिंसभेकिंहँभाँतिरहैंचिद्राममझारी ॥ २७ ॥ तनकोअ भिमानसुदूखजनेपरमातममैतनपाय्यतनाहीं॥ तनऔअभि मानसुदूरभएसुखरूपपिखेसुसुषोपतिमाहीं ॥ मतिआदिक होंहिंअभावजवैदुखहेरतनासुखआतममाहीं॥दुखऔसुखहैं सभवुद्धिविपेपरमातममैकछुपाय्यतनाहीं॥ २८॥ शंकरछं द ॥ परपुरुषरामपुरातनोपरमातमाहरिआहि ॥ नितउदेहैपुन सदासुखकछुनाहिंताँकोचाहि ॥ सुतथापिमायागुणमिलेसु खिदुखीसेभगवान ॥ सुनहोइहैयहिलोकअंदरमूरखनकोभा न ॥ २९॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्ध कांडेप्रथमोऽध्यायः॥ १॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ क वित ॥ लंकमाहिंरावणनिहारहनुमानकाजदेवनअसाध्यला जभईउरभारीया॥ देखेधरावारवारमंत्रिनपुकारलीएराक्षस केराजवातएहुहैउचारीया ॥ लंकाउतपातहनूमानहिंविख्यात कियेतुममतिमंतसभनैनतेनिहारीया॥ विनापरवानीराजधा नीकेसुमाहिंवरेदेखीतिनजाइमिथलेशकीकुमारीया ॥ १ ॥ राक्षसविदारसुमंदोदरीकोमारसुतजारगढलंकगयोवारिध केपारीया॥ताँहिंकीनहानिभईलंकवातभईनईभापतहोंशूरला जहीनतुमारीया॥मंत्रमैविशारदसुकरणोजुकारजसुहोइहि

नध्वनिराक्षसकेराईकोभवानीयौंउचारीय॥॥२॥लोकनकोजी
तसुसंग्रामनिरभीततुमरामनरनामतेसुकहाडरआएहैं॥देवत
वपूतपुरहूतपुरबाँधआन्योजीतसुकुवेरकोविमानतुमपाएहैं॥
जीतेयमराजयमधानीतेभगाइदीएकालदंडभीतभूपतोहितो
मिटाएहैं॥वरुणहुंकारसुनमिलेगलडारपटजीतसभराक्षसमु
दुंदुभीवजाएहैं॥३॥मयजोमहासुरसुमानडरतोहितेसुआप
नीतनूजातिनदीनीतुमेआइकै॥ अवलौंअधीनवातमानतति
हारीसभऔरजेमहासुरसुगहैंपदधाइकै॥हनूमानकीएकाज
भएनसुजागपदसूरनकोजाइवलकपिपैदिखाइकै॥ऐसेहम
जाँननाँहिमार्योंताँहिवानगयोकपिसुनोनाथतवपुरीकोजला
इकै॥४॥छलेहनूमानहमकरेंमद्यपानसभजानतसुवातकपि
जीवतनजाइहै॥दीजिएसुआइसुपिखीजिएसुनाथवलनरअ
रुकपिकोऊजगनरहाइहै॥सभैभटजाँहिंजवआइसुपाँहिं
नाँतोहनेकपिमानवसुएकोभटजाइहै॥कहीजुअमातवातसुन
कैगणेशमातकुंभकानभ्रातसुदशाननेअलाइहै॥५॥तोहि
काजऐसेकरेजातेसभसूखहरेहोवेंसभनाशसभरोवेंतवरानी
आँ॥वडेभागथेतिहारेरामननिहारेतवेहरतसुरामकरेंप्राणतेरे
हानीआँ॥रामनरनाँहिंसुनारायणप्रगटरघुवीरनारिसीयरमा
तोहिनपछानीआँ॥राक्षसविनाशकाजआनीतुमेसीयराजहों
हिंदुखभोरअवजाइराजधानीआँ॥६॥महामीनखाइज्यौंह
लाहलकोपिंडवडोआनीतिमजानकीसुभावीनाँहिंजानीए॥
यद्यपिअकाजकीयोसुनोलंकराजतौभीहोइनविगारवातभई

हेअजानीए॥ लेऊँमैसवारअबदेहिडरडारसुनराक्षसकेराईउ रचिंतनाँहिठानीए ॥ कुंभकानवाक्यसुनकरतवखानबहुराव णकोपूतइंद्रजीतकैवखानीए ॥ ७ ॥ आइसुजुपाऊँमारवे गअवआँऊँरघुनाथकपिनाथलक्ष्मनयौंसुनायोहै ॥ विभी षणनाममतिमानभगवानजनहाथजपमालसुभवानीतहाँ आयोहै॥वंदनाउचारवैठोरावणसमीपवहुरामपदपंकजवना इध्यानलायोहै ॥ कुंभकानलौनिहारभएमतवारेसभकरेवक वादतिनपेखविसमायोहै ॥ ८ ॥ कामकेअधीनमतवारेअ तिदीनपेखरावणमलीनकोविभीषणअलाइहै ॥ कुंभकानइंद्र जीतजीतहैंनराजामहापार्श्वमहोदरसुहेरकैपलाइहै॥ कुंभऔ निकुंभअतिकाइनठराइरहेरामरणमाहिंजवतानधनुआइहैं॥ जानकीसुनामग्राहआहिवलवानअतितोहिग्रसगएनाहिंव लकैछडाइहैं ॥ ९ ॥ सीयासनमानकरमहाँधनआगेधरराम कसुपाइपरतवीसुखपाइहैं ॥ जवलौनरामवानमारतकमान तानलंकव्यापतीरशिरराक्षसउडाइहैं॥ तवलौमनाइसीयशी शकोनिवाइजीयरामपहुचाइफिरऔसरनपाइहैं॥ नरवहैंउदा रपुनदाढनसोंफारखांहिंऐसेकपिआइपुनलंककिलकाइहैं ;॥ ॥ १० ॥ जवलगलंकनदवाइकपिनाशकरेंतवलगजानकी कोदेहिपहुचाइकै ॥ जीवतेकोरामतोहिछोडतनधाँमअव दैतकहाँरखेंशिवसकेंनबचाइकै ॥ देवराजधर्मराजतोहि नवचाइसकेंजीवतोनवचेंजौपतालधसेंधाइकै ॥ शुभहित पावनसुरावणकेपासवचभ्रातयौंविभीषणसुदीएहैंसुनाइकै

॥ ११ ॥ रावणनमानीजुविभीषणवखानीउमाकालजाँहिं
आयोज्योंरसायणनखाइहै ॥ कालकोचलायोसुदशाननरि
सायोउरभ्रिकुटीचढाइकैविभीषणअलाइहै ॥ मेरोदीयोखाइ
पुनमोहिसोंकमाहिंवुरोभयोअतिमोटोढिगमेरेहीवसाइहै॥ मै
तोहितकारीसुविभीषणविकारीभयोमीतभाववैरितासुमोही
सोंकमाइहै ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याँहिंअनार्यकृतघ्नसों
संगतिमेनसुहाइ ॥ जालिजातिकोक्षयचहेवहीयनीविधिआ
इ ॥ १३ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ऐसेजुवखानेऔरमारतोसुताँ
हिंठौरतोहिकोधिक्कारकुलअधमवुलायोहै ॥रावणकीवानीसु
निदेखिविपरीतधुनिसभाहूँकेवीचतेविभीषणपलायोहै॥ चार
हैंअमातसाथगदाकोउभारहाथजाइकैआकाशमाहिवैनको
अलायोहै॥ मततुममरेंदशकंठदुखभरेंसुविभीषणवखानेउर
क्रोधअतिआयोहै ॥ १४ ॥ तातकेसमानवडेभाईतोवखाने
जगकरेंतूँधिक्कारवाक्यकहेथेसनेहके॥कालरामरूपभयोदशर
थधामजगकालीसीयानामभईजनकविदेहके॥ दोऊवहीआ
एसुमिटाएचाहेंभूमिभारकरेंगेसुनाशदशकंठतवदेहके ॥ तिन
हींकेप्रेरेनाहिंमानेंवाक्यमेरेतवतोहितनरुलेदुखपावेंजनगेह
के॥१५॥शंकरछंद ॥सुनवहुप्रकृतितेपरेहैंश्रीरामपूरणका
म ॥ वहिरंतसोहैंसर्वकेदुखजाँहिंजाँभजनाम॥ प्रभुनामरूप
विभेदकैतिमतिमसुसर्वदिखाँहिं॥जिमएकअनलविराजहीस
भभूरुहनकेमाँहिं॥१६॥सुउपाधिकेआधीनवहुविधपिखेंज
नअज्ञानि॥याँकोशपंचउपाधितवहुभासहैंभगवान॥ह्वैनील

हैअजानीए॥ लेऊँमैंसवारअवदेहिडरडारसुनराक्षसकेराईउ
रचिंतनाँहिठानीए ॥ कुंभकानवाक्यसुनकरतवखानवहुराव
णकोपूतइंद्रजीतकैवखानीए ॥ ७ ॥ आइसुजुपाऊँमारवे
गअवआँऊँरघुनाथकपिनाथलक्ष्मनयौंसुनायोहै ॥ विभी
पणनाममतिमानभगवानजनहाथजपमालसुभवानीतहाँ
आयोहै॥वंदनाउचारवैठोरावणसमीपवहुरामपदपंकजवना
इध्यानलायोहै ॥ कुंभकानलौनिहारेभएमतवारेसभकरेवक
वादतिनपेखविसमायोहै ॥ ८ ॥ कामकेअधीनमतवारेअ
तिदीनपेखरावणमलीनकोविभीपणअलाइहैं ॥ कुंभकानइंद्र
जीतजीतहैंनराजामहापार्श्वमहोदरसुहेरकैपलाइहैं॥ कुंभऔ
निकुंभअतिकाइनठराइरहेंरामरणमाहिंजवतानधनुआइहैं॥
जानकीसुनामग्राहआहिवलवानअतितोहिग्रसगएनाहिंव
लकैछडाइहैं ॥ ९ ॥ सीयासनमानकरमहाँधनआगेधरराम
केसुपाइपरतवीसुखपाइहैं ॥ जवलौंनरामवानमारतकमान
तानलंकव्यापतीरशिरराक्षसउडाइहैं॥ तवलौभनाइसीयशी
शकोनिवाइजीयरामपहुचाइफिरऔसरनपाइहैं॥ नखहैंउदा
रपुनदाढनसोंफारखांहिंऐसेकपिआइपुनलंककिलकाइहैं ॥
॥ १० ॥ जवलगलंकनदवाइकपिनाशकरेंतवलगजानकी
कोदेहिपहुचाइकै ॥ जीवतेकोरामतोहिछोडतनधाँमअव
दैतकहाँरखेंशिवसकेंनवंचाइकै ॥ देवराजधर्मराजतोहि
नवचाइसकेंजीवतोनवचेंजौपतालधसेंधाइकै ॥ शुभहित
पावनसुरावणकेपासवचभ्रातयौंविभीपणसुदीएहैंसुनाइकै

॥ ११ ॥ रावणनमानीजुविभीषणवखानीउमाकालजाँहिं आयोज्यौंरसायणनखाइहै ॥ कालकोचलायोसुदशाननरि सायोउरभ्रिकुटीचढाइकैविभीषणअलाइहै ॥ मेरोदीयोखाइ पुनमोहिसोंकमाहिंवुरोभयोअतिमोटोढिगमेरेहीवसाइहै॥ मै तोहितकारीसुविभीषणविकारीभयोमीतभाववैरितासुमोही सोंकमाइहै ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याँहिंअनार्यकृतप्रसों संगतिमेनसुहाइ ॥ जातिजातिकोक्षयचहैवहीवनीविधिआ इ ॥ १३ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ऐसेजुवखानेऔरमारतोसुताँ हिंठौरतोहिकोधिक्कारकुलअधमवुलायोहै ॥रावणकीवानीसु निदेखिविपरीतधुनिसभाहूकेवीचतेविभीषणपलायोहै ॥ चार हैंअमातसाथगदाकोउभारहाथजाइकेआकाशमाहिवैनको अलायोहै ॥ मततुममरेंदशकंठदुखभरेंसुविभीषणवखानेउर क्रोधअतिआयोहै ॥ १४ ॥ तातकेसमानवडेभाईतोवखाने जगकरेंतूँधिक्कारवाक्यकहेंथेसनेहके॥कालरामरूपभयोदशर थधामजगकालीसीयानामभईजनकविदेहके॥ दोऊवहीआ एसुमिटाएचाहेंभूमिभारकरेंगेसुनाशदशकंठतवदेहके ॥ तिन हींकेप्रेरेनाहिंमानेंवाक्यमेरेतवतोहितनरुलेंदुखपावेंजनगेह के॥१५॥शंकरछंद ॥सुनवहुप्रकृतितेपरेहैंश्रीरामपूरणका म ॥ वहिरंतसोहैंसर्वकेदुखजाँहिंजाँभजनाम॥ प्रभुनामरूप विभेदकैतिमतिमसुसर्वदिखाँहिं॥जिमएकअनलविराजहीस भभूरुहनकेमाँहिं॥१६॥सुउपाधिकेआधीनबहुविधपिखेंज नअज्ञानि॥याँकोशपंचउपाधितेबहुभासहैंभगवान॥ह्वैनील

पीतसुयोगकरजिमफटकअमलसुचारु ॥ सोनित्यमुक्तस्वमा
यथागुणबिंबतिहँआकार॥१७॥ भेंकालऔरप्रधानपुरुषाव्य
क्तयाँविधिचार ॥ सुप्रधानपुरुषउभेमिलेयहिरचेंजगतविका
र॥पुनकालरूपसुहोइकैयहिकरेजगतविनाश॥ अबकालरू
पस्वमायथाहरिभयोरामप्रकाश ॥ १८॥ विधिकरीविनतीताँ
हिंपैदशकंठतवधकाज ॥ बहुअन्यथानहिंकरेंगेसंकल्पकोर
घुराज॥सुनपुत्रवाहनसैन्यसहतुहिमारहैंवहुराम ॥ भोसकों
नाहिंनिहारतेरोनाशमैसंग्राम ॥ १९॥ **दोहा** ॥ ॥ त्वंराक्षस
कुलमरेंगेमैजावोंजहँराम ॥ मेरेगएसुपाइसुखचिरंरमोतुम
धाम॥ २० ॥**सवैया**॥ रावणकेदुरवाक्यनतेसुविभीषणत्या
गगएगृहसारे ॥ हेमतुरंगमऔरमतंगसुनारिमणीवहुजाँहिं
मझारे ॥ पूर्णहैमनभीतरसोपदरामकेसेवनहेतपधारे ॥ सिं
हगुलाबसुभागजगेकुलत्यागलियोतिनराहकिनारे ॥ २१ ॥
इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेद्वीती
योऽध्यायः ॥ २ ॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित** ॥ विभी
षणभागधारीलीएहैंअमातचारीरामजीकेसंमुखअकाशमा
हिंआयोहै ॥ रामकंजनैनस्वामीसुनीएसुमोहिवानीऊचस्व
रबोलसविभीषणअलायोहै ॥ रावणकोभाईजिनदारातेचु
राईसुविभीषणएनाममेरोलोकमाहिंगायोहै ॥ दियोमैनिका
रीहितबातथीउचारीअवरामपादकंजमैतोतेरोहीतकायोहै
॥ १ ॥ सीयारामदीजिएनकीजिएसुवैरअतिफेरफेरकह्योना
हिंताँहिंमनधारिओ ॥ कालफासकेअधीनमानतमलीननाँ

हिंमोहिवधकाजहाथखड्गउभारिओ ॥ चारलैप्रधानवेगकी
योमैपयानपुनरामपदकंजतहाँतेरोमैचितारिओ ॥ मोक्षचा
हिहैहमारीसामलीनीमैतुमारीराजनकेराईअबवनेगोउवारि
ओ ॥२॥ विभीपणवाक्यसुनवोलेकपिनाथपुनकीजिएविसा
हनाँहिरामयाँहिंखलको ॥ सीताजाँचुराईएतोताँहींकोसुभा
ईपुनसायुधसमंत्रीऔधरय्याभुजवलको॥अँतरनिहारेएतोह
महींकोमारेभुजवलनवसाइकर्याचाहेउरछलको॥आइसुजु
दीजिएतुयाँहिमारलीजिएसुढीलननिहारोमैपठाँऊँकपिदल
को॥ ३ ॥ **सवैया** ॥ इहभाँतिपिखोंमनभीतरमैतुमरामकहो
मतिजोठहिराई ॥ सुनकैसुसुग्रीवकिवाक्यनकोहसरामतवै
मुखवातअलाई ॥ पतिलोकनकेसहलोकसभेउरमाँहिंचहोंज
यमैकपिराई ॥ निमिपार्धविपेसुहनोंसगलेनिमिपेकविपेपुनं
लेंउँउपाई ॥४॥ अवमोहिअभैइहकोसुदियोतुमल्यावहुवेगइ
सेअवजाए ॥ इकवारकहेशरणागतहोंमुखमैतुमरीवहुभाँति
अलाए ॥ व्रतमाहिधयोंइहभाँतितिसेडरुभूतनतेफिरहोननपा
ए॥सुनराघवकेइहवाक्यउमाकपिनाथतवैमनमैहरपाए ॥५॥
आनविभीपणकौतवहीकपिनाथभलेरघुनाथदिखारे ॥ आ
इविभीपणराघवकेपदपंकजमैअभिवंदनधारे॥ वाणिगदाग
दताँहिंभईअतिभक्तिवडीतिहँचीतमझारे॥ स्यामविशालवडी
अखीआँमुखपंकजसेतिनरामनिहारे ॥ ६ ॥ करवाणशरास
नशांतवडेअनुजोलक्ष्मंनसुसाथसुहाए ॥ सविभीपणजोर
उभेकरकोगिरिजारघुनंदनकीरतिगाए ॥ अंवरामनरेंद्रसुतो

हिनमोवरसीयमनोरमतूँसुखदाए ॥ जगचंडकुदंडनमोतुम
कोजनवल्लभवंदनपंकजपाए ॥ ७ ॥ शांतअनंतरमाप्रभुकंत
अनंतसुतेजनमोपदथारे ॥ मीतकपीशनमोरघुनायकतूँजग
कोउपजाइनिवारें ॥ तीनहुँलोकनकेगुरुतेसुअनादिगृहीअ
भिवंदहमारे ॥ त्वंजगआदिअनादिसदारघुनाथकरेंजगको
प्रतिपारे ॥ ८ ॥ शंकरछंद ॥ स्वच्छंदचारीरामतुमजगनाश
केसुस्थान॥प्रभुचराचरकेबाहिरेपुनमाँहिंहोवोभान ॥हरिव्या
प्यव्यापकरूपकैतुमजगतमयभगवान॥हैंनष्टआत्मविचेतसे
तवमाययाल्हतज्ञान ॥ ९ ॥ कवित॥ देहधारवारवारमरेंतुअ
नेकवारभयेपुण्यपापवशनित्यआइजाइहैं ॥ शुक्तिरूप्यकेस
मानहोतजगसत्यभानपावतनज्ञानजवतोहिनाँहिंध्याइहैं ॥
तोहिनपछाँनेसुतदारागलतानेंमतिभईतिनहानेगृहफासमैफ
साइहैं ॥ भोगनकोसेवेंसुतनारिनकोदेवेंकहोंसाचरघुराई
वहुअंतदुखपाइहैं ॥ १० ॥ त्वंसुरेशअग्नियमरक्षसजलेशवा
युधनदमहेशरामतूँहींतोवखानीए ॥ अणुहूतेअणुऔमहान
तेमहानवडोरामजगनाथएकतूँहींतोपछानीए ॥ तुमहींतोपि
तासभलोकनकेमाताधाताआदिमध्यअंतकछुतोहिनाहिंठाँ
नीए ॥ पूरणअच्युतऔअनाशीस्वप्रकाशीरामतेरोहीस्वरू
पमाहिंवेदनवखानीए ॥ ११ ॥ पाणिपादनैनकाननाँहिं
भगवानतवगेहेंदौरेंपेखेंसदासुनेंतूँखरारीआ ॥ काँहूँमैन
रहेंअरुगुणकोनगहेंप्रभुतेरीगतिकहेंकोशपंचतेसुन्यारीआ
विकल्पनविकारनिराधारसुउदारअतितुहींजगवीचनरनाथ

सुमुरारीआ॥ पुरुषपुरातनसनातनप्रकृतपरेतोहिमैनपय्येपद
भावजेविकारीआ ॥ १२ ॥ मायथामिलापप्रभुपूरणप्रताप
जगमानवसीदेहभवमंडलदिखाइहैं ॥ अजभगवानतंवनिर्गु
णकोजानजगतेरहीभगतप्रभुमोक्षपदपाइहैं ॥ तोहिपदसेव
हीसोपानपाइदेवहमज्ञानयोगसौधमैआरोहनोसुध्याइहैं ॥
सीयाकेरमणहारकरुणाअकारअरिरावणजुहारभवसिंधुमे
तराइहैं ॥ १३ ॥ **सोरठा** ॥ भक्तनप्यारेरामतववोलेहर्षाइउ
र ॥ जोतेरेमनकामलेहुवहीवरदेतहों ॥ १४ ॥ ॥**विभीष
णउवाच**॥ **कवित** ॥ आजभयोधंन्यमैकृतारथजगतमैजु
करणीसीकृत्यसभलईमैकमाइके ॥ पिखेपदकंजतोहिभागसु
विशालमोहिआजुरघुवीरवंधदीएमैमिटाइके ॥ मोहिसमना
थधंन्यदूसरोनआनजगभयोशुचिआजुपापगएहैंपलाइके॥
मोहिसमआजजगआननदिखाईदेतमूरतितिहारीपिखीराम
ढिगआइके ॥ १५॥ **शंकरछंद** ॥ अतिकर्मवंधविनाशहित
तवज्ञानभक्तिविशाल॥तवध्यानपरमानंदपूरणदेहिरामदया
लु॥यँविपयकोसुखरामजीमैचहोंनामनमाँहिं॥ तवपादकंज
अनन्यसेवारहेमेउरमाँहिं॥ १६॥ मुखतथारामवखानिओपु
नभापिओहरिएहु ॥ कल्यानगोप्यसुमैकहोंमनुलाइतूँसुनले
हु॥मेभक्तयोगीशांतजेजगरागजाँकेनाँहिं॥ यहसाचसीयस
मेतमैनितवसोंताँउरमाँहिं ॥ १७॥ त्वंसर्वकालसुशांतउरपु
नपापसर्वनिवार ॥ मेध्याइमोक्षसुपाइहैंपुनतरेंभवनिधि
पार ॥ तवकीनसुस्तुतिजोपढेपुनलिखेसुनेसुकान ॥ मेतुष्टि

हितमेप्रियतमंसारूप्यपाइसुज्ञान ॥ १८ ॥ ॥दोहा॥ ऐसे भापविभीपणंभवभंजनभगवान ॥ भक्तनप्यारेरामजीलक्ष्मणकेरंवखान ॥ १९॥ ॥सवैया॥ मोहिनिहारनतेफलजो सुविभीपणकोअवदेहिदिखाए॥लंकविभीपणराजथपोजल सागरकोअवल्यावहुजाए॥जौलगसूरयचंद्ररहेअरुजौलग एहुसुभूमिरहाए ॥ जौलगमोहिकथाजगमैशुभतौलगएहुसु राजकमाए॥ २०॥इहभाँतिवखानस्वभ्रातकेहाथननीरभरेह रिकुंभअनाए॥गढलंकविभीपणराजनिमित्तसुरामसभीशिर दारबुलाए॥ अभिपेकअमातनऔकपिहाथनभ्रातकेहाथवि शेपकराए॥मुखसाधुसुसाधुवखानसभैकपिकेदलराघवकेय शगाए॥ २१॥ शुभग्रीवविभीपणअंकमिलेमुखभीतरयाँवि धिवैनअलाए॥सुविभीपणहैंहमदाससभैयहिरामपरातमवेद नगाए ॥ तिनमैंसुप्रधानविभीपणतूँपिखसेवकरामसुराजदि वाए ॥ रणरावणकेसुविनाशविषेमनलाइकरोरघुवीरसहाए ॥ २२ ॥ ॥ विभीपणउवाच ॥ ॥ शंकरछंद ॥ प्रभु जगतकेपतिरामकीसुसहायतारणमाँहिं ॥ क्याकरोंगामैं कीटतूँसुग्रीवगुनमनमाँहिं ॥ कछुकरोंगामैदासिताजोहो इआवेमोहि ॥ करभक्तिकपटसुडारकेयहिसाचभाखोंतोहि ॥ २३ ॥ कवित ॥ रावणकोभेजिओसुआयोदूततहाँक्ष णराक्षसस्वरूपताहिनामशुकगायोहै ॥ आइकेआकाशवीच बोलतभयोसुनीचवानरकेराईदशकंठयोंअलायोहै ॥ राक्षस केराईतोकोंजानतसुभाईवनचारिनकेराईतूँमहानकुलजायो

हे ॥ भाईसेंपिआरोमोहिकाजनविगार्योंतोहिकहोकपिराईतु
मकाहेचढआयोहै ॥ २४ ॥ राजपूतनारिजुमैहरीहैकुसूतक
रकहोकपिराजकाजतेरेनविगारेहें ॥ किपकिंधाजाहिसंग
वानरलिजाहिगढलंककोनिहारसभदेवताखुहारेहें ॥ ऐसे
गढभारेनरवानरअसारेतुमभएमतिवारेकपिकौनमैविचारे
हें ॥ ऐसेतौंवखानीकपिनाथकोभवानीशुभग्रीवरिसमानी
कत्योरावणकेचारेहें ॥ २५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ कपिनायक
केकपिकूदतवैनभमाँहिंगत्योमुखमूठलगाई ॥ कपिचंचलदाँ
तनसोंकटकैसुद्योधरमैंवलकैपटकाई ॥ जवकीशनताँतनफे
रगत्योतवताँहिंदईमुखरामदुहाई ॥ रघुनाथसुरोकइनेकरिये
नहिचारनकोहनतेजगराई ॥ २६ विधिलौंसुरजाँहिंभजेंसद
हींपुनऔरभजेंऋपिजेमुनिज्ञानी ॥ वकुरामखरेकपिकेंदलमैं
धरकानसुनीशुकआरतवानी ॥ कपिनाँहिंहनोरघुवीरकही
तिनछोडदियोप्रभुआइसुमानी ॥ जिंहँनामछुडावतहैंभवमें
तिहँकोइहुनाहिअचंभभवानी ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वी
चअकाशसुजाइशुकफेरकहीकपिराइ ॥ राजनकहोदशान
नहिंकिहँविधिभापोंजाइ ॥ २८ ॥ ॥ सुग्रीवउवाच ॥ ॥
॥ सवैया ॥ रावणकोइमजाइकहोतुमभ्रातवडेजगमाँहिं
हमारे ॥ अंगदतातयथाहमरोतिमहूँतुमहूँनहिंशंकविचारे ॥
तोहिहनोरणमंडलमैंसहपूतपताकिनवाहनथारे ॥ दूतकहोद
शकंधरकोकहँजाँहिंसुराइसुनारिमुरारे ॥ २९ ॥ ॥ श्रीरा
मोवाच ॥ ॥ दोहा ॥ सुनसुकंठममवाक्यतुमवाँधोशु

कहिंबनाइ ॥ लेआवोदलवीचपुनयहिअवजाननपाइ ॥३०॥
॥ सवैया ॥ तवरामकिआइसुपाइभलेकपिनायकसोशुकवाँ
धमगाए ॥ दशकंधरताँहिंसमैइकदूतसुऔरभलेशरदूलपठा
ए॥कपिकीध्वजनीपिखरावणकोशरदूलकहीसगलीविधिजा
ए ॥ उरचिंतवढीअतिरावणकेनिजमंदिरश्वासभरेविसमाए
॥ ३१ ॥ पुनताँहिंसमैरघुवीरनिहारमहोदधिकोउरकोपवढा
यो॥ दृगलालभएरघुनंदनकेमुखतेकुपयाँविधिवैनअलायो॥
लक्षमंनपिखोदुपटातमनीरधिनाँअवलौममहेरनआयो॥अ
भिनंदतिनाँनरजानमुझेसहवानरकाहिकरेग्गरवायो ॥ ३२ ॥
॥कवित॥ अवहीनिहारमहावाहुवलवाहुमेरोसागरकेनीर
कोसुदेतहोंसुकाइके ॥ वानरअपारचलेंपाइनपधारअवसा
गरकीधारकेसंतापकोमिटाइके ॥ ऐसेतुवखानदृगलालभ
गवानकोपआपनेहीहाथधनुलीनोहैचढाइके ॥ पावकसमा
नसुनिखंगतेनिकारवानमाहिताँकमानकेसुदियोहैलगाइके॥
॥३३॥ सवैया ॥ कानलौतानकमानकह्योशररामपराक्र
मलोकनिहारे ॥ मैअवहीसरितापतिवारिसुकाइउडावतभी
तरछारे॥रामवखानतयोंमुखतेधरकाँपउठीगिरिकाननसारे॥
पारवतीडरपेसगलेनभऔदिगमाहिंभएतमकारे॥३४॥ क्षो
भभयोजलकेनिधिकोइकयोजनवेलतिदूरहटाए ॥ नक्रसु
मीनतिमिंगलजेशरपावकतेउरमैडरपाए ॥ पुनताँहिंसमैधर
दिव्यतनूजलसागरराघवकीढिगआए ॥ दिगमंडलकोतमदू
रकरेसुमहातनऊपरिभूपणछाए ॥ ३५ ॥ ॥ शंकरछंद ॥

दिव्यरत्नसुआपनेकरदोनमाहिंउठाइ ॥ वहुभाँतिभेटसुआ
नराखीरामकेतिनपाइ ॥ समदंडकेपदवंदनारुपरामहेरउचा
र ॥ जगनाथरामत्रिलोकरक्षकत्राहित्राहिमुरारि॥ ३६॥ ज
ढमोहिरामवखानिओजगसगलतोहिउपाइ॥सुसुभाउउलटे
कोकरेजोदिएदेववनाइ॥सुस्थूलपंचसुभूतकोसुसुभावतेज
डज़ान॥आज्ञासुतवनहितेलँघेतैंरचेजढभगवान॥ ३७॥पु
नतामसाहंकारतेहरिभएभूतमहान॥ प्रभुहेतुकेअनुगामितेज
ढरूपताँकोजान॥निरगुणअकारविहीनमायालेहिजोगुणधा
र॥ वैराटतोहिअकारलीलाकरेराममुरारि ॥ ३८॥ नराजछं
द॥ विराटसत्वअंशतेसुदेवताप्रछानिये॥ रजांशतेप्रजेशआ
दिक्रोधईशभानिये ॥ स्वमाययाकिनाततानदेहमानुपीक
री ॥ मतीजडासुमूरखोलखोंकथंसुतेहरी ॥ ३९ ॥ सुपंथ
हेतुमूरखोंसुदंडसंतगाइहैं ॥ यथापशूप्रमत्तकोसुदंडराहिपाइ
हैं॥ शरण्यनाथशरणईशभक्तवत्सलंसुते॥अभैसुमोहिदीजि
एददामिलंकपंथते॥ ४०॥श्रीरामउवाच॥ अमोघआहि
वाणमेसुकौनदेशमारिये ॥ सुलक्ष्ययाँहिंवाणकोसुशीघ्रमे
दिखारिये॥ सुनेसुरामवाक्ययोंसुहाथवानहेरिओ॥ हिमाल
जामहोदधीसुरामपासटेरिओ ॥ ४१॥शंकरछंद ॥द्रुमकु
ल्यनामवखानियेइकरामउत्तरदेश ॥ तहँरहेंवहुतेपातिकीमे
देहिंवहुतकलेश॥ तहँवाणमारोरामजीशरदीनरामचलाइ॥
क्षणमाहिमारअभीरमंडलपरेतरकशआइ ॥ ४२ ॥--॥ क
वित ॥ सागरवखानीपुनरामकोभवानीरघुवंशअवतंशतुम

सुनोमनलाइक ॥ विश्वकर्माकोसुपूतपुरहूतकेसमाननल जलबीचसेतुकरेसुवनाइकै ॥ महामतिमानवलवानइनपा योवरसेतुकोकरैयातुमकहोसुबुलाइके ॥ अैसेसोवखानभग वानपदवंददोऊसिंधुभएलीनकपिरहेविसमाइकै ॥ ४३ ॥ रा मशुभग्रीवलक्षमनसुबुलाइनलकह्योसमझाइजलसेतुतेंव नावना॥वानरशिदारसुपहारसेअकारवडेसेतुहितलीएनलभ योहरषावना ॥ योजनअशीतवीशरचेसुबनाइपुलडारसुप हारतरुलागतसुहावना ॥ कवीसिंहरामसुखधाममुशाकाइक ह्योसूकपदकोशकरोलंकपैउठावना ॥४४॥ ॥इतिश्रीमदध्या त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सेतुअरंभसमे रघुवीररमेश्वरनामतहाँशिवथापे ॥ पूजनरामकियोतिन कोपुनलोकहितारथभापतआपे ॥ जोअभिवंदनसेतुकरेपि खयाँहिरमेश्वरकोमुखजापे ॥ मेकरुणाकरब्रह्मवधादिक होवतदूरसभेतिहँपापे ॥ १ ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ सुसेतु वंधन्हाइनोनिहारकेरमेश्वरं ॥ सुनेमचित्तधारजाइफेरका शिकापुरं ॥ सुल्याइगंगनीरकोरमेश्वरंनवाइहे ॥ समुद्रभार डारब्रह्मपावनंसुपाइहे ॥ २ ॥ ॥ **शंकरछंद** ॥ ॥ दशचा रयोजनआदिवासरलिएसेतुवनाइ ॥ दिनदूसरेपुनऔरयोज नवीशदिएवढाइ ॥ दिनतीसरेसुइकीशयोजनकरेनलबलधा र ॥ दिनचतुरथेबावीशयोजनकरेसेतुसवार ॥ ३ ॥ दिनपंचमे तेईशयोजनकरेसेतुमहान ॥ वंधसागरसेतुयाँविधिनलकपी

बलवान॥ शतयोजनाकपिचलेताँपथिभलेउरहरपाइ॥ पल
वंगमुखमेंगाजेंहेंअवजिनेगढकोजाइ ॥ ४ ॥ ॥ कवित ॥
वानरअपारचलेसेतुकेमझारकछुपाय्यतनपारभीरभईअति
भारीआ॥ सुवेलपहारकपिचढेकिलकाररघुनाथहनुमानभ्रा
तअंगदसवारीआ ॥ देखनकिकाजरघुराजजुपहारचढेबैठर
घुवीरपुरीलंकतुनिहारीआ ॥ वडोविसतारध्वजालसतअपा
रलगेतोरणसुद्वारजहाँहेमकीअटारीआ ॥ ५ ॥ परिखाअनं
तसुशतघ्निकोनअंतपुनसंक्रमवेअंतपेखवीरविसमाइहै ॥ हे
मकिपहारपैप्रसादहैउदारइकताँहीपरबैठोसुदशाननसुहाइहै
॥ वीरजेअमातढिगसेवतेंहेंगातसभशीशदशाकीटजनुसूरचि
लकाइहै॥नीलगिरिशृंगकेसमानतनुश्यामअतिश्यामघनवा
रिदसीदेहलशकाइ है॥६॥दोहा॥ रत्नदंडसितछत्रशिरलसेसु
वारंवार॥ योंदशकंधरमहलपरबैठेसभामझार॥ ७॥ मारखा
इवानरनतेवँध्योछुडायोराम ॥ आयोशुकताँहिंसमेपेख्योक
रतप्रणाम॥ ८॥ सवैया॥ हैकछुवैरिनमारकरीहसरावणयों
शुकवैनअलाए॥ फेरकह्योशुकसागरउतरतीरगएहमनाथप
ठाए ॥ भाखनमैकपिनायककोकुदमोहिगह्योपलवंगमधा
ए॥मूठहनीनखफारदएतनुकाटहिंमेकपिरोपवढाए॥ ९॥ तव
मोहिकह्योअवरामरखोरघुपुंगवभापसुमोहिछुडायो ॥ डर
मेउरमाँहिंमहानभयोपिखवानरसैन्यसुतेढिगआयो॥वलरा
क्षसऔकपिपुंगवकीपिखराजनयोंमनभीतरआयो॥अवसं
धिनहोवतहैइनकीसुरदानवज्योंअतिरोपवढायो ॥ १० ॥ क

वित ॥ ॥ धाईकपिसैन्यआईलंकपैचढाईभईढीलननिहारो अववेगएककीजिए ॥ देतजोदिखाईवलकीजिएलराईननो राक्षसकेराईअवसीयरामदीजिए ॥ औरकहीरामचंद्रचंद्र माविशालमुखकहोदूतरावणकोसोईसुनलीजिए ॥ जोईव लधारतुमनारिहैहमारीहरीसोईवलवांधवमिलाइमेदिखीजि ए ॥ ११ ॥ कालप्रातकालदेखलंककोहवालसभतोरणवि शालगृहटूटिआनिहारियो ॥ राक्षसकीसैनसुरगैनलैउडाहिं शरटूटफूटजाँहितनुनारिहगवारियो ॥ घोररोपभयोभारी तोहिपरदेंउँडारीशूरमाकहाँवेंदशकँठभटभारियो ॥ ऐसेरघु वीरगाईकह्योकपिराईसमवालीहमभाईदशकंठकोउचारि यो ॥ १२ ॥ ऐसेतुवखानभगवानमुखमौनभजीलोचन सरोजसुमनोजछविवारीए ॥ भएइकठौरजहाँचारशिरमौ रवलतेजमेंविशालरणमाहिंवलकारीए ॥ रामलक्ष्मणशुभ ग्रीवसुविभीषणहैलंकनाशकरेंक्षणमाँहिंयहीचारीए ॥ मूल तेउपारधारसागरवगाइदेहिंदेहिंकैजराइऔररहैंकपिसारीए ॥ १३॥तिनकीनिहारीवलसभैवलवंतभटरूपपुनआयुधसुकै संकैवखानीए ॥ चारोंवीचएकहीनिचिंतगढमारेतेरोतीनरहें न्यारेखडेऐसेउरजानीए ॥ संख्यातेविहीनकपिसैन्यहैप्रवीन आईपूररहीचारोंदिशिनैनपथिआनीए॥ गाजतहैंवारवारवा नरअपारभटगिरिसेअकारभुजवीशपहिचानीए॥ १४॥ आ हिकौनमतिमानसभकोप्रमाणकहेवडजेप्रधानकपिकहोंनि रधारीये॥एजोपिखेलंकओररोपद्रिगभरेअनिमानोमलडारे

गढराजननिहारीये ॥ यूथपहजारशतरहेंपरिवारइनयहीतो
सेनानीशुभग्रीवकोउचारीये॥अग्निकेकुमारभुजबलमैंअपा
रसोतोनीलनामकहेंअहोबडोबलकारीये ॥ १५ ॥ एजोपि
खोमौलिमणिभूधरकेशृंगसमपद्मकिंजलकसमानतनुहेरी
ये ॥ कोपिओअपारपुनसागरकीधारवारवारपुंछहनेमानो
कहेलंकमेरीये॥ बालीकोकुमारजिहँनूतनअपारबलयहीयुव
राजनामअंगदसुटेरीये॥कहाँकहोंबारबारकीजियेविचारअ
बराघवकीसैन्यआईलंकगढघेरीए॥१६॥सीताजाँनिहारीअ
तिरामजूकीप्यारीतवमारसुतनीकेपुरलंककोजलायोहै॥रूप्य
केपहारसोअकारमतिमानवडोराजनकेराईपिखोहनुमानआ
योहै॥ वेगशुभग्रीवढिगजाइसुबताइकछुफरसैनाओरयहिपे
खीएसिधायोहै॥याँहिंकोप्रतापपेखपावकसमानअतिराक्षस
केराईगढलँकदहलायोहै ॥ १७॥ शैलसोअकारलंकपिखेबल
पारनाँहिंरंभनाँमबलीयहिलंककोविदारहै॥ एजुपिखेलंकमा
नोजारतोनिशंकनामशरभभनीजेकोटियूथपसिदारहै॥ पेखी
एमहानमानोमेरुकेसमानएजोपनसभनीजेयाँहिंबलकोन
पारहै॥ यहिहीदशाननसुमाननजुमैंदवहैद्विविदसुएहीबलवा
नमैउदारहै॥१८॥सेतुजाँबनायोपिखोएहीनलआयोविश्वकर्मा
कोकुमारपारबलकोनपाईये॥ वानरकोबलकौनवरनेसुभौन
माँहिंसंख्यातोनहोइनाथकैसेकिवताईये॥शूरहैंमहानबलवान
युद्धचहेंचित्तलंकचकचूरसहराक्षसवगाईये॥शुभग्रीवपुरकेसि
दारकहेजेउदारतिनहींकीसैननकीसंख्यासुसुनाईये ॥ १९ ॥ इ

नकेसुकोटिहैंहजारनवपंचसातशंखतुहजारअरबुदशतमानी
ये॥शुभग्रीवकेवजीरमतिमानजेईधीरतिनकीसुकहीवलराज
नपछानीये॥ औरनकीसैन्यनाँहिंमोहितेवखानीजाइराजनके
राईनहींसंख्याताँहिंजानीये॥रामनाँहिंमानुपनारायणप्रगटज
गमायातेअतीतयहिवेदमैवखानीये॥२०॥दोहा॥भवकरताकी
शक्तिचितसीताशक्तिस्वरूप॥सीयरामकृतजगतयहिसीताराम
स्वरूप॥२१॥कवित॥ताँतेसीयरामजगमाततातजानोभूपति
नहींकेसाथकहोकैसेवैरठानिओ॥जानकीविख्यातजगमातप
हिचानोउरताँकोहरल्यायोदशकंठनपछानिओ॥क्षणमैविना
शहोइऐसोजगजोइतिहँमाँहिंक्षणभंगुरसुदेहकोवखानिओ
॥पंचभूतदेहजगराजनकलेशगेहपंचविंशतत्वयाँहिंमाँहिंपहि
चानिओ ॥ २२॥ हाडमलमासदुरगंधवुरीवासपुनऐसेतन
वासकरभएगरवावने ॥ तनमैनकरेंआसकोविदउदासरहैंजे
डतेतुन्यारेनिजआपकरोभावने ॥ देहकेसुभोगकाजकरेहैंअ
काजभवविप्रनकेनाशलौसुपातककमावने॥सोईनेरोदेहईहाँ
गिरेगोसनेहतजपुण्यपापजीवसाथभूपतिसुजावने॥२३॥सू
खदूखहेतुपुण्यपापहैंअनेकधरेदेहजोगपाइपुनआतमानिहा
रहै ॥ करमकमाँऊँफलयाँकोआगेपाँऊँपुनदेहमेऽहंकारजीव
जवलौंसुधारहै ॥ अध्यासअधीनजनहोवतहैदीनपुनजनम
विनाशलौंसुतवलौंविकारहै॥देहअभिमानतजआतमाअले
पभजवेदऔपुरानसभऐसेहीउचारहै॥ २४॥ ॥दोहा॥नि
र्मलशुद्धविज्ञानइकअचलअनाशीआहि ॥ स्वात्माकेअज्ञान

तेजीवफसेभवमाहि ॥ २५ ॥ ॥ **सवैया** ॥ शुद्धसनातनआ
तमजानसदाभजभूपतितूँउरमाँहीं॥ हितभोगनजेजनमूढरमे
सुतऔरअगारसुदारनमाँहीं ॥ नरकेसुखतेपरिपूरणहैंतनु
छागसुकूकरशूकरमाँहीं ॥ सुखनारिनकोसभतुल्यअहैपुनरा
सभकूकरभूपतिमाँहीं ॥ २६ ॥ ज्ञानसहायकदेहलहीपुन
औरद्विजातमताजगमाँहीं ॥ भारतखंडसुकर्म्ममहीअतिदुर्ल
भहैभवमंडलमाँहीं ॥ कोविदकौनसुभोगभजेपुनआतमना
शचहैभवमाँहीं ॥ तूँद्विजहोइसुविश्वश्रवासुतमूढनज्यौंरत
भोगनमाँहीं ॥ २७॥ ॥कवित॥ वृथाक्षीनीआयुअबकीजी
एउपाइकछुऔरसभछोडअबएकहीकमीजीए॥ रामहैंपरेश
उरधारीयेलंकशसदाआपहाथजोरसीयरामजीकोदीजीए ॥
रामपदसेवअबकीजीएसुदेवजानपापनमिटाइसुवैकुंठपाइ
लीजीए ॥ नाँहिंजोकमाँहिपुनअधोगतिजाँहिंसुनरामकीन
हानिकछुआपनोहीछीजीए॥ २८ ॥ मेरोवाक्यमानोमोहिहै
तुहैवखान्योतोहिकीजीएसुसाधसंगभजोउररामको ॥शरण
जोआइतिनलेतेहैंबचाइउरराघवधिआइभलेमरकतश्याम
को ॥ सीयाकेसमेतनितचापवाणधरेरामसेवेशुभग्रीवपायो
राजनिजवामको ॥ विभीषणलक्ष्मनसेवतपदारविंदशिव
सेजपय्यापुनजाँकेनित्यनामको ॥२९॥ इतिश्रीमदध्यात्मरा
मायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **तोटकछंद** ॥ सुसुनेशुककेमु
खवाक्यकहे॥समसूरमहाँतममोहदहे॥ उररावणक्रोधमहान

भयो ॥ जनुदेतजलाइसुवाक्यकह्यो ॥ १ ॥ ॥ **सवैया** ॥ सेवकहैंदुरबुद्धिमहाँगुरुकेसममेउपदेशजनावें ॥ मैसभलोकनकोउपदेशकतूँमुहिभापतनाँहिंलजावें ॥ मारद्विवोंअवहीतुमकोउपकारसुपूरवतेमनआँवें ॥ ताँकरराखतहोंतुमकोवधलाइकजाहिनफेरसुनावें ॥ २ ॥ ॥**दोहा**॥ महाप्रसादसुभापशुककंपतगयोस्वगेह ॥ शुककीकथापुरातनीसुनोसुधारसनेह ॥ ३ ॥ **शंकरछंद** ॥ शुकहुतोब्राह्मणपूरवपुनब्रह्मवित्तमहान ॥शुभवानप्रस्थविधानकरतपकीनताँमतिमान॥ सुरवृद्धिकाजविनाशदैतनकीनयागअपार॥तबदेवप्रोहितजानदैतनकीनद्वेषसुभार॥ ४ ॥ ॥ **कवित** ॥ वज्रदाडनामइकराक्षसमहाँनशुकअंतरनिहारेयाँकोनीचगतिपावनो ॥ एकसमेआएसोअगस्तजोप्रशस्तऋषिशुकवनआश्रमसुकीनोतिनपावनो ॥ कीनशुकपूजनअगस्त्यपदगहेदीनदीनसुअमंत्रणप्रसादमेरेपावनो ॥ आमंत्रणमानभगवानजेअगस्त्यऋषिकह्योन्हाइआँवेंहमनदीजलपावनो ॥ ५ ॥ कुंभजपधारेतबअंतरनिहारेसोअगस्त्यसोप्रकारधारराक्षसहीआयोहै ॥ भोजनजोदहिंतबलाइकसनेहशुकसामिषबनावोऐसीभाँतिसुअलायोहै॥चीतहुलसायोशुकतोहिकोअलायोअएवरषअनेकमांसछागकोनखायोहै ॥ तथाशुकमानपुनछागमांसआनतिनभोजनअनेकभाँतिमांसकोबनायोहै ॥ ६ ॥ भोजनकिकाजजबबैठेमुनिराजतबराक्षससुनीचछलकीनोहैबनाइके ॥ शुकनारिरूपधारमोहीसाविथारनरमांसबहुपकति

नदीयोहरषाइकै ॥ पुनादुरगयोकपिहेरखुनसयोसुअमेधनर
मांसदीयोशुकमेपकाइके॥ महामेध्यमांसतुमदीयोमतिनाश
भईहोहुशुंकराक्षससुखाहुतूँअघाइके॥ ७ ॥ दोहा ॥ इहवि
धिदियोसुशापतिनशुकडरभयोमहाँन ॥ कुंभजमुनिकेपास
पुनकीनोशुकहिंवखाँन ॥ ८ ॥ मोहिवखान्योछागकमांसदेहि
विशाल॥ कहेआपकेसोदियोदीनोशापकराल ॥ ९ ॥ सुनशु
कवाक्यमुहूरतंधार्योकुंभजध्यान ॥ राक्षसकोकृतजानसभ
कीनोशुकहिंवखान ॥ १० ॥ अगस्त्यउवाच ॥ कवित ॥
तेरोअपकारीकोईराक्षसविकारीदियोमानुषकोमांसमोसों
ताँहींछलकीनोहै ॥ विनाहीविचारमुनिसत्तमउदारमैंनेधारउ
रक्रोधअतिशापतोहिदीनोहै ॥ वचनहमारोतुमसाचुहीनिहा
रोउरहोइतनुराक्षससुएहीउरचीनोहै ॥ रावणसहाइकररा
क्षसकीदेहधरशापअंतसुनोमुनिआगेजानलीनोहै ॥ ११ ॥
रावणविनाशहितआवहिंसुरामजबलंककेसमीपसंभवान
रमिलाइके ॥ रावणपठाइतुमरामकेसमीपजाइहोइदूतभारो
शुकपिखेंमनुलाइके ॥ होइशापअंतभगवंतपदपाइतवराव
णकेपासतत्त्वज्ञानतूंसुनाइके ॥ यौंअगस्त्यकह्योशुकविप्र
दुखलह्योपुनवेगभयोराक्षससुदेहपलटाइके ॥ १२ ॥ रा
वणकोपाइभयोचारोसुखदाइअवसानुजनिहाररामपुजोअ
भिलापीए ॥ रावणकोज्ञानतिनकीनोहैवखानपुनभयोद्विज
राजसुवैखानशिहैसाखीए ॥ मालवाननामआयोराक्षसम
हानमतिमानवडुरावणकीमातपितभापीए ॥ रावणकोभा

खिओवनाइउपदेशतिनशांतउरआतमसुनीजेतांकीसाक्षी ए ॥१३॥ मालवानउवाच ॥ ॥कवित॥सुनोदैत्यराजम मवाक्यहितकाजपुनसुनकेकरीजेजवमनमैसमाइहें॥पुरीके मझारीजवआईरामप्यारीसुलतांहींतेलगाइयौंनिमित्ततुदि खाइहें ॥ तेईमैवखानोंतुमधरोनिजकानोंनतोहोंहिगेविनाश सभसूखतुनशाइहें॥खरघोरतुपुकारेंमेघभीतकारेपुनलंकाकि मझारेशोणतपवसाइहें ॥१४॥ लिंगदेवरोवतप्रस्वेदवहुकं पमानगिरेंवहुभांतिउनपातकोदिखाइहें ॥ कालिकासुस्वेतदं तहासतनिकारआगेगऊअनकेमांहिंसुतरासभसुजाइहें ॥ मूपकनिवलमारजारसाथयुद्धकरेंपन्नगगरुडसंगकोपकैल राइहें॥विकटकरालमुंडपुरुपविशालपुनकोरपीरेरूपगृहओर निरखाइहें ॥१५॥ इननेसुआदिलैनिमित्ततुअनेकहोंहिंकुल रक्षपालहितशांनिअवकीजीए॥ सीयसतकारधनसाथलैअ पारदशकंठअवहाथजोरराघवकोदीजीए ॥ रामजलशाईहें नारायणसुजानउरकहोंदशमौलिसुनेद्दपनांहिंकीजीए॥ आ पऔमंदोदरीलवाइमेघनादसुतपांईंजाइपरोनिजप्राणवख शीजीए॥१६॥ ॥सवैया॥ जिनकेपदपंकजपावतही जनज्ञानितरेंभवनीरधपारे॥जनरामकिसेवनतेअतिपावन मानवनावहुराममुरारे॥भजतूंउरभाववढाइभलेवहुरामवसें सभचीतमझारे॥दुरचारसुयद्यपित्वंजगमैहरिसेवनतेमिटेंपा पतुमारे ॥१७॥ ॥दोहा॥ कीजेमेरेवाक्यकोराजन कुलहितकाज ॥ तीनभवनशिरताजतुमकीजेलंकाराज ॥

॥ १८ ॥ मालवानहितवाक्यक्रोधरेनरावणकान ॥ दुष्टातमद शकंठचहुकालउमाबलवान ॥ १९ ॥ कवित ॥ मालवानओरकहेवाक्यसुकठोरखलराक्षसकोराजदशकंठखुनसायोहै ॥ मानवअधीनरामताँहींकीवडाईकरेसुनोसभलोकमालवानसुबौरायोहै ॥ वानरअधीनकहेवलीपरवीनराममहामतिहीनतातवनकोपठायोहै ॥ तेरीवातपाईकछुरामहैपठाईजरछोडकुलरीतिपक्षरामकोअलायोहै ॥ २० ॥ जाहिघरमाँहिंअतिवृद्धमतिनाँहिंकछुबंधुजानतेरेसभवाक्यहैंसहारिआ ॥ फेरनउचारोहाथदंडलैपधारोयहितेरेदुरवाक्यकानजारतहमारिआ ॥ ऐसेसुनगुनवानगएमालवानचढरावणमहलकपिसेनकोनिहारिआ ॥ जेईपासआएभटसकलपठाएसंगरामजाइलरोइमरावणउचारिआ ॥ २१ ॥ लक्ष्मणदीनोधनुरामकरलीनोपुनरावणनिहारहरिक्रोधउरधारिआ ॥ महलउदारशिरछत्रतुहजारफिरेंकीटशिरलसेंसुअमातपरिवारिआ ॥ अर्धचंद्राकारइकवानसुउदाररघुवीरखुनसाइसुनिखंगतेनिकारिआ ॥ छत्रतुहजारदशमुकटउदारपुनआधेहीनिमेपमाँहिंसभेकटडारिआ ॥ २२ ॥ रावणअचँभमानभयोसुलजाइमानऊचवासत्यागवरेभौनकेमझारिआ ॥ मंत्रीसुबुलाएसुप्रहस्तआदिआएकरोकपिनलराईरणहेतुवैपधारिआ ॥ भेरीऔमृदंगवजेयोधिनसनाहसजेगजेरणधीरवजेगोमुखनगारिआ ॥ सिंहद्वीपिखरोंपरिचढकेपधारेकईकईभएमहिपऊठनअसवारिआ ॥ २३ ॥ दोहा ॥ खड्गत्रिशूलसुपाशिधनुयष्टीतोमरसांग ॥

लेसभट्टारनकोचलेपुरपालनकशतांग ॥ २४ ॥ सवैया ॥ उतरा मसुपूर्वहीसभवानरसंगरकेहितप्रेरचलाए ॥ तरुपाड़उखाडसु भूधरकोपुनशृंगपहारनहाथउठाए ॥ निकसेकविरावणकीध्व जनीरणचाहिभरेपुरद्वारनआए ॥ कपिराघवकेहितकाजसभे चढलंकअवासनपैकिलकाए ॥ २५ ॥ कवित ॥ द्रुमऔपहारपु नमूठनउभारकपियूथसुहजारकोटियूथशिरदारिआ ॥ कोटि शतचारपुनऔरकिलकारआएलंकगढघेरलीनोचहेंकपिमा रिआ ॥ कूदेंबलधारकपिगजेंकिलकारमुखरामजीतकहेंल क्षमणजीतसारिआ ॥ राजाशुभग्रीवकेसुजीतकेनिशानव जेहोइबातसाचीरघुनाथप्रतिपारिआ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ ऐ सेमुखमैभापकपिलरेंसुदैतनसाथ ॥ किमनलहेंरणजीतक पिसाथभएरघुनाथ ॥ २७ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ हनुमानअंगद कुमुदनीलनलसभशरभसुमेंदवाद्विविदपहिचानीए ॥ जांबवा नदधिमुखकेसरीसुतारभटऔरवलवंतजेईयूथपवखानीए ॥ गढकेसुद्वारजाइचढकिलकारकपिचारोदिशरोकीदशकंठरज धानीए ॥ तरुऔपहारकोंउखाररणमारेंकपिकाटेंनखदंतकपि महाबलवानीए ॥ २८ ॥ राक्षसउदारसभद्वारकोपधार आएभिंडपालपरुशुत्रिशूलअसिधारके ॥ वानरकीसैन्य माँहिआयुधचलाँवेंभलेमहाकायमहाबलहाथनउभारके ॥ वानरसुमारेंरामजीतकोउचारेंखलराक्षसकोपाँहिंकपिभट किलकारके ॥ मांसश्रोणकीचभयोसंगरकेबीचवड्डभयेहीसं ग्रामसुअभूतहीअकारके ॥ २९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तेगजवा

जिसवारभएरथकांचनकेपुनदैत्यसवारें ॥ राक्षससिंहभिरेंरणमैसुदशोदिशिमारहीमारपुकारें ॥ राक्षसऔकपिवीरवलीउरआपहुँआपनिजीतसुधारें ॥ राक्षसकोकपिवीरहनेकपिवीरनकोपुनराक्षसमारें ॥ ३० ॥ रामनरायणडीठकरीपुनदेवनअंशजएसुभवानी ॥ होतभएवलवंतसभीकपिताँहिंकरेजनुअंम्रतपानी ॥ सीयप्रकोपसुपापहनेपुनरावणपालकहैमनिहानी ॥ कांतिहतीवलटूटगएरणराक्षसमारकरीकपिघानी ॥ ३१ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ पादअवशेपनिजसैन्यतुविशेपहनीहेरमेघनादमनक्रोधवहुधारिओ ॥ धातावरदीनोभयोव्योममांहिलीनोपुनब्रह्मअस्त्रजोईसोईमनमैसंभारिओ ॥ नानाहुँविधानकेसुवानलैकमानतजेवानरअनीकरणमाँहिंमलडारिओ ॥ वाणजालघाएजनुवारिदवसाएसुअचंभकपिमानउररामकोचितारिओ ॥ ३२ ॥ ॥दोहा ॥ ब्रह्मअस्त्रकोजानउररामकीयोतिहँमान ॥ क्षणहरिमौनसुधारपुनअतिकोपेभगवान ॥ ३३ ॥ ॥कवित ॥ ॥ रामकोपधारेसमपावककरारेवलवानरदिखारेहरिवोलेमुसकाइके ॥ चापमोहिल्याइअववेगभ्रातधाइकरमारोंमेघनादब्रह्मअस्त्रसुचलाइके ॥ मेघनादसुनेयहिरामकेवखानेवक्षभयोसावधानउररस्योडरपाइके ॥ मायकसुदैत्यखलकरतअनेकछलभयोडरभारीगढलंकधस्योधाइके॥ ३४ ॥ रामतोनिहारीगिरीवानरकीसेनासारीभयोदुखभारीहनुमानकोवखानीआँ ॥ क्षीरनिधितीरइकद्रोणगिरिवीरदिव्यऔपधिमहानअवसोई

वनेआनीआँ ॥ वेगभय्याजय्योपथिवेरनलगय्योकछुवानर जिवय्योयशहोइतेमहानीआँ॥ वायुकेकुमारचलेवेगसोंपधा रपथिरामचंद्रआइसुखुशीशपरमानीआँ ॥३५॥ द्रोणद्दीप हारसुउखारकपिआन्योसभवानरजीवाइगिरितहाँपहुचायो है॥पूरवसमाननादभैरवमहानकपिगाजेबलवानदशकंठसुन पायोहै ॥ विस्मयअपारभयोरावणमझारउरपाइदुखभारीमु खवाक्ययौंअलायोहै॥राघवमहानमेरोवैरीवलवानजगदेव ताबनायोगढलंकचढआयोहै ॥ ३६ ॥ ममसैन्यकेसिदारसभ चढेनविचारकरेंरामवधकाजएहीउरआनीआँ ॥ मंत्रीअर भाईमेरेजेईसुखदाईसभसंगरनिमित्तजाँहिंआइसुकोमानी आँ॥ जेईनाँहिंजाँहिंरणभूमितेडराँहिंपुनरहेंपरमाँहिंनिजप्रा णहितठानीआँ ॥ तिनकोसुमारोंनिजदेशतेनिकारोंमतिभई तिनहानममआइसुनमानीआँ ॥ ३७॥ सुनकैभवानीसभड रेदशकंठवानीकोविदसुधीररणचलेअसिधारीआ॥ अतिका यसुप्रहस्तमहानादमहोदररावणकीसैन्यकेजेभापीएसिदारी आ ॥ देवशत्रुएकपुनदूसरोनिकुंभसुनतीसरोसुरांतकनरांत कहैंचारीआ ॥ औरजेईवीरबलवंतरणधीरकपिसाथखेतहेत चलेसैकेहहजारीआ॥ ३८ ॥ वानरकीसैन्यधसराक्षसअपार बलमारेंकपिधाइखलआयुधचलाइहैं ॥ शूलभिंडपालवा नखडगकरालसुविशालभुजतानतानपरशुवगाइहैं॥ औरसु अनेकभाँतिअस्त्रनकोघातकरेंमारकपियूथपसुभूमिमैगिरा इहें॥वानरउखारकेपहारतरुशृंगमारेमूठकेप्रहारनखकाटका

दखाइहैं ॥ ३९ ॥ **सवैया** ॥ नखदंतनमुष्टिनघाइघनेवरराक्षस
केकपिप्राणनिकारें ॥ पुनरामहनेरणराक्षसकेचितकचितसूर
यकेसुतमारे ॥ हनुमानहनेपुनऔरकपीशनराक्षसकेशिरमैत
रुझारें ॥ रघुनायकतेजसुपाइभलेकपिहोइवलीरणमैकिलका
रें ॥ ४० ॥ ॥ **दोहा** ॥ रामप्रभावविहीनजेराक्षसउमाम
लीन ॥ कपिनतुल्यकिमहोंहिंवलिभएसुसंगरदीन ॥४१॥सर्वे
श्वरपुनसर्वमयसर्वविधाताजोइ ॥ मायामानुपवेपधरकर
विडंवनसोइ ॥ ४२ ॥ सदासच्चिदानंदमयरामवखानेवेद ॥
मायारणलीलाकरेंसदारहेंनिरखेद ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्म
रामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ सुनकरणमंडलसै
न्यहतीअतिकायसुआदिमहावलधारी ॥ मनरावणकेदुखता
पभयोउरभीतरक्रोधभयोपुनभारी ॥ पुरपालनकेहितथापध
रेमघवाजितपूतसुलंकमझारी ॥ भिरणेरणरामसोंआपग
योसंगराक्षसलैसुवडेवलकारी ॥ १ ॥ स्यंदनमाँहिंअरूढभयो
करआयुधऔसभअस्त्रसँभारे ॥ राघवऊपरदौरपयोंदशकंध
रमारहिंमारपुकारे॥ भीमभुजंगमसेशरलैकपिवीरवलीरणमं
डलमारे ॥ औरनकोगतिकौनगनेंशुभग्रीवगिरेरणभूमिमझा
रे॥ २ ॥ पाणिगदारणमाँहिंखडेसुविभीपणरावणनैननिहारे॥
दानवदाजदईशकतीसुविभीपणओरहनीरुपभारे॥पावकको
मुखमाँहिंवमैजनुआजुविभीपणप्राणनिकारे ॥ रामअभैइन
कोसुदियोवधलायकनालक्ष्मंनविचारे ॥ ३ ॥ **शंकरछंद** ॥

पिखआवतीवद्दुशक्तिलक्षमणऐसवदनवखान ॥ धरधीर वीरयवंतलक्षमणहाथलीनिकमान॥ झटरामभक्तविभीपण केखरोआगेजाइ ॥ विनकंपमेरुसमानसुंदरऐसडीलसुहाइ ॥ ४ ॥ साशक्तिलक्षमणदेहमैंसुअमोघपैठीधाइ॥ सभशक्ति मायाईशकीक्षणमाहिलेइउपाइ ॥ प्रभुसर्वशक्तिअधारलक्ष मणहैपरातमरूप ॥ क्याकपटशक्तिसुकरसकेतिहँशेपहरितनु रूप ॥ ५ ॥ सुतथापिमानुपरूपलीनोभएततअनुसार ॥ तन भईगिरिजामूरछावद्दुगिरेभूमिमझार॥ दशकंठधायोलेनको नहितोलिओकरजाइ ॥ बललाइरावणहारिओपुनरह्योउर विस्माइ ॥ ६ ॥ प्रभुसर्वजगकोसारजोपरमेशआहिविरा ज॥किहँभाँतिताँकोतोलईलघुराक्षसनकोराज॥सुग्रहीतका मंलक्षमणंपिखरावणंहनुमान ॥ कुपमुष्टिछातीहनीताँको लगीवज्रसमान॥ ७॥ अतिमुष्टिकेसुप्रहाररावणगिर्योभूमि मझार ॥ मुखनयनकानसुजाइलोहूझरेमनोपहार ॥ दशकं ठनयनसुविभ्रमैंपुनखडोरथहिगजाइ ॥ हनुमानलक्षमणधा इकेझटलिएहाथउठाइ ॥ ८ ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ सुराम केसमीपबाहुमाँहिंधारआनिओ ॥ हनूमतंसुहारदंसुभक्त शिष्यजानिओ ॥ लघुत्वभावपायजोअजन्मभारभारीया ॥ नरायणांशजानकैभईसुशक्तिन्यारीया ॥ ९ ॥ भुजासुवी शस्यंदनेधसीसुवेगधाइके ॥ शनैसुपाइहोशराक्षसेपकोपपा इके ॥ सुचापहाथमैलियोसुरामओरधाइओ ॥ निहाररा मकोपकेउमाहनूबुलाइओ ॥ १० ॥ हनूमतंअरूढरामस्यं

दनेसुरावणं ॥ परेसुवेगधाइकेसुहाँहिंमघसावणं ॥ टणंतका
रचापकोसुरामलैकरंकरे ॥ मनोसुरंशवज्रजाध्वनीअकाश
हैभरे ॥ ११ ॥ गँभीररामवोलकैसुरावणेसुनाइहें ॥ क्रयाहि
राक्षसाधमाक्षणैकतूँथिराइहैं ॥ समंनिहारहौंसदाकरेंअनि
ष्टमेरिआ ॥ क्याहिनीचभागकेक्कटोंसुशीशतेरिआ ॥ १२ ॥
सुजाँहिंबाणसोंहनेसुराक्षसाजनालयं ॥ गएअनेकवेवली
सुताँहिंमाँहिंचालिये ॥ सुकेकसीकिनंदनाहनोंसुवाहसायके
क्षणेकठाढजोरहेंनजाँहिंतूँपलायके ॥ १३ ॥ सुरामवाक्य
योंसुनेसुमारुतीनिहारके ॥ दशाननेहनूहनेसुबाणचापधार
के ॥ सुबाणतीक्षणंहतेहनूनतेजहारिओ ॥ विवर्द्धतेजगाजि
ओसुवायुकोकुमारिओ ॥ १४ ॥ तबैसुहेरमारुतीभएक्षतंसु
भारिआ ॥ सुकालरुद्रकेसमानरामक्रोधधारिआ ॥ तुरंगसू
तस्यंदनंध्वजंधनूंसुहाइआ ॥ पताकछत्रकाटरामवाणकैव
गाइआ ॥ १५ ॥ सुफेररावणंहन्योशरैकलेशरासनं ॥ सुवज्र
कैमहीधरंहनेजुपाकशासनं ॥ सुरामबाणकैहतोचचालमो
हरावणे ॥ गिरेसुचापहाथतसमीक्षरामलावणे ॥ १६ ॥ सु
अर्धचंद्रवाणकैचिछेदक्रीटउत्तमे ॥ लसेंसुभूमिमैपरेमनो
रवीअनुत्तमे ॥ कह्योसुरामबाणमेविशेषदेहतेदलं ॥ ध
सोसुलंकविश्रमोसुप्रातपेखमेवलं ॥ १७ ॥ रामबाणके
हतोसुदर्परावणेगयो ॥ सुआगलंकमैगयोलजाइमानसो
भयो ॥ सुरामभ्रातकोपिखेसुमूरछंपरेधरे ॥ मनुष्यभा
वपाइकेविलापरामजीकरे ॥ १८ ॥ हनूमतंवखानिओसुल

क्ष्मणंजिवाइये ॥ महौषधीसुआनवेगढीलनालगाइये॥ सु
वानरोंजिवाइफेरऔषधीलिआइके ॥ तथेतिभाषमारुतीच
लेसुवेगधाइके॥ १९ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ वायुवेगगयोजल
सागरकेपारपयोयहीसमाचारहलकारेलखपायोहै ॥ राजन
केराईरघुवीरहितभाईसुवुलाइहनुमानक्षीरसागरपठायोहै ॥
भ्रातकोजिवाइसुमहौषधीअनाइयहिसुनीदशकंठहलकारेसु
सुनायोहै॥भयोडरभारीगयोरातिकेमझारीकालनेमीकेभवा
ससुउदासदुखपायोहै ॥ २० ॥ एकलोनिहारआयोभौनके
मझारदशकंठशिरदारकालनेमीविसमायोहै ॥ ज़ोरेकरदोऊ
पुनडरेउरसोऊकरपूजाअरचादिठाढोआगेयोंअलायोहै॥रा
क्षसकेराजकरोंकौनअयकाजतुमरातिकोइकेलोगृहकाहेम
मआयोहै॥दुखीअतिदीनमनरावणमलीनसुनवाक्यकालने
मिकोहिमालजाअलायोहै ॥ २१ ॥ कालवलवानममदु
खतोमहानभयोमाररणसाँगरामभ्रातमोहिमारिओ ॥ महा
वेगवानलेनऔषधीमहानपुनताँहिंकेजिवानहितहनुहैपधा
रिओ.॥ विघनजिहोइतिहँकरोकाजसोइतुममहामतिमान
काजवनेगोसवारिओ ॥ मायामुनिभेपधरहनुमानमोहकर
कालकोविताइआउमंदिरमझारिओ॥ २२ ॥रावणकीसुनी
वानीकालनेमीहूँवखानीसुनियेलंकेशवाततोहिकोउचारहों॥
काजतेसवारोंनाहिंआपनोविचारोंकछुतोहिहितकाजनाहिं
प्राणनिजधारहों॥होइगोमारीचवनहालसोहवालममविना
हींसंदेहपथिताँहींकेपधारहों॥वुरोजिनमानकछुकरतवखान

हिनहोइगोतुमारोमनऐसेहीविचारहों ॥ २३ ॥ हनेसुलभाईकुलराक्षसकीघाईअबजीवनसोंकाजदशकंठननिहारिये ॥ जानकीसुराजतेरेकाजनाँहिंकितेसुनआपनोशरीरजडरूपकैविचारिये ॥ सीयरामदीजियेविभीषणकोलंकराजतपोवनवीचदशकंठजूपधारिये ॥ प्रातजलनय्येकृत्यनित्यकीकमय्येअवडाररराजसाजमुनिभेपकोसवारिये ॥ २४ ॥ शंकरछंद ॥ एकांतठौरसुवैठनीकेआसनंकुशधार ॥ गुणविषयजेप्रतिबंधकासभदेहिउरतेटार ॥ सभरोकइंद्रयआपनेमनआनआतममाँहिं ॥ इहभाँतिकीजलंकपतिसभपापतेमिटजाँहिं ॥ २५ ॥ गुणप्रकृतिन्यारेआतमानिपपापलेहुविचार ॥ संसारथावरजंगमोतनबुद्धिइंद्रयधार ॥ आब्रह्मत्रिणपर्यंतसुनिएदेखिएपुनजोइ ॥ सभप्रकृतिमायाभाखियेइहताँविनानहिंकोइ ॥ २६ ॥ जगजन्मऔस्थितिनाशकायाआहिकरणेहार ॥ शुभरक्तश्वेतरुकृष्णप्रजाविरचेवहुविस्तार ॥ मदकामक्रोधसुलोभआदिकअहेंपूतमहान ॥ हिंसासुत्रिष्णाकंन्यकादशकंठलेहिपछान ॥ २७ ॥ निजगुणदिखाइसुआतमाकोमोहदेवेडार ॥ आरोपैहेपुनआतमामैंआपनेसुविकार ॥ वशिआपनेकरताँहिंकोपुनक्रीडहेमिलताँहिं ॥ अतिशुद्धआत्मसुजौमिलेदुखपेखहैनिजमाँहिं ॥ २८ ॥ सुभुलाइआपनआपकोनिजआतमासुपरेश ॥ मायास्वगुणकृतमोहतेवहुपाइजगतकलेश ॥ जबमिलेसाचेगुरूकोवहुकरेबोधउदार ॥ सुनिवृत्तदृष्टिनिजातमादशकंठलेननिहार ॥ २९ ॥ दोहा ॥ जीवनमुक्तसुहोवईत्या

गेवंधनसोइ ॥ प्राकृतजेगुणभाखियेरहेनतामैंकोइ ॥ ३० ॥ **शंकरछंद॥** दशकंठतूंनिजआतमाकोएवलेहिविचार॥ सभ रोकइंद्रयआपनेअवतजोसगलविकार ॥ निजप्रकृतिभिन्न स्वआतमाकोंपेखहैंमनलाइ ॥ दशकंठसाचीभापहोंसभवंध तेमिटजाइ॥३१॥ **गीयामालतीछंद॥**ध्याइनिर्गुणनांसकेंत वंसगुणध्यानहिंकीजिए ॥ लंकेशतेहितभापहोंअवमानसोई लीजिए॥ हृदिपद्मकोशसुहेमपीठेजडेमणिगणशोभहीं॥ मृदु विछेस्वच्छविछावणेपिखदेवतामनलोभहीं ॥३२॥ ॥ **शंकरछंद॥** तहँजानकीसहरामवैठेदामनीघनश्याम॥शुभवीर आसनकंजद्रिगपटचंचलाअभिराम॥ शिरकीटहारकियूरकौ स्तुभनूपरेझनकाँहिं॥ करकटकसुंदरशोभहींवनमालगललश काँहिं॥३३॥लक्षमणलियेकरदोधनूरघुवीरसेवेनीत॥इहभाँ तिरावणध्याइतूँपरमातमाकोचीत॥ प्रभुपराभक्तिसुकीजिए सभवंधतेमिटजाइ॥ शुभचरितसुनतूँरामकेदशकंठनिजमन लाइ ॥ ३४॥ इहभाँतिपूर्वसुपापतेक्षणएकमैंमिटजाइ॥अति अग्निमैजिमतूलराशीपडीनाठहिराइ ॥भजरामपूर्णसुएकतूँपु नन्यागवैरमहान॥निजभक्तियुक्तसुरामभजिएपुरुपजोनपुरा ण ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादे युद्धकांडेपष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥**श्रीमहादेवउवाच** ॥ ॥ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ कालनेमिकेवाक्यसुनकहेमहामृतसार ॥ रावणकेदुखभयोउरक्रोधभयोपुनभार ॥ १ ॥ **कवित** ॥ क्रूरे इगलालउरकोपतोविशालभयोतातेघृतमाँहिंजनसंवरसुडा

रिओ ॥ हनोअबितोहितेनेआइसुनकीनीमोहिरामकछुदियो
ताँतेऐसेसुउचारिओ ॥ राघवकोदासभयोमोहितेपलाइगयो
कह्योकालनेमिदेवकोधवनेडारिओ॥ बातनसुहाइतवकरोंते
सहाइमुखऐसेतुअलाइकालनेमीतुपधारिओ ॥२॥ रावणके
वाक्यमानगिरिजापयानकियोहनुमतविघनसुकालनिजका
योहै ॥ हिमगिरिजाइउमाकियोहैउपाइइकबडोविसतारब
नतपकोवनायोहै ॥ मुनिभेपधारेबहुशिष्यपरवारेकरलईअ
क्षमालडीमडामतुसुहायोहै ॥ पथिहनुमानतिनकीयोहैअडा
नइमअंजनीकुमारतहाँवेगयुतआयोहै ॥ ३ ॥ देख्योहनुमा
नइकआश्रममहाँनबहुचिंतगलितानमनएहुहैविचारिओ ॥
मंडलनचीनोंतपवनहैनवीनोजबआगेहमआएतबएहुननि
हारिओ॥मारगभुलानोममचित्तभ्रमसानोकिधोंधसोंवनबी
चयहिआश्रमअपारिओ ॥ देखमुनिधीरपीवोंशीतलसुनीर
पुनद्रोणगिरिजाँउँहनुमाननिरधारिओ॥४॥ ऐसेतुवखानवरे
बीचहनूमानवनयोजनमहानइकआश्रमसुहाएहैं॥कदलीख
जूरपुनपनसगरूरफलपाकेअतिभारेतरुभूमिलटकाएहैं ॥ त
पबलहेरमृगशेरसुचुफेरचरेंभएमीतभारेवैरभावविसराएहैं॥
ताँहिवनबीचकालनेमिखलनीचइकआश्रमवनाइठाटनूतन
बनाएहैं ॥ ५ ॥ इंद्रयोगधारकरगोमुखीसवारशिवलिंगहैउ
दारतहाँपूजेमनलाइकै ॥ क्षीरसोंनवाएपत्रकुसुमचढाएधू
पदीपलेवेफेरीमुनिगालकोवजाइकै ॥ भोगकोलगाएमुख
मंत्रतुअलाएपुनकरेशिवध्यानदोऊनैनकोमिलाइके ॥ हनु

मानपेखमुनिजानिओविशेषपुनकरीअभिवंदनाभवानीढि
गजाइके ॥ ६ ॥ भगवनरामकोसुदूतपहिचानोमोहिहनुमान
नाममेरोलोकमैवखानीए ॥ रामकाजहैमहानोक्षीरसिंधुमैहै
जानोभईत्रिषभारीकहींपायतहैपानीए ॥ सुयथेष्टपानजल
कीजिएवखानमुनिवेगमोहिजानोउरयहीपहिचानीए॥ सुनी
हनुमानबानीकालनेमिहूँवखानीसुनीएभवानीवातवहीनिज
कानीए॥७॥ कमंडलुनीरतुमपीवोकपिधीरयहिपाकेफलभारे
अवनीकेमुखदीजिए ॥ आश्रमनिवासकरोमनकेकलेशहरो
सोइरहोनीकेउरचिंतनाँहिंकीजिए॥ भूतऔरभावितपवलके
पछानोसभभईवातलंकअवसोईसुनलीजिए ॥ लक्षमणहैंउ
त्थानेवानरजिवानेसभरामकेनिहारेकपिउरमैपतीजिए॥८॥
॥सवैया॥सुनकैहनुमानकह्योमुनिकोसुकमंडलुकेजलनात्रि
पजाए॥ जलकोसरमोहिदिखाइदिजेजलप्यासभईमुनिमेअ
धिकाए॥सुतथामुखभापमहाँकपटीकपटीइकशिष्यसुताँहिंबु
लाए॥वटुवायुकुमारकुजाइभलेअवनीरतलावसुदेहिदिखाए
॥९॥ नैनमिलाइसुनीरअचोपुनआवहुवेगसुपासहमारे॥ मं
त्रकरोंउपदेशतुमेसुमहौषधिजाँकरनैननिहारे॥भापतथाहनु
मानगएद्रिगमीटधसेजलतालमझारे ॥ पीनलगेजलकोजब
हीमकरीइकआइगहेकपिभारे ॥ १० ॥ घोरस्वरूपमहानति
सेपिखताँहनुमानभयोरुपभारी ॥ दोकरमाँहिंगहीमकरीमु
खफ़ारभलेमकरीवहुमारी॥ दिव्यअपच्छररूपधरेहनुमानव
हीनभमाँहिंनिहारी॥ हैनभतेअवहीउतरीजनुरूपविराजतताँ

हिंअपारी॥ ११॥ ॥गीयामालतीछंद॥शुभधान्यमाली नामतिहँहनुमानकोतिनभाखिओ॥ सुप्रसादतेरेवायुसुतयह शापमेरोनांखिओ ॥ मुहिशापपूरवथोदियोमुनिभयेहेतुभ हानिये ॥ इहकालनेमीदैत्यआश्रमनामुनीस्वरजानिये ॥ १२॥ तेविघ्नकरनेकाजयाँकोलंकनाथपठाइओ॥ यहिआ हिमुनिनविहिंसकोमुनिभेपयाँहिंवनाइओ ॥ हनदुष्टद्रोणसु भूधरेकपियाहिसत्यवताइओ ॥मैजाँउँब्रह्मसुलोकमैतवसंग पापमिटाइओ ॥ १३ ॥ इमभापसागइस्वर्गकोहनुमानआ श्रमआइओ ॥तवआइओपिखताँहिंकोपुनकालनेमिअला इओ ॥ कपिसत्तमातूँआउमेढिगनाँविलंवसुकीजिए॥ तेमं त्रदेवोंकानमैगुरुदक्षणामुहिदीजिए ॥ १४ ॥ इहभाँतिसु नहनुमानअपनीवाँधिमुष्टिसुभारीआ ॥ गुरुदक्षणामुनिलीं जिएइमभापताँउरमारीआ ॥ तजिअक्षमालसुगोमुखीमुनि भेपदैत्यउतारके ॥ हनुमानसोंलरनेलगोमायासुवहुविस्तार के॥ १५॥ हरिमहामायकदूतयहिहनुमानमायनकोअरे॥ कु पमारमुष्टिसुतोरशिरहनुमानप्राणसुताँहरे ॥ पुनलाँघक्षीरस मुद्रकोगिरिद्रोणताँहिंनिहारिओ ॥ जवपिखीनाँतहँऔपधी गिरिनिखलताँहिंउखारिओ ॥ १६ ॥ ॥ सवैया ॥ भारिपहा रसुलैकरमैहनुमानसुराघवकोढिगआए ॥ आनपहारधरे ढिगमैहनुमानमुखोंयहिवाक्यअलाए ॥ जोकछुयोग्यकरो प्रभजूअवआपविलंवसुदेहुमिटाए ॥ यौंसुनकेहनुमानगि रारघुनाथभलेमनमैहरपाए॥ १७ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ली

निऔपधीधीररघुपतिसंगसुपेणके ॥ करीचिकित्साबीरलक्ष
मणलिएजिवाइके॥ १८॥ ॥ सवैया ॥ सुपतोत्थितज्यौंल
क्षमंनउठमुखभीतरयाँविधिवैनअलाए ॥ कहँजाहुरहोरण
ठाँढअबैदशकंठदिऊँयमलोकपठाए ॥ इहभाँतिकत्योलक्षमं
नजवैसुनकैरघुनंदनजूहरपाए ॥ शिरचूमउमाउरप्रेमभरेर
घुनायकभ्रातसुकंठलगाए ॥१९॥ कवित ॥ ॥ कत्योभगवा
नसनमानहनुमानकरतेरेहीप्रसादसभहोंहिंकाजमेरिआ॥ ल
क्षमणभाईकेमिटाइदिएघाइसभतेरेहीप्रसादआजुजीवतनि
हारिआ॥ऐसेपुनभाषरघुनाथकपिसाथलिएऔरकपिनाथपु
नसाथहीपधारिआ ॥ चढेसुसंग्रामतेजधामभगवानपुनसा
थसुविभीषणकेमंत्रहैविचारिआ ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ले
पाथरपादपघनेवानरवेरणधीर ॥ समरभूमिसनमुखचले
महावलीभटबीर॥ २१॥ सवैया ॥इतवानरलेकरआयुधको
रणमंडलमैचढकेभटआए॥ उतरावणरामकिवानहत्योगढलं
कविखेसुमहादुखपाए ॥ गजराजयथामृगराजकिघावन
पंनगज्यौंखगराजकिघाए ॥ दशकंठडरेरणराघवतेतिमवैठस
भासददैत्यबुलाए ॥ २२ ॥ वैठसभासभैदतनकोतवरावण
याँविधिवैनअलायो॥ मानुषकैमरणोहमरोसुपितामहिंपूरव
आपबतायो ॥ मानुषनामुहिमारसकेयहिआपनरायणभूत
लजायो॥मानुषदाशरथीहरिहोइसुमारणमोहिइहैचढआयो
॥ २३॥ अनरंण्यमहीपतिशापदियोमुहिपूरवसोसुनियोमन
लाई ॥ उपजेममवंशविषेपरमातमनावरणीजिनकीछवि

जाई ॥ तवपुत्रसपौत्रसबांधवकोतुहिमारहिंगेरणमंडलआ
ई ॥ इमभाषमहीपगयोक्षणमैजहँआपविराजतहैंसुरराई ॥
॥ २४ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ उपजेरामसुगूढनिश्चयमोकोमा
रहैं. ॥ कुंभकर्णअतिमूढनिद्राकेवशिहैभयो ॥ २५ ॥ ॥ दो
हा ॥ ॥ ल्यावहुताँहिंजगाइकेमेढिगलाउनढील ॥ यौंसु
नगएजगावनेवडेजिनोकेडील ॥ २६ ॥ कवित ॥ वरेजवभौ
नतवस्वासनकोलगेपौनचलेतुउडतठहिराँहिंनाँहिंमंदिरे ॥ के
चितपलाँहिंपुनकाहूँकीउडतपागभागचलेकेईकेइधसेगृहकंद
र ॥ केचितउडानेतरुशाशिलपटानेतोरखाँहिंफलपाकेजनुकूद
कूदवंदरे ॥ केचितसुवीरधरधीरभटआएफिरओटदेदिवारन
कोधसेजाइअँदिरे ॥ २७ ॥ सवैया ॥ सुसुमेरुसमानसुभोज
नकेतहँआनघनेढिगपुंजबनाए ॥ मृगओमहिषाअतिसूरघने
तहँकोटिनकोटिसुराक्षसल्याए ॥ ढिगशोणितकेवहुकुंभभरेम
द्केकलसेनहिंजातगिनाए ॥ चंदनसोंतनलीपतहैंढिगकोटिन
कोटिसुधूपजगाए ॥ २८ ॥ घनसेढिगराक्षसगाजतहैंपुनहाथ
नसोंतिहँकोतनघाएँ ॥ घटकाननकेपुनकाननमैवलवंतसभै
ध्वनिशंखसुनाएँ ॥ ढिगआनअनेकसुभेरिरेंपुनकोटिनकोटि
सुदुंदुभिवाएँ ॥ इहभाँतिसमीपसुआइसभेसुजगावनहेतम
हाँवललाएँ ॥ २९ ॥ खरऊठतुरंगमताडकशागजअंकुशताँ
तनमाँहिंचलाए ॥ इकताडतताँहिंगदागहिकैइककाष्टसुदंडअ
नेकलगाए ॥ इकशैलनकोशिरमारतहैंइकमारतमूशलकोढि
गआए ॥ इकखैंचतकेशनकोवलकैइककाननकाटतकोपव

ढाए ॥ ३० ॥ इहभाँतिरहेपचहारसभेनहिंजागतसोउलटो अलसाए ॥ तबफेरविचारकीयोसभहूँढिगनारिनकेबहुझुंड बुलाए ॥ अहिराक्षसदेवनकीदुहितानरकिंनरकीसगलीपुनआए ॥ ढिगनाचतगावतआइसभैकरकंकणचंदनलेपलगाए ॥३१॥ गलफूलसुगँधसुमालधरीद्रिगवारिजकीछविदूरनिवारी ॥ तनकांचनसीद्युतिछाजतहैपदनूपुरकीसुनियेझनकारी॥ बिसतीरणजंघसुरंभसमाघनपीनपयोधररूपकुमारी ॥ अतिकुंचितहैंअलिकाँजिनकीअतिनीलशिरोरुहसोहितसारी॥३२॥ तिनकोमलहाथसुगातलगेध्वनिनेवरकीजबही सुनपाई॥ द्रिगनींदघटीसुजगेतबहीघटकाननआननलीनजँभाई ॥ बडवानलसोमुखशोभितहैभुजऔरभुजंगमसीछविपाई॥ तबगागरकोटिपखारमहाँमुखमाँहिंपतारमनोजलजाई॥३३॥ मुखमांसधरेमदपानकरेदधिसोंपुनमेदघनोतिनखायो॥घटशोणितकेबहुपानकरेमहिपामृगशूकरदाढचबायो॥ जबलोगनताँबहुभाँतिकह्योचलआपतबैढिगरावणआयो ॥ अभिवंदनरावणपादकरीगहिबाँहिदशाननपासबिठायो ॥ ३४ ॥ रावणदीनगिरामुखबोलतभ्रातसुनोअबतोहिसुनाँऊँ ॥ भवमंडलकष्टभयोहमकोघटकाँननताँहिततोहिजगाँऊँ ॥ ममशूरमहासुतपौत्रहनेपुनबांधवरामहनेदुखपाँऊँ ॥ मरणोअबआइसमीपभयोशिरकालगहेकृतकौनकमाँऊँ ॥ ३५॥ दाशरथीयहिराममिलेशुभग्रीवकिसंगसमुद्रतरेहैं ॥ काटतमूलवलीहमरोरणमंडलराक्षसपुंजदरेहैं॥वानरनाशपि

खोंनकवीरणमंडलगाजतवीरखरेंहैं ॥ यॉँहिततोहिजगाइलि
योअरिमारहुजेगढलंकभिरेंहैं ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ भ्रात
निमित्तसुकीजियेद्धुपकृतकर्ममहाँन ॥ रावणकोसुविलापसु
नहसवोल्योघटकाँन ॥३७॥ सवैया ॥ पूरवमंत्रविचारकियो
तवहीनृपमैहिततोहिवतायो ॥ पापकरेभवमंडलमैतिनको
फलरावणतेंअवपायो ॥ रामनरायणहैपरिपूरणमैदशकंठसु
तोहिजनायो ॥ सीयअहेसभकीजननीइहभाँतिकह्योतवना
मनआयो ॥ ३८ ॥ एकसमेनिशिकोवदरीवनमैमुनिनारदजू
सुनिहारे ॥ मैहुँकह्योकरजोरदोऊकिहँठौरकहोमुनिआपप
धारे ॥ देवनमंत्रकरेमिलकैतिहँठौरहुतोइमताँहिउचारे ॥
देवनमाँहिंसुन्योहमहूँतिहँठौरभएसुउदंततुमारे ॥ ३९ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ तुमदोनोपीडादईदुखीभएसुरभार ॥ विष्णुस
मीपसुजाइकैदेवनकरीपुकार ॥ ४० ॥ भक्तिभाइसुस्तुतिकरी
देवनकीनवखान ॥ तीनलोककंटकवलीरावणहनभगवान
॥ ४१ ॥ मानुपकैमरणातिनैब्रह्माकीनवखान ॥ याँतेमानु
षरूपधरहनोताँहिंभगवान ॥ ४२ ॥ ॥ सवैया ॥ विष्णुक
ह्योसुरमंडलकोइमहींसुकरोंनहिंढीललगावों ॥ मैरघुभू
पतिकीकुलमैउपजोंपुनरामसुनामकहावों ॥ रावणकोरण
माँहिंहनोंतुमरेउरकेसभदूखमिटावों ॥ नारदयोंमुहिभापगयो
दशकंठवह्रीअवतोहिसुनावों ॥ ४३ ॥ रामसनातनब्रह्मपिखो
अववैरदिवोउरतेसभडारी ॥ मानुपरूपलियोहरिसुंदरसोभ
जियेउरप्रेमविथारी ॥ रामभजेंउरभीतरजेतिनहोतप्रसन्नसु

राममुरारी ॥ भक्तिजनेउरभीतरज्ञानसुज्ञानहिवंधनदेतनिवा री ॥ ४४ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ भक्तितेविहीनजोईकीजियेसु व्यर्थसभसुनोमनलाइअवसारकोवखाँनिए ॥ लीलाअनु कारअवतारहैंअनेकहरितिनकेहजारपुनएकओरठाँनिए॥ रा मअवतारपुनएकओरधारआहितोँहिंकेसमानज्ञानरूपशिव जाँनीए ॥ रामहिंजेध्यावैंतेईजाँवेंभवसिंधुपारपावैंपदह रिकोसुचीतमैपछाँनिए ॥ ४५ ॥ सवैया ॥ जाँमनउज्वल हैजगमैपुनतेजनरामकुनीतसुध्यावें ॥ रामचरित्रसुपाठकरें भववंधनतेक्षणमाँहिंमिटावें ॥ सीयपतीहरिरामहिंकोपदपूर णवेसुखसोंजनपावें॥राघवकीयहिपुण्यकथाकविसिंहगुला वसदामुखगावें ॥ ४६ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउ मामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेसप्तमोऽध्यायः॥ ७ ॥ ॥ श्रीमहा देवउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ घटकाननकेयहिवाक्यसुनेभ्रु कुटीकुटिलादशकंठअलाए ॥ गिरआसनतेजनुभूमिपरेत कियाइततेउतआपहलाए ॥ मुहिज्ञानजनावनकेहितनाघट कानसुनोतुमपासवुलाए॥ सुनमोहिकियोउरमानभलोरुचि होइभिरोअवसंगरजाए ॥ १ ॥ नहिंतोअवजाढुवरोघरमै द्रिगनींदभईतुमकोअतिभारी ॥ सुनरावणकेयहिवाक्यउभा घटकाननयौंमनमाँहिंविचारी॥ दुष्टअहैदशमौलिवलीइहजाँ नगयोरणभूमिमझारी ॥ वढुलाँघप्रकारगयोक्षणमैसुसपक्ष वडोजनुभूधरकारी॥ २॥ निकस्योपुरितेइहभाँतिवलीसभवा नरसैनकहेरडराए ॥ मुखभीतरयौंपुनगर्जितहैध्वनिसोंसभ

सागरतौँहिंनदाए ॥ कपिपुंजनकोदुखदेवतहैभुजमाँहिंगहेमु
खभीतरपाए ॥ सहपक्षमनोगिरिआवतहैघटकाननपेखसु
कीशपलाए ॥ ३ ॥ कवित ॥ तकीराजधानीकपिडरेहैंभवा
नीलिएमुद्गरकोहाथमानोआपकालआएहैं ॥ फिरेकपिसैन्य
माँहिंवानरपलाँहिंआगेदौरनेनपाँहिंकीशघेरघेरखाएहैं ॥ मु
द्गरसोंमारेकरपाइनसोंडारेमलजंघनकेतानकपिसागरवगा
एहैं ॥ कुंभकानपेखहाथगदालैविशेपसुविभीषणप्रणामक
रीभ्रातवडेआएहैं ॥ ४ ॥ सवैया ॥ ॥ सुविभीपणहोंतुम
रोलघुभ्रातमहामतिमोहिदयाअवकीजे ॥ हमरावणकोवहु
भाँतिकह्योतुमभ्रातसुमेअववाक्यसुनीजे ॥ यहिरामनराय
णहैजननीजगजानकीआपतिसेपुनदीजे ॥ सुनिओनकह्यो
करलैतरवारवखानतयाँहिंकिप्राणवधीजे ॥५॥ ॥ नराज
छंद ॥ ॥ सुफेरमेधिकारकैवखानिओसुनीजिए ॥ सुयाहि
लंकत्यागमेपुरीनवासकीजिए ॥ उभारहाथमैगदासुलंकतेप
लाइओ ॥सुचारलैप्रधानसाथरामपासआइओ ॥६॥ सुनेसु
कुंभकानवाक्यभ्रातजानआइओ॥ अलंवरामपादजीवकंठ
मैलगाइओ ॥ कुलंसुरक्षराक्षसंसुभ्रातमेविशारदे ॥ सुभ
क्तहैंमहाँनतूँकह्योसुमोहिनारदे ॥७॥ ॥ सवैया ॥ ॥ अव
याहिविभीपणत्वंइहतेसुनमेदृगनाँहिंसुरंचनिहारे ॥ इहहैअप
नोकिअहेपरकोरणमाँहिंभएमदसोंमतवारे ॥ इहभाँतिक
ह्योदृगनीरवहेसुविभीपणभ्रातकेपादजुहारे ॥ ढिगरामकि
आइखडोहटकैवहुचिंतभईतिहँचीतमझारे ॥ ८ ॥ कीशन

कोकरपादहनेघटकानभयोरणमैद्दगरातो ॥ मारतहैकपिसै ननकोजनुकंजनकोसुदरेगजमातो ॥ रामनिहारसुक्रोधकि योपुनअस्त्रसंभारलियोतिनवातो ॥ कानलुतानकमानवही घटकाननकीभुजमैकियघातो ॥९॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मुद्गरस हितसुदक्षकरगिर्योसुभूमिमझार ॥ कुंभकर्णरिसमानकेकी नोनादअपार ॥१०॥ ॥सवैया ॥ ॥ करजाइपर्योरणमंड लमैकपिऔरअनेकतिनेहनडारे ॥ कपिकूदपहारनजाइचढे जनुकंपतसीतसुच्यारकिमारे ॥ घटकानसुरामभिरेरणमैक पिमंडलऊरधहोइनिहारे॥ करक्षीणभयोघटकाननकोतरुशा लसुदूसरहाथउभारे ॥ ११ ॥ रणराघवमारणदौरपर्योतवरा मसुवासववानलियोहै ॥ तरुशालसमेतसुवामकरंहरिवाण चलाइसुकाटदियोहै ॥ युगक्षीणभईभुजतौंखलकीपुनधावत आवतनादकियोहै ॥ शरआधशशीयुगरामबलीधनुतानदुहूँ पदमाँहिदियोहै ॥ १२ ॥ काटदियेपददोतिहँकेवडुलंककिद्वा रमैजाइपएहैं॥ पादभुजाविनभीपणसोमुखवाडवमानहुँव्या तधएहै ॥ मानहुँचंद्रहिराहुधएमुखरामशिलीमुखपूरदएहैं ॥ पूरततुंडनिखंगभयोअतिक्रोधतभीमसुनादकएहैं ॥ १३ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ स्वरेश्वरबानइकसूरजसमानरामकाढ सोनिखंगतेशरासनचढायोहै ॥ वज्रकेसमानतेजतीक्षणम हानघटकाननकेनाशकाजवहीतुचलायोहै ॥ भूधरविषाण केसमानशिरभारीअतिदाडवडीलाँवीयुगकुंडलसुहायोहै ॥ वृत्रासुरशीशज्यौंसुरेशवज्रमारकाटेरामवानमारशीशकाट

त्यौंवगायोहै ॥ १४ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ शीशलंककेद्वारमेका
याजलधिमझार ॥ शिररोक्योंपुरिद्वारकोकायहनेजलचार
॥ १५ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ देवऋषीश्वरगंधवऔपुनसिद्ध
विहंगमपंनगआए ॥ गुह्यकयक्षसुदेववधूमिलराघवकेय
शमंगलगाए॥ माँहिंअकाशविमानफिरेंसुरराघवहेरसुफूलव
साए ॥ देवऋषीतवदेखनरामहिंनारदताँहिंसमेचलआए
॥ १६ ॥ ॥ **तोटकछंद** ॥ ॥ मुनिनारदजूनभतेउतरे ॥ नि
जतेजप्रभादिगभासकरे ॥ पिखरामसुनीलसरोजसमं ॥ ध
नुहाथसमस्तसुवैरिदमं ॥ १७ ॥ कछुतांम्रसुनैनविशालल
से ॥ भुजदंडनऐंद्रसुअस्त्रवसे॥ह्रदिआरदवानरकोनिरखैं॥ श
रपीडमनोतिनकीकरखैं॥१८॥ पिखनारदसुस्तुतिआपकरी॥
सुगदागदवाकविभक्तिभरी ॥ जगनाथसुदेवनदेवहरे॥ पर
मातमराममुकुंदवरे ॥ १९ ॥ सुनरायणविश्वअधारब
ली ॥ जगसाक्षिणवंदनपादकली ॥ घनज्ञानसुलोकनपा
लकरें ॥ निजमायकमानवदेहधरें ॥ २० ॥ सुमनोसुखदुः
खअकारगहे ॥ निजमायकिनातसुतानरहे ॥ सभकेह्रदिअं
तरशोभितहो॥निजज्योतिप्रभाजनुमोहितहो॥२१॥अमलात
मकोह्रदिभासतहो ॥ सभबंधनमूलविनाशतहो ॥ निजनै
नउघारतहोजवही ॥ त्रयलोकवनावतहोतवही ॥२२॥ सभ
कोतममाँहिंसँहारकरो ॥ जवरामसुनैनमिलाइधरो ॥ जिन
मैजगपूरणएहुरहे ॥ सभलोकचराचरजाँहिंकहे ॥२३ ॥ जि
हँमाँहिंनाकिंचितलोपकरे॥ अभिवंदनब्रह्मसुतोहिहरे॥ पुरुपंसु

प्रधानसुकालअहें ॥ तवव्यक्तअव्यक्तस्वरूपकहें ॥ २४ ॥ इम जानतजेमुनिवृंदवरे ॥ अभिवंदनतेरघुनाथहरे ॥ तवशुद्ध स्वरूपविकारनहै ॥ घनज्ञानस्वरूपसुवेदकहै ॥२५॥ श्रुतिविश्वअकारसुतोहिभने॥तवभीतरनाँहिंविरोधगने॥यहिवादविरोधनिहारतजो ॥ तवमाँहिंनहींनरभापतसो ॥ २६ ॥ गीया मालतीछंद ॥ प्रभुविनातोहिप्रसादनिश्चयनाकदाचितपेखिए ॥ निजमायखेलैंदेवतूँसुविरोधनाकछुदेखिए॥रविरश्मिजालविचारविनजिमनीरलोकनिहारही॥अज्ञानकरतिमिरामतोमैंभ्रांतिजगतउचारही॥२७॥जिहँकोनवाणीकहिसकेमनजाँहिनाँहिंनिहारहै॥नाहिंविषयतेरोरूपनिर्गुणरामवेदउचारहै ॥ प्रभुद्रिश्यनावदुहोवईकिहँभाँतिताँहिंनिहारहैं॥ विनपिखसेवैं ताँकथंविनसेवनानिरधारहैं॥ २८॥ हरियाँहितेअवतारतैंभवरूपसुंदरधारिआ ॥जगभजेंबुद्धिसुवानतोकोंतरेंभवनिधिपारिआ॥वहुकामक्रोधादिकसुतसकरसदाचीतडराइहैं॥मार्जाररजिमजगमूपकनकोत्यौंसदाविलखाइहैं ॥ २९ ॥ तवनाम सिमरणजेकरेंतवरूपउरमैंध्याइहैं ॥ तवकरेंपूजारामजेपुनकथाअम्रतसुगाइहैं ॥ तवभक्तसंगतिरामजेजगनीतचीतकमाइहैं ॥ जगसिंधुकोकरगोप्यदंसुखसंगतेतरजाइहैं ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ याँतेसगुणस्वरूपतेमैउरभजोंअभेव ॥ मुक्तफिरोंसभलोकमैपूजेंममसभदेव ॥ ३१ ॥ कवित ॥ देवनकोकाजरामकीनोहैमहानतुममारघटकानभारभूमिकोउतारिओ॥लछमणहाथपुनभ्रातरघुनाथरणरावणकोपूतइंद्रजीतपेखमा

रिओ ॥ मारोगेसुरामतुमयाँहींतेअगारीदिनरावणजुलंकप
तिसाचुमैउचारिओ ॥ सिद्धनकेसाथरणदेखोंरघुनाथसभच
रितविचित्रजाइगगनमझारिओ॥३२॥ दयामोहिकीजियेसु
रामचिरजीजियेसुदेवलोकजाँउँमोहिआइसुदीजिये॥ ऐसे
तुवखानपुनआइसप्रमाणकरगएभगवानक्रपानारदमनीजि
ये॥चलेपथिजाँहिंदेवपूजतसुताँहिंपुनगयोब्रह्मलोकजहाँपाप
सभछीजिए॥भ्रातघटकाननदशाननसुमूओसुनभयोउरता
पअबसोईसुनलीजिये॥३३॥ रावणकोशोकभयोसुखतोप
लाइगयोभईतन्मूरछासुभूमिमैगिरायोहै॥उठकैसंभारदोऊ
हाथनउभारमारमुखकेमझारहाइहाइबिललायोहै॥कुंभकान
मूओपुनतातहैविहालह्वैओऐसीसुनिवातइंद्रजीतआपआयो
है॥तातमहामतितुमशोककोकराविगतजीवतहीमेघनादको
हैदुखपायोहै॥३४॥देवनकेनाशकहोतेजकेप्रकाशकहोसाव
धानहूजेअबदुखकोमिटाइकै॥शांतिजपकरोंसभवैरिनकेशी
शहरोंकरोंअबहोमसुनिकुंभिलामैजाइकै॥होवैगोअजीतस
भवैरिनतेजीतकरोंस्यंदनतेआदिवरपावकतेपाइकै ॥ ऐसे
तुवखानशुभहोमगृहमाँहिंपुनगयोहैभवानीवद्धमेघनादधाइ
कै॥३५॥लालपाटलालमाललालहीसुपागभाललालतनचं
दनकेलेपकोलगायोहै ॥ माँहिंसुनिकुंभलाकिमौनतिनधारी
पुनहोंमकेनिमित्ततहाँपावकजगायोहै॥करेइंद्रजीतपुनबैठकै
निचीतहोमयहीसमाचारसुविभीपणनेपायोहै॥ समाचारपा
इपुनरामकेसमीपजाइइंद्रजीतहोमउमारामकोअलायोहै ॥

॥ ३६ ॥ ॥ **विभीषणउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ सुनोरामतुमसोंकहोंमेघनादकेकाज ॥ अपनीजीतनिमित्तवड्डकरतहोमखलराज ॥ ३७ ॥ निकसेगोरथअश्वपुनआयुधध्वजासुचीर ॥ ड्डइसंपूरणहोमजवमेघनादरघुवीर ॥ ३८ ॥ देवदैत्यनाहिंजितसकेंफेरतिसेजगमाँहिं ॥ याँतेलक्ष्मणहाथतिंहँवेगहनोंरणमाँहिं ॥ ३९ ॥ आज्ञामोसँगदीजियेलक्ष्मणवलविख्यात ॥ निस्संशयघननादकोमारेंगोतवभ्रात ॥ ४० ॥ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ मैंहींचलोंसुआपतहइँद्रजीतवलवंड ॥ पावकअस्त्रसुमारकेंताँहिंकरोंशतखंड ॥ ४१ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सुविभीषणफेरकह्योरघुनाथहिंऔरनमारसकेतिंहँकोई ॥ जिनद्वादशवर्षअहारतजेपुननाँहिंकदीदृगनींदसुजोई ॥ चतुराननआपकह्योमुखतेइहकोमरणोपुनताँहिंतिहोई ॥ लक्ष्मनतजीजवऔधपुरीतवनींदअहारतजेतिनदोई ॥ ४२॥ पदपंकजतेइननीलभजेयहिजानलईसगलीहमरामा ॥ अवआइसुयाँहिंसुवेगदिजेअरिमारकरेतवपूर्णकामा ॥ निहचेयहिमारहिगोतिहँकोसुधराधरशेषमहावलधामा ॥ हनहैदशकंधरकेसुतकोसभरोवहिंराक्षसकीघरवामा ॥ ४३॥ **दोहा** ॥ ॥ जगतअधीश्वररामतुमनारायणभवहार ॥ लक्ष्मणशेषभनीजिएनिखिलधरणिअधार ॥ ४४ ॥ धरणीभारनिवारहिततुमलीनोअवतार ॥ जगनाटककेसूत्रकोतुमहीधारणहार ॥ ४५ ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥दोहा॥ ॥सुनतविभीषणवाक्यपुनबोलेश्रीभगवान॥ ताँहिंरौद्रमायासकलजाँनोंमीतसुजान॥१॥ ब्रह्मअस्त्रवित्शूरअतिमायावीवलवान॥ ऐसोदैत्यवलिष्टअतिजोतैंकोनवखान॥२॥ अडिल॥ जानोंलक्ष्मणरूपसुनोमनलाइकै॥ ममसेवकपरवीनमहासुखदाइकै॥ भावीकार्यसुजानमोनउरमैगहो॥ होअंजनदियोनमोहिसुमोरगोवहो॥३॥ ऐसेरामसुभापसुभ्रातवखानई॥ गिरिजावेभगवानसभीकछुजानई॥ लक्ष्मणसंगसुसैन्यवडीअवलीजिए॥ होजाइदशाननपूतवेगवधकीजिए॥४॥ हनुमतलौशिरदारसंगसभलीजिए॥ जांबुवानरिक्षेशसहाइककीजिए॥ लैसुप्रधानविभीपणसहतवजाइहै॥ होजानतसभैसुदेशविवरसुवनाइहै॥५॥ रामवचनसुनलक्ष्मणसंगविभीपणे॥ औरशरासनलियेवाणअतितीक्षणे॥ रामपदांवुजहाथसुशीशझुकाइकै॥ होलक्ष्मणकरतवखानसुनोमनलाइकै॥ ६॥ आजुशरासनवाणमोहिछुटिकाँहिंगे॥ मेघनादतनुफोडपतालधसाँहिंगे॥ भोगवतीकेनीरभलीविधिन्हाइकै॥ होपराहिंनिखंगहिंआइसुश्रोणमिटाइकै॥७॥ ऐसीलक्ष्मणवातसुमुखोंउचारकै॥ रामभ्रातकीतीनप्रदक्षणधारकै॥ इंद्रजीतवधचाहिसुमनमैंहैधरी॥ होचलेउताइललक्ष्मणरणकीमतिकरी॥८॥ लक्ष्मणपाछेचलेसुहनुमतधाइकै॥वानरवहुतुहजारसुसंगलवाइकै॥सचिवविभीपणलीनमहावलजेवरी॥ होचलेशीघ्रसभदौरढीलनहिं

कछुकरी ॥ ९ ॥ जांवुवानसभलीनेऋक्षवुलाइकै॥ लक्षमणकसंगचलेसुहरपवढाइकै॥जाइनिकुंभलदेशलक्षमणपेखिओ॥होराक्षससैन्यअपारमहागणपेखिओ॥१०॥लक्षमणखैंचशरासनशरहिंसुधारकै ॥ सावधानतवहोएवलसंभारकै॥ अंगदवीरसहाइकलक्षमणकेभए ॥ होजाँवुवानकपिमेलिसंगसभहीलए ॥ ११ ॥ तवैविभीपणराजसुवैनउचारिआ ॥ सुनियेलक्षमणआजुसुवचनहमारिआ॥ घनसीराक्षससैन्यएहुपिखलीजिए ॥होयोंकेभेदनमाँहिंयलवहुकीजिए ॥१२॥ ॥ तोमरछंद ॥ अवसैन्ययाँहनडार ॥ तवमेघनादनिहार ॥ अववेगकीजेसोइ॥ नहिंहोमपूर्णहोइ ॥ १३॥ दोहा ॥ ॥हिंसाधरमकदुष्टअतिरावणकोसुतवीर ॥ तिहँमारोधनुतानकैलक्षमणअतिरणधीर ॥ १४ ॥ ॥ सुनतविभीपणवातकोलक्षमणक्रोधअपार ॥ खैंचशरासनवेगसोंत्यागेविशखअपार॥१५॥ ॥सवैया॥ ॥मघवाजितहोमकरेजिहँठौरसुवानअनेकतहाँतिनमारे॥पुनभूधरशृंगनवृक्षनलेकपियूथपवेघनसेकिलकारे॥ सभदैतिनकेशिरमैमिलमारतमारशिलानखसोंतनुफारे ॥ उरराक्षसकोपभरेतवहीअसितोमरबाननकीशविदारे ॥१६॥ वानरऔपुनराक्षसकोगिरिजाअतिभेरभयोतहँभारी॥ गाजतयाँविधिशूरमनोनिधिक्षीरमथावतफरमुरारी॥रावणकेसुततांहिंसमैनिजसैन्यदलीरणमाँहिंनिहारी॥होमनिकुंभलदेशतज्यानिकस्योअतिवेगमहाबलधारी ॥ १७ ॥ स्यंदनमाँहिंअरूढभयोकुपिताँहिंलईकरमाँ

हिंकमाने ॥ दौरपर्योरणमंडलमैंगिरिजाइहभाँतिसुबैनवखाने ॥ हौंघननादलरोरणमैलक्ष्मंननछूटसिजीवतजाँने ॥ तातकुभ्रातसुताँहिंपिख्योघननादसुनिप्रुरवाक्यअलाने ॥१८॥ निपजेइहठौरवधेसुइहाँजगख्यातसुमैपितुकेतुमभाई ॥ रणऔसरबंधुतजेअपनेपरभृत्यभयोहमतेसुपलाई ॥ सुतभ्रातकिसाथसुद्रोहकरैंअतिमूरखलाजनरंचकआई ॥ इहभाँतिवखानहनूमतपीठपिखेलक्ष्मंनकमानचढाई ॥ १९ ॥ तीक्ष्णशस्त्रनअस्त्रनअंचितस्यंदनमैघननादसुहाए ॥ हाथलियोधनुताँनुतिसोजिंहँहँरसुरेश्वरचापलजाए ॥ आजपिवैंकपिप्राणनमेंशरयाँविधिकेमुखवैनअलाए ॥ ताँहिंसमेलक्ष्मनंमहावलआपशराशनमैंशरलाए ॥ २० ॥ नराजछंद ॥ तवैसुरामभ्रातवानमेघनादमारिओ ॥ फुंकारसर्पसेरुपेतिनेसुक्रोधधारिओ ॥ सुलालनैनमेघनादरामभ्रातहेरई ॥ सुवज्रकेसमानवानहैंलगेनटेरई ॥ २१ ॥ ॥ सवैया ॥ दोघटिकातनुमूरछतामघवाजितफेरसुनैनउघारे ॥ रावणकेसुतताँहिंसमेरणदाशरथीरघुवीरनिहारे ॥ लालभएदगताँभटककरमाँहिंशरासनताँहिंसँभारे ॥ धारशरासनमैशरतीक्ष्णरामकिभ्रातसुँबैनउचारे ॥ २२ ॥ पूरवयुद्धविपेहमरेजवनाँहिंपराक्रमनैननिहारे ॥ ठाढरहोरणमंडलमैंअबतोहिकुवेगसुदेंउँदिखारे ॥ ऐसेवखानलिएशतवानसुतानकमानअहेश्वरमारे ॥ फेरलिएदशवानहनेपुनताँनकमानसुवायुकुमारे ॥ २३ ॥ ॥ ॥ अडिल ॥ तीक्ष्णजिनहिंपिकामसुसानसवारिआ ॥

इंद्रजीतशतबाणसुवहीनिकारिआ ॥ चाचानामविभीषणर णेप्रचारिआ ॥ होकोपहिगुणबलधारताँहिउरमारिआ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ लक्षमंनलिएशरजालतबेघनसे मघवाजितकोवरपाए ॥ तनुत्राणसुकांचनकोरणमैमघवा जितकोअतिसैलशकाए ॥ तिलसेवहुखंडभएतिहँकेरथते महिमाँहिंपरेचमकाए॥ जनुलोहफुलिंगसुभूमिगिरेसुमनोपट बीजनहैंमिलआए॥ २५ ॥ मघवाजितबानहजारलिएउरको पभरेलक्षमंनप्रहारे ॥ सियदेवरकेतनुत्राणतुटेवहुजाइपरेपु नभूमिमझारे ॥ युगवीरकरेंप्रतिघातउमापुनआपसमैरण घातनिवारे॥ रसवीरभरेरणफुंकतयौंसुमनोअहिराजभुजंग मकारे ॥ २६ ॥ युद्धअनूपमताँहिंभयोशररूततताँहिंभएसर बंगा ॥ शोणितधारअपारछुटेतनवीरभएरणमाँहिंसुरंगा ॥ दीर्घसुकाललरेरणमैशरआपसमाँहिंचलाइनिशंगा ॥ जीत भईरणमाँहिंनकाँहुकिनाँहिंसँग्रामभयोतिनभंगा ॥ २७ ॥ पुनताँहिंसमैअतिकोपभएलक्षमंनशिलीमुखपंचनिकारे ॥ मघवाजितसारथिस्यंदनऔध्वजकाटतुरंगमदूरविदारे॥ पुन काटशरासनवेगदियोकरकीफुरतीरणमाँहिंदिखारे॥ मघवा जितऔरशरासनकोगुणरोपलियोनलगीकछुवारे ॥ २८ ॥ सोवहुचापसुफेरकटलक्षमंनबलीशरतीनचलाए ॥ फेरअने कलिएशरताँमघवाजितकेउरभीतरलाए॥ कोपभरेमघवाजि तसंगरभीमकुवंडसुऔरचढाए ॥ ताँनकमाँनदशाननकेसुत बानसुराघवभ्रातलगाए ॥ २९ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ बानरनि

खिलपताकिनीहनीशरासनतौँन ॥ दुखपायोकपियूथपनभ
योसुवदनमलान ॥ ३० ॥ ॥ कवित ॥ ॥ ऐंद्रबाणलीनों
लक्षमनबंलवानपुननिष्ठुरकमानमाँहिंदियोहैलगाइकै॥ कान
केप्रमाणलौसुतानकैकमानताँहिरामपादकंजकोचितारिओ
अलाइकै ॥ धरमस्वरूपसत्यसंधशूरअतुलितदशरथपूत
जगऐसेसुखदाइकै ॥ तीनलोकमाँहिंजबरामकोअरातिनाँ
हिंरावणकेपूतकोतुहनोबानजाइकै ॥ ३१ ॥ ॥ सवैया ॥
इहभाँतिवखानसुतानकमानसुबानजबैलक्षमंनचलायो ॥
सुमनोमुखपावककोउगरेमघवाजितओरसुयौंशरआयो ॥
शिरत्राणसुकुंडलऔकलगीइहभाँतिउमाशिरताँहिंसुहायो ॥
धरतेशिरकाटधराधरमैंशरचंद्रमनोनभभूमिगिरायो ॥ ३२
देवप्रसन्नभएसगलेमुखमैलक्षमंनकिकीरतिगाई॥ वारहिंवा
रसराहकरैंसुरफूलनकीवरषावरषाई ॥ शक्रमहाक्रपितोहर
षेपुनकोटिअपछरनृत्यदिखाई ॥ माँहिंअकाशसुनीसगले
मिलदेवसमूहनदुंदुभिवाई ॥ ३३ ॥ नभउज्वलऔधरकं
पमिटेरणरावणकेसुतमारगिराए ॥ श्रमदूरभएलक्षमंनउ
मासुखभीतरजैसबवाक्यअलाए॥ मुखसिंहसमानगजेगिरि
जालक्षमंनतबैरणशंखवजाए॥धनकोटणकारकरैरणमैंसुन
वानरसैन्यसभैहरषाए॥३४॥सँगवानरकेशिरदारवडेउतआ
वतहैंमनमोदबढाए॥लक्षमंनसुआवतहैंतिनबीचसुचंदमनो
घनमाँहिंसुहाए॥ इतहैंहनुमानविभीषणजूसहआवतहैंअति
नम्रसुभाए॥ इहभाँतिअएलक्षमंनबलीशिररामकिपाइनमाँ

हिङ्गुकाए॥३५॥तोहिप्रसादहनेमघवाजितरामसुनोरणभूमि
मझारी॥ योंसुनप्रेमप्रवाहछुटगेललाइलिएरघुनाथमुरारी॥
मोदसनेहभयोमनमैशिरचूमउमाहरिवातउचारी॥ धन्यअ
हैंलक्षमंनतुँहींजगतोहिकरेममकारजभारी॥३६॥ ॥दोहा॥
इंद्रजीनकेनिधनतेजीतेसगलअराति॥ लक्षमणतोहिसमान
जगभयोनह्वैहैभ्रात॥३७॥ ॥सवैया॥ तीनदिनानिशितीं
नविपैसुकथंचिततोहिहन्योवलधारी॥ आजनिवैरकयोंहम
कोअबआवहिरावणबाहिरद्वारी॥ मैहनहोंतिहँकोरणमैउर
पूतकुशोकभयोतिहँभारी॥ रावणकोउतसारगईलक्षमंनलि
योमघवाजितमारी॥३८॥ सुनरावणभूमिगिर्योतनमूर्छितफे
रउठयोनिजदेहसँभारे॥ उररावणकेसुतशोकभयोसुविलाप
करेकरमुंडनमारे॥सुतकेगुणऔपुनकृत्यनकोमुखरोवतहीम
नमाँहिंचितारे॥ मघवाजितआजहत्योसुनकैमघवापुरदेवव
जाँहिंनगारे॥३९॥यमसूरकुवेरसचीपतिलौंसुरआजुमहाक्र
पिजूहरपाँवें॥मघवाजितआजुहतोसुनकैडरडारसुखेनसवेंत
रुछाँवें॥सुतराक्षसनारिसुरोवतिहैंअवदेववधूमिलमंगलगाँ
वें॥ सुतशोकसुँयोंविलपैदशकंधरनीरविनाझषज्योंदुखपाँवें
॥४०॥पुनक्रोधभयोउररावणकेवडुराक्षसराजवडोविलखाँ
नों॥सभराक्षसकेवधकाजतिनेरणजाहुइहीमुखवाक्यवखाँ
नों॥ सुतकेवधकोउरतापभयोवडुशूरभयोरुपमैगलताँनों॥
अवमीयकुशीशकटोंक्षणमैतिनरावणयोंमनमैठहिराँनों ॥
॥ ४१ ॥ करकाढकृपाणसुदौरगयोपिखसीयडरीमनमैअकु

लानी ॥ बहुराक्षसनारिकिमध्यहुतीडरशोककिमाँहिंभईग
लतानी॥ इकआहिअमातसुरावणकोपुनताँहिंसमैबहुसाथ
भवानी ॥ तिहँनामसुपारशपासरहेदशकंधरकोतिनएहुबखा
नी॥४२॥ त्वंधननायककोलघुभ्रातसुक्योंदशकंठनएहुविचा
रो ॥ वेदपठेव्रततोहिकरेशुभकर्मनमैयशआहितिहारो॥ त्वं
गुणसिंधुबडोजगमैअबयोपितकोवधदूरविसारो॥ युद्धकरो
हमसंगचलोतुमसानुजराघवकोरणमारो॥४३॥ जानकिनो
घरमाँहिंअहेइहभाँतिबखाननिवारनकीनो॥ धर्मकह्योसुअ
मातजबैदशकंधरसोउरअंतरकीनो॥ सोघरमाँहिंगयोहटकै
मतिमूढमहाअतिशोकसुजीनो ॥फेरसभामहिंआपगयोदश
कंधरसाथअमातप्रवीनो॥४४॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउ
मामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेमेघनादवधनामनवमोऽध्यायः ९॥
॥**श्रीमहादेवउवाच**॥ कवित ॥ सभाकेमझारतिनकीनोंहै
विचारसभराक्षसअमातलैसंग्रामहेतसोगयो ॥ शेपजेअ
नायेऔरखासगीजेसाथहुतसर्वकोलवाइतिनझुंडएकहैक
यो ॥ सोपतंगराजऔमिलाइकैपतंगसंगपावककरालको
स्वनाशहेतुहैधयो ॥ रावणकेसंगजोईराक्षसपतंगदलराम
शरपावकजलाइसबहीदयो ॥ १ ॥ रामकीकमानतेतीक्ष
णदशकंठबानलागउरपाटफोरपारपर्योजाइकै ॥ भईदशकं
ठपीरधीरजपलाइगयोछोडरणभूमिधस्योलंकमाँहिंधाइकै॥
मानुषमैहोइनाँहिंऐसोबलराममाँहिंपवनकुमारबलपिखेम
नलाइकै ॥ शुक्रकेसमीपजाइहाथनमिलाइदोऊपृछनभवा

नीदशकंठशिरनाइकै ॥ २ ॥ भगवनरामलंककरीहैविराम सभरक्षशिरदारमेरेवडेहीखपाएहैं ॥ वडेदैत्यमारेघरसवहूँके गारेतिनमेरेसुतवांधवसुसर्वतिनघाएहैं॥ गुरुहोउदारतुमंआ पहीविचारकरोआपढिगहुतेमोहिकैसेदुखआएहैं॥ ऐसीसुनि दैत्यवाणीभाखिओभवानीतिनजीतकोउपायअवसोईतोव ताएहैं ॥ ३ ॥ शुक्रोवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ वैठइकंतभली विधिसौंअवरावणहोमकरोघरमाँहीं ॥ विघनानहिंहोंहिसु जोकवहीतवहोमकिपावकतेनिकसाँहीं ॥ रथवाहनचापनि खंगशरांगहिहोंइअजीतसुतूँरणमाँहि ॥ अभिचारकमंत्रनं लेहमतेचलहोमकरोधरकंदरमाँहीं ॥ ४ ॥ ऐसिकह्योजवशु क्रगुरुतवरावणराक्षसकोवडराई॥जाइस्वमंदिरमाँहिंउमासु गुहातिहँतुल्यपतालवनाई॥ दैत्यचहूँदिशिथापधरेपुनलंककि द्वारनपाटलगाई ॥ जेअभिचारकद्रव्यहुतेसभहोमनिमित्तसु लीनमँगाई॥५॥ जाइगुहादशकंठधसेहितहोमकरेमुखमौन विधारे॥पावकधूमवडोनिकस्योसुविभीषणनैननआपनिहा रे॥होमकुधूमनिहारडर्योसुविभीषणराघवपासदिखारे॥ राम पिखोदशकंधरजोवहुहोमकरेनिजभौनमझारे ॥ ६ ॥ होमस मापतिहोइजवैतवनाथनरावणजीतिओजाई॥ होमविनाश नकाजप्रभोअववानरयूथपदेहुपठाई॥ रामतथामुखभापत वैशुभग्रीवकिसंगसलाहमिलाई॥ अंगदऔहनुमानपठेवल वंतसभीकपिसंगलवाई॥७॥ वहुलाँघप्रकारगएक्षणमैपुनरा वणमंदिरमाँहिंधसाए ॥ दशकोटिगएपलवंगमजेगृहपालक

तेयमलोकपठाए ॥ घरमाँहितुरंगमचूरणकेगजमारसभैघर माँहिंरुलाए ॥ सरमातवहाथनसैननसोंतिनहोमकिठौरजि दीनदिखाए॥८॥ सुविभीषणकीवहुनारिहुतीतिनहोमकुथा नजवैदिखलाए ॥ तवअंगदजाइगुहानिरखीदरपाथरपादन तोडवगाए ॥ शिलफारउघारकिवारनकोयुवराजवलीगुह माँहिंधसाए ॥ सुपिखेदशकंधरजाइतिनेदृढआसनहोमत नैनमिलाए ॥ ९ ॥ अंगदआइसपाइसवैकपिधाइवरें मुखमैकिलकारे ॥ रावणकेढिगजाइतिनेपुनरावणकेवहु सेवकमारे ॥ कुंभउठाइलिएघृतकेपुनडारदिएतिनआगम्र झारे ॥ रावणजोमुखमंत्रपढेकपिहासतताँढिगदाँतनिकारे ॥ १०॥ स्रवछीनलियोकरतेहनुमानंसुरावणकेमुखऊपरमा र्यो॥ कहिपावकतोहिप्रसंनभयोवरदेवतयौंमुखमाँहिंउचार्यो ॥इकदंतनसोंइकदंडनसोचहुँओरहनेंशशिज्योंपरवार्यो ॥ र णजीतनकीउरचाहिधरीनहिंध्यानछुटेद्रिगनैकउघार्यो॥११॥ ॥ दोहा ॥ अंगदवहुरविचारकरगयोसुभौनमझार ॥ केश नतेगहिआनीअँतहँमँदोदरिनारि ॥ १२॥ ॥ गीयाछंद॥ दशकंठआगेविलपतीसुअनाथज्योंतिंहँनारिया॥रत्नभूपितकं चुकीउरहारअंगदफारिया॥ मोतीगिरेतिंहँमाँगतेसभरतमा लखिसानीआँ॥श्रोणिसूत्रंटूटिओमुखभयोताँहिंमलानीआँ ॥ १३ ॥ दोहा ॥ रावणदेखतहीगिरीकटितेनीवीनाँहिं ॥ भूपण सर्वशरीरकेगिरेधरणिकेमाँहिं॥ १४॥ सवैया ॥ गंध्रवदेवन कीदुहितासगलीकपिकेशनतेगहिआनी ॥ रोवतिरावणअग्र

खरीगिरिजावहुरावणकीपटराणी॥दीनपुकारकरेमुखतेपुनरावणकोतिनएहुवखानी॥मोहिअनाथनिज्यौंकपिमारतनांहिछुडावतलाजपलानी॥१५॥त्वंनिरलज्जभयोजगमैंतवहेरतनारिहनैंकपिथारी ॥ जीवनतेमरणोसुभलोजिनपेखतयौंविलपेंजिननारी ॥ हामघवाजितनाँहिंपिखोकपिमारतहैंअवतेमहतारी॥तेजगजीवतयाँविधिकेदुखपावतनाँहिंसुमाततिहारी ॥ १६ ॥ नारिकिलाजभतारतजीनिजजीवनकीउरअंतरधारी ॥ यौंमयकीदुहिताविलपेदशकंठसुनीवहुकानमझारी ॥ अंगदछाडकल्योदशकंधरऊठखडोकरखड्गसँभारी ॥ कोपभरेदशकंधरदौरसुअंगदकेकटिभीतरमारी॥ १७॥ तववानरकूदगएसगलेपुनहोमकुकुंडसुनाँहिंविडारे॥ वहुरामसमीपसुजाइखरेमनमाँहिंभएसगलेहरपारे॥ नवरावणशांतकरीनिजभामनिसुंदरवाक्यनताँहिंउचारे ॥ यहिदैवअधीनसुजीवनहैकलयाननिक्यौंनहिंआपनिहारे॥ १८॥ दोहा ॥ विशालाक्षितजशोककोज्ञानअलंबनधार॥ अज्ञानजसभशोकहैज्ञानसुदेतनिवार ॥ १९ ॥ देहअनातममाँहिंजोअहंवुद्धिनरहोइ॥ अज्ञानीपहिचानिएहेमंदादरिसोइ ॥ २० ॥ तन्मूलकसुतदारलौवंधनभाषेवेद॥हर्षशोकभयक्रोधप्रियलोभमोहमदखेद ॥ २१ ॥ उपजेंसर्वाज्ञानतेजन्मजरातनुहान ॥ आत्माकेवलशुद्धहैसदाअलेपकजान ॥ २२ ॥ ज्ञानानंदस्वरूपसतभावाभावविहीन॥नाँतिहैँयोगवियोगकछुचेतनअद्वयचीन ॥ ॥ २३॥ याँविधिआत्माजानउरदीजेशोकनिवार॥ अवहीआ

वोंवेगमैरामलक्ष्मणहिंमार॥ २४॥ नातररामसुवज्रशरजव
मुहिडारेमार॥ तौवैकुंठसुपाइहौंतौंपदपरमउदार॥२५॥तबम
मआंइसुकीजियोक्रियासुनिखिलइमारि॥ सीताकोहनसाथ
मेपरीयोअग्निमझारि॥२६॥ रावणकेयहिवाक्यसुनभईदुखि
तउरमाँहिं॥ मघवाजितजननीवहुरकहितभवानीताँहिं॥२७॥
॥ **गीयामालतीछंद** ॥ नाथमेरवाक्यसुनउरसाचतिमहीं
कीजिये ॥ नहिरामजीत्योजाइतुमतेसाचचीतपतीजिये ॥
पुनऔरआँवेंकोटितेसमरामनहिंतौमारिये॥साक्षातरामसुदे
वेहेंसुप्रधानपुरुपउचारिये ॥ २८॥ पूर्वकल्पसमत्स्यहोकरसू
रसुतमनुकोहरी ॥ भक्तवत्सलपालिओसभआपदातिनकी
हरी॥ लक्षयोजनरूपवाँनेंकमठप्रथमसवारिओ ॥ सामुद्रम
थनेपीठमैइनकनकभूधरधारिओ॥२९॥ हिरण्याक्षदैत्यसुयाँ
हत्योबलकोलरूपसवारकै॥जलहरीअवनीआनीआँरघुराज
फेरउधारकै॥सुहिरण्यकशिपुसुदैत्यजोंत्रैलोककंटकभारिओ
॥ नरसिंहरूपसुधारयाँनेनखनसाथविदारिओ॥३०॥ बलिरा
जवाँध्योयाँहिनेत्रैलोकत्रयपदमापिआ॥बलिराजपठेपताल
मेंदेराजसुरपतिथापिआ॥ राजन्यकेआकारधरणीभारराक्ष
सजेभए॥ धरपरशुरामस्वरूपकोइनरामक्षत्रीवेहए॥ ३१॥
सभजातकरअवनीइनेमुनिकश्यपहिंदानंदिओ ॥ रघुराजवं
शविशालमैअवतारअबतौंनेलिओ॥तबमारणेकेकाजराघ
वरूपमानुपधारिआ॥ सिंहँनारिसीतातेंहरीसभकाजतोहिवि
गारिआ॥३२॥ममपूतऔनिजनाशहिततैंहरीसीतारानिआ॥

अबदेहिसीतारामकोलैबातमेरीमानिआ ॥ देलंकराजविभी पणेचलआपवनमैजाइये ॥ धरचीरअंबरनीरऔफलखाइह रिजीध्याइये ॥ ३३ ॥ मंदोदरीकेवाक्यसुनदशकंठएहुउचारि आ ॥ सुनभामिनीरणमाँहिंमेरेपूतबांधवमारिआ ॥ सभराम तेहनवाइकैकिंहँभाँतिवनमैमैफिरों ॥ याँहेतुबानकमानलैसं ग्रामराघवसोंभिरों ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ रामबाणतनफारहैं मेरोसमरमझार ॥ विष्णुपरमपदमैलहोंउतरोंभवनिधिपार ॥ ॥ ३५ ॥ जानोंराघवविष्णुहैंलक्ष्मीसीताआहि ॥ जानबूझ करमैहरीसीताताँवनमाँहिं ॥ ३६ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ पावों ताँपदसोइरामहाथमरणोलहों ॥ जाँवोंढीलनकोइतजगवं धमिटाइकै ॥ ३७ ॥ ॥ अडिल ॥ ॥ परानंदमयशुद्धमुमो क्षीध्याइहैं ॥ ताँगतिकोअबिजाँउँरामरणघाइहैं ॥ रामबान जलधारसुपापमिटाइहों ॥ होदुर्लभभाखेंमोक्षवेगमैपाइहों ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ पंचकलेशतरंगवडेभ्रमहैंधन बांधवऔसुतदारा ॥ रोगवडेवडवानलसेअतिग्राहअनंग सुजाँहिंमझारा ॥ हैसुअज्ञानअथाहजिसेजलपाय्यतनाँहिं कहूँतिहँपारा ॥ वेगतरोंजगसिंधुअबैपुनपावहुँमैहरिपारकि नारा ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तीनलोकप्रभुताजिसहिंकांच नधामप्रकाश ॥ कवींसिंहदशकंठवहुअबउरभएनिराश ॥ ॥ ४० ॥ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयु द्धकांडेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ सवै या ॥ इहभाँतिवखानमँदोदरीकोदशकंधरक्रोधभयेउरभा

रे ॥ निकसेरणराघवसोंलरनेअतिघोरवलीसहदैत्यपधारे ॥ शुभंचक्रविराजतषोडशजाँदृढस्यंदनमाँहिंभएअसवारे ॥ ध्वजउच्चपताकलशोजिहँपैदृढकूवरऔवररूपउदारे ॥ १ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मुखपिशाचवाहनलगेरासभघोरसुजाँहिं ॥ अस्त्रसुशस्त्रअनेकपुनधरेसुताँरथमाँहिं ॥ २ ॥ ॥ **सवैया** ॥ निकसेइहभाँतिसुरावणजोअतिभीषणजाँहिंअकारविराजे ॥ पिखआवततौंहिंडरीध्वजनीकपिसायुधसंगरतेउठभाजे ॥ हनुमानगएकुदकेभिरनेदशकंधरसोंघनसेमुखगाजे ॥ मुष्टिप्रहारकरीउरमैदृढवासवआयुधजाँपिखलाजे ॥ ३ ॥ जानुनिभारपर्योरथमैगिरमूठप्रहारलगोअतिभारी ॥ मूर्छितएकमुहूरतरावणफेरउठेतिनदेहसँभारी ॥ शूरअहैंहनुमानवलीदशकंधरयाँविधिबातउचारी ॥ त्वंदशकंधरजीवतहैंहनुमानकह्योअविमोहिधिकारी ॥ ४ ॥ त्वंदशकंधरमुष्टिप्रहारसुकोपवढाइकेलाइहमारे ॥ फेरहनौंतुमकोदशकंधरहोवहिंतेतनुप्राणनिआरे ॥ भापतथादशकंधरताँउरमाँहिंदियोअतिमुष्टिप्रहारे ॥ घूरणनैनभएकपिकेधरमाँहिंगिरेतनुनाँहिंसँभारे ॥ ५ ॥ फेरभईसुधिताँकपिकुंजरकोपभयोउरभीतरभारी ॥ रावणमारणकेहितताँअतिउद्यमकीनसुमुष्टिसँभारी ॥ राक्षसराजपलाइगयोवहुठौरतजीडरचीतमझारी ॥ अंगदऔहनुमानतथानलनीलमिलेरणमैतहँचारी ॥ ६ ॥ ॥ **तोमरछंद** ॥ ॥ इहभाँतिचारसिदार ॥ तिनपेखराक्षसचार ॥ इकअग्निवर्णसुजाँन ॥ इकसर्परोमपछाँन ॥ इकखड्गरोमसुहाइ ॥ इकरोमवि

छूकहाइ ॥ तहँघोरसंगरकीन ॥ खलचारमारसुलीन ॥७॥
दोहा ॥ ॥ चारेराक्षसचारकपिक्रमक्रमहनेवनाइ ॥ सिंह
नादकरचारकपिगएरामढिगआइ ॥८॥ सवैया ॥तबराव
णकोपकियोमनमैनिजदांतनसोंनिजहोठचवाए॥हगलालसु
क्रूरविशालभयोरघुनंदनओरपर्योअतिधाए॥रथबैठसुराम
हिंदेखभलेशरवज्रसमानसुतानचलाए ॥ सुमनोघनसावन
कोउमड्योजलधारनकीवरपावरपाए ॥ ९ ॥ रामसमीपख
रेकपिजेशरमारसभैतिनपीडतकीने ॥ पावकसेचमकेरणमै
शरकांचनभूपितआँहिंनवीने ॥ रामशरासनतानतवैशररा
वणकेउरभीतरदीने ॥ रावणस्यंदनमाँहिंपिखेपुनभूपरराम
सुरेश्वरचीने ॥ १० ॥ मातलिकोसुबुलाइपुरंदरएहुकह्योमु
खमाँहिंउचारी ॥ स्यंदनलैरघुनंदनकीढिगजाइशितावसुभू
मिमझारी ॥ काजकरोहमरोभुविमंडलराघवकोरथमाँहिंबि
ठारी॥ योंसुनमातलिदेवपतीमुखशीशनिवाइसुवंदनधारी॥
॥ ११ ॥ पुनस्यंदनमाँहिंतुरंगमताँक्षणभीतरपारचतीगहि
लाए ॥ रघुनंदनदूखनिकंदनकोकरजोरदोऊपुनताँहिअलाए
रथरामसुतेरणजीतनकोस्वरराजइहैममहाथपठाए॥मघवा
तुमकोनिजचापपठेयुगएहनिखंगसुनूतनल्याए ॥ १२॥ तनु
त्राणअभेदसुएहुपठेलवारइहैसुरराजपठाई ॥ दशकंधर
कोरणमाँहिंहनोरथभीतरवैठसुनोरघुराई ॥ वृत्रासुरइंद्र
हन्योजवहीममसारथिताहिंहँठौरकमाई ॥सुनकैअभिवंदन
देसुप्रदक्षणरामचढेजिनविश्वबनाई॥१३॥ ॥दोहा॥लोक

मिलाएलक्ष्मीरामचढैरथमाँहिं ॥ गिरिजातिहँसंग्रामकोदेव पिखेंनभमाँहिं ॥ १४॥ सवैया ॥ युद्धभयानकताँहिंभयोपि खरोमतनाँगिरिजाहरपाए ॥ धीमतिरावणराममहातमदोउ लरेंबलबाहुदिखाए ॥ पावकअस्त्रहनेहनपावकदेवनकेप्रतिदे वचलाए ॥ याँविधिराक्षसराजनकेसभअस्त्रसुराघवकाटव गाए ॥ १५ ॥ तवक्रोधभरेदशकंधरताँरणमैइकअस्त्रसुऔरच लाए ॥ सुमहाविषसापशरीरभएशररावणकेधनुतेनिकसाए ॥ शरकाँचनपंखलशैंजिनकेसुचहूँदिशिराघवऊपरआए ॥ शर सर्पनकेसमफुंकतहैंमुखआगवमैंदिशिआठजलाए ॥ १६ ॥ परिपूर्णरामपिखेंरणमैदिशिआठनमाँहिंभुजंगमछाए ॥ तव कोपभरेरघुनंदनजूगरुडाशरताँरणमाँहिंचलाए ॥ पुनरामश रासनतेनिकसेशरपंनगवैरिचहूँदिशिआए ॥ रणमाँहिंजिते अहिफुंकतथेसभपंनगवैरितितेचुनखाए ॥ १७ ॥ याँविधि अस्त्रहनेरघुनंदनताँदशकंधरकेरणमाँहीं ॥ घोरशिलीमुखताँ वरषेअतिरावणक्रोधभयोमनमाँहीं ॥ फोरसुराघवकेतनको पुनऔरदिएतनमातलिमाँहीं ॥ काटिदईध्वजस्यंदनकीवहुकां चनकीसुगिरीधरमाँहीं ॥ १८ ॥ फेरतुरंगमवासवकेरणरावण बाननसाथविदारे ॥ गंधवदेवसभेपितरापुनचारणचीतभए दुखिआरे ॥ दुःखिभएसुमहानकपीजवआरतकारसुरामनि हारे ॥ चीतविभीषणदुःखभएगिरिजाविलपेकपिकेशिरदारे ॥ ॥ १९ ॥ सुदशाननवीशभुजादमकैसुशरासनहाथनमाँहिंति एहैं ॥ इहभाँतिफिरेरणमंडलमैजनुआपसपक्षमिनाकअए

हैं ॥ भ्रकुटीहृढरामठटीरणमैंदृगलालकरालसुकोपभएहैं॥ सुमनोअविजालतराक्षसकोधनुरामपुरंदरहाथलएहैं ॥ २० ॥ वाननिकारसुरामलियोपिखकालकुपावकजाँहिलजाई ॥ नैननसोंजनुजालतहैंकुपरामपिखेंअरिहैनिकटाई॥ तेजकिज्वालछुटेतनतअबिरामपराक्रमदेतदिखाई॥कालस्वरूपधरेअरिपैसुरपेखतमेघनओटवनाई ॥ २१ ॥ तानकमानलईहरिजीपुनरावणकेउरमैशरमारे॥ राघवअंतकसेरणशोभितपेखभएकपिताँहरपारे ॥धावतहैंअरिपैहरिजीअतिक्रोधभरेमुखरामनिहारे ॥ काँपउठीसगलीधरणीत्रसभूतदशोदिशिमाँहिंपधारे॥२२॥रामकुरौद्रस्वरूपनिहारभएउतपातदशोदिशिमाँहीं॥ रावणकेउरमाँहिंभयोडरभूतडरेसगलेजगमाँहीं॥ गंध्रवसिद्धसुकिंनरदेवनिहारतवैठविमाननमाँहीं ॥ संगरताँहिंभयोसुप्रलैसमशूरनकेमनमेंभ्रमनाँही॥२३॥ वासवकोशरलैकरमैरणरावणकेशिरकाटवगाए॥ रामकटेरणरावणकेशिरशोणितताँरणमाँहिंचुचाए ॥ याँविधिशीशगिरेनभतेफलतालमनोअतिपौनझुलाए ॥ नाँदिननाँहिंनिशापिखियेकछुसाँझसुप्रातनहींसुधपाए॥२४॥ इहभाँतिभयानकयुद्धभयोकछुदेतनसंगरमाँहिंदिखाई॥वहुकालभयोरणमैलरतेविसमैपुनराघवकेमनआई ॥ शतएकसुवारकटेशिरमैतिनकीनहिआजुसमापतिआई ॥ वलनाँहिंलटेरणमंडलमैपुननाँहिंदशाननआयुघटाई ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तवसभअस्त्रनवितहरीकौसल्यानंदधाम ॥ अस्त्रवहुतसंभारकैचिंतवर्तभएसुराम॥२६॥

॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ जिनवाननसोंवलवंडवडेवनसंगरमैह
मदैत्यसुमारे ॥ वहुबानभएदशकंधरकेवधमाँहिंसुनिष्फल
आजंहमारे॥इहचिंततव्याकुलरामभएढिगआहिविभीपणनै
ननिहारे॥ चतुराननयाँहिंदियोवररामसुआजसुनोतुमवाक्य
हमारे ॥ २७॥भुजशीशविछिनभंएतुमरेउपजेंपुनसोधरतेत
नमाँहीं॥ इहभाँतिकह्योचतुराननजूतुमरामसुनोनिजकानन
माँहीं ॥ अहिकुंडलकारसुअंम्रतकुंडदशाननकेअहिनाभिसु
माँहीं ॥ वहुपावकअस्त्रतिदाहकिजेदशकंठमरेतबहीरणमाँ
हीं॥ २८॥-सुविभीषणकेयह्विवाक्यसुनेसुपराक्रमवंतसुराम
मुरारे ॥ शरपावककोदशकंधरकेपुनरामहनेतननाभिमझारे
पुनरामशरासनतानमहावलरावणकेशिरकाटउतारे ॥ दश
कंधरकेभुजशीशपरेधरमाँहिंसुरामशिलीमुखमारे ॥ २९ ॥
घोरलईशकतीकरमैंसुविभीपणओरतजीखुनसानो॥ रामक
टीपथिभीतरसापुनतीक्षणएकचलाइसुबानो ॥ शीशकटेद
शकंधरकेपुनतेजउमातिनतेंनिकसानो ॥ जाइपरेधरभीतर
जौशिररावणरूपभयोसुमलानो ॥३०॥ एकप्रधानरह्योध
रमैशिररावणकीभुजदोइभवानी॥फेरकुप्योदशकंधरसोतिन
वाननेकीवरषावरषानी ॥ रावणराघवराघवरावणमारत
तीरमहारुपमानी ॥ युद्धभयानकताँहिंभयोसुमनोयुगघोर
घटाउमडानी॥३१॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥
शूरनकेपदकोभटजानतऔरनजानतभाटभटोरे ॥ रामदशा
ननवीरवलीतनघाउवहेसुलरेंमुखजोरे ॥ आजदशाननचा

हितहैंजगवंधनवाननसोंरणतोरे ॥ शूरअनेकभएजगभीतर रावणसेभटहैंजगथोरे ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मातलिपुनसि मराइओराघवकोसमझाइ ॥ रावणकेवधकांजअबअस्त्रसुब्र ह्मचलाइ ॥ ३३ ॥ नाशकालदेवनकह्योसोअबआयोवीर ॥ उत्तमअंगनकाटियेरावणकोरणधीर ॥ ३४ ॥ शीशनकाटो याँहिंकोमरमकरीजेघात ॥ मातलिवाक्यचितारहरिरावण कीवधवात ॥ ३५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ तवरामलियोकरमैश रदीपतपंनगज्योंमुखमैंफुंफकाए ॥ जिहँकेपुनपासनपौनरहे रविपावकजाँफलमाँहिंलगाए ॥ तनुवानकुआहिअकाशम यंपुनगौरवमंदरमेरुसुहाए ॥ सभलोकनकेसुरपालकजेवहु ताँशरसंधनमाँहिंवसाए ॥ ३६ ॥ दमक्योशरसूरजसोरणमैस भलोकनकोडरआजमिटाए ॥ शुचमंत्रपढ्योरघुनंदनजूपुन जोविधिवेदनमाँहिंवताए ॥ पुनताँविधिसोंसुमहाशरलैकररा मशरासनमाँहिंलगाए ॥ धरणीसगलीडमडोलउठीपुनभूतस भैजगमाँहिंकँपाए ॥ ३७ ॥ रावणकेवधकाजवहीशररामशरा सनमाँहितनायो ॥ क्रोधभयोरघुनंदनकोउरघातकसोशररा मचलायो ॥ वज्रमनोरणमंडलमैउरकोपभरेसुरनाथवगायो ॥ कालपसारपरेमुखज्योंइमरावणकेउरमाँहिंलगायो ॥ ३८ गाडगयोउरभीतरसोशररावणशोणितपानकरेहै ॥ फाटगयो उररावणकोगिरिजातनकेशरप्राणहरेहै ॥ रावणमारसुफारध राशररामनिखंगकिमाँहिंपरेहै ॥ रावणकेकरचापमहागिरिजा सहवाननभूमिपरेहै ॥ ३९ ॥ प्राणगएदशकंधरकेरणमाहिगिर्यो

बहुराक्षसराई॥रावणभूमिगिर्योलखकैहतशेपसुराक्षससैन्य पलाई ॥ भागचलेसुदशोदिशिकोअवभूपविनाकरेकौनलरा ई॥रावणमारजितेरघुनंदनवानरयोँविधिदुंदुभिवाई ॥ ४० ॥ जयराघवकीदशमौलिहनेसुरमंडलयोंनभमाँहिंवखानी ॥ नभमंडलदेवनिशानवजेअरफूलनकीवरषावरषानी ॥ मुनिसिद्धसुचारणदेवसभैमुखराघवकोयशगाँहिंभवानी ॥ तबवीच अकाशसुमोदवढ्योशुभआइअपछरनृत्यसुठानी॥४१॥ रावणकेतनतेनिकसीरविज्योतिसमानसुज्योतिभवानी॥देवनकेपुनपेखतहीश्रद्धुराघवकेतनमाँहिंमिलानी॥ भागअहोदशकंधरकेसभदेवनयोंमुखमाँहिंवखानी॥रावणकेसमऔरमहानसु नाँहिंकहूँजगमैंहमजानी ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यद्यपि सात्विकदेवहमहरिकरुणाहममाँहिं ॥ तदपिदुःखभयव्यापहमफिरेंजगतकेमाँहिं ॥ ४३ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ दशकंधरराक्षसक्रूरवडोपुनविप्रनकोगहिकेशनमारे॥हरिकेसहद्वेपकरेमुनिहिंसकऔररमेपरदारमझारे ॥ इनरामकिमाँहिंप्रवेशकियोसभभूतनयाँविधनैननिहारे॥इहभाँतिकहेंसुरआपसमैंहसनारदताँप्रतिवैनउचारे॥ ४४॥ सुनहोसुरधर्मविचक्षणहोतुम रावणकीयहिवातचलाई॥ यहिद्वेषवडेउरभीतररावणनीतचितारतथोरघुराई ॥ भृत्यनसंगसदामिलकैअरिरामकथामुखभीतरगाई॥ इनराघवहाथसुनामरणासभठौरनमैतिनतेसुडराई ॥ ४५॥ स्वपनेदिनरात्रिविपेदशकंधररामसदाउरमाँहिं धिआई॥गुरुकेसमवोधकआजुभयोयहक्रोधवडोजगराक्ष

सराई॥ पुनअंतमयोंहरिकेकरतेसुगएइनकेसभपापमिटाई ॥ सभबंधछुटेदशकंधरकेइनरामकिआजसुसायुजपाई ॥ ४६॥ सुदुरातमयद्यपिपापकरेपरकेधनदारनमैलपटाई ॥ उरप्रीति जगेयदिवाडरकैरघुनंदनअंतसमैनरध्याई॥ वह्नुहोवतशुद्धस दाजगमैजनमांतरकोटिनदोपमिटाई ॥ सुरसत्तमजाँहिंप्रणा मकरेंसुरमेहरिलोकविकुंठहिजाई ॥ ४७ ॥ ॥ शंकरछंद त्रैभुवनविपमदशास्यकोजेमारकैरणमाँहिं ॥ शुभवामकरध नुटेकधरशरंदक्षहस्तफिराँहिं ॥ दृगप्रांतदेशसुलालहैशरद लितजाँहिंशरीर॥ रविकोटिकेसमशोभईरणमाँहिंसोरघुवीर ॥ ४८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रक्तविंद्रुतनशोभईसुरपतिकरेप्र णाम ॥ मेरीवैरक्षाकरैंबीरसदाश्रीराम ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमद ध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेरावणवधोनाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥श्रीमहादेवउवाच॥ ॥ स वैया ॥ ॥रामविभीपणऔहनुमानसुअंगदभ्रातकपीशनि हारे ॥ भालकराजतथानलनीलप्रसन्नभयोरघुनाथउचारे॥ मैतुमरेभुजदंडनकेबललंकपतीरणभीतरमारे ॥ सूरजचंद्र हेंजबलौतबलौतुमरोयशभौनमझारे ॥ १ ॥ पुण्यकथातु मरीजगभीतरगावहिंगेजनप्रेमबढाई ॥ मोहिमिलीगतिपाँ हिंपराजनयाँकलिकेसभदोपमिटाई ॥ यौंवरदानदियोसभ कोपुनसंगररंगमहीरघुराई॥ ताँहिंसमेरणमाँहिंपयोंनिरख्यो पतिकोमघवाजितमाई ॥ २॥दोहा॥ रावणकीसभनारिजेमं दोदरितेआदि ॥ उरताडतमुखरोवतीरावणकेढिगपाद ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥ कांचनकीजिनकीनगरीगजझूलततौंदरपैमतवारे ॥ पावकपाककरेजिनकेपुनवेदपढैचतुराननद्वारे ॥ छत्रधरेशिरमैसविताअनिशिनाहभलीविधचौरझुलारे ॥ सोपतिआजुपरेरणमैमुखधूरभरेशिरक्रीटविसारे ॥ ४ ॥ जिनकेभुजतेयमराजडरेमघवापरपाइनवंदनधारे ॥ अहिराजडरेजिनकेवलतेजलनायकजाँपदकंजपखारे ॥ सुरआइसुपाइअधीनरहेंजिनकीपुनसेजवसंतसवारे ॥ सोदशमौलिरुलेधरमैरघुनायकबाननकेरणमारे ॥ ५ ॥ सुविभीपणरोइचलेदृगनीरसुशोकभयोतिहँकेउरभारी ॥ दशकंधरकेपदपासपर्योगिरिजाशिरपागसुदूरनिवारी ॥ सुविभीषणआजसुबोधकरोरघुनायकभ्रातकुएहुउचारी ॥ सुलगावहिरावणकोअगनीअन्नकाहिनिमित्तलगावतवारी ॥ ६ ॥ ॥ गीयामालतीछंद ॥ मंदोदरीतेआदिविलपैंलंकपतिकीरानिआँ ॥ सुनिवारयाँहिंपठाइलंकाकरेताँसनमानिआँ ॥ इहभाँतिराघवजौकह्योतवगएलक्षमणधाइकै ॥ शवपासपरेविभीपणाजनुगएप्राणविलाइकै ॥ ७ ॥ उरशोकपेखविभीपणेलक्षमंनएहुवखानिआ ॥ इहकौनतेरोआहिजाँकोशोचवैहेदुखमानिआ ॥ याँस्टष्टिपूर्वसुकौनयेतुमयाँहिकोयहिभाखिये ॥ अवकौनआगेहोइगोयाँमाँहिंकोहैसाखिये ॥ ८ ॥ सुननदीकेसुप्रवाहसिकताजाँहिंजिमवशपानिये ॥ तेमिलैंकबहूँनाँमिलैंतिमएहुदेहीजानिये ॥ जिमवीजवीजनसोंमिलेपुनकवहूँनाँहिंमिलाइहैं ॥ तिमभूतभूतनमाँहिंमायाईशवशसुभ्रमाइहैं ॥ ९ ॥ तुमएहुओहमऔरसगलेकालवशउपजाइहैं ॥

जवजन्ममरणोजाँहिंतेतवताँहिंतेसुउपाइहैं ॥ अजसर्वभूतन
कोरचैपुनहनेईशसुपालका॥ नहिंजीवकेवशहैकछूनिरपेक्षह
रिजिमवालका॥ १०॥देहदेहनतेभएजिमवीजवीजनजाइहैं॥
देहीनिरालेहैंसदानहिजन्ममरणोपाइहैं ॥ देहजीवविभागहै
अज्ञानसर्ववनाइआ ॥ जन्मजराविनाशनानाक्रियाकेफल
जाइआ॥ ११॥ ॥ दोहा॥ ॥ दारुक्रियाजिमअग्निमैतिम
यहिआत्मामाँहिं ॥ धर्मअनात्मअरोपहैंमूढभ्रमेजगमाँहिं॥
॥ १२ ॥ तेयहिदेहसुयोगतेभासेंआत्मामाँहिं ॥ असद्रूपजग
विपयकोध्यावेजौमनमाँहिं ॥ १३ ॥ ॥ अडिल ॥ सुनिमाँ
हिंहंकारजवैमिटजाइहै ॥ संसृतिनाँहिंविभीपणतवदिखला
इहै ॥ जाग्रतमोऽहंकारयदापुननारहे ॥ होमुक्तविभीपण
जीवजगतमैतवकहे॥ १४॥मिथ्याहंममभ्रांतिविभीपणडारि
ये॥ रामनरायणमाँहिंचित्तअवधारिये॥सर्वभूतकोआत्मारा
मपछानिये ॥ होमायामानुपभेपभ्रांतिनहिठानिये ॥ १५ ॥
वाहिरइंद्रियअरथसुवंधनछोरिये ॥ दोपनिहारतजगतचित्त
कोतोरिये ॥ रामनिरंजनमाँहिंचित्तकोजोरिये ॥ होपारपरो
जगसिंधुनआतमवोरिये॥ १६ ॥ तनुमैआतमवुद्धिजवैपुन
ठानिये॥ मातभ्रातपितुमीततवैपुनजानिये॥ देहविलक्षणआ
त्माजवैसुपेखिये॥होमातभ्रातपितुवंधुनकहुँकोलेखिये॥ १७
दारादिकसुतगेहाज्ञानउपाइआ ॥ शब्दादिकवहुविपयवहुत
भ्रममाइआ॥ सैन्यकोशभृतराजभूमिसुखठानीए॥ होभ्रात
जनेक्षणभंगुरसर्वपछानिए ॥ १८ ॥ शोकनिवारसुउठोरा

मउरध्याइये ॥ निजप्रारब्धकिवलअबराजकमाइये ॥ भूत भावित्यजवर्त्तमानमैंवर्त्तिये ॥ होनीतकरोव्यवहारलेपन स्पर्शिये ॥ १९ ॥ रघुवरआइसुमानक्रियाअबकीजिये ॥ अग्निदाहदेभ्राततिलोदकदीजिये ॥ रोवतिरावणनारिमहामति वारिये ॥ होवरेंलंकगढजाइनलाउसुवारिये ॥ २० ॥ लक्ष्मणआपेवाक्यविभीपणधारिआ ॥ रामसमीपसुआयोशोकनिवारिआ ॥ करविचारधरमज्ञवचनतिंहँआखिओ ॥ होरामप्रीतिहिततांहिंसुउत्तरभाखिओ ॥ २१ ॥ रावणहुतो नृशंसधर्म्मनहिलागिओ ॥ क्रूरझूठमुखबोलव्रत्तसभत्यागिओ ॥ परदाराअभिसेवीमुनिगणहिंसको ॥ होसंसकारनहिंकरोंसुरघुवरतांहिंको ॥ २२ ॥ सुनविगसेरघुनाथसुवचनअलाइओ ॥ मरणअंतथोवैरसुसर्वपलाइओ ॥ संसकारअबकीजेयाँहिंवनाइकै ॥ होआइसुमेरीआहिवेदविधिपाइकै ॥ २३ ॥ तथाभापमँदोदरिराणिप्रबोधिआ ॥ संसकारहिततांहिंवस्तुसभसोधिआ ॥ वांधवलीनेसर्वसुतांहिंचुलाइकै ॥ होचितारचीतिंहँठोरसुचंदनपाइकै ॥ २४ ॥ करपितृमेधविधानचितामहिंडारिओ ॥ आहितअग्नीकाज़सुसर्वसवारिओ ॥ करीविभीषणक्रियासुसर्ववनाइकै ॥ होरावणकीसभमंत्रीवंधुसहाइकै ॥ २५ ॥ पावकअपनेहाथविभीपणलाइओ ॥ फेरभवानीजाइसुनीरहिंन्हाइओ ॥ तिलअरुदर्भसुनीरजुतांहिंमिलाइकै ॥ होरावणकोतिनदिएवेदविधिपाइकै ॥ २६ ॥ फेरक़रीसुप्रणाम सुशीशनिवाइकै ॥ नारिनकीनसुतोपसुवचनसुनाइकै ॥ लं

कातुमअवजाहुसुफेरवखानिआ ॥ होगईलंककेमांहिंसुरा वणरानिआ ॥ २७ ॥ रामसमीपसुबहुरविभीषणआइकै ॥ दीनसमानसुबैठोशीशनिवाइकै ॥ रामसुसेनासहितमहाव लिछाजई ॥ होकपिनायकपुनलक्ष्मणसंगविराजई ॥ २८ ॥ जिमवृत्रासुरमारसुइंद्रसुहाइओ ॥ तिमअरिकोरणमारराम हर्षाइओ ॥ मातलिकरीप्रदक्षणपुनशिरनाइकै ॥ होराम अनुज्ञागयोस्वरगमैधाइकै ॥ २९ ॥ तबरघुवरहर्षाइवचन अनुजेंकियो ॥ पूर्वसुलंकाराजविभीषणमैदियो ॥ अबत्वंलंका याहिसुविप्रबुलाइकै ॥ होराजविभीषणदेहिवेदविधिपाइ कै ॥ ३० ॥ याँविधिसुनकैलक्ष्मणगएसुधाइकै ॥ वानरके शिरदारसुलिएबुलाइकै ॥ हेमकलशभरनीरसमुद्रोंआनिआ ॥ होराजतिलकशुभभालविभीषणठानिआ ॥ ३१ ॥ पुरिजन लीनेसंगउपाइनपाणिमैं ॥ मिलेविभीषणलक्ष्मणगेरणघा णमैं ॥ करीसुदंडप्रणामरामढिगजाइकै ॥ होपेखविभीपणरा जरहेहर्षाइकै ॥ ३२ ॥ कृत्यकृत्यअबहोएरामसुजानिआ ॥ उरमैलाइकपीशहिंरामबखानिआ ॥ वीरसहाइततेरीरावण घातिआ ॥ लंकविभीषणराजआजमैथापिआ ॥ ३३ ॥ फे रकह्योहनुमानहिंरामविचारकै ॥ दोकरजोरेपाससुखरोनि हारकै ॥ आइसुपाइविभीपणलंकाजाइये ॥ होरावणके वधआदिसुसीयसुनाइये ॥ ३४ ॥ ॥ सवैया ॥ जोकछुसी यकहैमुखतेपुनवेगसुमेढिगआइबखानो ॥ आइसुरामवि भीपणकेमतलंकगयोहनुमानसिआनो ॥ लंकधसेहनुमान

जबैतबपूजतराक्षसजानमहानो ॥ रावणकेगृहबागविपेतरु शिंशपमूलगयोनअजानो ॥३५॥ तरुमूलविखेसियजाइपिखीसुकृशाअतिदीनअनिंदितसारी ॥ ढिगराक्षसियाँपरिवाररहीउरमाँहिंभजेरघुनाथखरारी ॥ अतिनम्रस्वभावधरेमनमैपुनमारुतनंदनवंदनधारी ॥ ढिगजोरउभैकरनम्रखरोरघुनंदनकोवहुदूतउदारी ॥ ३६ ॥ पिखजानकिताँमुखमौनभजीपुनपूरवसिम्रृतिताँउरआई ॥ लखराघवदूतप्रसंनभईहनुमानपिखेमनमैविगसाई ॥ तववायुकुमारजुरामकहीवहुभूमिसुताढिगबातचलाई ॥ सुविभीपणऔशुभग्रीवमिलेममआतसुनोकुशलीरघुराई ॥ ३७ ॥ लक्षमंनविराजतसंगसदाकपिकीध्वजनीपुनआहिअपारे॥ रणरावणपूतसमेतहनेवलबांधवऔरअमातविदारे ॥ सुविभीपणकेभुजराजदियोपुनतोप्रतिरामसुक्षेमउचारे ॥ इहभाँतिसुनेपतिवाक्यजवैहरपीसियज्यौंससिपाइसुवारे॥३८॥ **दोहा** ॥ गदगदवाणीसीयपुनलागीकरनवखान ॥क्याप्यारोअवतोहिकोदेवौंमैहनुमान ॥३९॥तेरवाक्यवरोबरेतीनलोककेमाँहिं॥ रत्नअभूपणनापिखोंहनूमानमनमाँहिं॥ ४०॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ इहभाँतिसुनेसियवाक्यजवैगिरिजाहनुमानसुवातअलाई ॥ रतनौघनतेसुरराजहुँतेअवमोहिलख्योजगमैअधिकाई ॥ हनशत्रुभईरणजीतवडीइहभाँतिपिखौंरणमैरघुराई॥ हनुमानकिवाक्यसुनेजवहीमिथलापतिकीदुहिताहरपाई ॥ ४१ ॥ तवसीयकह्योसभसौम्यगुणासुतसौम्यसुतोमहिंआइवसाए॥ अववेग

पिखौंरघुनंदनकोहनुमानसुराघवआइसपाए॥ हनुमानतथा अभिवंदनकैसुरघूत्तमपेखनकोपुनआए ॥ जनकात्मजामु खवाक्यकहेवहुरामसमीपसुआनसुनाए॥ ४२॥ जाँहिंनिमि त्तसुसेतुरचेजलसागरवानरसैन्यमिलाई ॥ जाँहिंनिमित्तहने दशकंधररावणकीसभसैन्यखपाई॥ सोसियहैअबलौंदुखसों पुनशोककिपावकमाँहिंतपाई ॥ मेमनमैइमआवतहैअबवे गपिखोसियकोरघुराई ॥ ४३ ॥ यौंसुनकैहनुमानमतोरघु नायकश्रीमतिमानउदारे ॥ मायकसीयसुडारदिजेममसीय अहेवहिआगमझारे ॥ ताँहिंलिजेइमधारमनेरघुनाथविभीष णवाक्यउचारे ॥ याहिविभीषणवेगअवैजनकात्मजाढिग ल्याउहमारे॥ ४४ ॥ शुभनीरन्हवाइपटंबरलाइसुभूषणपाइ सभैतनमाँहीं ॥ सुनकेइहबातविभीषणसोसहपौनकुमारग योपुरिमाँहीं॥अतिवृद्धसुराक्षसियाँसियकोसुन्हवाइतवैविग सीमनमाँहीं ॥ पटभूषणपाइचढीशिविकाजनुचंदकलापिखी येनभमाँहीं॥४५॥ यपटीजिनहाथविराजतहैंशिरपागसुकंचु कहैंतनलाए॥ शिविकाढिगआवतचारदिशावहुरावणकेचुब दारसुहाए॥ ढिगसीयगएकपिदेखनकोतिनमारछटीअतिदूर हटाए॥ मुखमाँहिंकुलाहलकीशकरेंगिरिजाफिरराघवकीढिग आए॥ ४६ ॥ कवित॥ दूरतेनिहारीसीयपालकीमझारीपुनरा मसुखकारीसुविभीषणउचारेहैं॥तेरेयहिचोवदारमेरोअपका रकरेंकाहेकोविभीषणकपीशनकोमारेहैं॥माताकेसमानयहि वडेवलवानपुनजाइकैसमीपकपिजानकीनिहारेहैं॥ पालकी

छुडाइपुनपाइनसोंआइसीयमेरीढिगवेगरामऐसेहीउचारहैं ॥४७॥ सवैया॥ सुनरामकिवाक्यतजीशिविकापुनपाइनसों हरुएचलआई ॥ तवराममसमीपसुआइखरीपिखराघवयौंम नमैंठहिराई॥यहिकारजकेहितमोहिरचीअवमायकसीतहिंदे उँतजाई॥पिखरोपभयोरघुनंदनताँपुनवाकअनेकअवाच्यअ लाई॥४८॥ वहुसीयसुनाँहिसहारसकीलक्ष्मंनबुलाइसुएहु उचारी॥इककाष्टनकोरचपुंजकरोपुनपावकलाइसुताँहिंमझा री॥ अवलोकसभेनिजनैनपिखेंविसवासकरेंरघुनाथमुरारी॥ लक्ष्मंनतवैउठ्ठाढिभयेरघुनायककीमतिएहुविचारी॥४९॥ लक्षमंनसुकाष्टनपुंजकियोपुनपावकताँहिलगाइदई ॥ पुनरा मसमीपसुआइखड्डोलक्ष्मंनतवैमुखमौनलई ॥ पुनजानकि रामप्रदक्षणदैढिगपावकसाचलआपगई॥ सहनारिनदेवअ देवपिखेंमुखभापतहोवतवातनई॥५०॥ देवनकोअभिवंदन कैपुनविप्रनकोअभिवंदनधारी॥पावककेढिगजाइतवैकरजो रउभेइमसीयउचारी॥ जौममचीतनऔरभजेरघुनंदनछोड सुराममुरारी॥ तौअगनीसभलोकनकीयहिसाक्षिकरक्सकहो इहमारी॥५१॥ इहभाँतिउचारप्रदक्षणधारसुसीयधसीतहँ पावकमाँहीं॥ अतिदीप्तसुपावकमैअभयावहुशुद्धउमासु सदाजगमाँहीं॥ पिखदेवअदेवसभैडरपेसुभयोदुखसिद्धन केमनमाँहीं ॥ पिखसीप्रविशीतहँपाँवकमैसभवोलउठेतव आपसमाँहीं॥५२॥ ॥दोहा॥ ॥जाँसीताहितसैन्यलैघो रकियोसंग्राम ॥ अहोसुप्यारीजानकीकिंहँविधितजीसुराम

॥ ५३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥सवैया॥ ॥इंद्रसुऔवरुणोयमजूत्षवाहनसाथकुबेरसुआए ॥ श्रीकमलासनआइतहाँमुनिचारणसिद्धसुसंगसुहाए ॥ पित्रऋषीसुरगंधरवासुअपच्छरकेगनकोनगनाए॥ औरसभेसुरबैठविमाननरामजहाँसुतहाँचलआए ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ परमानंदपरातमावेदवखाँनेजाँहिं॥ सुरसमूहकरजोरकैकरेंसुस्तुतीताँहिं ॥ २ ॥ कर्त्तात्वंसभलोककोसाक्षीज्ञानस्वरूप ॥ वसुनमाँहिंपुनअष्टमोभाख्योतेरोरूप ॥ ३॥ रुद्रनमैंशंकरतुहींभाख्योवेदनमाँहिं ॥ कर्त्ताआदिसुलोककोत्वंचतुराननआँहिं॥४॥ ॥कवित॥अश्वनीकुमारतेरोनाकहैउदारप्रभुचंद्रमादिनेशतेरेनैनजगजानीये॥ लोकनकीआदिपुनअंतमध्यतूँहींएकतेरोहीस्वरूपनित्यउदितपछानीये॥ सदाअतिशुद्धबुद्धमूरखनपाइसुधमुक्तसुखरूपतेरोवेदमैवखानीये ॥ मायाकेभुलानेजोईमानुपपछानेतोहीवहीजगमाँहिंजनमूरखसुठानीये॥५॥अडिल्ल ॥ तेरोनामसुजोजननित्यचितारही॥ चेतनरामस्वरूपसुतोहिनिहारही ॥ रावणहरेसथानसुतेजहमारिआ॥ होदुष्टवहीअभिमानीतैंरणमारिआ॥ ६॥ पाएपदहमयठुरप्रसादतुमारिआ ॥ याँविधदेवनवाक्यसुजवैउचारिआ ॥ करिअभिवंदनआपपितामहआययो ॥ होरामधर्ममगमाँहिसुब्रह्मअलाययो॥७॥ब्रह्मोवाच॥शंकरछंद ॥ हेदेवतोकोवंदनात्वंविष्णुजगतअधार ॥ ध्यावहिंसुतो

कोज्ञानिजनधरप्रीतिचीतमझार॥ हरिहेयऔरअहेयद्वंद्वविहीनहैंपरएक ॥ सत्तास्वरूपसुसर्वत्वदिथितसर्वदृष्टाटेक ॥ ८ ॥
प्रभुप्राणऔरअपाननिश्चयबुद्धिकैत्वदिधार॥ मुनिकाटसंशयबंधनाजगविषयदूरनिवार ॥ वरयतीपेखेंजाँहिंकोनिजमोहकोकरनाश॥श्रीरामरत्नकिरीटकोममवंदनारविभास॥९ ॥
जगदादिमाधवमायतेसुअतीतजोत्वंआँहिं ॥ मुनिवंद्यमोहविनाशकोपुनमानजाँकोनाँहिं ॥ त्वंयोगिध्येयसुयोगभर्त्ताअहेंपूरणधाम ॥ हैलोकरंजितरूपजाँतिहँरामकोसुप्रणाम॥ १०॥ जिहँभावऔरअभावप्रत्ययहीनजेशिवआदि॥
तेभोगसर्वसुत्यागकैउरभजेंपंकजपाद ॥ नित्यंचशुद्धसुबुद्धऔरअनंतप्रणवस्वरूप ॥ वरवीररामसुवंदनावनदैत्यदावारूप॥ ११॥ त्वंनाथमेरोरामजीसभकरेंकाजहमार॥ सभमानतेसुअतीतमाधवरूपनिखिलअधार ॥ तेभक्तिगम्यस्वरूपभावितरूपत्वंभवहारि॥ करयोगसेवेंतोहिकोतिनचीतकोसहचारि॥ १२॥ त्वंआदिअंतसुलोकततिकोपरमईश्वरआँहिं॥
हेलोकनाथजिमानलौकिकगम्यत्वंजगनाँहिं ॥ अतिभक्तिश्रद्धाभावकैभजनीयतेरोरूप ॥श्रीरामसुंदरवंदनावरनीलकमलस्वरूप॥ १३॥ अतिमानत्वंगतमानहैंकोसकेतोहिपछान॥
पुनमानमाधवशक्तत्वंमुनिकरततेरोमान ॥ वृंदावनेवंदारकागणकरेंपदसुप्रणाम ॥ शिवआदिवंदनतेकरेंसुखकंदवंदोराम॥ १४॥ सभशास्त्रवेदकदंवनानाकरेंतेप्रतिपाद॥ निर्विषयज्ञानानंदत्वंनितरामआँहिंअनादि॥ ममसेवनेककाजमानुप

भावलीनोधार ॥ मथुरेशमरकतवरणरघुवरवंदनासुहमार॥ ॥ १५॥ अतियुक्तश्रद्धास्तोत्रयहिजोपढेगोमनलाइ॥भुविमाँहिमानवब्रह्मकोवहुज्ञाननीकेपाइ॥सभकामकामितरामश्यामसुदैनहारेआँहिं॥ सदध्याइध्यातातांहिंजोसभपापताँमिटजाँहिं॥१६॥ **दोहा** ॥ याँविधिसुस्तुतिलोकगुरुकरीजवैमनलाइ॥जनकसुताकोगोदलैनिकसेपावकआइ॥१७॥ विमलअरुणद्युतिभ्राजईरक्तपटंबरधार ॥ दिव्यविभूषणसीयहैजाँकीप्रभाअपार॥१८॥जगसाक्षीवहुपावकोरघुवरकरतवखाण॥वनमैअरपीमोविपेसोश्रीरामगृहाण॥१९॥**सवैया**॥ सुदशाननकेवधकाजरचीवहुमायकसीयसुतैंहरिरामा ॥ प्रभुसोदशकंठहन्योरणमैसुतबांधवनाँहिंरहेनिहुँधामा ॥ भवभारउतारदियोसगलोकछुरंचकनाँहिंरह्योअवकामा ॥ कृतकारयहोइदुरीअगनीप्रतिबिंबसियावहुराघववामा॥ २० ॥ तवपावकपूजसुसीयगहीरघुनाथउमामनमैहरपाए ॥ अनपायिनिअंकनिवेशधरीपुनतीनहुँलोकजिनेसुतजाए ॥ विखरामसियाइकआसनमैदमकैसुरनायकताँक्षणआए॥सुगदागदवाकसुरेश्वरकीकरजोडउभेहरिकोयशगाए॥ २१ ॥ **इंद्र उवाच** ॥ ॥ **भुयंगप्रयातछंद** ॥ भजेहंसदानीलकंजंसुरामं॥भवारण्यदावानलंजाँहिंनामं ॥ भवानीहृदाभावितानंदरूपं॥भवाभावहेतुंभजेशंभुभूपं ॥ २२ ॥ सुरानीकदुखौघजानेखपाए॥नराकारदेहंनिराकारगाए॥ परेशंपरानंदरूपंविशिष्टं॥भजेभारनाशंप्रभारामइष्टं॥ २३॥ प्रपंनाखिलानंददा

तेसुरामं ॥ प्रपंनारतीहाकहेंतोहिनामं॥तपोयोगयोगीसुसेवें सुनीतं ॥ कृपीशादिमीतंभजेराममीतं ॥ २४॥ सदाभोगभा जांसुदूरेप्रकाशं ॥ सदायोगभाजांसमीपेविभासं ॥ चिदानं दकंदंसदाराघवेयं॥विदेहात्मजानंदरूपंभजेयं॥ २५॥ महा योगमायायदाईशधारें ॥ नराकारलीलातदात्वंदिखारें ॥ तवानंदलीलाकथापूर्णकाना ॥ भवंतीहलोकेसदानंदमाना ॥ २६ ॥ अहंमानरूपासुरापीवमातो ॥ नवेदाखिलेशो अहंभोगरातो ॥ कृपापादतेरेकरीमेवरिष्टा॥ निहूँलोकरा जाभयोमाननष्टा ॥ २७॥ लसेहारकेयूररामाभिरूपं ॥ ध राभारदैतंवनंअग्निरूपं ॥ लसत्पद्मनेत्रंमुखंशश्यकारं ॥ भ जेराघवेशंदुरापारपारं ॥ २८ ॥ सुराधीशनीलाभ्रनीलांग कांतं॥विराधादिदैतंवधेलोकशांतं ॥ किरीटादिशोभंभजेशं भुईशं॥भजेरामचंद्रंरघूणामधीशं ॥ २९ ॥ मनोचंद्रकोटी लसेपीठमोहै ॥ तहाँरामसीताभलीभाँतिसोहै ॥ लसेहेमव र्णातडित्पुंजभासं ॥ भजेरामचंद्रंसदारातिनाशं॥ ३० ॥ ॥ **दोहा**॥ ॥ याँविधसुरपतिभाषिओरघुपतिरूपअशेष ॥ बहुरभवानीसहिततहँआएआपमहेश ॥ ३१ ॥ तीननै नसुखदैननितनभमेंबैठविमान ॥ रामकमलदलनैनकोकी नोएहुवखान ॥ ३२ ॥ राजतिलकजवहोइगोतोहिअयो ध्याधाम ॥ तवमैआवोंगोतहाँदेखनतोकोराम ॥ ३३ ॥ अवयाँतनकेपिताकोदेखोराममहान ॥ तवनभरामनिहारि ओदशरथमाँहिंविमान॥ ३४ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सानुज

रामप्रणामकरीपदभूपतिप्रीतिभरेगरलायो ॥ राघवकोशि रचूमतवैनृपआनँदसोंयहिवाक्यअलायो ॥ मैभवसागरमाँ हिंहुतोसुतधीरवलीतुममोहितरायो ॥ रामसुपूजनताँहिंकि योइमभापअलिंगसुभूपसिधायो ॥३५॥ ॥दोहा॥ ॥दे वराजपिखजोरकरभाष्योवहुरसुराम॥मोहिनिमित्तसुधरप रेमारेकपिसंग्राम॥३६॥ ॥कवित॥ ॥ अम्रतवसाइकपि दीजिएजिवाइअवकीजियेसुरेशयहिआइसहमारीआ॥तथे तिउचारपुनअम्रतकीधारकैजिवाइकपिलीनेनाँहिंलागीकछु घारीआ॥जेईरणमारेतेईसभहीजिवारेतिनसोएजतुउठेकपि भएहरषारीआ॥ कुदेहरषाएपुनरामढिगआएकपिपूरवसमा नभएवडेवलधारीआ ॥ ३७॥ करकेप्रणामसुविभीपणकि योवखानदेवममप्रीतिहितकरुणासुधारिये ॥ मंगलसना नभगवानसहसीयकरभ्रातकेसमेतसभभूषणसवारिये॥प्रा तकीजियेपयानइमसुनभगवानविभीषणवाक्यपररामयौं उचारिये ॥ भक्तसुउदारमेरोभरतकुमारभाईरहेनिजदेशप थमेरोहीनिहारिये ॥ ३८ ॥ शत्रुनाशसाथतनचीरजटामा थअवमंगलसनानविनताँहिंकैसेठानिये ॥ सुग्रीवप्रधान कपियूथपउदारअवयाँहींकोविभीपणसुकरोसनमानिये ॥ कपिशिरदारजवपूजितउदारभएभईममपूजानसंदेहकछुआ निये ॥ रामयौंवखानीसुविभीपणपछानीगतिहेमऔपटंवर सुरतनमहानिये ॥ ३९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ सुयथारुचिपे खकपीमनकोसुविभीपणत्यौंवरयावरपाए ॥ इकधारपटंवर

कूदितहैंइकमौलिमणीधरकीशसुहाए ॥ इहभाँतिपिखेंकपिपुं
जनकोरघुनंदनतौगिरिजाहरषाए॥ अभिनंदनकैरघुनंदनजी
कपिमंडलकोतबदीनविदाए॥ ४० ॥सूरयकेसमतेजलसेइह
भाँतिविमानविभीषणल्याए ॥ रामचढेतिहँऊपरजौबहुपार
वतीसुविमानसुहाए ॥ अंकनिधाइसुसीयलईयशपुंजवडी
उरमाँहिंलजाए ॥ भ्रातचढेलक्षमंनतबैकरमाँहिंशरासनती
रफिराए ॥४१॥ चढमाँहिंविमानसुरामबलीसभवानरकोइ
हवातउचारी ॥ शुभग्रीवसुअंगदऔरविभीषणजेकपिऔर
वडेशिरदारी ॥ तुमनेजगमीतकिकाजकरेरणवानरसैन्यमि
लाइअपारी ॥ अबआइसमोहिदईसभकोतहँजाहुजहाँरु
चिहोइतुमारी ॥ ४२ ॥ ॥दोहा॥ ॥सैन्यसुग्रीवमिलाइ
कैत्वंकिष्किंधायाहि ॥ भक्तविभीषणराजतुमकरोलंकके
माँहिं ॥ ४३ ॥ इंद्रआदिसभदेवतातोहिनधरपेकोइ ॥ पितु
रजधानीजाँउँमपुरीअयोध्यासोइ ॥ ४४ ॥ ॥ शंकरछं
द ॥ ॥इहभाँतिरामउचारिओतबकहेंकपिशिरदार ॥ करजो
रबहुरविभीषणेपुनएहुकीनउचार॥ सभपुरिअयोध्याजाँहिंगे
हमसंगतेरेराम ॥पिखराजतिलकसुभालतेकरमातपादप्रणा
म ॥ ४५ ॥ प्रभुफेरआइसुकरेंगेहमदेशअपुनेराज ॥तेसंग
चालैंरामजीहमदेहिआइसआज ॥ सुतथेतिरामबखानकेपु
नभापिओरघुराइ ॥ सुग्रीवऔरविभीषणंहनुमानकोसम
झाइ ॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेनासहितसभेचढोपुष्पक
याँहिंविमान ॥ चढेकपीश्वरसहितसुविभीषणसहितप्रधान

॥ ४७ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ गिरिजाइहभाँतिचढेसभहीसु कुवेरकिआसनमाँहिंसमाए ॥ रघुनायकआइसपाइउमा सुविमानतवैनभमाँहिंउडाए ॥ सहहंसविमानलसेनभमैज नुमाँहिंअकाशद्वितीरविआए॥ चतुराननसेरघुनाथशुभेंचढ माँहिंविमानमहाहरपाए॥४८॥ ॥ **अडिल** ॥ ॥रविकेविं वसमानविमानसुशोभई ॥ तपकरलब्धोकुवेरचित्तपिखलो भई॥सानुजसीयसमेतरामसुखदाइके॥ होअतिशयशुभेवि मानताँहिंकोपाइके ॥ ४९ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउ मामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥चहुँओरनिहारसु रामवलीगिरिजासियकोरघुनाथउचारी ॥ त्रयशृंगधराधर शीशविपेयहिलंकपुरीसिसलेहुनिहारी ॥ इहनैननकैरणभू मिपिखोकिलमासकिपंकसुव्यापतसारी ॥ इहठौरभयोकपि राक्षसकोमिथलादुहिताअतिसंगरभारी ॥ १ ॥ इहठौर विपेदशकंठहनेजुकहावतराक्षसकोजगराई॥मघवाजितयाँ धरमाँहिंहतेजिहँकेहितरोवतलंकसवाई ॥ इहठौरविपेघट कानहनेमम ओरघनीअरिसेनखपाई ॥ इहसेतुरचेजलसा गरमैकपिकोध्वजनीजिहँमाँहिंलँघाई ॥ २ ॥ इहतीरथसा गरकोपिखियेजिहँसेतुसुबंधहिनामकहाए ॥इहतीरथसागर तीरभयोपुनपूजहिजाँहिंत्रिलोकसुआए॥ अतिपावनतीर्थए पिखियेजगदेखनतेसभपापमिटाए॥ इहठौररमेश्वरदेवमहा अवनीदुहिताहमशंभुपुजाए॥३॥ इहठौरविभीपणसागरके

तटसंगप्रधानमिल्योमुहिआनी ॥ घनसेंजिंहिंकीढिगकाननहैं इहहैकपिनायककीरजधानी॥ तहँआइसरामप्रधानवडीशुभ अंगदमातमुखाकपिरानी॥कपिनायकसर्वबुलाइलईपिखसी यउमातिनकोविगसानी ॥ ४ ॥ तिनसंगविमानउठनभकोपुन सीयनिहारसुरामअलाए ॥ ऋषमूकपहारसुएहुपिखोइहअं गदकोपितमैरणघाए॥इहपंचवटीपिखियेजिहँठाहररासससमो हिअनेकखपाए ॥ सुअगस्त्यसुतीक्षणआश्रमएपिखियेचहुँ ओरसुरंभसुहाए ॥ ५ ॥ शंकरछंद ॥ ॥इहतापसीवरवर्णि नीढिगपेखियेसुखदाइ ॥ इहचित्रकूटनगोतमोवहुभाँतिर ह्योसुहाइ॥इहठौरआयोकैकईकोपूतभरतकुमार॥सुप्रसन्नक रणेमोहिकोवहुआहिभक्तउदार॥६॥भरद्वाजआश्रमपेखसी तेएहुयमनातीर ॥ भागीरथीयहिप्रेखियेअतिपावनोजिहँनी र॥सरयूनदीयहिपेखियेतटयज्ञयूपअपार॥ कौसलपुरीयहिपे खियेअभिवंदनातिहँधार ॥ ७ ॥ ऋपिभरद्वाजसुआश्रमेइह भाँतिआएराम ॥ दशचारपूरणवर्पमेतिथिपंचमीसुखधाम॥ पिखभरद्वाजमुनीशकोसहभ्रातवंदेपाइ॥पुनपूछिओमुनिरा जकोरघुनाथनम्रसुभाइ ॥ ८ ॥ सहभ्रातभरतसुकुशलहैतु मसुनेमुनिविख्यात ॥ सुसुभिक्षआहिअयोध्ययापुनजीव तीममभात॥सुनरामवाक्यप्रसंनमुनिवरएंहुकीनवखान॥स भकुशलहैंनिजनगरमैपुनभरतजोमतिमान ॥ ९ ॥ फलमू लकरतअहारऔतनजटावल्कलआहि ॥ तवपादुकाकोरा जअप्योंहिरतोतवराहि ॥ जेकर्मतेवनदंडकेशुभकरेहैरघुराइ

सियहरणराक्षसमारणंपुनलंकमारीजाइ ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तपकरतोहिप्रसादतेसोसभजाँनैंमोहि ॥ त्वंपरब्रह्मसुप्रगटजगआदिअंतनहींतोहि ॥ ११ ॥ ॥ **सवैया** ॥ तुमपूरवनीररचेप्रभुजोसभकारणत्वंतिनमैंसुपतायो ॥ सुनरायणविश्वस्वरूपतुहींनरअंतरआतमत्वंहिकहायो ॥ सभलोकनकोकरताचतुराननाभिसुवारिजतेउपजायो ॥ इहतेसभवंदनतोहिकरेंप्रभुत्वंजगअंतरईशसवायो ॥ १२ ॥ ॥ **गीयामालतीछंद** ॥ त्वंविष्णुजनककुमारियायहिलक्ष्मीपहिचानिए ॥ लक्षमंनजगतअधाररघुवरशेपनामवखानिये ॥ तैंआपअपनीमाययाकरनिखिलजगतवनाययो ॥ चितशक्तिसाक्षीसर्वकोनभजिवेंनाँहिंलिपाययो ॥ १३ ॥ वहिरंतरेत्वंसर्वकेरघुनंदपूरणहैंतुहीं ॥ जेमूढदृष्टिविभिंनतोकोंविखेंजाँनहिंतेनहीं ॥ त्वंनिखिलजगतअधारगायोत्वंहिजगप्रतिपालहैं ॥ त्वंनिखिललोकनभोगतापुनभोग्यत्वंसुविशालहैं ॥ ॥१४॥ जोकानसुनियेसिमरियेपुननयनकरजोदेखिये ॥ त्वंएवसर्वसुरामजीविनतोहिनाकछुलेखिये ॥ अहमादिगुणकरमाययातेंजगतनिखिलवनाययो ॥ तवशक्तिप्रेर्योंलोकसगलेरामतोहिसुहाययो ॥ १५ ॥ चुंवकमणीकेसंगतेजिमलोहजगतिचलाइहै ॥ मायासुजडतिमरामजीतवसंगजगतवनाइहै ॥ हरिविश्वरक्षणहेतत्वंनिर्देहतनद्वधारिआ ॥ सूक्षमस्वरूपीसूत्रत्वंवैराटथूलउचारिआ ॥ १६ ॥ सुसहस्रहींअवतारतेवैराठतेउपजाइहैं ॥ करकाजहरधरभारकोवैराठमाँहिंस

माइहैं ॥ अवतारतेरेकीकथाशुभसुनेंजेजगगाइहैं ॥ सुअनन्य मनजगअंदरेवहुमुक्तरामकहाइहैं ॥ १७॥ ॥ अडिल ॥ ॥ ब्रह्माकरीसुविनतीपूर्वहिंयारिया ॥ भूकोभारउतारोअखिल मुरारिया ॥ दशरथपूर्वसुतपसापिखविगसाइकै ॥ होरघुकुलमैअवतारलियोनेंआइकै ॥ १८ ॥ देवनकेतेंकार्य्यसुसर्वसवारिआ ॥ मानवतनुहरिधारेवर्षहजारिआ ॥ लोकदुहूँहितकाजकर्मतुमकरोगे ॥ होपापहरणयशभवनसंपूर्णभरोगे ॥ १९ ॥ विनतीकरेंसुरामकानमैधारिये ॥ मेरोगृहअवपावनकरोमुरारिये ॥ सेनासहितहमारेभोजनलीजिये ॥ होकालसवेरेप्रातगमनपुनकीजिये ॥ २० ॥ दोहा ॥ रामतथामुखभाषकैआश्रमकीननिवास ॥ सेनासीयसुभ्रातसहपूजेमुनिसुखरास ॥२१॥ ॥अडिल ॥ रघुवरयोंमनमाँहिंसुवहुरविचारिओ॥अबहीबनेसुदूतजुतहाँपधारिओ॥हनुमतकह्योसुरामअयोध्याजाइये॥होराजाकेघरजाइसुकुशलसुनाइये ॥ २२ ॥ शृंगवेरपुरजाइसुगुहसुधलीजिये ॥ सानुजसियहरिआएताँहिंभनीजिये॥नंदग्राममैजाइभरतकोहेरियो ॥ होसानुजसीयसमेतकुशलममटेरियो ॥ २३ ॥ ॥ सवैया ॥ सीयहरीदशकंधरनेंसुवहीदशकंधरराघवघाए॥जोकछुमैसुकरीचरियाभरतैंसभजाइसुदेहिसुनाए॥जीतलियेअरिपुंजसभेपुनरामसियालक्ष्मंनसुआए ॥ कोशसवाहनसंगवडेकपिऋक्षनकीध्वजनीवहुल्याए॥ २४॥ ॥अडिल ॥याँविधताँकपाससुकहोवखानकै ॥ भरतकहीमुखबातवृतांतसुजान

कै ॥ वेगसुआवोमेढिगरामवखानिओ ॥ होभापतथाहनुमानसुनरवपुठानिओ ॥ २५ ॥ शृंगवेरढिगआयोप्रथमसुधाइकै ॥ मीठीवाणीकहीसुहर्षवढाइकै ॥ दशरथकेसुतरामसखातेप्यारिआ ॥ लक्षमणसीतासहितसुकुशलउचारिआ ॥ २६ ॥ भरद्वाजकीआइसगुहपुनपाइकै ॥ आवहिंगेतवपासपिखोमनलाइकै ॥ ऐसेमुखोंवखानरोमहर्पानिआ ॥ होवायुवेगहनुमानवहुरपुलतानिआ ॥ २७॥ दोहा॥ तीरथरामसुपेखकैपुनःचल्योवलधार ॥ वहुरजाइसरयूनदीपेखीपवनकुमार ॥ २८ ॥ नंदग्रामवहुरोगयोसरयूउतरसुपार ॥ अवधपुरीतेक्रोशइकजहाँसभरतकुमार ॥ २९ ॥ सवैया ॥ रूपणाजिनचीरपिखेभरतेंमुखदीनकृशाश्रममाँहिंवसाए ॥ मलपंकशरीरसुशीशजटाद्रुमछालनकेतनुपाटवनाए॥ फलमूलअहारकरेनिशिमैनिशिवासररामसदाउरध्याए॥ रघुनाथसुपाइनपावरिकेढिगजाइवसुंधरन्यायचुकाए॥३०॥ पौरअमातवजीरवडेढिगहैंसभहीभगवेंपटधारे ॥ धर्ममनोशुभमूरतिहैइहभाँतिरघूत्तमभ्रातनिहारे ॥ जोरउभेकरपौनकुमारसुरामकिभ्रातकुएहुउचारे ॥ जेरघुवीरहुतेवनदंडकतूँजिनकोउरमाँहिंचितारे॥३१॥त्वंजिनकीउरशोचकरेंतिनरामसुतेप्रतिक्षेमउचारे॥तोहिरिदंगमभापतहोंअवशोकतजोभवभीतरभारे ॥ याँहिंमुहूरतरामभिलेंउरसाचगहोयहिवाक्यहमारे ॥ कैकइनंदनरामअहेयमुनातटपैक्रपिभौनमझारे॥ ३२॥ हनरावणरामसुसीयलईरघुनाथवलीअवलैयशआए॥ अर्थ

नकेपरिपूरणहैंलक्ष्मनसियासहरामसुहाए ॥ सभराक्षसऔ कपिसंगलिएभटकोटिनकोटिनजातगिनाए ॥ इहभाँतिकह्यो हनुमानजबैसुनकैसुतकैकइकेहरषाए ॥ ३३ ॥ अडिल ॥ हर्षमू रछाआईभरतकुमारको ॥ गिरेभूमिपरजाइनरहीसँभारको ॥ बहुरभरतधरउठेसुदेहसँभारिआ ॥ होलिएहनूगललाइसुभ लोउचारिआ ॥ ३४ ॥ आनंदकोवहुनीरनयनतेआययो ॥ हनू मानकोभरतसुताँहिंन्हवाययो ॥ देवकिधोंपुनमानुपत्वंजग आययो ॥ होकरुणाकरीरिदंगमवाक्यसुनाययो ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ **गीतामालतीछंद** ॥ ॥ तैंकहीप्यारीबातमोकोतोहि क्याअवदीजिये ॥ शुभशतसहस्रसुधेनुनीकेताँउपाइनलीजि ये ॥ शतग्रामनीकेजोरुचेंनवसातकन्याशोभिनी ॥ आभरण सोंपरिपूरणाचुनलीजियेमनमोहनी ॥ ३६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ऐसेभरतवखानकरवहुरोकीनवखान ॥ उमापवनसुतको तवैवहुविधदैसनमान ॥ ३७ ॥ वहुतवर्षमुनिभएथराम गएवनमाँहिं ॥ रामकथाप्यारीसुनीआजसुकाननमाँहिं ॥ ॥ ३८ ॥ तोहिवखानीमोहिकोकल्याणीसुखरूप ॥ आजु सुसाचीमैपिखीलौकिककथाअनूप ॥ ३९ ॥ वर्षसैकडे जाँहिंभीजीवतजोनरहोइ ॥ कहितपुरातनबातजनपावत आनंदसोइ ॥ ४० ॥ कहिविधभयोसमागमोकीशनसों रघुवीर ॥ तत्ववखानोमोहिकोहोइप्रतीतिसुधीर ॥ ४१ ॥ ॥ **अडिल** ॥ ॥ भरतमहातमयाँविधजवैसुभानिओ ॥ राम चरितहनुमानसुसंगलवखानिओ ॥ कपितेरामचरित्रजयैसु

नपाययो॥ होभयोप्रसन्नसुभरतभ्रातसमज्ञाययो ॥४२॥ देवनकेसुस्थाननगरमैजेतिआ॥नानाबलिउपहारपुजावहुतेतिआ॥ सूतवितालकबंदीसुस्तुतिपाठका ॥ होवारमुखीसभचलैंरामकीवाटका ॥ ४३ ॥ ॥ नराजछंद ॥ ॥ सुराजदारऔअमातरामहेरहैंभले ॥ सुसेनअश्वनागकीरथीपदातियाचलें ॥ सुविप्रपौरभूपतीसमागतासमस्तजे ॥ चलैंसुरामचंद्रआस्यकेचकोरसंमते ॥ ४४ ॥ सुभूपवाक्यप्रेमपूरश्रोत्रमैपरेजबे ॥ निदेशशत्रुसूदनेकलोलशर्मभेतवे ॥ सुमंतआदिवेगवंतधाइसर्वसाधने ॥ अलंकृतासुकौसलालगेसुवाजबाजने ॥ ४५ ॥ सतोरणापताकिकाविचित्रहीरिआँजरी॥ लगेसमस्तमंदिरावलीविचक्षणाकरी ॥ चलेसमस्तवृंदवैसुरामपेखनेभले ॥ तुरंगसौहजारऔसुनागआयुतंचले ॥ ॥ ४६ ॥ रथासहस्रवेदशासुहेमसूत्रभूपिता ॥ चलेसमस्तद्रव्यलैउपायनंअदूपता ॥ चलीसमस्तराणिआँसुबैठपालकीवरी ॥ भरत्तहाथजोरकैसुमूँडपादुकाधरी॥४७॥ सुशत्रुनाशभ्रातसाथपादचारहींचले ॥ तवैसुदूरदेशतेविमानदेखिओभले ॥ सुचंद्रसूरकेसमंविमानसोसुहाययो ॥ विमानब्रह्मदेवनेसुमानसंवनायया ॥४८॥ सुताँहिंमाँहिंभ्रातदोविदेहकीकुमारिया॥सुग्रीवऔविभीषणादिमंत्रिहैंउदारिया ॥ सुदेखियेपिखोजनोहनूमतेप्रभानिओ ॥ युवासुवालवृद्धनारिरामएवखानिओ ॥ ४९ ॥ ध्वनीअकाशपूरिओसुरामएकत्योभले ॥ तुरंगकुंजरारथासुछोडभूमिमैचले ॥ विमा

नरामहेरिओअकाशचंद्रमायथा॥ भरत्तहाथजोरकेपिखेसुह पिओतथा ॥५०॥ विमानअग्ररामकोभरत्तवंदिओतथा ॥ सुमेरुशृंगसूरकोसुलोकवंदहैंयथा ॥ तबैसुरामआज्ञयावि मानभूमिआययो ॥ भरत्तसानुजंसुरामताँहिंमैविठाययो ॥ भरत्तरामपाइकैसुफेरवंदनाकरी॥ उठाइरामताँलियोचितार पेखिओहरी॥ सुरामअंकरोपकैलियोगरेलगाइकै ॥ तबैभ रत्तसीयभ्रातलक्ष्मणंअलाइकै ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दोनोंकेपदवंदनाकरीसुभरतबनाइ ॥ प्रेमसुव्याकुलभरतजी सुखसुमुद्रमैनाइ ॥ ५२ ॥ ॥ शंकरछंद ॥ ॥ शुभग्री वऔयुवराजअंगदजांबवानउचार ॥ मैंदवद्दिविंदसुनील ऋषभंमिलेभरतकुमार ॥ गंधमादनऔगवाक्षसुपेणऔन लवीर ॥ शरभपनसप्रधानकोपुनमिलेभरतसुधीर ॥ ५३ ॥ ॥ अडिल ॥ ॥ सभकपिमानवरूपतबैशुभधारकै ॥ कुश लक्षेमसभपूछ्योभरतकुमारकै ॥ तबसुग्रीवालिंग्यसुभरतं उचारिओ ॥ होतोहिसहाइतरामलंकपतिमारिओ ॥ ५४ ॥ चारभ्रातहमयाँजगमाँहिंवखानियें ॥ पंचमतूँसुग्रीवनभेद पछानियें ॥ रिपुहनकरीप्रणामसुबहुरोरामको ॥ होपुनःक रीसुप्रणामशेशसुखधामको ॥ ५५ ॥ पुनदोनोकरजोरसि याढिगजाइकै ॥ विनैयुक्तअभिवंदनकरीबनाइकै ॥ पूजित रामखडाँउँभरतलेआययो ॥ होरामपादमैजोरबहुतविगसा ययो ॥ ५६ ॥ रामअमानतराजआपकोमैदयो ॥ अबमे जन्ममनोरथसफलोसभभयो ॥ नैननिहार्योतुमेअयोध्या

आवते ॥ होदशगुणसेनाकोशकीयोतवभावते ॥ ५७॥ तेज
तुमारेरामसुमैप्रतिपारिआ॥ अवपालोनिजनगरसुदेशउदा
रिआ ॥ ऐसेंभरतकुमाररामप्रतिभानिआ ॥ होपेखकपी
श्वरसगलतबैविसमानिआ ॥ ५८ ॥ भरतवडाईकरेंजा
इजलनयनते ॥ भरतरामगललायोसुंदरमैनते ॥ ताँविमा
नकैयानतहाँसभआयया ॥ होआश्रमभरतपुनीतसुदूखग
वायया ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ताँविमानतेउतरकररा
ममहीतलआइ ॥ पुष्पकपरमविमानकोभापतरामसुनाइ
॥ ६० ॥ धनदसमीपंयाहित्वंहमरीआइसमान ॥ धनदवे
श्रवणनामजोत्वंताँआँहिंविमान ॥ ६१ ॥ ॥ अनंगशेख
रछंद ॥ गुरूवसिष्टकेपदारविंदरामचंद्रजीनिवाइशीशआ
पनोसुहेमआसनंदयो॥ वृहस्पतीपदारविंदकोसुरेशज्यौंनमे
सुरामचंद्रवीरताँहिंभाँतितिताँतवैनयो ॥ गुरूवसिष्टपेखरामचं
द्रकीसुरीतिकोप्रसन्नराघवेशकोविठाइपासतॉलयो॥गुलाव
सिंहरामकोविछोहदुःखजोहुनोनिहाररामचंद्रकोपलायआ
जसोगयो॥६२॥इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवा
देयुद्धकांडेचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ स
वैया ॥ कैकइनंदनजोरउभेकररागकिपाससुवातउचारी ॥
राजदियोहमकोरघुनायकआदरकैतुममातहमारी ॥ आज
दियोममराजवहीतुमलेहुरूपाकररामसुरारी ॥ यौंमुखभाप
भयोअतिनम्रसुराघवकेपदवंदनधारी ॥ १ ॥ शंकरछंद॥
वहुभाँतिविनतीताॅकरीलैमातनिजगुरुसंग॥ सुतयेतिराजसु

ताँलियोपिखभरतप्रीतिअभंग ॥ निजमाययाकेसंगमिलन रखेलपूरणधार ॥ निजराजअनुभवजाँहिंकोसुखज्ञानघनअवतार॥ २ ॥ सुनिरस्तअतिशयसुखसदापरमातमाश्रीराम॥ मानुष्यकोयहिराज्यसोजगदीशकेकिंहँकाम॥ भ्रूभंगकैक्षण एकमैत्रयलोकदेतखपाइ ॥ कृपादृष्टिनिमेखतेपुनलेतसभउपजाइ॥३॥ लीलाचहेउरमैकरीतवरचतसृष्टिमहान॥किंहोययाँ नरराजकरतिंहँरमापतिभगवान॥ जोजोभजेजिंहँभाँतिहरितिमकरेताँकेकाम॥नरदेहलीलाधारकैसभकरतहैश्रीराम॥४॥ शत्रुघ्ननिपुणसुनापतापुनलिएसर्वबुलाइ ॥ संभाररराघवतिलककेतवलिएसर्वमगाइ॥भरतपूर्वस्नानकरसुस्नातलक्ष्मणवीर॥सुग्रीवऔरविभीषणासुस्नातपहिरेचीर ॥५॥ सुविशुद्धजटाकलापकैसुस्नातभेश्रीराम॥वहुमदनमोहनसुंदरोजनकरत पूर्णकाम॥शुभधारचित्रितमालिकापुनलेपचंदनलाइ ॥ पुन धारवहुविधअंबराश्रीमंतसर्वसुहाइ॥६॥ प्रतिकर्मलक्ष्मण रामकोपुनभरतकरेंअनाइ ॥ जानकीकोभूपपत्नीकरेंपट पहिराइ ॥ सीमंतमणिपदनेवरनयुनसर्वमंडनधार ॥ पुनःसगलनवाइकैतँहँवानरनकीनारि ॥७॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामसुप्यारेजाँहिंकोअसकौसल्यामात ॥ पटभूपणकपिनारिनहिं दीनेअतिहितसाथ॥ ॥८॥ छपैछंद ॥ रिपुसूदनमतिमान सुस्यंदनआपमगाथो॥ सूरयकेसमशोभयुजोडसुमंतलियायो ॥ धर्मपरायणरामचंद्रशुभस्यंदनमाँहीं ॥ कोशपती युवराजहनुपूनसंगसुहाँहीं ॥ पुनराक्षसराजविभीपणाहेरथ

राजसवारभट ॥ कपिआगेपाछेरामकेवाहनपरमनचाँ हिंठट ॥ ९ ॥ दोहा ॥ ॥ कीशनारिसीतातवैबैठिपालकी जाँहिं ॥ नगरअयोध्यासुंदरेमहिमानहिंकविपाँहिं ॥ १० ॥ ॥ कवित ॥ ॥ हरेरंगघोरेगहिमातलिनेजोरेरथवैठसुरराज मानोदेवनसोंजालहै ॥ रामरथमाँहिंपुरिपथिमैचलाँहिंरथभई छवभारीपुरितैसेहीसुहातहै॥ सारथिभरतऔप्रवालुदंडहाथलै सुछत्रशीशमाँहिंरिपुसूदनझुलालहै॥ व्यजनउदारेशुभलक्ष्मै णधारेकरचामरकपीशअसुरेशजूफिरातहै ॥ ११ ॥ सवैया ॥ सिद्धसँमूहसभैसुरमंडलऔरऋषीश्वरजेमुनिज्ञानी ॥ गाव तराघवकेयशकोमधुराध्वनिहोवततँाहिंमहानी ॥ नागतुरं गमऔरथमैकपिजाँहिंचढेनररूपभवानी॥ भेरिमृदंगसुशंख नकीपणवानककीध्वनिभूरसुहानी ॥ १२ ॥ इहभाँतिगएरघुनं दनजीपुनऔधपुरीसुअलंकृतसारी॥ सभसौधनमैचढदेखतहैं पुरवासिजनागिरिजानरनारी ॥ नवदूरवश्यामसुकीटलसेत नमंडितभूपणराममुरारी ॥ अरुणायतलोचनरामपिखेंअति मोदबढेसभचीतमझारी ॥ १३ ॥ रतनागणकेसुजराउजरे कटिसूत्रसुजाँकटिमाँहिंविराजे ॥ अतिपीनभुजानरपीतपटल सकैपिखजाँघनदामनिलाजे ॥ उरहारमहामुकताफलकेपिख रामप्रजासभहीदुखभाजे ॥ शुभग्रीवमुखाअतिशांतवडेकपि सेवतरामरवीअतिछाजे ॥ १४ ॥ सुरव्रक्षनफूलनकीतनमा लसुचंदनऔकस्तूरिलगाए ॥ इहभाँतिसुनेरविरामअयेमुख नारिजनारिनकेविगसाए ॥ धरमंढनसौधनशीशचढीपरके

सभकारयदूरभुलाए ॥ मुसकावतिरामनिहारतिहैंशिरफूलन क्रीवरपावरपाए ॥ १५ ॥ मननैनरसायणराघवकोद्रिग पानकरेंइहभाँतिनिहारें ॥ मनकैसभरामकिअंगमिलीअति आनंदमूरतिचित्तचितारें ॥ करुणाद्रिगरामनिहारप्रजासुवि छोहनकेदुखदूरनिवारें ॥ सुउमाब्रह्मंडअनंतनकोमम ना थमनोअवफेरसंभारे ॥ १६ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ इंद्रभौनके समानभौनजोमहानपितुशोभितअपारतहाँगएरघुनंदना ॥ करेहैंप्रवेशसभलोकनकलेशहरेमातनकेपादकरजोरकरीवंद ना ॥ जेईपितुनारिसभवंदितसंभारकरीकेतुरघुवंशकेसुकरे दुखकंदना ॥ फेररघुनाथसुभरतकोबुलाइकहीमेरोघरमारो अवलीपोलाइचंदना ॥१७॥संपदाअपारवरमंदिरउदारअति मीतशुभग्रीवकोसुतहाँहीवसावना ॥ सभसुखवासहितमंदिर निवासदिजेकरोअववेगकछुकालनहींलावना ॥ रामज्यों वखानीसोईकरकेभवानीपुनभरतकपेशकह्योसुनोमनभाव ना ॥ रामअभिपेककाजसुनोकपिराजअवचारोहीसमुद्रको सुनीरअहेल्यावना ॥ १८ ॥ दूतजेईवेगधारीकरकैविचारअव पठियेकपेशकाजतेरभुजआएहैं ॥ जांववंतहनुमानअंगदसुपे णजानयहीवलवंतकपिरायनेपठाएहैं ॥ हेमघटलयेपुनवायुवे गगयेजलसागरकेपूरदूततूरणलिआएहैं ॥ तीर्थननीरजवआ नेकपिधीरपिखशत्रुहनवीरसभमंत्रिनबुलाएहैं ॥ १९ ॥ राम अभिषेकअवकीजियेविशेपद्विजजोरेदाऊहाथसुवसिष्टको सुनाएहैं ॥ महामुनिराईद्विजलियेहैंबुलाईसभरतनसिंहासन

सुरामसीविठाऐहैं॥ गुरुवामदेवपुनगोतमजवालिवालमीक रामभालराजतिलकचढाऐहैं ॥ तुलसीसुगंधवारिदाभनकी धारवसुवासवकीन्याँईशुभराघवसिंचाऐहैं ॥ २० ॥ ऋत्वग उदारशुभब्राह्मणहजारवहुकंन्यकाअपारसभमंत्रीशुभछाए हैं ॥ औपधीमिलाएभालतिलकचढाएसभआएनभदेवताविमाननसुहाऐहैं॥ चारोलोकपालगुनगावतविशालपुनआइन भवीचसुरदुंदुभीवजाऐहैं॥ भरतकुमारउरप्रेमद्रिगवारिजाइ रामपादकंजहितनीरभरल्याऐहैं ॥ २१ ॥ प्रेमनैनवारिमिले जाँहिकेमझारपुनभरतकुमाररामपादयोंपखारिओ॥ मरदन चैलसोंवनाइकरेपादकंजफरउरमाँहिपदभरतसुधारिआ॥ चंद्रकेसमानजोंइछत्रहैमहानपुनप्रेमकैअधीनशत्रुहनसोउभारिआ॥ कपिनकेराईऔविभीपणसुआईतहाँस्वेतयुगचामर सुहायनउलारिआ॥ २२॥ कांचनकीमालवायुदईहैविशालशुभवासवकेप्रेरेगलरहीछवपायकै॥ रतनअपारमणिजरीजाँमझारहाररामनरनाहकोसुरेशदियोआयकै ॥ दुंदुभीवजाइसु अपछराँनचाइशुभगंधवसुनाँहिरामचंद्रयशगायकै॥ फूलन वसाइवलिहारजाँऐहेरछवकहाँलौवखानेंकविरहेविसमाइ कै॥ २३॥ **सवैया**॥ नवदूरवकेसमश्यामतनूपदमायतलोचन हैंविगसाए॥ रविकोटिप्रभाशिरक्रीटलसेशुभकोटिमनोजला वण्यसुहाए॥ विजुलीसमपीतदुकूललसेछविमंडनकीकवि कौनवताए ॥ मुखशारदचंद्रसुहाइघनोतनऊपरिचंदनलेप लगाए॥ २४॥ आयतसूरसमानविराजितरामउभेभुजहैंसुख

दाई॥ कांचनकीजनुदेहवनीढिगवामसियाइहभाँतिसुहाई ॥ भूपणहैंतनमाँहिंधरेकरपल्लवलालसरोजसमाई ॥ अंगसुवामविराजतसीतिहँनाँहिंप्रभावरणीमुखजाई ॥ २५॥ ॥ दोहा ॥रामसियापिखआययोगिरिजासहितमहेश ॥ सर्वदेवगणयुक्तशिवसुस्तुतिकरतविशेप ॥ २६॥ ॥ सवैया ॥ सीयसमेतसुरामतुमेअभिवंदनआहिसुनीतहमारी॥ नीलसरोजसुश्यामतनूनवनीतहुँकोमलदेहतुमारी ॥ क्रीटसुअंगदहारलसेसुनृपासनमाँहिंप्रभाविसतारी ॥ लोकनेककरताहरतोकछुआदिसुअंतनआहितिहारी ॥ २७॥ ॥ शंकरछंद ॥ निजमाययाकररचेंसभकोलेपनातवहोइ ॥ प्रभुरमेंत्वं निजसूखमैंतेदोपनाँहींकोइ ॥ गुणसंगलीलारचेंत्वंबहुभाँतिकरुणाशील॥ निजशरणआएभक्तजेतिनहेतसुंदरडील॥२८॥सुरऔरमानुपआदिलेतुमलियेबहुअवतार॥मूढतोकोंनापिखेंज्ञानीसुलेंहिंनिहार॥निजअंशकरसभलोककोतुमकीनरचविस्थार॥ धरशेशरूपसुरामत्वंपुनभयोलोकअधार॥२९॥सभऔपधीकेपुष्टहितरविवायुद्दष्टिनिशेश॥ यहिधाररूपसुपालकरप्रभुहरेंजगतकलेश ॥ तनुधारियोंकेदेहमैंत्वंजठिरअग्निस्वरूप॥ प्रभुभुक्तपीतसुअन्नजलकोपाककरंहिंअनूप॥३०॥करिप्राणपंचकआपनेसहकारिकरेंविशाल ॥ इहभाँतिराघवजगतकीत्वंकरेंनितप्रतिपाल॥ जोचंद्रसूर्यसुवह्निमेंसभतजनेरोआहि॥ सभदेहधारीमाँहिंचेतननेविनाकछुनाहि ॥३१॥ धृतिशूरनातनुधारियोंकीआयुसगलीजोइ॥ इहसत्वतेंरतभईइम

भाषतीश्रुतिसोइ ॥ त्वंविष्णुशिवकमलासनोशशिसूरकर्मसु काल॥ इहभेदवादीपेखहैंइकत्यागब्रह्मविशाल ॥ ३२ ॥ मत्स्यादिरूपअनेकत्वंजगलेंहिरामसुधार॥ सभलोकऔरपुराणसगलेवेदकरतउचार ॥ तिमसर्वसत्यअसत्यत्वंतुमतेविना कछुनाँहिं॥ जोभयेजोपुनहोइगोजोदेखियेजगमाँहिं॥३३॥ ॥ दोहा ॥ प्रकृतीपरेवखानियेपरतेपरत्वेआँहिं॥ स्थावरजंगममाँहिंप्रभुतोविनपेखियेनाँहिं ॥ ३४ ॥ गयामालतीछंद॥ तवमाययाजनमोहिआनहिंतत्वतेरोजानई ॥ तवभक्तसेवसुअमलमनपरमीशतोहिपछानई ॥ श्रीरामतेंचितरूपको ब्रह्मादिनाँहिपछानेंहें ॥ बहुअर्थमैंमनलागिआजगरचनमैगलनानेंहें ॥ ३५ ॥ मतिमानजेवडभागजनवहुभजेंतेमन लाइकै॥ वहुमुक्तयाँजगहोइहैंसभदुःखपुंजमिटाइकै ॥ मिल उमाकेसहमाँहिंकाशीवासमैनितधारहों॥भलवैठगंगातीरमै तवरामनामउचारहों॥३६॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मरणकालजनकानमैंदवोंमंत्रविशाल ॥ रामतुमारोनामकहिमुक्तकरों ततकाल॥ ३७॥ ॥ सवैया ॥ ॥ स्तोत्रसुयाँहिंसुनेंनरजे पुनहोइअनंन्यभलेमनगावें ॥ जेजनयाँहिंलिखेंमनसोंपुनते जनसूखसँपूर्णपावें ॥ वंधतजेंभवमंडलकेपुनतोहिप्रसादसु तेपदपावें ॥ पूरणतेसुखसिंधुविषेजनन्हातनहींभवसागरआ वें॥३८॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ कमलासन केवरदेवनकेसुखराक्षसराजसभेहरिलीने ॥ ममसूखहरेदशकंठवलीवलिदेवकरेसभपाइअधीने ॥ सुरकोअरिरावणवी

रवलीतुमसायकमारकर्यौरणक्षीने॥पुनतोहिप्रसादामेटदुख पुंजसुरामतुमेसुखदेवनदीने॥३९॥देवाऊचु॥भुजंगप्रयातछंद॥ ॥ हरेयज्ञभागाधरादेवदीए॥सुलंकेशविष्णोमहातापकीए ॥ इदानींतुमेनाथलंकेशमारे ॥ लहेयागभागाक पापादथारे॥४०॥ ॥पितरऊचुः॥ ॥ हन्योदुष्टदैतंतुमेलैकमानं ॥ गयामाँहिदीयेनरैःपिंडदानं ॥ वलंवाहुभारीसभैदेवताए ॥ सभीखोसखाएइदानींसुपाए॥४१॥ यक्षाऊचुः॥ सुलंकेशदुष्टेगृहीताविगारे॥फिरैंताँउठाईसेहेदुःखभारे ॥तुमेलंकजीतीसुलंकेशघाए॥ वयंदुःखपाशीपरेतेछडाए ॥४२॥गंधर्वाऊचुः॥अडिल॥तेरीकथारसान्तपूर्वसुगावते॥हमसंगीतकनिपुणानंदसुपावते॥पुनःपडेवेगारदुरातमरावणे ॥ होरावणकेवशिभएलगेतिंहँगावणे॥४३॥ निशिदिनपकडगवावैसभामँझारिआ॥तुमअबहरेकलेशसुरावणमारिआ ॥ सिद्धमहोरगआयरामयसगायथो ॥ होकिंनरमारुतआयसुतथाअलायथो॥४४॥ वसुमुनिगावागुत्यकऔरविहंगमा ॥ प्रजापतीसभआएअपसरसंगमा॥ व्योमविमाननआयसुरामनिहारहीं॥ होभिंन्नभिंन्नयशसर्वसुरामउचारहीं॥४५॥ रामदियोअभिनंदनसर्वपधारिआ॥ शिवब्रह्मादिकगएसुभौनमझारिआ ॥ जावतपंथनमाँहिरामयशगायेंहें॥ होराजतिलकसियलक्ष्मणसहतसुध्यायेंहें ॥ ॥४६॥ ॥दोहा॥ ॥ पिखराजेंद्रसुरामकोसिंहासनकेमाँहिं॥ देवगएनिजलोकमैध्यावततांउरमाँहिं॥ ॥४७॥ क

वित ॥ देवविगसाँवेंनभवाजनेवजावेंमुखरामयशगाँवेंवहु फूलकोवसाइहैं ॥ मुनिजेमहाँनरामयशकोवखाँनकरेंरामघ नश्यामसुखकंजमुसकाइहैं ॥ तेजहैमहानसूरकोटिकेसमान ढिगसीयहनुमानवहुभाँतिसुखदाइहैं॥ लक्षमणमुनिगणवा नरअनेकगणसेवेंपादकंजरामचंद्रयोंसुहाइहैं ॥ ४८॥ ॥ क विरुवाच॥ ॥तोटकछंद ॥ तजक्षीरसुसागरभूमिअए॥ रघुवंशविषेअजरामजए॥ जिनकेपदकंजमहेशभजे॥न्दुसे जनिरंतरशेषसजे॥४९॥ जयतारणरामरमारमणं॥ भवताप दवानलकोशमनं ॥ धृतसायकचापनिखंगवरं ॥ शुभशंखग दांबुजचक्रवरं॥५०॥अलिकाश्रुतिऊपरश्याममहा॥ हरहारस रोवरआहिकहा ॥ अधरोअरुणासमविंबफला ॥ रदपांतिह रीछवकुंदकला ॥ ५१ ॥ मकराकृतकुंडलकानविखे ॥ सुर मोहरहेंजिहँओरपिखे ॥ मुखशारदचंद्रविशालभले ॥ भुज अंगदऔकरमाँहिवले ॥ ५२॥ करसागरसेतुसुलंकजिनी॥ शरतीक्षणकैअरिसैन्यहनी॥ खलरावणकेदशशीशकटे॥शुभ भक्तविभीषणठाटठटे ॥५३॥ भ्रिकुटीकुटिलाद्रिगकंजखिरे॥ गजमोतिनकेवहुहारगरे ॥ कचघुंघरवंतकपोललटे ॥ मु खकंजमनोदलभ्रिगटुटे॥५४॥अवनीदुहितापतिनाथहरे॥सु रराजनकेदुखदूरकरे॥ तवकीरतिगंगउदारमहाँ॥ कृतमज्जन कोदुखआहिकहाँ ॥ ५५ ॥ पदआइविभीषणसामलई ॥ हनरावणनाथसुलंकदई ॥ शुभवीरदयालुउदारमहाँ ॥ रघु नाथघरोवरआँहिकहाँ॥ ५६ ॥ म्रगराजसुअंतगुलावकहे॥

पठतोटकछंदहिंदोषदहे ॥ हरिरूपमहाँइनमाँहिंकहे॥ नरनारि पढेफलचारिलहे ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमाम हेश्वरसंवादेयुद्धकांडेपंचदशोऽध्यायः॥ १५॥ श्रीमहादेवउ वाच॥ ॥सवैया॥ तबराजभएरघुनंदनकेहरिहैंसभलोकन केहितकारे॥ वसुधासभसस्यसपंनभईफलवंतभएसुमहीरुह सारे॥ निरगंधसुफूलहुतेजगजेपुनगंधभईतिनमाँहिंउदारे ॥ कचकंचुकमैतवबंधभएपुनदंडयतीकरभीतरधारे ॥ १ ॥ ॥कवित ॥ ॥ मारयहिशवदनिशाननमँझारगएबडेउतसा हसुअचौरतामैंआएहैं ॥ वैरगजसिंहऔहुताशनप्रसिद्धज लऔरडरनाँहिंजनपापतेडराएहैं ॥ रामराजपाटभएलोग नकेदूखगएधनमैनलोभगुणपुण्यमैलुभाएहैं ॥ नाशतम भोरचक्रवाककोबिछोरानिशिजाँहिंनविदेशजनसूखसोंमि लायेहैं ॥ २ ॥ विप्रनकोलाखरामदियेहैंतुरंगवडलाखधेनु दईगऊलाखपहिचानिये ॥ एकशतवृषभसुतीशकोटिसुइ नादियोग्रामपटभूषणसुरतनपछानिये ॥ दीपतमहानसूरते जकेसमानजिहँरतनसुमालकरलईहैमहानिये॥ शुभग्रीवग लेडारीभयेप्रीतसोमुरारीलियोगरेमाँहिंलायदियोसनमानिये ॥ ३ ॥ अंगदकोअंगदअनूपरघुनंददियोफेरएकहाररघुना थहाथलियोहै ॥ चंद्रकोणकेसमानमणीजाँमहानलगीहोइ केप्रसंनरामजानकीकोदियोहै ॥ कंठतेनिकारहारजानकीनि हारकपिरामओरवारवारपिखेतनुपीयोहै ॥ राममतिमानताँ हिंजीयकीपछानकह्योदेहिसीयहारजाँपैखुशीतेरोहीयोहै ॥

॥ ४ ॥ रामकेनिहारतहीदियोहनुमानहारहारगलडारहनुमा
नसुसुहायोहै ॥ जोरदोऊहाथरघुनाथकेसमीपठाढोपेखरा
मचंद्रहनुमानकोअलायोहै ॥ भक्तितेमहानहनुमानमैप्रसंन
भयोमाँगोवरर्नाकेजोईमनमैसुभायोहै ॥ तीनभौनमाँहिंजो
ईदेवतानपावेंवरदेउँहनुमानममअैसेमनआयोहै ॥ ५ ॥
॥ सुनहरपाइशिरन्यायरामचंद्रकोसुबोलेहनुमानरघुवीरमैं
उचारहों ॥ सिम्रतसुतेरोनाममननअघाइमेरोवसोधरमाँ
हिंनामतेरोहीचितारहों ॥ जौलौतेरोनामजगमाँहिंसुखधा
मरहेतौलौरामचंद्रसुकलेवरकोधारहों ॥ राजनकेराईरघु
वीरसुखदाईमोकोंयहीवरदीजेमनयहीमैनिहारहों ॥ ६ ॥
रामतथाकह्योवंधतेरोहानभयोनित्यसुखहींसोंरहोयाँहिंजग
तमँझारिये ॥ कलपकेअंतकपिसंतमेरेरूपमिलपावेंगोसायु
ज्यनसंदेहकछुधारिये ॥ तवतोभवानीताँहिंजानकीवखानी
जहाँवसोहनुमानवनगिरितटवारिये ॥ भोगजेअपारीसभ
जाँहिढिगथारीजगसुखसोंसुरहोसदाआइसहमारिये ॥ ७ ॥
अैसेरामसीयतिहँभाखिओभवानीजवईश्वरस्वरूपतिनपेख
हरपायोहै ॥ करीपदवंदनासप्रेमकपिवारवारआनंदकोनीर
तिहँनैनमाँहिंआयोहै ॥ महामतीहनूमानधीरजमहानधरत
पकेनिमित्तहिमवंतकोसिधायोहै ॥ जोरदोऊहाथरघुनाथ
केसमीपखरेरामचंद्रपेखतवगुहकोअलायोहै ॥ ८ ॥ सखे
तुमजाइनिजपुरसुखपाइपुनहमकोचितारोघरमाँहिंमनला
यके ॥ भोगोसुखपायनिजसंचितसुध्यायमोहिअंतमेरेरूप

माँहिमिलोगेसुआयकै ॥ औसेतुवखाँनोतिहँअंबरमहाँनदिये भूषणअपाररामदियेविकसायकै ॥ रामगललायोपुनघरको सिधायोगुहदियोहरिज्ञानराजदियाँहैवढायकै ॥ ९ ॥ और जेईवानरअयोध्याशिरदारआएरामपटभूषणसंवृंहपहिराए हैं ॥ शुभग्रीवविभीपणमँत्रिनसमेतसभरामपरमातमाखुपूजकेमनाएहैं ॥ गयेसभदेशसभचीतकेकलेशहरेरामसनमानपेखमनविगसाएहैं ॥ किपकिंधानामसुखधामहैअपारवडोकपिनसमेतशुभग्रीवताँवसाएहैं ॥ १० ॥ राक्षसप्रवीनराजपाय अरिहीनरामपूज्योसुविशेपजाइलंकमैवसायोहै॥ रामजगप्यारेराजकरतउदारेराजचहेनाँहिंलक्ष्मणसोईतावुलायोहै ॥ युवराजटीकोतिहँभालमैसुदीनोनीकोलक्ष्मणमनरामसेवामैलगायोहै ॥ रामपरमातमासुकारयअनेककरे निरमलचीतनाँहिंरंचकलिपायोहै ॥ ११ ॥ कर्तृत्वविहीनरामरंचकविकारनाँहिंआपनेआनंदरामसदाविकसाइहैं ॥ करे अश्वमेधयज्ञदक्षणाअपारदीनीरामनरदेहधरलोकनसिखाइहैं ॥ रामराजभयोसभदूखमिटगयोनाँहिंविछूआसुव्यालनेतलोकदुखपाइहैं ॥ व्याधिनकोनाँहींडरभयोजवरामराज चोरनकोनाँहिंडरपापनकमाइहैं ॥ १२ ॥ वृढनकेजीवतन वालजगमाँहिंमरेंराघवकीपूजासभरामयशगाइहैं ॥ जैसे रुचिहोइपुनजाँहींक्षणजहाँजगआयतवमेघतहाँतैसेहीवसाइहैं ॥ वरणसुआश्रमकेगुननसमेतभयेप्रजासभरामकीसुधरमकमाइहैं ॥ औरसनपूतनसमानभगवानपितुप्रजाप्रति

पालकरैंबडेयशपाइहैं ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धर्मपराय णरामजीशुभलक्षणतनधार ॥ दशसहँस्रसंवत्सरनकीनोरा जमुरारि ॥ १४ ॥ ॥ कवित ॥ ॥ इदंअतिगोप्यधनधान्यकी सम्रद्धिकरैंदीरघअरोगआयुपुण्यउपजायहै॥पुण्यसुअध्यात्म पुराणशुभनामयाँहिंऔरनकीकहाँमुखआदिशिवगायहै ॥रा मभक्तिसहितजुसुनेमनलाइनरपढ़ैपुनयाँहिंमनमाँहिंविकसा यहै ॥ कोटिवहुपातकमिटायतिंहँताँहींक्षणवाँछितअपारफ ललोकमैसुपायहै ॥ १५ ॥ धनअभिलाषीजगमाँहिंधनघनो लहेरामराजतिलकजुसुनेमनुलायकै ॥ सुतअभिलाषीसुत आरयसुपायजगसुनेजुरामायणकोआदितेलगायकै ॥ भूप तिजुसुनेकरजोरकैरामायणकोसंपदासुपायअरिपुंजरणघा यकै॥वैरीनाँहिंजीतेंताँहिंउरमैडराँहिंसभदूखमिटजाँहिंजीतव सेभुजआयकै॥१६॥सुनेजेईनारिमनलायकैरामायणकोजी वतसुहायसुतपूजितासुहायहै॥वंध्यासाजासुनेमनलायकैरा मायणकोकहाँसतभायसुतसुंदरसुजायहै॥श्रद्धाकेसमेतजो ईसुनतरामायणकोमतसरडारउरकोपनवसायहै ॥राघवकी भक्तिसुउदारचित्तधारजनपायसुखभारसभदूखकोमिटायहै ॥१७॥सुनतरामायणसुदेवताप्रसन्नसभविद्यासुसमस्ततिंहँव सेमनआयकै॥संपदासमस्तहींसुवसेघरआयतिंहँसुनतरामा यणजोंआदितेलगायकै॥रजस्वलानारिसुनेपूर्णरामायणको वैठकैएकाग्रचित्तराममनलायकै॥जीवेंचिरजोईसुतउत्तमसु पावेसोईआपतेपतिव्रतासुरहेयशछायकै॥१८॥ भक्तिकेस

मेतजेईपूजलरामायणकोनीतमनलायभलेवंदनासुधारेहैं ॥ पदजोपुरातनहैविष्णुजूसनातनकोपावेंजनतेईपापपुंजको निवारेहैं॥ अध्यातमरामायणसुनतसमस्तजनहोयवाएकाग रसुमनमैविचारेहैं ॥ रामसुखधामतिनपूर्णसुकामकरेंहोंहिंगे प्रसंनरामवडेहीउदारेहैं ॥ १९ ॥ रामहीपरातमासुब्रह्मजवतुष्ट भएवेदऔमुनीशअखिलातमावतायेहैं ॥ धरमपदारथसुका ममोक्षजोईजोईचाहितजुलोकफलसोईसोईपायेहैं ॥ सुनत रामायणकोनेमधारजेईजनपूरणअखंडनाँहिंखंडकछुपायेहैं ॥वाजपेय्यसोमऔतुरंगमेधयागनकोपायफलनीकेनायपाप कोमिटायेहैं ॥ २० ॥ कल्पकोटिअघकोविनाशक्षणमाँहिंकरे आयुपअरोगसभेदवविकसाइहैं ॥ खेटऔऋपीशतोपमा नहोंहिंसुनतहीपितरप्रसंनहोंहिंवडेसुखपाइहैं ॥ यहिजोअ ध्यातमरामायणवैरागज्ञानआयनपुरातनपुराणऋपिगाय हैं ॥ पठन्तिशृण्वन्तिजेलिखन्तियाँहिमालजातेमेटअघभारी भवफेरनाँहिंआयहैं ॥ २१ ॥ ॥**सवैया**॥, ॥ श्रुतिपुंजम हेशमथेवहुवारसुतारकब्रक्षरहस्यनिकारे॥ जगतारकब्रह्मसु रामअहैइहभूतपतीमनमाँहिंविचारे ॥ यहिराघवतत्वसुगूढम हासभवेदनकोशिवसारनिहारे ॥ ऋपिमंडलजूउरमाँहिंधरो यहिपारवतीप्रतिशंभुउचारे ॥ २२॥ **अनंगशेखरछंद**॥ मि लायकोटिकीशजाँपटायनीरासिंधुकोलरायवीरधीरजाँहिंकी नमासघानियाँ ॥ सुलंकराजशीशकाटराजदाशथाथिओवि मानमोविठायजाँहिजानकीसुआनियाँ॥सुदेवदुंदुभीवजाँहिं

गाँहिपासकिंनरालियोसुजाँहिंराजफेरतातराजधानियाँ ॥ सुताँहिंरामचंद्रकीसुयुद्धकांडकीकथागुलाबसिंहदासयाँहिं भाँतिहैवखानियाँ ॥ २३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकांडेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ ९ ॥

॥ इती युद्धकांडसमाप्तः ॥

श्री
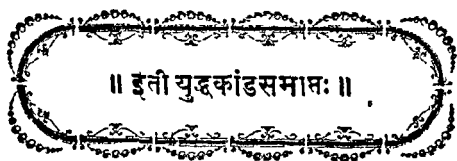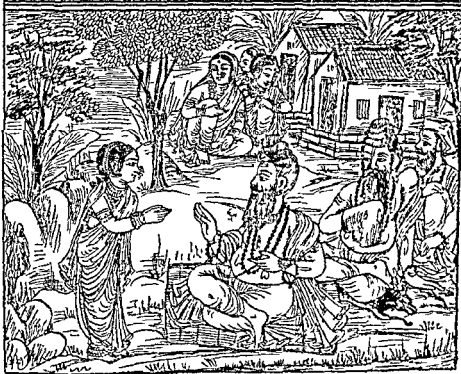
श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

अथ उत्तरकांड प्रारंभः

॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ मानवदेहमनोहरलैजिहँराजकरेमुनिके दुखटारे ॥ शेषसुरेशमहेशभजेचतुराननजाँपदकंजजुहारे ॥ कीटपतंगविहंगमऔगृहगोधिकसेसगलेजिनतारे ॥ ताँपर मातमराघवकोकरजोरदोऊअभिवंदहमारे॥ १ ॥ ॥ **दोहा** रघुकुलतिलकजयतिरामकौसल्याह्रदिनंद ॥ दशमुखनाश कर्कंजदृगदाशरथीसुखकंद ॥ २ ॥ ॥ **पारबत्युवाच** ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ मातानंदवधावनहारे ॥ दाशरथीश्री राममुरारे ॥ रावणलौराक्षसबलधारी ॥ हनेरामरणभू मिमझारी ॥ ३ ॥ वैठराजसिंहासनरामा ॥ औधपुरीजन केसुखधामा ॥ मायामानवदेहबनायो ॥ कितिकवर्षभूमाँ हिंरहायो॥ ४ ॥ वेपरमातमलीलाधारी ॥ मानवदेहकथंपुन डारी ॥ श्रवणचाहिमेउरहर्षानो ॥ रामकथातुमबहुरवखा नो ॥ ५ ॥ रामकथाअंमृतकोपाई ॥ त्रिष्णाभईसुमेअधि काई ॥ भगवनमोहिअनुग्रहधारे ॥ कहोरामकीकथाविथारे ॥ ६ ॥ ॥श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ राक्षसमारसुसंगरमाँ

हीं ॥ बैठेरामसिंहासनमाँहीं ॥ सीयरामअभिनंदनकामा ॥ वनवासीमुनिआयेधामा ॥७॥ विश्वामित्रअसितमुनिराऊ ॥ कण्वऋपीतपतेजप्रभाऊ ॥ रविसीद्युतिदुर्वासाआए ॥ भृगूअंगिराउभयसुहाए ॥ ८ कश्यपवामदेवमुनिज्ञानी ॥ अत्रीआएऋपीमहानी॥ सप्तऋपीश्वरअमलसुहाए ॥ शिप्यनसहितअगस्त्यसुआए ॥ ९ ॥ ॥सवैया॥ ॥द्वारहिमैंमुनिजायखरेपुनद्वारपकोयहिवाक्यअलाए ॥ राममहीपसमीपकहोसुखरेमुनिमंडलवाहिरआए॥ आदिअगस्त्यसुदेहिंअशीशकरेंअभिनंदनआइसपाए॥ द्वारपजाइसुराघवकीढिगपारवतीवहुवाक्यसुनाए॥ १०॥ छपैछंद ॥ मुनिमण्डललेसंगअगस्त्यमुनीश्वरआए॥ पावकसेतनतेजदिशातमदूरमिटाए ॥ तवदेखनकीचाहिवडीतिनकेउरमाँहीं॥ धीरवडेमतिमानखडेऋपिद्वारेमाँहीं ॥ सुनद्वारपालकेवाक्ययहिरामवखानेआपमुख ॥ अयरलभवनमहिंपूजकरमुनिगनल्यावहुयथासुख ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ राममुनिनकोपेख्योजवही ॥ शीघ्रहिंउठेजोरकरतवही ॥ अर्घ्यादिकपूजाविधिकरी ॥ मीठीवाणीमुखउच्चरी ॥ १२॥ वहुररामअभिवंदितकीने॥ यथायोग्यसभआसनदीने॥ वैठेमुनिगनतहँहर्षाइ ॥ पूजेरामरमापतिराइ॥ १३॥ पूछ्योरामअनामयतिनहीं ॥ कुशलकह्योमुनिगणसभविनहीं ॥ महावाहुरघनंदनथारे॥ कुशलकुशलगृहदेशमझारे ॥ ॥ १४ ॥ भलोभयोअरिगणसभमारे ॥ सिंहासनमैंरामनिहारे ॥ रावणराक्षसकोजोराजा ॥ ताँकोवधनाहिंकठिन

सुकाजा ॥ १५॥ त्वंकरमैलेधनुषमुरारी ॥ जितोत्रिलोकीक्षण मैसारी ॥ भलोभयोसभराक्षसमारे ॥ रावणलौजेहुतेविका रे ॥ १६ ॥ महाबाहुहरिरावणजोई ॥ ताँवधसहिजकठनन हिंकोई ॥ मेघनादकोवधथोजोई ॥ हुतोकठिनपरहोयोसोई ॥ १७ ॥ कुंभकरणलौखलबलवान ॥ शूरबडेवहुकालसमा न॥ अंतकप्रतिमवाणतुममारे ॥ हनेसगलरणभूमिमझारे ॥ ॥ १८॥ हमकोअभयदक्षणादीनी॥ पूर्वसरामसपूर्णकीनी॥ अरिसंवूहसगलतुममारा॥ कृत्यकृत्यअवजीवनथारा॥१९॥ अैसैमुनिगणजवैवखान्यो॥ सुनकरउमारामविसमान्यो॥वि स्मयमानजोरद्वेहाथा॥बोलतभयेवहुररघुनाथा॥२०॥रावण कुंभकर्णलौजेते ॥ जिनेंत्रिलोकीक्षणमैतेते ॥ तिनकोंकिंअ तिलंघनकरहो ॥ इंद्रजीतयशकिंविस्तरहो ॥ २१ ॥ याँविधि सुनरघुवरकीवानी ॥ बोलेकुंभयोनिऋपिज्ञानी ॥ प्रीतिस हिततिनवचनउचारे ॥ सुनराजनअवकहोंमुरारे ॥ २२ ॥ मे घनादरावणवृत्तांत ॥ भाखोंसगलसुनोएकांत ॥ जन्मकर्मजे सेवरदान ॥ सभसंक्षेपतिकरोंवखान ॥ २३॥ प्रथमेसतयुगमै श्रीराम॥ भयोपुलस्त्यपुत्रअजधाम॥ मेरुसमीपगयोमतिमा न ॥ तपकेकाजपुलस्त्यमहान ॥ २४ ॥ सोत्रिणविंदुकिआश्रम माँहीं॥ मुनिनिवस्योसुखसोंवनमाँहीं॥ महातेजतपसाअति धारी॥ जलअहारमुखवेदउचारी॥ २५ ॥ सुरगंधर्वकंन्यका जेती ॥ ताँवनमाँहिंसुआँवेंतेती ॥ नाचेंहसेंऊचस्वरगावें ॥ केलकरेंवहुवाद्यवजावें ॥ २६ ॥ ऋपीपुलस्त्यकरेतपजोई॥

ताँमेंकरेंविघ्नअतिसोई ॥ भयोक्रोधउरऋपिकेभारा ॥ निन मुखतेयहिवाक्यउचारा ॥ २७ ॥ मेरीदृष्टिविषयजोहोई ॥ धारे गर्भकन्यकासोई ॥ यहिमुनशापभईभयमान ॥ आवहिंन हिंपुनतिहँअस्थान ॥ २८ ॥ दोहा ॥ राजऋपीतृणविंदुकी कंन्यासुन्योनसोइ ॥ मुनिआगेविचरतिभईखेलतिनिर्भयहोइ ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ पांडुरवरणसुतनकोभयो ॥ भईविरूप गर्भनिर्मयो ॥ देहविवरणपिख्योतिनजवही ॥ गईपितादिगह रीसुतवही ॥ ३० ॥ निजकन्यातृणविंदुनिहारी ॥ राजऋपीतप जाँहिअपारी ॥ ज्ञानचक्षुतिनधार्योध्यान ॥ मुनिकृतसकल सुताँहिंपछान ॥ ३१ ॥ वहुरपिताकंन्यासंगलीनी ॥ विधिव तजाइपुलस्त्यहिदीनी ॥ कंन्याकोमुनिकरगहिलीनो ॥ अंगी कारउचारणकीनो ॥ ३२ ॥ प्रीतभयोपिखटहिलपरायण ॥ वोल्योमुनिकरुणाकोआयन ॥ दोनोवंशवधावेजोई ॥ देउँ पूतइकताकोसोई ॥ ३३ ॥ तवकंन्याइकपुत्रसुपायो ॥ दियो पुलस्त्यमहासुखदायो ॥ ताँहिंविश्रवाराख्योनाम ॥ ब्रह्मज्ञानी तपकोधाम ॥ ३४ ॥ तवताँशीलधर्मकोपेख ॥ भरद्वाजमु निजानविशेप ॥ भरद्वाजनिजकंन्यादीनी ॥ आदरसहितवि श्रवालीनी ॥ ३५ ॥ ताँमेंतिनइकसुतउपजायो ॥ पौलस्त्यजलो कनमेंगायो ॥ पितातुल्यवैश्रवणसुभयो ॥ ब्रह्मातिहँअनुमो दनदयो ॥ ३६ ॥ वहुतवर्पताँनेतपकीनो ॥ व्हैप्रसन्नब्रह्माव रदीनो ॥ धनाध्यक्षताँकोविधिकीयो ॥ पुष्पकयानमहा वेरदीयो ॥ ३७ ॥ याँविधिवरकुवेरजवपायो ॥ पितानिहारण

केहितआयो ॥ ब्रह्मादियोविमानसुजोई ॥ ताँमैचढआयो हैसोई ॥ ३८ ॥ आयपितापदमैशिरधार्यो ॥ तपकोफलपायोसुउचार्यो ॥ पिताविधातावरमुहिदयो ॥ वासस्थाननताँनेकह्यो ॥ ३९ ॥ आपरूपाकरभाषोसोई ॥ जहाँनहिंसाकाँकीहोई ॥ पिताबहुरतिहँभाषयोराम ॥ पुरीआहिइकलंकानाम ॥ ४० ॥ दैत्यनकेवहुवासनिमित्ता ॥ विश्वकर्मणारचीसुचित्त॥नारायणडरलंकात्यागी॥दैत्यगएसुरसातलभागी॥ ॥ ४१ ॥ परदुर्धर्षपुरीवहुआहि ॥ सागरमध्यवैरिडरनाँहिं ॥ तहाँवासतुमनीकेकरो ॥ औरनसाधेमतउरडरो ॥ ४२ ॥ ऐसेसुनिनिजपितुकीवानी॥वसेताँहिंमैधनदभवानी ॥ चिरत हैवस्योवहुतसुखपायो ॥ पिताताँहिंपिखअतिहर्षायो॥४३॥ दैत्यसुमालीजोवलधारी॥सोआयोयाँधरणिमझारी॥पिशिताशीवहुनिकसपताल ॥ मर्त्यलोकमैफिरेविशाल ॥ ४४ ॥ कन्याअपनीसंगसुलीनी ॥ मनोअहेपदमारसभीनी ॥ तवैसुमालीधनदनिहारा ॥ फिरेविमानतेजअतिभारा ॥ ४५ ॥ सभराक्षसकोहितउरधारा ॥ करतभयोमनमाँहिंविचारा ॥ कन्यानामकैकसीआहि ॥ ताँकेप्रतिपुनभाख्योताँहिं ॥ ४६ ॥ कालविवाहपुत्रितेभयो ॥ यौवनतेतनमैनिर्मयो ॥ निंदातेउरमाँहिंडराँहीं ॥ याँतेवरनहिंतोहिवराँहीं ॥ ४७ ॥ ब्रह्मकुलोद्भवमुनितपधाम॥ याँहिंविश्रवाभाषेनाम॥याँकोवरोआपतुमजाई ॥ होवेंगेसुतबलअधिकाई ॥ ४८ ॥ धनदसमानकांतिअतिधारे ॥ होवेंगेसुतसुतातुमारे ॥ कंन्यामुखतेतथावखाँ

न ॥ गईजहाँमुनिआहिमहाँन ॥ ४९ ॥ आगेखडीअधोद्रि
गदोऊ॥लिखेधरणिपदनखसोंसोऊ॥पूछितभयोमुनीश्वरताँ
हीं ॥ कवनसुकन्यात्वंवनमाँहीं ॥५० ॥ कन्यासांजुलिकीन
वखाँन ॥ ध्यानधारमुनिलेहुपछाँन ॥ तवमुनिध्यानधारस
भजाँन ॥ कीनोताँप्रतिएहुवखाँन ॥ ५१ ॥ तेअभिलापामें
सभपाई ॥ मोतेसुततूँचहेंउपाई ॥ दारुणसायंवेलाआई ॥ सु
तअभिलापारूपसुहाई ॥ ५२ ॥ दारुणदोसुतराक्षसभारी ॥
होवेंगेतेउदरमँझारी ॥ कन्यामुनिशार्दूलअलाए ॥ तुमतेयाँवि
धिकेसुतपाए ॥ ५३ ॥ तवताँकोमुनिकियोवखाँन ॥ पश्चमसु
तह्वैहैमतिमाँन ॥ महाभागवतयशकोआयण ॥ रामभक्तिमैप
रमपरायण ॥ ५४ ॥ ऐसेमुनिवरभाख्योजवही ॥ कालपाइसुत
उपजेतवही ॥ प्रथमैरावणभयोमहाँन ॥ वीशभुजादशशिरप
हिचाँन ॥ ५५ ॥ रावणजयोभवानीजवही ॥ पृथिवीकंपभयो
जगतवही ॥ जगतविनाशनकारणजेई ॥ भएनिमित्त
अखिलपुनतेई ॥ ५६ ॥ कुंभकरणपुनजयोमहाँन ॥ जाँको
देहपहारसमाँन ॥ उपजीरावणवहुरसहोदरि ॥ शूर्पणखाति
हैंनाममहोदरि ॥ ५७ ॥ वहुरविभीषणजन्मसुपायो ॥ शां
तआतमापरमसुहायो ॥ कर्मपरायणनियतअहार ॥ निशिदि
नवेदसुपढेउदार ॥ ५८ ॥ कुंभकर्णदुष्टातमजोई ॥ चुनचुनखाइ
द्विजातीसोई ॥ ऋषीसर्वजिहँठौरनिहारे ॥ दारुणतिनहिंपक
रमुखडारे ॥ ५९ ॥ रावणभयोमहाँवलधारी ॥ लोकनको
डरदेवेभारी ॥ रावणजीवनरोगसमाँन ॥ लोकनाशहितव

धेमहाँन ॥ ६० ॥ सभकेउरमैअर्थसुजोई ॥ राममकलतुम जानतसोई ॥ ज्ञानदृष्टिसांक्षीत्वंआँहि ॥ वसेंसर्वकेत्वंहृदि माँहिं॥६१॥ त्वंपरमेश्वरनिर्मलरूपा ॥ नित्यउदितहैतोहिस्वरू पा॥तुमलीलामनुजाकृतिधारी॥ निजमहिमागुणमायमुरारी ॥ ६२ ॥ लीलाहिततुमप्रेर्योमोही ॥ राक्षसजन्मकह्योमैतो ही॥ केवलरामस्वरूपतुमारा ॥ मैजाँनेंजोअहेउदारा ॥६३॥ शक्तिअचिंतअनंतचिदातम ॥ अजअक्षरविदतातमआतम ॥ त्वंनिजरूपपरायणदेव ॥ गूढरहेंजगअलखअभेव ॥ ६४ ॥ ॥ दोहा ॥ तोहिकृपातेअटोंमैजगमैसुखीमुरारि॥औरसुफो कटधरमहैंतेरोसिमरणसार ॥ ६५ ॥ सवैया ॥ इहभाँतिक ह्योमुनिजौगिरिजानबआपरघूत्तमवाक्यअलाए ॥ इंनंव शपविन्रसुकीरतिजाँघटकेसुतकोहसरामबताए॥इहमायकहै सभजोपिखियेजनहोइअनन्यसुमेयशगाए॥ मुनिपुंगवमेयं शगायनजोक्षणएकविपेसभपापमिटाए ॥६६॥ इतिश्रीमद ध्यात्मरामायणेउमामेहश्वरसंवादेउत्तरकांडेप्रथमोऽध्यायः॥ ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ रामवचनसुनहर्षभरकहैअगस्त्यव खाँन ॥ सभामाँहिंसभकेसुनतसुनतरामसुखमाँन ॥ १ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ बड्डरधनेश्वरदे वकुबेर॥ किसीकालतहँआयोफेर॥ पुष्पकमैआरूढसुहायो॥ पितुपेखनहितसोतहँआयो ॥ २ ॥ ताँहिंकैकसीनयननिहा रा॥ आहिमहौजसतेजअपारा॥ पुनसमीपवड्डसुतकेगई॥ रावणकोइमभाषतभई ॥३॥ पृतधनेश्वरदेवनिहारो॥ ज्वलत

१ सर्व.

तेजदशादिशिउजियारो॥ त्वंसुतजिहँविधिअैसोभ्राजें॥ तैसो यत्नकरोसुखिछाजें ॥ ४ ॥ सुनरावणहिंरोपवहुमाना॥ वेग प्रतिज्ञाकरीमहाना॥ धनदसमानअधिकवामाय ॥ होवेंवेग तापतेजाय॥५॥ मातसुव्रतेपिखततकाल ॥ अैसेमुखतेभाप विशाल॥ दुष्करतपकरणोउरमाँन ॥ उठ्योसुरावणशूरमहाँ न॥ ६ ॥**दोहा** ॥ फलकेसिद्धनिमित्तपुनरावणसानुजबीर॥ तीरथगोकरणंगयोलगोकरणतपधीर॥ ७॥ **चौपाई**॥ अप नोअपनोनियमसुधार ॥ लागेतपसाकर्णउदार ॥ कुंभकर्ण तपघोरक्र्योंहै॥ लोकनकोबहुतापभयोंहै ॥८॥ दशसहस्रव र्षनवलवाँन ॥ कुंभकर्णतपकर्योंमहाँन ॥ धर्मस्वरूपविभीप णजोई॥सत्यसुधर्मपरायणसोई॥९॥पंचसहस्रवर्षतपधार॥ ठाँढोभयोएकपदभार ॥ रावणकरीतपस्याजोई॥अवसुनिये नीकेउरसोई ॥१०॥ दिव्यसहस्रवर्षतपधार॥ रह्योइकंतनकी नअहार ॥ पूरणवर्षसहस्रसुजवही॥ भयोकाटशिरहोम्योत वही ॥ ११ ॥ नवसाहस्रवर्षइमगयो ॥ नवशिरकाटसुहोम तभयो ॥ दशमसहस्रवर्षजवआयो ॥ रावणतौमनमैवि कसायो ॥ १२॥ काटनलगोदशमशिरजवही ॥ आपप्रजा पतिआएतवही ॥ पूतपूतदशकंठउदार ॥ मैप्रसन्नइमकीनउ चार ॥ १३ ॥ वरमाँगोउरचाहोजोई ॥ देंउँपूतक्षणभीतर सोई ॥ रावणयाँविधजौसुनपायो॥ हर्षभयोउरवचनअला यो॥ १४ ॥ जौतुमहौवरदेवनहारे ॥ वरौंअमरतादेहुउचारे नागसुपरणसुरासुरजेते ॥ मोकोंमारसकेंनहिंनेते ॥ १५ ॥

मानवहैंजगभीतरजेई ॥ मेरेआगेत्रिणसमतेई ॥ यांविध रावणवरहिसुनायो ॥ ब्रह्मातांकोतथाअलायो ॥ १६ ॥ पुन कमलासनभाख्योवेई ॥ अग्निमाँहिंशिरहोमेजेई ॥ यथापूर्व उपजेंगेतेई ॥ असुरोत्तमजानोमनमेई ॥ १७॥ रावणकोइ हभाँतिवखाँन॥ रामप्रजापतिदेवमहाँन ॥ गयोविभीपणकी ढिगजवही ॥ करीविभीषणवंदनतवही ॥ १८ ॥ तवब्रह्मा यहिवचनउचार्यो ॥ वत्सविभीषणतुमतपधार्यो ॥ धर्मनि मित्तवडोतपधारा ॥ त्वंजगमैंहैंपरमउदारा ॥ १९ ॥ अभि मततोकोंहितवरजोई ॥ माँगोपूतदेंउँतेसोई ॥ पुनपदवंध विभीषणवोला ॥ करअंजुलिशुभवचनअमोला ॥ २० ॥ दे वसदामेरीमतिजोई॥ धर्ममाँहिंदृढनीकेहोई॥ रुचिअधरममे कदानधारे ॥ जहँजहँरहोंसुजगतमझारे ॥ २१ ॥ भयो प्रसन्नप्रजापतिधीर ॥ कह्योविभीपणकोरघुवीर ॥ धर्मशी लत्वंजसजगमाँहीं॥ होवेंगोतैसोभवमाँहीं॥ २२॥ विनमाँगे अमरत्वसुजोई॥ तोकोंदियोविभीषणसोई ॥ कुंभकरणकोव्र ह्मवखाँन्यो ॥ माँगोवरजाँहिततपुठाँन्यो ॥ २३ ॥ वाणीतो मुखमाँहिंसमाँनी॥ कुंभकर्णइद्रुकीनवखाँनी ॥ षटमासनसो वोंजगमाँहीं ॥ भोजनकरोंएकदिनमाँहीं ॥ २४ ॥ ब्रह्मा ताँकोतथावखाँन्यो॥ देवनसहितहर्षउरमाँन्यो॥ निकसशारदा जवमुखगई ॥ स्वर्गलोकसाजावतभई ॥ २५ ॥ दुष्टसुकुं भकर्णथोजोई ॥ चिंततभयोदुखितउरसोई॥ वलीविधाताकी विधिआहि॥ अनवाँछितनिकस्योमुखमाँहिं॥ २६॥दौहित्र

नवरलब्धपछाँन ॥ नामसुमालीदैत्यमहाँन ॥ संगप्रहस्ता
दिककोल्यायो ॥ पातालहिंतेवाहिरआयो ॥ २७ ॥ राव
णकोउरमाँहिंलगायो॥वचनस्वमुखतेएहुअलायो ॥ भलो
भयोसुततुमवरपाए॥वांछितमोहिमनोरथआए॥२८॥जाँ
केभयकरलंकात्यागी ॥गएरसातलमैहमभागी॥महाविष्णु
कोडरथोजोई॥भयोनिवृत्तमहाभुजसोई॥२९॥लंकानगरी
आहिहमारी॥पूरववसेंसुजाँहिंमझारी॥धनदतुमारोजोयहि
भाई ॥ ताँहिंदवाईलेहुछुडाई॥३०॥ सामपराक्रमजाँविधि
वने॥भूपतिवंधुसुहृदनहिंगने॥ऐसेजवैसुमालीभाँन्यो ॥रा
वणताँहिंनिषेधसुठाँन्यो॥३१॥ऐसोकथननलायकतेरे॥ धनद
भ्रातहैगुरुजगमेरे ॥ ऐसीसुनरावणकीवानी ॥ वहुरप्रहस्त
सुताँहिंवखानी ॥३२ ॥ शूरहोंहिंजगभीतरजेते॥भाईवंधुन
माँनेंतेते ॥वचनकहोंसुनियेअवसोई॥वहुरकरोजोउररुचि
होई॥३३॥सुरअरुअसुरअहेंजगजेते॥ कश्यपकेसुतसगलेते
ते॥लरेंपरस्परआयुधमारें॥भावसुहृदनहिंमनमेंधारें॥३४॥न
हिंराजनयहिवादनवीनो॥देवनदैत्यनवैरजुकीनो॥सुन्योप्रह
स्तवाक्ययहिजवही॥रावणकेमनआयोतवही॥३५॥रावण
मुखतेतथावखाँन॥ क्रोधकियोउरमाँहिंमहाँन॥ताम्रसुनयन
क्रोधकरभए ॥ चढलंकाकेपर्वतगए ॥ ३६ ॥ दूतप्रहस्तप
ठायोजवही ॥ धनदनिकारलंकलीतवही ॥ रावणलिएवजी
रसुसाथा ॥ लंकवासकीनोरघुनाथा ॥ ३७॥ धनदपिताके
वाक्यनमान ॥ लंकाछोडीवैठविमान ॥ शिखरजाइकैलाश

प्रवीनो ॥ तपकरशंभुप्रसन्नसुकीनो ॥ ३८ ॥ ताँकासखासु भयोनवीनो ॥ शिवताँकोअभिनंदनकीनो ॥ नगरीअलि कानामसुहाई ॥ विश्वकर्मणातेनिर्माई ॥ ३९ ॥ नगरी दईकयोंदिगपाला ॥ शिवताँकीकीनीप्रतिपाला ॥ रावणरा क्षससहितसुहायो ॥ सानुजलंकाराजसुपायो ॥ ४० ॥ राज कियोतिनअसुरनकेरो ॥ दानत्रिलोकीकोदुखभेरो ॥ भगिनी विकटरूपनिर्मई ॥ कालखंजवंशीकोदई ॥ ४१ ॥ विद्युतजि व्हानाममहाँन ॥ महाबलीसुनिशाचरजाँन ॥ रक्षनविश्व कर्महैजोई ॥ मयनामादितिकोसुतसोई ॥ ४२ ॥ दुहिता ताँमंदोदरिनामा ॥ यौवनरूढरूपकीधामा ॥ रावणकोतिन आपसुदीनी ॥ सफलशक्तिदैप्रीतिसुकीनी ॥ ४३ ॥ वैरो चनकीपुत्रीअहे ॥ नामरत्नज्वालातिहँकहे ॥ कुंभकर्ण सोंव्याहनकीनी ॥ रावणआपपितातिहँदीनी ॥ ४४ ॥ गंध र्वनराजाशैलूषा ॥ ताँकीसुतारूपगुणभूपा ॥ धर्मशीलिम तिमानप्रवीनी ॥ रावणब्याहविभीषणदीनी ॥ ४५ ॥ सर मानामवडीसुखदाई ॥ सुभलक्षणगुणरूपसुहाई ॥ मंदो दरीभईसुप्रसूत ॥ मेघनादजायोतिनपूत ॥ ४६ ॥ जन्मस मेवडुगाज्योऐसे ॥ नादकरेसावनघनजैसे ॥ सर्वलोकबोले तवराम ॥ मेघनादयाँकोहैनाम ॥ ४७ ॥ कुंभकर्णपुनकह्यो नरेश ॥ निद्रामोकोंदेतिकलेश ॥ तबइकगुहाकरायविशा ल ॥ अतिलाँवीपुनधसीपताल ॥ ४८ ॥ निद्रापायमूढअ तिहोयो ॥ ताँमैकुंभकर्णजबसोयो ॥ रावणलोकरुवावण

हारे ॥ कीनउपद्रवलोकमझारे ॥ ४९ ॥ ब्राह्मणऋषीसर्व
सुरदानव ॥ किंनरदेववधूपुनमानव ॥ महाउरगलौंहैंजग
जेते ॥ मारदुखायेसगलेतेते ॥ ५० ॥ सुनीकुबेरजबैयहिबा
त ॥ रावणकीनसुबहुउतपात ॥ तबकुबेरनेदूतपठायो ॥
करोअधर्मनएहुअलायो ॥ ५१ ॥ सुनदशग्रीवभयोरुपज्ञा
रा ॥ वेगगयोचढधनदअगारा ॥ जीतधनेश्वरकोवशिकी
नो ॥ पुष्पकतौंहिंविमानहिंलीनो ॥ ५२ ॥ पुनःकरीयमपुर
परधाई ॥ धर्मरायसौंकरीलराई ॥ सभयमदूततहाँपुनघाए॥
धर्मराजकोदीनभगाए ॥ ५३ ॥ बहुरवरुणकोजीत्योजाई ॥
स्वरगलोकपुनकरीचढाई॥देवराजमारणकीचाहि॥ चढीदशा
ननकेमनमाहि॥५४॥ घोरयुद्धअमरापुरिभयो ॥ देवनसाथ
दशाननकयो ॥ बहुरसुरेश्वरयुद्धसुकीनो ॥रावणकेशनतेग
हिलीनो॥५५॥अमरापुरिमैबांध्योतात॥मेघनादयहिसुनीसु
बात॥वेगप्रतापवानचढगयो॥देवनसाथबडोरणकयो॥५६॥
जीतसुरेश्वरयौंध्योजवहीं॥वेगछुडाइपितानिजतवहीं॥देवेंद्र
हिलंकागहिल्यायो ॥ कारागृहकेबीचहिंपायो ॥५७॥ ब्रह्मा
आपतहाँचलआए ॥ मेघनादतेइंद्रछडाए॥ मेघनादकोबहु
वरदए ॥ब्रह्मावहुरभुवननिजगए ॥५८॥ रावणलोकनजी
तनभयो ॥ क्रमहीक्रमकैलासहिंगयो ॥ महाभुजाकेअंतर
धारे॥ तोल्योतिंहंकैलासपहार ॥५९॥ तबनंदीश्वरदीनोशा
प॥ वानरतेरोहरेंप्रताप॥ मानवतोहिहनेंसंग्राम ॥ नंदीश्वरकु
पभाख्योराम ॥ ६० ॥दोहा॥ भयोशापनहिंगनेसठरावण

उरगवांइ॥सहसबाहुकेनगरप्रतिगयोलरनहितधाइ ॥ ६१ ॥
॥चौपाई॥ ताँपुरनिकटनर्मदातीर ॥ डेराकियोदशाननवीर ॥
रावणतहाँनर्मदान्हाए ॥ शिवपूजनहितफूलमँगाए ॥ ६२ ॥
कुशआसनपरडारपटंबर॥कीनोशिवपूजनआडंवर ॥ हेमलिं
गदशपरमसुहाए ॥ पंचामृतसोंताँहिंन्हवाए ॥ ६३॥ ताँहिंस
मेअर्जुनवहुवीरा ॥ नारिनसहितनर्मदातीरा ॥ न्हावतताँभु
जदंडपसारे ॥ थाँभ्योसकलनर्मदावारे॥ ६४ ॥ उलटेनीरती
रनिकसाने ॥ रावणआसनफूलवहाने ॥ भोजनवारिप्रवा
हवहाए ॥ पुजीनपूजाशंभुउठाए ॥ ६५ ॥ रावणदूतपठाएज
वही ॥ पेखसहस्रभुजानृपतवही ॥ रावणपासनिवेदनकी
नो ॥ रावणजायतहाँरणलीनो ॥ ६६ ॥ वाँधदशाननकोंघर
ल्यायो ॥ तहँपुलस्त्यमुनिजायछुडायो ॥ पुनकिष्किंधावा
लीसाथ ॥ सवलगयोलरनेरघुनाथ ॥ ६७॥ ताँनिकक्षमाँहिं
गहिलीनों ॥ चतुरसमुद्रहिंभ्रामणकीनो ॥ वहुरआनघरत्या
गनकयो ॥ रावणताँहिंसखातवभयो ॥ ६८ ॥ रावणगयो
वहुरवलिद्वारे ॥ वामनपादअँगूठामारे॥ दशयोजनमैपर्यो
सुजाय ॥ घरआयोउरमैविस्माय ॥ ६९ ॥ महावलीरावण
योंरीति ॥ सगललोकवशिकीनेजीति ॥ भोगेभोगसर्वज
गमाँहीं ॥ रावणवैठलंकपुरिमाँहीं ॥७०॥ रावणसुतमहेंद्रजित
केरो ॥ योंविधिरामप्रभावसुहेरो ॥ रावणलोकरुवावणहा
रा ॥ रामतुमेरणभीतरमारा ॥ ७१ ॥ मेघनादअतिवलिथो
जोई ॥ रणमहिँमार्योलक्ष्मणसोई ॥ कुंभकर्णसमशैलअ

कार ॥ तुमरणभीतरडार्योमार ॥ ७२ ॥ नारायणसाक्षात भवादि ॥ जगतरूपत्वंप्रभूअनादि ॥ स्थावरजंगमजोजग माँहीं ॥ रामसुनोहिविनाकछुनाँहीं ॥७३॥ प्रभुतुमनाभिकम लनिर्मयो ॥ ब्रह्मालोकपितामहभयो ॥ वाणीसहितअग्नि पुनजोई ॥ तवमुखतेउपजीहरिसोई ॥ ७४ ॥ लोकपालसभ भुजतेभए ॥ नयनहुंतेरविशशिनिर्मये ॥ दिशाविदशाज नीतवकान ॥ तवघ्राणनतेउपज्योप्राण ॥ ७५ ॥ औरअश्वनी केसुतजेई ॥ उपजेतवघ्राणनतेतेई ॥ जंघाजानूरूजघनात ॥ भयेभुवादिकलोकशुभात ॥ ७६ ॥ कुक्षिदेशतेहेभगवान ॥ चारोसागरभयेमहान ॥ इंद्रवरुणहस्तनतेभए ॥ वालखिल्यरे तहिंनिर्मए ॥ ७७ ॥ मेढ्रहितेयमतुमउपजायो ॥ गुदतेमृत्युज न्मपुनपायो ॥ क्रोधहितेत्र्यनयनउपाए ॥ हाडनतेपर्वतप्रभु जाए ॥ ७८ ॥ केशनतेघनसंततिभई ॥ औषधिसभरोमननि र्मई ॥ नखतेभयेखरादिकदेव ॥ विश्वरूपत्वंअखिलअभेव ॥ ७९ ॥ मायाशक्तिमिलेरघुराय ॥ नानागुणव्यत्ययदेखाय ॥ तेआलंब्यविबुधसभजीवें ॥ यज्ञनमाँहिंअमृततेपावें ॥ ८० ॥ वि श्वस्थावरजंगमजेती ॥ नारायणतवरचीसुतेती ॥ स्थावरजंग मजीवसुजेई ॥ तवअवलंबनजीवेंतेई ॥ ८१ ॥ तवसंयुक्तसु निखिलविहार ॥ तेविनरामसुसगलअसार ॥ क्षीरहिंव्यापक जिमहैघीउ ॥ तिमत्वंरामसर्वकोजीउ ॥ ८२ ॥ **दोहा** ॥ तेरे भासप्रकाशहेंनभमैरविअरुचंद ॥ तेनहितोहिप्रकाशहेंपूरण परमानंद ॥ ८३ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ इकसर्वज्ञनित्य

हैं ॥ ज्ञानचक्षुविरलाकोलहे॥ नयनाज्ञाननतोकोंलखें॥जिम द्रिगअंधनसूरयपेखें ॥ ८४ ॥ योगीजेउरज्ञानउदारे ॥ तो कोंपेखेंदेहमझारे ॥ वेदशीशवेदांनसुजेई॥ तांकरतेहिनिहारें तेई ॥ ८५ ॥ तेपदभक्तियुक्तेराम ॥ ढूंढततोहिपिखेंचिद धाँम ॥ तुमसर्वज्ञसर्वप्रभुजाँनें॥ तवआगेमैवचनवखाँनें॥ ॥ ८६ ॥ सोतुमक्षमाकराअरिगाँजन॥ तोहिअनुग्रहकोमै भाँजन ॥ कालदेशदिगनाँहिंतुमारे ॥ त्वंइकचेतनरूपमुरारे ॥ ८७॥ अजअक्षरचलनादिकनाँहीं ॥ त्वंसर्वज्ञजगतकेमाँ हीं ॥ तुमरेगुणप्रभुआँहिंअनंता॥ त्वंईश्वरजगमैभगवंता॥ ॥ ८८ ॥ **दोहा** ॥ कपटनमायकजाँहिंमैभजोंनिरंतरराम॥ सेवकसाथअभिन्नजोकरेजननकेकाम॥८९॥ इतिश्रीमदध्य त्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउतरकांडेद्वितीयोऽध्यायः॥२॥

॥ **श्रीरामउवाच** ॥ ॥ **दोहा** ॥ बालीऔसुग्रीवकेजन्म सुननकीचाहि ॥ सुनेसुरेश्वरभानुमैभएकपीजगमाँहिं॥१॥ ॥ **अगस्त्यउवाच**॥ ॥ **चौपाई** ॥ मेरुनामजोहेमपहा रा॥ बीचशृंगमणिलगीअपारा ॥ ब्रह्माकीतहँसभाउदारा ॥ शतयोजनजाँकोविस्तारा ॥ २ ॥ चतुराननप्रभुकाहूँका ल॥ ताँमैकरीसमाधिविशाल॥ दिव्यानंदनयनजलआयो॥ नयननतेकरमाँहिंगहायो ॥ ३ ॥ ब्रह्माधारताँहिंकरमाँहीं॥ ध्यानकर्योकछुताँमनमाँहीं ॥ भूमैत्याग्योसलिलमहाँन ॥ ताँतेउपज्योकपिबलवाँन ॥४॥ ताँकोभाख्योबद्दुरविधाता॥ किंचितकालवसोइहताता ॥ उत्तममोहिसमीपस्थान ॥ ब

हुरोतवहुइहैकल्यान ॥ ५ ॥ ऐसेब्रह्माभाष्योजवही ॥ वास कियोवनरतहँतवही ॥ याँविधवीतिबहुतसुकाल ॥ ऋक्षरा जतहँरहेविशाल ॥६॥ एकसमेफलहितकपिगयो ॥ वापीए कनिहारतभयो ॥ दिव्यशिलामणिलगीअपार ॥ निर्मलताँ मैहेर्योवारि ॥ ७ ॥ पानीपीवनकेहितगयो ॥ तहँछायाक पिदेखतभयो ॥ ताँकोऔरकपीश्वरमाँन ॥ कूदपर्योजलमाँ हिंमहाँन॥८॥ ताँमैऔरनवानरपायो॥ निकसवेगजलवाहि रआयो ॥ निजतनुसुंदरनारिनिहारी॥ विस्मयभयोसुषीति मझारी॥ ९ ॥ ताँहिंसमेस्वरनायकआयो ॥ पूजपितामहिंपु नःसिधायो ॥ मध्यदिवसपेखीतहँनारी ॥ मनोरमातनप्रभा अपारी ॥ १०॥ मनमथवानसुरेश्वरलागे ॥ पीडितहोयसुवी रयत्यागे ॥ वीरयवालनमाँहिंगिराए ॥ वालीजन्मसुताँतेपा ए ॥ ११ ॥ शक्रसुतुल्यपराक्रमभयो ॥ देखपुरंदरताँविक सयो ॥ स्वर्णमालताँकगलडारी ॥ आपगयोस्वरलोकमँझा री ॥ १२ ॥ ताँहींसमेभानुतहँआयो ॥ देखभामिनीवहुत लुभायो ॥ भामिनिनिकटजवैरविगयो ॥ ग्रीवामाँहिंरेत गिरपयो ॥ १३ ॥ ताँहिरततेवेगमहान ॥ वानरएकभ योवलवाँन ॥ ताँहिंसहायकदेहनुमान ॥ आपगयोनभमं डलभानु ॥ १४ ॥ दोनोसुततहँतलैभामिनि ॥ गईकहूँपु नऔरेकानन ॥ तहाँजायवहुसोईराति ॥ वहुरजागतनपि ख्योप्रभाति॥ १५॥ पूर्वहिंजिमतनुकपिकैगयो॥ हेरअचंभा ताँउरभयो ॥ फलमूलादिकवहुतमिलाय ॥ पूतदोऊपुनसंग

लवाय ॥ १६ ॥ ब्रह्माकोंअभिवंदनधार ॥ आगेखडोऋक्ष
शिरदार ॥ ब्रह्मातौंआश्वासनकरिओ ॥ कपिकुंजरकोएहुउ
चरिओ ॥ १७॥ राजदियोतोकोंधरमाँहीं ॥ सुखीवसोअपने
घरमाँहीं ॥ तहँदेवतादूतवुलायो ॥ ब्रह्मातौंकोएहुअलायो ॥
॥ १८ ॥ दूतंयाहिममआइसमाँन ॥ संगलिजावोकपिवल
वाँन ॥ किष्किंधापुरिदिव्यसुहाई ॥ विश्वकर्मनिजहाथबना
ई ॥ १९ ॥ सबसौभाग्यअहेजाँमाँहीं ॥ देवनकीगमजाँमेंनाँ
हीं ॥ ताँमेंडारसिंहासनलीजो ॥ राजतिलकयाँकपिकोदी
जो ॥ २० ॥ सप्तद्वीपगतवानरजेई ॥ महाबलीअतिदुर्जय
तेई ॥ तेसभयाँकेहोंहिंअधीना ॥ याँविधमोहिवचनअबकी
ना ॥ २१ ॥ जबनारायणनरअवतार ॥ धारेंगेताँधरणि
मझार ॥ दशरथकेघरनीकेआवें ॥ रामनामजगमाँहिंकहा
वें ॥ २२ ॥ धरणीभारअसुरबलधारी ॥ ताँनाशनहितहोंहिं
मुरारी ॥ तबकपिताँहिंसहाइतधरें ॥ लंकाजाइलराईकरें ॥
॥ २३ ॥ ऐसेकहिविधिदूतपठायो ॥ देवदूतमतिमंतसुआयो ॥
जिमजिमब्रह्माआइसदीनी ॥ तिमहींतिमसभताँहिंसुकीनी ॥
॥ २४ ॥ देवदूतबहुरोंफिरगयो ॥ ब्रह्मापासनिवेदनकयो ॥
ताँदिनतेकिष्किंधाराम ॥ वानरभूपनकीसुखधाम ॥ २५ ॥
सर्वेश्वरत्वंराममुरारे ॥ ब्रह्माविनतीकरीसुधारे ॥ भूकोनि
खिलसुभारउतार्यो ॥ लीलाकरनरतनुतुमधार्यो ॥ २६ ॥ स
र्वभूतहृदिअंतरराम ॥ नित्यमुक्तत्वंचेतनधाम ॥ रूपाखंडानंद
तुमारे ॥ क्याबलएहजुराक्षसमारे ॥ २७ ॥ चरयातेरींसंतसुगा

वें ॥ लीलामानुपदेहबनावें ॥ तेरोयशसभपापसुहरे ॥ सभलोकनकोंअतिसुखकरे ॥ २८ ॥ ॥ अडिल ॥ ॥ बालीऔसुग्रीवजन्मनरगावई ॥ मर्त्यलोककेमाँहिंपरमसुखपावई ॥ जन्मसुपावनहोइमिलेबहुसंगमुरारी ॥ होमुक्तहोइजगमाँहिंमिटेतिहँपातकभारी ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ अबमैकथावखाँनोंराम ॥ तोहिमिलीपरमातमधाँम ॥ जाँहितसीताहरीदशानन ॥ सोअबबातसुनोनिजकानन ॥ ३० ॥ प्रथमहिंसतयुगराममुरारि ॥ ब्रह्माकोसुतसनतकुमार ॥ कहुँएकांतहुताबहुकानन ॥ ताँकीढिगचलगयोदशानन ॥ ३१ ॥ नम्रभावपदवंदनकरी ॥ मुखतेएहुसुप्रश्नउचरी ॥ कोबलवंतसुदेवनमाँहीं ॥ जाँकेआश्रयदेवरहाँहीं ॥ ३२ ॥ काँकेबलसुररणअरिदरें ॥ काँहिंद्विजातीयजनसुकरें ॥ काँकोंयोगीधरतेध्यान ॥ यहिसंदेहसुमोहिमहान ॥ ३३ ॥ याँकोउत्तरदेवभनीजे ॥ मोसंदेहनिवारणकीजे ॥ सनतकुमारधारउरध्यान ॥ ताँहिंरिदेकीनीकजान ॥ ३४ ॥ रावणकोतिनएहुबखानी ॥ सुनोपूतअबमेरीवानी ॥ जोसभजगकोभर्त्ताआहि ॥ जन्मजरादिकजाँकोनाहि ॥ ३५ ॥ सुरअरअसुरनुतःसुखरासी ॥ हरिनारायणहैअविनाशी ॥ जाँकेनाभिकमलनिर्मयो ॥ ब्रह्मालोकपितामहभयो ॥ ३६ ॥ स्थावरजंगमजगतसुजोई ॥ जाँनेनिखिलउपायोसोई ॥ ताँअवलंबनकोसुरधारें ॥ रणमंडलअरिपुंजविदारें ॥ ३७ ॥ योगीताँकोधारेंध्यान ॥ ताँहिंयजेंसभविप्रमहान ॥ याँविधसुनमुनिवरकीवानी ॥ रावणप्रश्नबहुरइहुठानी

॥ ३८ ॥ दानवदैत्यरक्षहरिमारे ॥ कागतिपावेंजगतमझारे ॥ वहुरमुनीश्वरएहुअलाई ॥ सुनरावणराक्षसकेराई ॥ ३९ ॥ विष्णुभिन्नदेवनकेमारे ॥ दैत्यजाँहिंसुरलोकमाझार ॥ भोगन भोगसुकृतक्षयकरें ॥ गिरेंस्वर्गतभूमैपरें ॥ ४० ॥ पूर्वसुकर्मन केआधीन ॥ जन्मेंमरेंहोंहिंअतिदीन ॥ विष्णुजाँहिंनिजहाथनमारे ॥ हरिकीगतितेलहेंउदारे ॥ ४१ ॥ मुनिकेवाक्यसुनेयौंकाँन ॥ रावणहर्षभयोसुमहाँन ॥ हरिकेसंगसुकरोंलराई ॥ यहिचिंतामनमैउपजाई ॥ ४२ ॥ रावणकेउरकीसभजाँन ॥ कीनोसनतकुमारवखाँन ॥ पूततुमारोवांछितजोई ॥ होवेगोविनसंशयसोई ॥ ४३ ॥ किंचितकालप्रतीक्षणकरो ॥ सुखीदशाननयाँजगफिरो ॥ याँविधताँमुनिभापमहाँन ॥ वहुरकियोतिनएहवखाँन ॥ ४४ ॥ अतिमायकहरिआहिअनूप ॥ कहोंदशाननताँकोरूप ॥ अहेस्थावरजंगममाँहीं ॥ नदिअनअरुपुनकाननमाँहिं ॥ ४५ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ हैओंकारस्वरूप हरितथासत्यपहिचान ॥ पृथवीसावित्रीतथावपुनारायणजान ॥ ४६ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ सर्वजगतअधारसुजोई शेषरूप हरिजाँनोंसोई ॥ सर्वदेवअरसागरजेते ॥ हरिकोरूपपछानोंतेते ॥ ४७ ॥ स्वर्गचंद्रसूर्योऽसौकाल ॥ देवराजयमवायुविशाल ॥ अग्निमृत्युवसुवारिदजान ॥ जलपतिब्रह्ममहेश्वरमाँन ॥ ४८ ॥ औरसुरासुरहैंयेजेते ॥ हरिकोरूपपछानोंतेते ॥ ज्वलतितेजजगपालदेव ॥ हरेविश्वपुनकरेअभेव ॥ ४९ ॥ अच्युतदेवकरेजगलीला ॥ विष्णुसनातनसुंदरडीला ॥ ताँकरव्याम

त्रिलोकीसारी ॥ स्थावरजंगमजगतमँझारी ॥ ५० ॥ नीलकमलसमदेहसुहाए ॥ दामनिसेपटतनपहिराए ॥ जांबूनदतनप्रभाअपारी ॥ वाँमअंगश्रीवसेउदारी ॥ ५१ ॥ नित्यअनाशिनी देवीजोई ॥ तिहँआलिंग्यनिहारेसोई ॥ दानवदेवसुपंनगजेते ॥ ताहिंनिहारसकेंनाहिंतेते ॥ ५२ ॥ यागपाठतपतीरथदान ॥ ताँकरभासेनहिभगवान ॥ जाँपरआपप्रसादसुधारे ॥ सोई ताँकोरूपनिहारे ॥ ५३ ॥ अमलहृदयभवभीतरजेई ॥ विष्णुनरायणपेखेंतेई ॥ अथवादखनकीतवचाहि॥ भाखोंरूपसुनो अवताँहिं॥५४॥त्रेतायुगआवेगोजवही ॥ नरपतरूपधरेगोतवही ॥ देवमनुष्यनकोहितधारे ॥ लेइक्ष्वाकुवंशअवतारे ॥ ॥ ५५ ॥ दाशरथीवहुरायकहेंहैं ॥ महापराक्रमभूमेंऐहें ॥ पितुआइसधारहिंनिजशीश॥रामदशाननवेजगदीश॥५६॥ भ्रातहिंसहितसहितनिजवामा ॥ आवहिंगेदंडकवनरामा॥ वेधरमात्मारामअनूप ॥ निजमायाकरजगतस्वरूप ॥ ॥५७॥याँविधमैतेकोनवखाँन ॥ सहविस्ताररूपभगवाँन॥ पद्मासहितरामजवहोई ॥ भजियोभक्तिभावकरसोई ॥ ॥ ५८ ॥ याँविधिसुन्योअसुरपतिजवही ॥ ध्यायविचार कियोतिनतवही ॥ तेरसंगवैरउरधार ॥ रावणभयोप्रसन्न अपार ॥ ५९ ॥ **दोहा** ॥ रणनिमितसभलोकमैअटतभयो लंकेश ॥ मारेजीतलोकतिनदीनेवहुतकलेश ॥ ६० ॥ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ तवलरनेहितहेभगवाँन ॥ रावणवीरवडो मतिमाँन ॥ सीतातांवनमाँहिंचुराई ॥ तोतेनिजवधम

नहिंवसाई ॥ ६१ ॥ ॥ **सवैया** ॥ ॥ याँहिंकथासुनहैंपठहैं
पुनऔरनकोनरभापसुनावें ॥ आयुपऔरअरोगतनंधनधा
न्यमहापुनताँघरआवें ॥ दूखअनंतमिटेंतिनकेपुनसूखअनंत
उमाजगपावें॥बंधमिटेंजगमंडलकेधरकैतनुयाँजगफेरनआ
वें॥ ६२ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तर
कांडेतृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥ **अगस्त्यउवाच** ॥ ॥ **सवैया** ॥ ए
कसमेचतुराननकेपुरतेभुविमंडलनारदआए॥ रावणलोकन
माँहिंफिरेपिखवंदितकैदशकंठअलाए॥ हैंकिंहँठौरमहाबलवं
तलरेंसहमोमुनिदेहिवताए ॥ त्वंजगतीनहुँजानतहैंबलिसंग
लरोंभुजमोहिखुजाए ॥ १ ॥ ॥ **कवित्त** ॥ धारमुनिध्यान
पुनकीनहैवखाँनश्वेतदीपकेनिवासीजनबडेबलधारिया ॥ ब
डेरणधीरपुनबडेहीशरीरतिनतहाँतुमजाहुबातमानकेहमारि
या॥ विष्णुपूजाजेईजनकरतसुलाइमनमारेरणबीचनिजहा
थंजेमुरारिया ॥ तेईतहाँजाँहिंजगमाँहिंसुखपाँहिंवहेजिनेना
हिंदैत्यनाँहिंजिनेअसुरारिया॥ २॥ ऐसेसुनकान.तेनलीनोहै
विमानपुनमंत्रिनबुलाइवेगकरीहैतयारिया॥युद्धहूँकीचाहिम
नमाँहिंगयोश्वेतदीपतहाँकेनिवासीतेजप्रभाहैंअपारिया ॥
फूलनविमानकेमलानसभतेजभएभईगतिकुंठितनचलतअ
गारिया ॥ छोडकैविमानपुनरावणपयानकीनोमंत्रिनकेसा
थंघसेदीपकेमँझारिया ॥ ३ ॥ करतप्रवेशतिनदीपमैंकलेशपा
एनारिनसुहाथमाँहिंलीनोंगहिरावणा॥ पूछेंताँहिंनारिकिनभे
ज्योतूंउचारकरकौनहैंसुबोलकहाँभयोतेरोआवना॥डारेंहाथो

हाथतिंहँरावणकेसाथपिखभापैंदशशीशयहिवडोहीखिलाव
ना ॥ हासितसुवारवारनारीऔंउदारपुनकरतउचारअहेवा
लमनभावना ॥ ४ ॥ वडोदुखपायतिनहाथतेंछुडायोकिंवें
नारिवलहेरगृहलंकपतिआयोहै ॥ दुरमतिखोटोउरमोटोहीवि
चारकरेंआयोघरमाँहिउरमाँहिंविसमायोहै ॥ ईश्वरकेहाथसु
कटाइनिजमाथरणजाउँमैवैकुंठउरऐसेहीठरायोहै ॥ कोपें
हरिजॉतिबातसोईउतपातकरोंऐसेउरधारतिनवैरकोलगायो
है ॥ ५ ॥ ऐसेमनधारतिनजानकीचुराईवनतोहिकोपंरात
मासुताँहिंउरधारिओ ॥ तोहीतिसुचाहीनाशवैरकोप्रकाश
कियाजानकीकोमातसमताँहिंप्रतिपारिओ ॥ ज्ञानदकराम
भूतभव्यत्वंपछानेसभतुहींपरमेश्वरसुवेदमैउचारिओ ॥ का
लकलनाहैजोईताँकेसाक्षीरामसोईपूरणआनंदसुविकल्पन
विकारिओ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ भक्तनकेअनुरागहितकृत्यकरे
सभराम ॥ मनुजाकृतितवयशकथासुनतहोंहिंसभकाम ॥ ७ ॥
सकललोकपूजाकरैंपायविकुंठमहाँन ॥ मुनिअगस्त्यइहभाँ
तितवकीनोउमावखाँन ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ यॉविधसुनमु
निवरतेवानी ॥ पूज्योताँकोरामभवानी ॥ मुनिगणताँहिंस
कलसंगलए ॥ मुनिवरनिजआश्रमकोगए ॥ ९ ॥ सीता
सहितरामविकसाए ॥ भाईमंत्रीसंगसुहाए ॥ संसारीजि
मपद्मानाथ ॥ रमणलगेगृहमैंरघुनाथ ॥ १० ॥ विषयन
मैहरिसदाअसंगा ॥ भोगेंभोगजानकीसंगा ॥ हनुमतलौं
शुभवानरजेते ॥ रामरहेंपरिवारेतेते ॥ ११ ॥ एकसमे

वहुसुमनविमान ॥ आयोजहँवैठेभगवान ॥ कह्योविमा
नकुबेरपठायो ॥ तांनेरामतोहिढिगआयो ॥ १२ ॥ ॥ दो
हा ॥ प्रथमेरावणजीतकरतोहिलेगयोधाम ॥ वहुररम
जितआनिओरावणहतसंग्राम ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ताँ
तेधारोरामकोजवलगताँघरवास ॥ रामजाँहिंवैकुंठजवत
वआवोममपास ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याँविधिसुनवि
मानकीवानी ॥ हसकरवोलेरामभवानी ॥ सूर्यसमानजुसुम
नविमान ॥ ताँकोरामसुकीनवखान ॥ १५ ॥ तोकोंयादकरों
गोजवही ॥ मेरीढिगआवोतुमतवही ॥ अवतूमेरीआइस
मान ॥ नभमेलीनसुहाहुविमान ॥ १६ ॥ याँविधरामसु
ताँहिंवखान ॥ पुरकार्यमैलगेमहान ॥ भाईमंत्रीसंगलवाय ॥
पुरकार्यसभकरेंसुन्याय ॥ १७ ॥ रामरमापतिराजाभए ॥
वसुधासकलसस्यनिर्मए ॥ पादपभएसुफलकेआयन ॥
जनसभभएसुधर्मपरायण ॥ १८ ॥ नारीभईपतिव्रतसारी ॥
पतिकोभजेंसुलाइपियारी ॥ सुतकोमरणनहेरेकोई ॥ राम
भएराजाहरिसोई ॥ १९ ॥ सीतासहितसुवैठविमान ॥ वान
रभाईसहितप्रधान ॥ उमामहींमेंरामसुफिरें ॥ वहुतअमा
नुपकारयकरें ॥ २० ॥ ब्राह्मणकोसुतएकसुवाल ॥ रामपिरत्यो
वहुमुयोअकाल ॥ शोचतविप्ररामसोपेखा ॥ जाँन्योभयो
अधर्मविशेखा ॥ २१ ॥ शूद्रसुपिरत्योएकवनमाँहीं ॥ तपसा
करेवडीजगमाँहीं ॥ तरुकेसंगअधोमुखडारे ॥ मंत्रगुप्तजपर
हितअहारे ॥ २२ ॥ धमनीव्याप्तसुताँतनलहे ॥ रामकह्योय

हिपातकअहे॥ ताँकोमार्योरामदयालु॥ लियोजिवाइविप्रको
बाल ॥ २३ ॥ शूद्रहिंदियोरामस्वरलोक ॥ रामविप्रकोकीन
अशोक॥रामपरात्माताँजगमाँहीं॥ लोकनकोउपदेशकराँहीं
॥ २४ ॥ शिवकेलिंगसुकोटिउदार ॥ थापेरामहिंजगतमझा
र ॥ सीतासहितरमेंसुखधाम ॥ भोगेंभोगअमानुपराम ॥
॥ २५ ॥ धर्मसहितधरराजसुकीने॥रामधर्मकीगतिसभची
ने ॥ सर्वलोकमलहरणेहारी ॥ कथारामजगमैविस्तारी
॥ २६ ॥ दशसहस्रवर्षरघुराई ॥ मायामानुपदेहवना
ई ॥ विधिवतराजकियेरघुनाथ॥लोकनिवावेंजाँपदमाथ॥
॥ २७ ॥ पतिनीएकव्रतंहरिधारे ॥ राजऋपीशुचिराममुरा
रे ॥ गृहमेधीकेधर्मगुपावन ॥ रामकरेजगकरेसिखावन ॥
॥ २८ ॥ सीताप्रेमराममैधारे ॥ नम्रभावसभकाजसवारे ॥
लज्जाभयपतिभावपछाने ॥ ताँकोपेखरामविकसाने ॥
॥ २९ ॥ एकसमेउपवनकेमाँहीं॥ सर्वभोगजाँमाँहिंसुहाँहीं ॥
दिव्यभवनएकांतसुधीर ॥ सुखसोंवैठेश्रीरघुवीर॥ ३० ॥नी
लमणीसमदेहसुहाई ॥ भूषणदिव्यधरेरघुराई ॥ मुखप्रसन्न
उरशांतमुरारे ॥ दामनिपुंजसमांवरधारे ॥ ३१ ॥ कमल
पत्रसमनयनउदारी॥ सीतासर्वसुभूपणधारी॥ रामपदांबुज
हाथलडाए ॥ राघवप्रतियहिवैनअलाए ॥ ३२॥ देवदेवज
गनाथसुस्वामी॥ परमात्मासभअंतरयामी॥ चिदानंदपरवी
नसनातन ॥ आदिमध्यविनअंतप्रकाशन॥ ३३ ॥ त्वंअशेश
जगकारणराम ॥ तुमविनसरेनरंचककाम ॥ सुरएकांतठौ

रसभआए ॥ मोप्रतिऐसेवचनअलाए ॥ ३४ ॥ वहुतभाँति सुरविनतीकरी ॥ वैकुंठहिंआवेंअवहरी ॥ तुमरेसहितवसें धरमाँहीं ॥ हमचाहेंताँकोमनमाँहीं ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अपनोधामविकुंठतजहमकोत्यागमुरारि ॥ जगतमाततव संगहरिविचरेंधरणिमझारि ॥ ३६ ॥ ताँतेआगेतुमचलोताँ विकुंठकेमाँहिं ॥ पाछेरामसुआइहैंहमसनाथहुइजाँहिं ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ चौपई ॥ ॥ यहिविनतीदेवनमुहिगाई ॥ मैंह रिजीतवपाससुनाई ॥ युक्तहोइसोकरोमहाँन ॥ नहिंआइ समैकरोंवखाँन ॥ ३८ ॥ सीतावाक्यसुनेयहिजवही ॥ ध्यान धारहरिभाख्योतवही ॥ देवीमैसगलीविधिजाँनों ॥ ताँमहिंए कउपायवखाँनों ॥ ३९ ॥ देवीएकसुमिसहिंचनाँऊँ ॥ लोक नतेअपवादकराँऊँ ॥ लोकनतेजनुडरउरमाँन ॥ त्यागोंतो कोंविपनमहाँन ॥ ४० ॥ वाल्मीकिआश्रमकेतीरा ॥ दोकु मारहोवेंतवचीरा ॥ अवतेगर्भसुदेतदिखाई ॥ उपजेंगेभुज वलअधिकाई ॥ ४१ ॥ मोहिसमीपवहुरत्वंऐहैं ॥ लोकनकों परतीतिसुदेहैं ॥ आदरशहितशपतूंदेहें ॥ भूमिविवरवैकुंठ हिंजैहें ॥ ४२ ॥ मैंपाछैआवोंसुखदाई ॥ योंमनमाँहिंसुमैठ हिराई ॥ ऐसेरामसुकीनवखाँन ॥ गईजानकीभौनमहाँन ॥ ४३ ॥ ज्ञानस्वरूपरामहैंजेई ॥ वैठसभामाँहिंपुनतेई ॥ मं त्रीमंत्रविशारदधीरा ॥ सेनापतीमहाँवलवीरा ॥ ४४ ॥ औ रमहाजनहोतेजेते ॥ रामसमीपसुवैठतेते ॥ ताँहिंसुहिरदउपा सनकरें ॥ वहुविधहासकथाविस्तरें ॥ ४५ ॥ हास्यक

थाजबवढीअपारी ॥ सुनसुनहसेसुराममुरारी ॥ सभामाँ
हिंइकविजयसुनाम ॥ कथाप्रसंगतिपूछ्योराम ॥ ४६ ॥ पुरिअ
रदेशनिवासीजेते ॥ किंहिंविधिभापेंमोकोंतेते ॥ सीताऔर
मातममभ्राता ॥ कैकेईजगमैविख्याता ॥ ४७ ॥ किंहँविध
तिनकोकरेंउचार ॥ साचकहोउरमोडरडार ॥ मोपरआहि
सुगंदमहाँन ॥ ऐसेरामसुकीनवखाँन ॥ ४८ ॥ विजयव
खाँनसुनोनरेश ॥ लोककरेंजोजोनिर्देश ॥ भूपतिरामवडे
सहज्ञान ॥ कीनेरामसुकर्ममहान ॥ ४९ ॥ रावणकोरणमंड
लमार ॥ सीताकोतहँकर्योंउधार ॥ यहिइककर्मअसंगति
करिओ ॥ सीताकोगृहभीतरधरिओ ॥ ५० ॥ क्रोधरामअवपृ
ष्ठसुकीनो ॥ सीतासंगरमेरसभीनो ॥ सीतासंगमसुखहैजोई ॥
कैसेरामचीतमैहोई ॥ ५१ ॥ रावणहरीविजनवनमाँहीं ॥ व
र्षदिनाराखीघरमाँहीं ॥ अकस्मातकछुखोटोकरहै ॥ नारि
कर्मपिखपतिरुपधरहै ॥ ५२ ॥ भूपतिजोजगकर्मकमैहैं ॥
प्रजानाँहिपथिमाँहिंचलैहैं ॥ ऐसेरामसुन्योतहँजवही ॥ नि
जजनकोहरिपूछ्योतवही ॥ ५३ ॥ तिनभीरामहिंवंदनधार ॥
विनसंशयअसकीनउचार ॥ विजयसुहृदअपिऔरवजीर ॥
विदाकरेसगलेरघुबीर ॥ ५४ ॥ लक्ष्मणकोंपुनलीनवुलाए ॥ रा
मसुयाँविधिवचनअलाए ॥ सीतामाँहिंसुदोपवखाँन ॥ मेरोभ
योअयशहिमहाँन ॥ ५५ ॥ सीताकोतुमवेगसकारे ॥ लेजावो
ताँविपनमझारे ॥ वाल्मीकिआश्रमढिंगजाय ॥ आवहुछो
डसुरथहिंविठाय ॥ ५६ ॥ याँपरजोकछुकरेंवखाँन ॥ मो

हिहननतवपापमहाँन ॥ ऐसेरामवखाँन्योजवही ॥ डरयो सुलक्ष्मणउरमैंतवही ॥ ५७ ॥ उठकरप्रातसुमंतवुलाई ॥ जनकसुतारथमाँहिंबिठाई ॥ जातभयेताँवनकेमाँहिं ॥ वाल्मीकिऋषिजाँवनमाँहिं ॥ ५८ ॥ आश्रमकीढिगशीघ्रउतार ॥ लक्ष्मणमुखतेकीनउचार ॥ जनअपवादडरेमनमाँहीं ॥ रामतजीतूँयाँवनमाँहीं ॥ ५९ ॥ मातनकश्चितमेरोदोप ॥ जावहुमुनिआश्रमत्यजरोप ॥ असकहिलक्ष्मणरामसमीप ॥ आयेशीघ्रमहाकुलदीप ॥ ६० ॥ सीतादुखिततपीअधिकाई ॥ मुग्धनारिसमअतिविलपाई ॥ वाल्मीकिकेशिष्य सुजेई ॥ समिधाकोआएथेतेई ॥ ६१ ॥ वाल्मीकिप्रतिकीनवखाँन ॥ सुनकरवाल्मीकिभगवाँन ॥ सीताताँहिंरमापहिचानी ॥ वाल्मीकिऋपिदिव्यसुज्ञानी ॥ ६२ ॥ अर्घ्यादिकपूजाकोधार ॥ सीताकोवहुदियोपिआर ॥ भावीवातजानमुनिचीता ॥ ऋपिवनिताकोअरपीसीता ॥ ६३ ॥ तेसियकीपूजावहुकरहीं ॥ भक्तिसहितसेवाविस्तरहीं ॥ दिनदिनमेंऐसीविधरहे ॥ सीतादूखनकोईलहे ॥ ६४ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मुनिकेवाक्यसुधारउरजानपरातमनारि ॥ मुनिनारीसेवाकरैं ताँकीवहुतप्रकार ॥ ॥ ६५ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ रामपरातमज्ञानस्वरूप ॥ केवलआदिसुदेवअनूप ॥ सीताविनसभभोगनत्याग ॥ धारेरामसुदृढवैराग ॥ ६६ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ मुनिपदपंकजसेवहींमुनिव्रतधारेराम ॥ सिंहगुलावसुजोरकरकरत सुसदाप्रणाम ॥ ६७ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहे

श्वरसंवादेउत्तरकांडेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अथरामगीतामू
लभाषालिख्यते॥ **श्रीमहादेवउवाच** ॥ **कवित्त** ॥ तवहरिरा
मचंद्रजगतआनंदकंदकीरतिरामायणसुउत्तमविथारिया ॥
पूरवआचारसुरधूतमविचारकरराजकपिकीनेजैसेजगतमँ
झारिया॥लक्ष्मणभ्रातमतिमानसुविख्याततवपूछिओसुराम
चंद्रउत्तरउचारिया ॥ मृगभूपकीकहानीरामभाषीजोपुरानी
भयोमतवारोद्विजभयोशापभारिया ॥ १ ॥ ब्राह्मणकीगाइति
निदईथीप्रमादकरसरटास्वरूपतिनकूपमाँहिंपायोहै ॥ ब्राह्मण
केधनतेविमुखरहोसदाभ्रातऐसेरामचंद्रनिजभ्रातकोअला
योहै ॥ कहूँएककाललक्षमनजोविशालउमारामकेसमीपसो
एकंतचलआयोहै ॥ ऐसेरघुवीरजाँकोधीरकपिगानकरेंजाँ
हिंकोपदारविंदपदमालडायोहै ॥ २ ॥ आयकैसुमित्रापूतशु
द्धभावनासुचीतभयोनम्रभावतिनकरीपदवंदना ॥ त्वंहिशुद्ध
बोधसभजीवनकोआतमानिराकृतस्वरूपरामईशरघुनंदन॥
तवपदकंजनकेभृंगनकेसंगकरेंपिखेंतवतेईजिनज्ञानद्रिगअं
जना ॥ आएपदपंकजकीशरणसुनाथहमभजतयोगीशपदते
रेभवभंजना ॥ ३ ॥ तमसिंधुभारोजिमतरोंमैसुखारोप्रभुभा
खीयेनरेशबातसोईसुखकारिये ॥ सुनकैसुभ्रातबातभएपुल
कातहरिजाँहिकीशरणउमादूखपुंजहारिये॥कीनोहैवखाँनरा
मज्ञानहीअज्ञानहनेंऔरनाँहिंकोईजोईवेदैकउचारिये॥भूमि
पालजेईजेईभएहैंविशालजगतिनकेभवानीरामभूपणसुधा
रिये॥ ४ ॥ **श्रीरामउवाच** ॥ **कवित्त** ॥ वरणसुआश्रमकीक

हैंकृतिजेईश्रुतिआदिमैसुकरेभ्रातसोईमनलायकै॥ पापमल धोयजवशुद्धमनहोयतबतजैकृतसोईचारसाधनकोपायकै॥ गुरुकीशरणजायआतमकोज्ञानपायभजेपदपंकजसुमान कोमिटायकै॥ ज्ञानकोउपायपुनज्ञानसुखदायसभवेदनको सारतवकहोंसमझायकै॥५॥ चौपाई॥आदरसहितक्रियाहै जोई॥ जगमैतनउपजावेसोई॥पुनतनमैंनररागसुधारे॥ ताँ तेप्रियअप्रियसुनिहारे॥ ६॥ धर्माधर्मताँहिंतेहोई॥ बहुरोतन उपजावेसोई ॥बहुरक्रियाइमचक्रसमाँन॥ भाख्योलक्ष्मणज गनमहाँन॥ ७॥ मूलसुयाँकोहैअज्ञान॥ ताँहींकोअबकोजेहा न॥ नाशाज्ञानजुकीनवखाँन॥ ताँमैविद्याचतुरपछांन ॥ ८॥ अज्ञानजसुकरमहैंजेई ॥ नहिंअज्ञानविनाशकतेई॥ जन्यव स्तुजगभीतरजेती॥ हैअज्ञानजनीसभतेती ॥ ९॥ विद्याभ ईजन्यअज्ञान ॥ सोकैसेतिहँकरहैहान॥ उत्तर॥ जन्यजनक भावहैजोई॥ नाँहिंअनाशकहेतूसोई ॥ १०॥ जगमैहोइविरो धीजेतो ॥ होइविनाशकसगलोतेतो ॥ पावकदारुज न्यजगअहे॥ ताँहींकोपुनउलटीदहे॥ ११ ॥ करकटआदिक बहुदृष्टांत ॥ याँहिंविषेबुधकेंहइकांत ॥ विद्याऽज्ञानविरोधी अहे ॥ याँहींतेताँकोंपुनदहे॥ १२ ॥ कर्मनाँहिंअज्ञाननि वारे॥ नाँहिंरागकोमूलउखारे ॥ ताँतेकर्मसदोपसुहोई ॥ पु नसंसारउपावेसोई ॥ १३ ॥ ताँतेजोनरबुद्धिउदार ॥ करेनि रंतरज्ञानविचार॥ कर्मनकोउरेसाधनमान ॥ लक्ष्मणशंकाक रतवखान॥ १४॥ ननु॥ क्रियासुवेदवखाँनीजोई॥ विद्यासम

साधनपुनसोई ॥ पुरुपार्थसाधनउरमान ॥ वेदस्वमुखते करेवखान ॥ १५ ॥ हैकर्त्तव्यप्राणिकोसोई ॥ विधिसोंवेद वखानेजोई ॥ विद्यासंगसहाइतपावे ॥ क्रियाज्ञानमिलमोक्ष उपावे ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हेच्छदवंतविहंगजोजिम नभभीतरजाइ ॥ ज्ञानकर्मतिमहीमिलेलेवेंमोक्षउपाइ ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ कर्मनकोजोदेवेडार ॥ श्रुतिकरेंतिहँदोपउचार ॥ अग्निहोत्रकोत्यागेजोई ॥ वीरहासदेवनकाहोई ॥ १८ ॥ तांतेहोइमुमुक्षूजोई ॥ कर्मनिरंतरकरेसुसोई ॥ करुणासिंधसुराभउदार ॥ उत्तरयाँकोकरेंउचार ॥ १९ ॥ आहिस्वतंत्रसु विद्याभ्रात ॥ निश्चलकार्यकरविख्यात ॥ विद्याअहेस्वतंत्रसु भ्रात ॥ मनकरकिंचितचहेनसाथ ॥ २० ॥ ॥ ननु ॥ ॥ निश्चलकार्यसुजिउँक्रतुअहे ॥ कारककोफलहितवहुचहे ॥ तिम विद्याजगभीतरजोई ॥ चाहेकर्ममुक्तिहितसोई ॥ २१ ॥ केचितऐसेकरेंवखाँन ॥ सोअसत्यउरलक्षमणजाँन ॥ इमवितर्कवादीवचजोई ॥ दृष्टविरोधवनेनहिंसोई ॥ २२ ॥ तनु अभिमानप्रथमनरधारे ॥ पाछेयागहोमविस्तारे ॥ निरहंकारहोइनरजोई ॥ विद्याब्रह्मताँहिंनरहोई ॥ २३ ॥ अतिविशुद्ध विज्ञानसुजाँते ॥ वचवेदांतालोचनताँते ॥ चरमावृत्तिउदय जाहोई ॥ आतमविद्याभापेसोई ॥ २४ ॥ अनुयाजादिक कारकजेई ॥ कर्मस्वजनिहितचाहेतेई ॥ विद्यानिखिल स्वकारकमारे ॥ ताँतेसुधीकर्मसभडारे ॥ २५ ॥ संगसुविद्याकर्मनकेरो ॥ तेजतिमरजिमउरमेंहेरो ॥ आत्मअनुसंधा

नपरायण ॥ इंद्रयविपयतजेदुखदायण ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥
जौलोआत्माबुद्धिहैमायाकरतनुमाँहिं ॥ तौलौकर्मवृखानहैं
विधिवतनिगमसुताँहिं॥२७॥नेतिनेतियहिवाक्यकरनिखिल
निपेधेजोइ ॥ जानपरातमतत्वउरतजेक्रियासभसोइ ॥ २८॥
भेदपरातमजीवकाभेदकजोविज्ञान॥जौआत्ममहिंहोइशुभ
जैसेभासुरभान ॥ २९ ॥ होवेमायालीनतववेगसकारकसो
इ॥ आत्माकेसंसारकोभापीकारणजोइ॥३०॥ वेदप्रमाणसु
जोहनीनिखिलअविद्यावीर ॥ किसीनकारयकारिणीहोवेव
हुरसुधीर ॥३१॥ अमलाद्वयविज्ञानतेनाशितसाजवहोइ॥
भासितआतमभानक्कैकैसेउपजेसोइ ॥३२॥ नष्टभईउपजे
नहींअजाअविद्यावीर ॥ मैकरतायहिमतिकहोकैसेहोवेधीर
॥ ३३ ॥ ताँतेअहेस्वतंत्रसाविद्याचहेनआँन ॥ मोक्षउपा
एकेवलाबंधकरेसभहाँन ॥ ३४ ॥ तैत्तिरीयआदरसहित
श्रुतीकेहसंन्यास ॥ निखिलकर्मकोत्यागकरधरेज्ञानउरआश
॥३५॥ वाजसनेयीश्रुतितथाऐसेकरेवखाँन ॥ तँतकर्मनमो
क्षहितज्ञानएकपहिचाँन ॥३६॥ विद्याकेसमयागकोत्वंमुख
कीनवखाँन ॥ नहिदृष्टांतसुभाखिओताँमैकोउसमान॥३७॥
बहुकारकफलभेदहैयाँविधियागसुहोइ॥ विनकारकफलएक
हैज्ञानविलक्षणसोइ॥३८॥कर्मनत्यागनमाँहिंसुनपापकह्यो
श्रुतिजोइ ॥ सोअज्ञानीमूढकोज्ञानीकोनहिंहोइ ॥ ३९ ॥
॥ **चौपाई** ॥ माँहिंअनात्मआत्ममतिजोई॥ हैसुप्रसिद्धअ
ज्ञकोसोई॥ तत्त्वंज्ञानीभवमैजेते ॥ पिखेंअसंगआतमातेते॥

॥ ४० ॥ ताँतक्रियासुनिखिलहित्यागें ॥ तत्त्वंज्ञानीजेवडभागे ॥ कर्मविधानकहेंश्रुतिजेई ॥ हैंअज्ञानीजनप्रतितेई ॥ ४१ ॥ तत्त्वमसीयहिवाक्यउदारे ॥ श्रद्धाताँहिंमुमुक्षूधारे ॥ गुरुप्रसादसुनेवचवेद ॥ जीवपरातमलखेअभेद ॥४२॥ मेरुसमानअकंपसुहोई ॥ सदासुखीदुखलहेनकोई ॥ तत्त्वंपदकोअर्थसुजोई ॥ प्रथमपछानेंसम्यकसोई ॥४३॥ ॥ **दोहा** ॥ वाक्यार्थकोज्ञानजोताँतेहोवेधीर ॥ तत्त्वंपदकेअर्थहेंजीवपरातमवीर ॥ ४४ ॥ असीपदारथएकतादोनोकीपहिचान ॥ विखेपरातमएकताहोंहिंवंधसभहान ॥ ४५ ॥ प्रत्यकऔरपरोक्षताजीवसुब्रह्मविरोध ॥ ताँतजलखेचिदेकरसकरेभलीविधिशोध ॥ ४६ ॥ तत्त्वंपदकेअर्थमैकरेलक्षणावीर ॥ लखेचिदात्माएकरसद्वैतरहितह्वैधीर ॥ ४७ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ वीजलक्षणाकोभगवान ॥ जँतिकरोलक्षणाभान ॥ तातपर्यअणवणनोजोई ॥ वीजलक्षणाजानोसोई ॥ ४८ ॥ ॥ **दोहा** ॥ आकांक्षापुनयोग्यतासंन्निधानपहिचान ॥ तातपर्यचौथोमिलेहोवेशाब्दसुज्ञान ॥ ४९ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ वाक्यमाँहिंपदहोंवेंजेते ॥ परस्परंवहुचाँहेंतते ॥ ताँविनअर्थजनाँवेंनाँहीं ॥ यहिआकांक्षाहेपदमाँहीं ॥ ५० ॥ जिमकोघटपटमुखोंअलाए ॥ आनयनहिंतिलसंगमिलाए ॥ तौकछुअर्थजनाँवेंनाँहीं ॥ ताँतेताँहिंचहेंउरमाँहीं ॥ ५१ ॥ याँविधएकपदार्थसुजोई ॥ द्वितियपदार्थसुचाहेसोई ॥ जॉविनअर्थनअपनोहोई ॥ ताँपदकोपदचाहेसोई ॥ ५२ ॥ पुरुपमहीरुहनहींप्रमाण ॥ विना

अकांक्षाकीनवखाँन ॥ अर्थअवाधपदनमैंजोई ॥ कहेंयोग्य ताकोविदसोई ॥ ५३ ॥ नीरसिंचतरुयहीप्रमाण ॥ अर्थअ वाध्ययाँहिमैंमान ॥ अग्निसिंचतरुकोइनमानें ॥ अर्थवाधयाँ माँहिपछानें ॥ ५४ ॥ विनविलंवपदभापनजोई ॥ संन्निद्धी वुधभापेंसोई ॥ घटमानययहिवाक्यप्रमाण ॥ सन्निधानपद कीनवखान ॥ ५५ ॥ प्रथमप्रहरनरघटयहिआखे ॥ द्वितीप्रहर मुखआनयभाखे ॥ तौनहिंहोइवाक्यसुप्रमाण ॥ सन्निद्धीभई जाँतेहान ॥ ५६ ॥ तत्प्रतीतिकरभापणजोई ॥ तातपर्य इहभाष्योसोई ॥ केचितऐसेकरेंउचार ॥ कहिवेदांतीऔरप्र कार ॥ ५७ ॥ परस्परंजिज्ञासाजोई ॥ ताँविपयत्वयोग्यपुनहो ई ॥ यहिपदअर्थअकांक्षाहय्ये ॥ शाब्दसुवोधताँहितेपय्ये ॥ ५८ ॥ क्रियासुश्रवणकरेनरजयही ॥ कारकश्रवणचाहिपुनतवही ॥ तातपर्यकोविपयसुजोई ॥ ताँकोवाधनजाँमैहोई ॥ ५९ ॥ यहीयोग्यताकरेंवखान ॥ जाँकेलखेहोइनर[illegible]ान ॥ पदतेज न्यपदार्थज्ञान ॥ विनव्यवधानहोइजोभान ॥ ६० ॥ यहिआस त्तीकरेंउचार ॥ तातपर्यमिलकारणचार ॥ ननु ॥ तत्प्रतीतिक रभापणजोई ॥ जोपुनतातपर्ययहिहोई ॥ शुकसुअपंडितपाठन माँहीं ॥ शाब्दसुवोधहोइनरनाँहीं ॥ ६१ ॥ यहीसुदूपणमनमै धार ॥ कहिवेदांतीऔरउचार ॥ ६२ ॥ ॥ **दोहा** ॥ तत्प्रतीति केजननकीआहियोग्यताजोइ ॥ तातपर्यपुनवाक्यमेंकहिवेदां तीसोइ ॥ ६३ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ याँविधिपदकोअर्थवि चारे ॥ वहुरोवाक्यअर्थनिर्द्धारे ॥ वरणपुंजपदकरेंवखाँन ॥

पदसमुदायवाक्यपहिचान॥ ६४ ॥ पदकेमाँहिंवृत्तिद्वैअहैं ॥श
क्तिलक्षणानामसुकहैं ॥ करसंक्षेपकरेउच्चार ॥ शक्तिअहेपु
नचीनप्रकार॥६५॥ योगाएकरूढिपुनदूजी॥ योगारूढीभाखें
तीजी ॥ शक्त्यवयवपदभीतरजोई॥ योगाकहेंसुकोविदसो
ई ॥ ६६ ॥ समुदायहिंरूढीसुवखाँने ॥ उभयस्वरूपतीसरी
माने ॥ शक्त्यवयवपंकजपदरहे ॥ पंकजनीकरताँकोक
हैं॥६७॥ द्वितियशक्तिकरपद्मजनावे ॥ सभलोगनकेमनमें
आवे ॥ उभयशक्तिनिनकीहैंजोई ॥ पद्ममाँहिंप्रकटीजगहोई
॥६८॥ दोनोमेंरूढीहैजोई ॥ अतिशयबलीपछानोंसोई॥ याँ
विधिशक्तिभलेनिरधार ॥ वहुरलक्षणाकरेंविचार ॥ ६९ ॥
॥ **ननु** ॥ अंशविकारजीवकोमान ॥ वाक्यअर्थकोहोवेज्ञा
न ॥ ताँमेंदूपणबहुतप्रकार ॥ आरयजनजगकरेंउचार ॥
॥ ७० ॥ ॥ **कविरुवाच** ॥ **दोहा** ॥ मोक्षपंथपरकाशमें
भाखेमैंविस्तार ॥ याँहिपक्षमैंदूपणाताँमैंलेहुनिहार॥ ७१ ॥
॥ **चौपाई** ॥ ताँतेंलक्षणायाँकमाँहीं ॥ औरप्रकारवनेको
नाँही ॥ हावेशक्यसँबंधीजोई ॥ आईइहआवश्यकसोई ॥
॥ ७२ ॥ एकातमकरजहतीजोई॥ गंगाघोपसमाननसोई॥
वाचनमाँहिंविरोधसुजाँते ॥ बनेअजहतीनाँहींताँते॥ ७३ ॥
॥**दोहा**॥ काकनतेदधिराखनोश्रोणोधावतिआहि॥ यहीअ
जहतीनाँहिंयहिमहावाक्यकेमाँहिं ॥ ७४ ॥ ॥ **चौपाई** ॥
भागत्यागलक्षणाजोई॥ सोऽयंदेवदत्तवतसोई ॥ तत्त्वंपदमें
जोडेसोई ॥ दोपनताँमेंआवतकोई ॥ ७५ ॥ मायादेहउपा

धिसुदोई॥तजेलखेइकचेतनसोई॥भूमादिकपंचीकृतभूत॥ ताँहींतेजोभयोप्रसूत ॥ ७६ ॥ पूर्वकृतकर्मनफलजोई ॥ सुखदुखहोइइहाँपुनसोई ॥ भोगालयतनुजानोंवीर ॥ आदिअंतवतअहेशरीर ॥ ७७ ॥ कर्मनतेउपज्योतनुजोई ॥ स्थूलउपाधिआत्मकोसोई॥मनोबुद्धिदशइंद्रियजोई॥पंचप्राणसूक्षमतनुहोई ॥७८॥ सुखदुखकोसाधनहैजोई ॥ भोक्ताकोपुनहोवेसोई॥आत्माकोयहिद्वितीशरीर॥भ्रातवखाँनेकोविदधीर ॥ ७९ ॥ मायानादिअविद्याजोई ॥ कारणदेहवखाँनीसोई ॥हैसउपाधिभेदतेन्यारो॥आत्माकोउरअंतरधारो॥ ॥ ८० ॥ कोशनमाँहिंआतमाजोई ॥ भासतदाकारपुनसोई ॥ स्फटकमणीजिमफूलनसंगा ॥ भासेफूलसमानसुरंगा ॥ ८१ ॥एकअसंगरूपअजजोई ॥ करविचारलखियेपुनसोई॥ त्रिधाबुद्धिकीवृत्तिपछाँनों ॥ जाग्रतस्वप्नसुपुप्तिसुमाँनो ॥ ८२॥ सात्विकराजसतामसजोई॥तीनोगुणतेउपजीसोई ॥ तीनोंआपसमैंव्यभिचारी ॥ मिथ्यातातेंभ्रातनिहारी ॥ ८३ ॥ **दोहा** ॥ ॥ नित्यशुद्धपरमात्मशिवकेवलब्रह्मसुजोइ ॥ बाधअवधिपहिचानियेउरमैलक्ष्मणसोइ ॥ ८४ ॥ तनुइंद्रियमनप्राणचितमिलेंजवैअज्ञान ॥ तवलोकनकीमतिविखेहोइजगतकोभाँन ॥ ८५ ॥ **चौपाई** ॥ तागसिमृलवृत्तिहैजोई ॥ चिहनाज्ञानपछानोंसोई॥ जौलौंहैवद्धवृत्तिविकार॥तौलौउपजेसभसंसार॥८६॥नेतिनेतिसुप्रमाणनपाइ॥करेनिषेधभलेमनलाइ॥चिद्घनअमृतअहेपुनजोई॥

स्वादनकरेस्हद्करसोई ॥ ८७ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ तजेनिखिल संसारक्रोकरेनहीरतिसोइ ॥ नारिकेलनारंजरसपीत्यागे फलसोइ ॥ ८८ ॥ ॥ **नराजछंद** ॥ ॥ नम्रीयतेनजाय तेनक्षीयतेनवर्धहै ॥ नवोनरूपसर्वतेसुआतमाअगाधहै ॥ स्वयंप्रकाशहेसदासुखंस्वरूपजानिये॥ अहंसुसर्वठौरमैअद्वै तरूपभानिये॥८९॥इसेसुज्ञानसूखमैपरेस्वरूपपावने ॥ क थंजगत्तदुःखमैपिखेनिहारभावने ॥ अबोधतेअध्यासतसखे सुज्ञानव्हैजवै॥क्षणेकमाँहिंसर्वसोविलीनहोइहैतवै ॥९०॥ अज्ञानकेअधीनध्यासहोइहैसुनोयथा॥सुमोक्षपंथमैकत्यो विथारकैसभाकथा॥भ्रमातऔरऔरमैजुहोइकैदिखाइहै॥ अध्यासरूपकोविदोडसोजगत्तगाइहै ॥ ९१ ॥ असर्परूप रज्जुमैयथाअहीतिभासहै॥प्रपंचतोपरेशमैतथासुभ्रातभास है॥ विकल्पमायया।विना।चिदातमावखाँनिये॥ अहंअध्यास ताँहिंमैभयोसुआदिमानिये ॥९२॥ अध्यासझूठहैसभोप रेशब्रह्मकारणे ॥ शिवेसुकेवलेपरेसुआतमाविचारणे ॥ प्रकामरागदुःखज्ञानआदिधर्मबुद्धिके ॥ प्रपंचसिंधुहेतुहैंपरे शब्रह्मशुद्धके॥९३॥ ॥**चौपाई**॥ ॥ होइसुपुप्तिअवस्थाज वही॥इच्छादिकनहिंहोवेंतवही॥सुखस्वरूपपरमातमसार॥ हमतवलक्ष्मणलेंहिंनिहार ॥ ९४ ॥ बुद्धिअनादिअविद्या जाई ॥ चितिप्रतिबिंबितभीतरभाई ॥ वहीसुजगमैजी वउचारे ॥ सूखदूखवहुपायसुभारे ॥ ९५॥ आत्माशुद्धअहं इहजोई ॥ साक्षीबुद्धिपछानोसोई॥ आदिपरात्मापूर्णजोई॥

बुध्यवछिन्नभयोपुनसोई ॥ ९६ ॥ चिम्रतिविंबसाक्षिमति जोई ॥ जवयहितीनइकत्रसुहोई ॥ तमअग्निजगलोहसमान ॥ अन्योअन्याध्यासपछान ॥९७॥ ॥ दोहा ॥ ॥जडचेतनताधर्मजेचितअरआतमकेर ॥ वंधहोंहिंजनलोकमें उलटेदोनोहेर ॥ ९८ ॥ गुरुतेवेदसुवाक्यसुनकरविचारवहु भाँति ॥ विद्याअनुभवहोइजनआत्मापिखेइकांत॥९९॥ निरोपाधिपिखआत्मकोतजेसुनिखिलविकार ॥ आतमगोचरजडजितोदेवेदूरनिवार ॥ १०० ॥ चौपाई ॥ मैंप्रकाशअजरूपअनाशी॥ अद्वैनिर्मलसर्वप्रकाशी ॥ शुद्धज्ञानघननिर्मलरूप ॥ पूर्णअक्रियआनँदभूप ॥ १०१ ॥ सदामुक्तमैंजगतमझारी॥ अहेअचिंत्यसुशक्तिहमारी ॥ ज्ञानअतींद्रियअचलस्वरूप ॥ पारअनंतसुअहंअनूप ॥१०२ ॥ वेदवादिजगभीतरजेई॥ निशिदिनभजेंसुमेउरतेई॥ याँविधिआतमकरेविचार॥अहेअखंडितशुद्धउदार ॥ १०३॥ विद्याताँकोहोइउदारे॥ कारकसहितअविद्यामारे॥ यथारसायनविधिसोंखावे ॥ निखिलरोगनिजवहीमिटावे॥१०४॥ वैठइकांतसुइंद्रियजीत ॥ जिनेनिजात्मानिर्मलचीत॥याँविधिआत्मामनमैंधारे॥वाहिरसाधनसभपरिहारे॥१०५॥ज्ञानदृष्टिउरमाँहिंसुध्यावे॥दृढासुस्थितीआत्मनिपावे॥आतमदरशनविश्वसुजोई॥लीनकरेआतममैंसोई॥१०६॥ संभकारणनिजआतमजोई॥ ताँमैंलीनजवैयहिहोई ॥ पूरणचिदानंदमयहोवे ॥ वाहिरभीतरकछूनजोवे ॥१०७॥ ॥ दोहा ॥ पूर्वहिंचित्तसमाधितेअखिलविचिंतेसो

इ॥ ओंकारनिजरूपहेजगतचराचरजोइ॥ १०८॥ ॥ चौपाई॥ जगतनिखिलयहिवाच्यपछाँनों॥ प्रणवताँहिंकोवाचकमाँनों ॥ वशअज्ञानविभावनअैसो ॥ बोधुपरंतकरेनहिंतैसो॥ १०९ ॥ दोहा॥ प्रथमअकारउकारदोत्रितीमकारपछान ॥ अर्द्धविंदुचौथोमिलेसोओंकारवखाँन ॥ ११० ॥ ॥ चौपाई ॥ वर्णअकारसुवाच्यकहीजे॥ लक्ष्मणकानभलेसुनलीजे ॥ विश्वविराटजगतजोजागर ॥ वर्णअकारवाच्यसुउँजागर॥ १११॥ तैजसहिरनगर्भस्वपनाई॥ वाच्यउकारयहीहैभाई ॥ प्राज्ञसुईशसुषुप्तीजोई ॥ कहेंमकारवाच्यपुनसोई ॥ ११२ ॥ रीतिसमाधिप्रथमयहिजोई ॥ तत्वविचारकरेनहिंहोई ॥ वाचकवाच्यअकारसुजोई॥ करेविलीनउकारेसोई॥ ११३॥ वाचकवाच्यउकारसुजेतो॥ करेविलीनमकारेतेतो ॥ वाचकवाच्यमकारसुजोई ॥ माँहिंचिदात्मविलापेसोई ॥ ११४ ॥ अर्धविंदुकोलक्ससुजोई ॥ चिदघनब्रह्मपछानोसोई ॥ कारणप्राज्ञअंतहैंजेते ॥ जाँमेलीनभयेसंभतेते ॥ ११५ ॥ सोपरब्रह्मसुमैचिद्रूप ॥ सदामुक्तिमतज्ञानअनूप ॥ मुक्तउपाधिविमलचिदजोई॥ लखेपरात्माउरमैसोई॥ ११६॥ याँविधिकरेपरात्माभावन॥ निजआनंदतुष्टमनपावन ॥ वाहिरहैंसुपदारथजेते ॥ सनेसनेविसरेंसभतेते॥ ११७॥ सुखप्रकाशनिजआतमरूप॥ सुस्थितहोवेवहीस्वरूप॥ सदामुक्तपुनअचलसुअैसो ॥ वारिसिंधुजगभीतरजैसो॥ ११८॥ यौंसमाधियोगीश्वरकरे ॥ इंद्रयगोचरस

भपरिहरे ॥ निर्जितअखिलरिपूहेजोई ॥ ताँकोदृस्यहाउँमें सोई॥ ॥११९॥ **दोहा**॥ ॥सकलज्ञानपुननित्यतास दात्तिअरुज्ञान ॥ सदास्वतंत्रअलोभिताआनंदपटपहिचान ॥ १२० ॥ पटगुणआतमकेजिनेअैसोनिर्मलचीत ॥ अैसो योगीमोहिकोपिखेभ्रातजगनीत ॥ १२१॥ ॥ **चौपाई**॥ याँविधिनिशिदिनआत्माध्यावे ॥ होइमुक्तमुनिबंधमिटावे॥ परारब्धफलभोगनकरे ॥ नाहिंअभिमानसुरंचकधरे॥१२२॥ प्राणअंतअैसोनरजोई ॥ मेरेमाँहिंलीनवहुहोई ॥ आदिम ध्यअंतजगजोई ॥ भयोदूखकोकारणसोई ॥ १२३ ॥ ॥ ॥ **दोहा** ॥याँविधिजाँनसमस्तपुनतजेकर्मविधिसोइ॥ भजे सुआतमबीचउरअखिलातमहैजोइ ॥ १२४॥ आतममाँहिं अभेदकरपिखेनिखिलपुनजोइ ॥ मोहिपरातमसाथपुनवहुर अभेदसुहोइ॥१२५॥**चौपाई**॥जिमजलसागरजिमपयक्षी रे ॥ नभमेंजिमनभअनिलसमीरे ॥ याँविधिमोमैजाइसमा इ ॥ जगतसगलमिथ्याहुइजाइ ॥१२६ ॥ मिथ्याजगतवि भावनकरे ॥ याँविधिज्ञानजवैउरधरे ॥ यद्यपिलोकमाँहिंमु निरहे ॥ तदपिसुबंधननावहुगहे॥ १२७॥ ॥**दोहा**॥ ॥श्रु तीयुक्तिपुनमानतजगननिपधेजोइ ॥ चंद्रभेददिगभ्रमजिवें वहुरनताँकोहोइ॥ १२८॥ जवलगदेखेनाजगतअखिलसुमे रोरूप ॥ तवलगभजेलगाइमनमेरोरूपअनूप॥ १२९ ॥ श्र द्धालूअतिभक्तिमतयाँविधिकोजोहोइ ॥ हृदेनिहारेमोहिको निशिदिनलक्ष्मणसोइ ॥ १३० ॥ ॥ **सवैया**॥ ॥ श्रुति

सारसँक्षेपसुगोप्यमहानिशचेकरकेममतोहिबताए ॥ मतिमानअलोचनजोइकरेक्षणभीतरपातकराशिमिटाए ॥ सुन्याजगएहुनिहारतजोउरभ्रातजितोतवदेतदिखाए ॥ ममभावनभावतशुद्धमनासुखीभवआनंदरोगमिटाए॥ १३१ ॥ ॥ **छैपेछंद** ॥ मेनिर्गुणकोसेवतजोगुणपारस्वरूपं ॥ अथवासगुणस्वरूपभजेमनलाइअनूपं ॥ सोनरमोहिस्वरूपनअंतररंचविचारो ॥ ताँपदपंकजरेणुसुपरमपुनीतनिहारो ॥ पदरेणुस्पर्शसुलोकत्रयकरेपुनीतसुपापहर ॥ जिमसविताजगपावनोकरेसुमिखिलअंधेरदर ॥ १३२ ॥ ज्ञानअखिलश्रुतिसारभ्रातमैतोहिसुगाए॥शुभदांतवेसुवेघचरणमैंदीनवताए ॥ जोश्रद्धाकरपठेकरेगुरुभक्तिनिरंतर॥सोममरूपसमाइरहैनहिंरंचसुअंतर॥सुनजोममवचननमाँहिंपुनभक्तिहोइजगतांहिंउर ॥ निजभ्रातवखान्योरामजीसिंहगुलाबसुऔधपुरि॥ ॥ १३३ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकांडेश्रीरामगीतायाँपंचमोऽध्यायः॥ ५ ॥ ॥श्रीमहादेवउवाच ॥ **चौपाई** ॥ ॥ यमुनातीरनिवासीजेई ॥ एकसमेमुनिआएतेई ॥ रामनिहारनहेतुसुआए ॥ लवणासुरतेबहुडरपाए ॥१॥ भार्गवच्यवनऋषीश्वरजोई ॥ आगेकीनोमुनिगणसोई॥चाहेंअभयदानदेराम ॥ मुनिअसंखआएतिहँधाम ॥ २ ॥ परमभक्तरघुकुलकेराई ॥ कीनोपूजनताँहिंवनाई ॥ बहुरोमधुरसुवाक्यअलाए ॥ मुनिमंडलकोहर्षउपाए ॥ आवनकोकारणहैजोई ॥ मुनिवरभाखोकरोंसुसोई॥ आजध

न्यममभागसुहाए ॥ तुमकरुणाकरदेखनआए ॥ ३ ॥ दुष्क
रकार्यसुहोवेजोई ॥ आजकरोंतुमरोमैंसोई ॥ आइसकरो
दासमैथारो ॥ ब्राह्मणदेवसुआहिहमारो ॥ ४ ॥ रामवाक्य
सुनअतिहरर्षाए॥च्यवनऋषीश्वरवाक्यअलाए॥प्रथमैसतयु
गमैसुनरामा ॥ भयोदैत्यजगमैंमधुनामा ॥ ५ ॥ अतिधर
मात्माभयोसुचीत ॥ ब्राह्मणदेवसुपूजेनीत॥ ताँपरतुष्टमहेश्व
रभयो ॥ रामत्रिशूलसुताँकोदयो॥६॥ कह्योयाँहिंकरमारो
जाँहीं ॥ भस्मीभावकरेगोताँहीं ॥रावणअनुजाकुंभीनसी॥
सापत्नीताँकेगृहवसी ॥ ७ ॥ ताँमैताँनेसुतउपजायो॥लवणा
सुरतिहँनामकहायो ॥ भीमपराक्रमअतिदुखदाई ॥ दुष्टा
त्मानाहिंजीत्योजाई ॥ ८ ॥ ब्राह्मणदेवसुजहाँनिहारे ॥रामत
हाँतेवहुचुनमारे ॥ रामसर्वहमताँहिंदुखाए ॥ राजनराजश
रणतवआए॥९॥ याँविधिसुनीराममुनिवानी॥ बहुरताँहिं
कोकह्योभवानी ॥ मुनिपुंगवभयकरोनकोई ॥ मैंमारोंल
वणासुरसोई॥ १०॥ मनकेनिखिलसुतापनिवारे ॥ चलिये
सुखसोंभौनमझारे ॥ ऐसेमुनिकोभापभवानी ॥ राजऋषी
हरिभूपमहानी ॥ ११ ॥ भ्रातनप्रतिपुनरामउचारे ॥ कहो
कौनलवणासुरमारे ॥ विप्रनकोसुअभयअतिदाना॥तुममै
कौनदेइवलवाना॥ १२॥ ॥ दोहा ॥ ॥काँकोयहिशुभ
भागहैकीजेवेगउचार॥ ऐसेसुनगिरिजातवैबोलेभरतकुमा
र ॥ १३॥ हाथजोरकहिभरतजीआज्ञादीजेराम ॥ लवणा
सुरमतिमंदकोमैंमारोंसंग्राम ॥ १४ ॥ तवराघवकेवंदपदरि

पुहनबोल्योएहु ॥ नाथसुमेरेवाक्यकोकरुणाकरसुनलेहु ॥
॥ १५ ॥ **चौपाई** ॥ लक्ष्मणलंकासंगरमाँहीं ॥ काजबडेकीने
जगमाँहीं ॥ नंदग्रामममैंभरतउदार ॥ धरसोएदुखसहेअपा
र ॥ १६ ॥ लवणासुरकेमारणकाज ॥ मैंहींजाऊँसुनोरघु
राज ॥ तवप्रसादरघुसत्तमराम ॥ लवणासुरहिंहनोंसंग्राम
॥ १७ ॥ ऐसेरामजबैसुनपायो ॥ लैशत्रुघ्नअंकबैठायो ॥
मथुराराजतिलकहैजोई ॥ तेरेभालकरोंअबसोई ॥ १८ ॥ स
भसंभारसुरामअनायो ॥ लक्ष्मणहाथसुतिलककरायो ॥ नहिं
शत्रुघ्नचहेउरराज ॥ करसुस्नेहदियोरघुराज ॥ १९ ॥ बहु
रोदियोदिव्यकरबाँन ॥ मुखतेरामसुकीनबखाँन ॥ लोकनकं
टकलवणसुजोई ॥ याँहिवानकरहनोसुसोई ॥ २० ॥ दियोम
हेशत्रिशूलसुजोई ॥ पूजततांहिंनिरंतरसोई ॥ ताँकोपूज
थापघरमाँहीं ॥ आपजाइपुनकाननमाँहीं ॥ २१ ॥ जंतूखा
ननिमित्तसुजाए ॥ तहाँजाइबहुजीवनघाए ॥ जौलौंवहुघ
रआवेनाँहीं ॥ प्रथमैंहीतुमद्वारेमाँहीं ॥ २२ ॥ धारशरासन
करमैंवीर ॥ ठाढेरहोतहाँरणधीर ॥ कोपकरेतवसंगलराई ॥
तवहीमरेअसुरकोराई ॥ २३ ॥ ताँकोमारभलेरणमाँहीं ॥ पुन
मधुसंज्ञकवनकेमाँहीं ॥ पाइनगरतहँवासजुकरियो ॥ मेरी
आइसकोउरधरियो ॥ २४ ॥ पंचसहस्रतुरंगमवीर ॥ शतपची
शरथअतिगंभीर ॥ पटशतगजसुमहाँबलवाँन ॥ तीशहजार
पिआदेजाँन ॥ २५ ॥ तुमराक्षसचलहनोंअगारी ॥ पाछै
सेनाऐहैथारी ॥ शिरचूँम्योंमुखऐसअलायो ॥ रामभ्रातमुनि

संगपठायो ॥ २६ ॥ वहुताशीरवादहरिदीनो ॥ रिपुहनको
अभिनंदनकीनो ॥ गयोशत्रुसूदनतहँधाई ॥ रामकह्योति
मकियोसुजाई ॥ २७ ॥ मधुसुतकोरणभीतरमारी ॥ मथु
रापुरीसुतहाँसवारी ॥ बडेबडेतहँदेशवनाए ॥ दानमानदैलो
कवसाए ॥ २८ ॥ ॥ कविरुवाच ॥ **दोहा** ॥ ॥ कथाशत्रुघ्न
इमकहीसुनोकथाअवऔर ॥ वाल्मीकिआश्रमविपेज
नेजनिकजाकौर ॥ २९ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ वाल्मीकिऋ
पिनामसुठाँने ॥ ज्येष्ठोकुशलघुलवोवखाँने ॥ क्रमकरविद्याप
ढीअपारा ॥ भएकुशलकुशलवसुकुमारा ॥ ३० ॥ मुनिहुँज
नेऊतिनकोपाए ॥ वेदपढेमनप्रीतिवढाए ॥ सर्वरमायणकाव्य
महाँन ॥ वालनभाख्योमुनिभगवान ॥ ३१ ॥ त्रिपुरारीशंक
रभगवान ॥ पूर्णसुकियोउमाव्याख्यान ॥ सोवहुकाव्यमहासु
खदाई ॥ वेदवधावनहितमुनिगाई ॥ ३२ ॥ सीयकुमारनऋ
पीपठायो ॥ रागतानवहुभाँतिसिखायो ॥ नूतनवयअति
रूपसुहाई ॥ ताँकीप्रभानवरणीजाई ॥ ३३ ॥ ॥ **कवित** ॥
स्वरमेंउदारदोऊसुंदरकुमारजनुअश्वनीकुमारसेस्वरूपमेंसु
हाएहें ॥ तंतरीवजाँहिंमुनिसंघनमेंजाँहिंपुनफिरेंवनवीव
रागऊचस्वरगाएहें ॥ गावतेनिहारमुनिमंडलउदारमुखकर
लसराहमनमाँहिंविसमाएहें ॥ किन्नरगंधर्वनमहीपनकेदे
शमैसुरेशकेअगारमाँहिंऐसेनाँहिपाएहैं ॥ ३४ ॥ तल
ब्रह्मलोकमैंमहेशहूँकेओकमैंसुहमचिरजीवीदेशदेशहैनिहा
रिआ ॥ रागतानकीगंभीरतानऐसीपिखीधीरतानकाहूँका

नमाँहिंआनकेउचारिआ ॥ ऐसीभाँतिकरतएकांततेबडा
ईमुनिवारवारजाँहिंदिनरैनबलिहारिआ ॥ वाल्मीकिआ
श्रमविशालचिरकालरहेसुखसोंएकांतरामचंद्रकेसुवारिआ
॥ ३५ ॥ अश्वमेधयागकेआरंभरामचंद्रकरेदक्षणाअपारजाँ
हिंमाँहिंसुसुहाईहै ॥ रामभूपभारोयशतेजउजियोराजग
यागनकेमाँहिंसीयहेमकीबनाईहै ॥ जेईवनवासीऋपिरहि
तउदासीजगरामयागमाँहितिनमंडलीसुहाईहै ॥ यज्ञदेख
नेककाजद्विजराजभूमिपालआईवैश्यमंडलीसुहेरविकसाई
है ॥ ३६ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ वाल्मीकिऋपिराजसुआ
ए ॥ कुशलवदोनोसंगलवाए ॥ पुरिसमीपतरुकीपरिछाँहीं ॥
बैठमुनीबगीचेमाँहीं ॥ ३७ ॥ तहँइकांतहरिसोंमतिजूटी ॥ मु
निसमाधिजाँक्षणमेंछूटी ॥ पायकथांतरपृछ्योजान ॥ वा
ल्मीकिकोकुशमतिमान ॥ ३८ ॥ श्रवणचाहिमेउरभैपथ्ये ॥
संक्षेपहिंप्रभुमोहिबतय्ये ॥ देहीकोदृढबंधनजोई ॥ किहँविधिउ
पजेजगमेंसोई ॥ ३९ ॥ मुनिसर्वज्ञसुमोहिबखाँनों ॥ मोको
शिष्यचरणकोजानों ॥ ऐसीसुनकुशकीशुभवानी ॥ वाल्मी
किऋपिआपबखाँनी ॥ ४० ॥ ॥ **वाल्मीकिरुवाच** ॥
बंधमोक्षकोरूपसुजोई ॥ कहुँसंक्षेपसुनोअबसोई ॥ अ
रपुनसाधनकरोंउचार ॥ सुनतेसेपुनकरोकुमार ॥ ४१ ॥
जीवनमुक्तहोहिंजगमाँहीं ॥ याँभीतरसंशयकछुनाँहीं ॥ चेत
नआत्माअहेअदेहा ॥ ताँकोदेहमहानसुगेहा ॥ ४२ ॥ मंत्री
अहंकारठहिरायो ॥ ताँतेतनुअभिमानउपायो ॥ सोआरोप

आत्मकेमाँहीं ॥ भयोतदात्म्यसुताँकमाँहीं ॥४३॥ अपनेकार्यअहेंसुजेते॥ आत्मामाँहिंअरोपेतेते ॥ अहंकारजगभीतरजोई ॥ चिदानंदकरभासेसोई ॥ ४४॥ अहंकारसंकल्पउपाए॥ मनोजीवपदसंगलपाए ॥ पुत्रदारगृहआदिकमाँहीं ॥ करतस्नेहसुनिशिदिनमाँहीं ॥ ४५ ॥ विकलहोंहिंगृहदाराजबही॥ शोककरेउरताडेतबही ॥ अधमोत्तममध्यमपुनदेहा॥ जाँनोंतिनकीतीनोएहा ॥ ४६ ॥ तमसतरजपुनसंज्ञाजेई ॥ जगतस्थितिकेकारणतेई ॥ तमोरूपसंकल्पसुजोई॥ तामसिक्रियाउपावेसोई ॥४७॥ ताँतेबहुततामसीहोवे ॥ कृमिकीटनकीयोनिनजोवे॥ सत्वरूपसंकल्पसुजोई॥ धर्मज्ञानमेंलावेसोई॥४८॥

॥ दोहा ॥ मोक्षअहेसाम्राज्यजोताँतेसोनिजकाइ ॥ दुखसंपूर्णसमेटकैसुखस्वरूपठहिराइ॥ ४९॥ चौपाई॥ रजोरूपसंकल्पसुजोई॥सभव्यवहारउपावेसोइ ॥ रहेसुजगतमाँहिंअतिलाग॥सुतदाराघरमैअनुरागा॥५०॥ त्रिप्रकारसंकल्पसुजोई ॥ त्यागेताँहिंमहामतिकोई ॥ जोसंकल्पआपनोखोइ ॥ सोपरपदकोप्राप्तसुहोइ॥५१॥दोहा॥सर्ववृत्तिकोत्यागकररोकोमनकोवीर ॥ सर्वअर्थसंकल्पक्षयकरोसदामतिधीर॥५२॥ वर्षसहस्रपतालमेंकरेबैठतपजोइ ॥ स्वर्गमाँहिंभूमीविखेउपशमसमनहिंहोइ॥५३ ॥उपशमविनसंकल्पकेऔरउपायनकोइ ॥ ताँहींकरसुखपाइयेमोक्षतँहींकरहोइ॥५४ ॥ हैअनंतसुखपावनोंरंचकनाँहिंविकार:॥ पुरुपारथउरमेंधरोदेसंकल्पनिवार ॥५५॥ तंतूसमसंकल्पमेंनिखिलपदार्थसुजोइ॥

काटेतंतुनजानियेंकहाँजाइपुनसोइ ॥ ५६ ॥ भीतरतेसंकल्प
तजकरौनिखिलव्यवहार ॥ तजसंकल्पसुजीवयहिपावेब्र
ह्मउदार ॥ ५७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ परमारथकोतवपाइसुनो
सुविकारनकेसववीजमिटाए ॥ इहएकअखंडितजोपदहैकुश
वेगतुहीं अवलेहुसुपाए ॥ मनकोसभवृत्तिसुशुद्धकरोसुख
पूरणमाँहितवैदुखजाए ॥ कविसिंहगुलाबसुयाँविधिसोंऋपि
पुंगवताँप्रतिब्रह्मजनाए ॥ ५८ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणे
उमामहेश्वरसंवादेउत्तरकांडनामपष्ठोऽध्यायः॥ ६॥ श्रीमहा
देवउवाच ॥ दोहा ॥ वाल्मीकितेज्ञानसुनकुशउरभ्रांतिनि
वार ॥ उरभीतरमुक्ताभयोवहिरकरेव्यवहार ॥ १ ॥ सवैया
सीयकुमारनकोमुनिपुंगवएहुतवैपुनयातसुनाई ॥ गानकरो
पुरिवीथिनमेंसभठौरनमेंशुभवीनवजाई॥रामसमीपसुगान
करोजुवुलाइसुनेरुचिसोंरघुराई ॥जोकछुभूपसुदेरुचिकैतुम
नाँहिंगहोऋपिएहुसिखाई॥२॥इहभाँतिकह्योमुनिपुंगवजोस
भठोरनगावतवेमनमाने॥चरियासभआपनिपूरविजोवहिरा
मसुनीसुनकेविकसाने ॥ यहिआहिंअपूरवछंदभलेसुरमाय
णगाँहिंमहाहरपाने॥सुनवालनकेमुखकीध्वनिकोनृपकौतक
माँहिंभएगलताने ॥ ३ ॥ पुनएकसमेलहिअंतरकोमुनिमंड
लभूपतिआपवुलाए॥शुभपंडितऔरमहीपसभेपुननैगमऔ
रपुराणिकआए॥शवदागममाँहिंविशारदजेपुनऔरअएद्वि
जजेजरठाए॥इहभाँतिभयेसभसंगमजौतवरामसुगायकथा
लसदाए॥ ४॥ रामसभाजनदेवसभापुनऔरमहीपमहाहर

पाए॥ गायकबालनकोपिखकअनिमेषसभेउरमेंविसमाए॥ लोकसभेपिखबालनकोइहभाँतिउमामुखमाँहिंअलाए॥ रामसमानसुबालउभेजनविंबहिंतेप्रतिबिंबसुहाए॥ ५॥ शीशजटाद्रुमछालनकेपटजौनहिबालनकेतनहोई॥ तौहमबालनराघवमाँहिंसुभेदनिहारसकेंनहिंकोई॥ लोकसभेविसमायरहेइमआपसमाँहिंवखानतसोई॥ सुंदरतानअलापकरेंसुलगेमुनिदारकगावनदोई॥ ६॥ ॥ चौपाई॥ ॥ गावेंरागबालअधिकाई॥ अतिमानुपनहिंवरण्योजाई॥ सुनअपरान्हकालभगवान॥ भरतहिंकीनोंएहुवखान॥ ७॥ दशहजारकांचनदीनार॥ दीजेबालनभरतकुमार॥ दीयोसुवर्णतिनहुँनहिंलीयो॥ यांविधिकोपुनवचनसुकीयो॥ ८॥ हेमनहींनृपकाजहमारे॥ वनवासीफलमूलअहारे॥ यांविधित्यागसकलधनतहाँ॥ गएबालमुनिपुंगवजहाँ॥ ९॥ अपनोचरितसुन्योरघुवीर॥ विस्मितभयेपरमउरधीर॥ सीयकुमारसुरामपछाँन॥ बहुरकियोशत्रुघ्नवखाँन॥ १०॥ ॥दोहा॥ ॥हनूमानसुग्रीवपुनऔरविभीषणधीर॥ अंगदअतिमतिमानकोसंगलिजावोवीर॥ ११॥ वाल्मीकिभगवानऋषिमुनिसत्तमसुप्रधान॥ सीतासहितसुजायकैल्यावोवंदनठान॥ १२॥ जनकसुतानिजशपथकोकरेसुपरिपतमाँहिं॥ करेंप्रतीतिसुलोकसभजानेंकलमपनाँहिं॥ १३॥रामवचनसुनगएसभविस्मयउरमेंमाँन॥ वाल्मीकिभगवानकोकीनोंजाइवखाँन॥ १४॥रामहृदयकीजानसभकहीमुनीश्वरवात॥ सभामाँहिंसोगंदकोक

रहैसीताप्रात ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नारिनकोपतियाँ
जगजोई ॥ निरसंदेहदेवहैसोई ॥ ऐसोसुनमुनिवरकीवा
नी ॥ तिनहूँजायसुरामवखाँनी ॥ १६ ॥ सुनमुनिवाक्यसुरा
मअलाए ॥ राजामुनिसभलेहुबुलाए ॥ सीताशपथसुनेसभ
आँन ॥ दोषअदोपलेहिंमभजाँन ॥ १७ ॥ ऐसेरामवखाँ
न्योजवही ॥ लोकसुदेखनआएसवही ॥ ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यअ
पार ॥ शूद्रसुऔरमहाकपिधार ॥ १८ ॥ वानरऋक्षसभैमिल
आए ॥ कौतकदेखनहितहरपाए ॥ वाल्मीकिऋपिवहुरसुआ
ए ॥ सीतासहितसुपरमसुहाए ॥ १९ ॥ आगेऋपिपाछेसियआ
ई ॥ अधोमुखीउरमाँहिंलजाई ॥ जोरेहाथअश्रुगलआए ॥ य
ज्ञभूमिमेंपरमसुहाए ॥ २० ॥ पिखपद्माजिमसीयसुआई ॥ मु
निकेपाछेपरमसुहाई ॥ सीतायशजनकरेंवखाँन ॥ साधुवाद
अतिभयोमहाँन ॥ २१ ॥ वाल्मीकिमुनिपुंगवजोई ॥ प्रविश्योस
भाभीतरसोई ॥ सीताजाँकसंगसुहानी ॥ वाल्मीकिऋपिवो
ल्योवानी ॥ २२ ॥ दाशरथीतुमरामउदारि ॥ इहहैसीतातुमरी
नारि ॥ ओहिपतिव्रतधर्मपरायण ॥ सुनोरामकरुणाकेआय
न ॥ २३ ॥ विनादोषप्रथमेतुमत्यागी ॥ ममआश्रमढिगसियव
डभागी ॥ जनअपवादमहाडरमाँन ॥ त्यागीसीताविपनमहाँ
न ॥ २४ ॥ रामसुआइसकरोवखाँन ॥ देइप्रतीतिसुसीयम
हाँन ॥ यहिसीताकेउभयकुमारा ॥ यमलभएताँविपनमझा
रा ॥ २५ ॥ हैंतवपूतमहावलवानी ॥ हैसभसाचसुमेरीवा
नी ॥ दशमोसुतप्रचेतसोजोई ॥ मैहोंरामसुनोउरसोई ॥

॥ २६ ॥ अनृतकह्योनहिंकबीचितार्यो ॥ यहितवपूतसुसाच उचार्यो ॥ बहुतहजारवर्षतपभारा ॥ मैंकीनोंयाँजगतम झारा ॥ २७॥ ताँकोफलनहिंमोकोहोई ॥ जौसीतामैंदोषसु कोई ॥ सुनिअसवाल्मीकिकीवानी ॥ तबबोलेपुनरामभवा नी ॥ २८ ॥ ॥ कवित ॥ मुनिजोबखानोंसभसाचउरजाँ नोंमोहिभईसुप्रतीतितबवाक्यसुनपाऐहें ॥ सीयमैंनदोषय हिभईनिरदोषअबसुनोंमुनिराईसभलोकपतीयाऐहें ॥ देव नकेआगेसीयलंकमैप्रतीतिदईयाँहींतेमुनीशहमगेहमाँहिं ल्याऐहें ॥ लोकडरमानसीयतजीमैंमहाँनवनअहेनिहपाप दोषरंचनछुहाऐहें ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ लोकनतेडर कर्योअकाज ॥ सोमुहिक्षमाकरामुनिराज॥ कुशलवनामबा लहेजेई ॥ मोतेभएमुनीवरतेई ॥ ३० ॥ शुद्धसीयमैंजाँनी चीत ॥ ताँमैरहेसदाममप्रीति ॥ तबराघवकउरकीजाँन ॥ सुरसभआएवैठविमाँन ॥ ३१ ॥ कमलासनकोआगेधार॥ सुरवरआएभूमिमझार ॥ प्रजासुसगलरामकीआई॥ यज्ञ भूमिजहँवनीसुहाई॥ ३२॥ सीतायागभूमिमैंआई॥ पाटंव सनतनमाँहिंसुहाई ॥ जोरउभयकरभूमिनिहार॥ सीतामुख तेकीनउचार ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ रामअन्यजौनाचहोंमैंधरणी उरमाँहिं ॥ तौदेवीअस्यानखंदेहिसुआपनमाँहिं ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ऐसेसीताशपथउचारी ॥ निकस्योदिव्यसिंहास नभारी ॥ सिंहासनअद्भुतहैजोई ॥ भूमिविवरतेप्रकट्योसो ई॥ ३५॥ सिंहासनरविसमहैजोई॥ नागेंद्रनशिरधार्योसोई॥

भूमीदेवी भुजापसार ॥ सीतामाँहिंस्नेहवहुधार ॥ ३६ ॥
स्वागतप्रश्नसुमुखोंअलाई ॥ सिंहासनमैंलीनविठाई ॥ आ
सनवैठीसीताजवही ॥ चलीपतालविवरकोंतबही ॥ ३७ ॥
सीताशिरसुरफूलवसाँवें ॥ धन्यधन्यमुखमाँहिंअलाँवें ॥ अं
तरिक्षसुरकरेंवडाई ॥ सीतासतवरण्योनहिंजाई ॥ ३८ ॥
स्थावरजंगमसगलेजेते ॥ धन्यधन्यभूभापेंतेते ॥ वानरआँ
हिंजगतमेंजेते ॥ सीयशपथहितआएतेते ॥ ३९ ॥ केचितचिं
तामेंगलतए ॥ केचितध्यानपरायणभए ॥ केचितराघवनय
ननिहारें ॥ केचितसीताचीतचितारें ॥ ४० ॥ एकमुहूर्त्तसुआ
एजेते ॥ भएतूशनीसगलेतेते ॥ सीयप्रवेशसुहेर्योजवही ॥ भए
मोहवशसगलतवही ॥ ४१ ॥ कार्यभविष्यतगौरवजोई ॥
रामजाँनसभउरमैंसोई ॥ जनअजानइमशोचेंरामा ॥ लेले
जनकसुताकोनामा ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणऋपिसगलेतवआए ॥ र
घुनंदनकोबोधउपाए ॥ मनोस्वप्नतेजागेहरी ॥ रामअनंतरक्रि
यासुकरी ॥ ४३ ॥ ऋत्विजऋपिजेमखमैंआए ॥ रामसभनको
दईविदाए ॥ धनअररत्नसुबहुविधदियो ॥ रामसुतोपसभन
कोकियो ॥ ४४ ॥ दोनोलिएसुरामकुमार ॥ आएअवधसुभव
नमँझार ॥ ताँदिनतेलेरामुरारे ॥ विपयभोगसभदूरनिवा
रे ॥ ४५ ॥ आत्मध्यानसदाउरधारें ॥ वैठइकंतसुतत्वविचा
रें ॥ ध्यानउत्थानभएरघुराई ॥ एकसमेकौसल्याआई ॥ ४६ ॥
प्रियवादनिकौसल्यामात ॥ रामनरायणपिखसाक्ष्यात ॥ भ
क्तिभाइहरिकीढिगआई ॥ पदवंदनकरअतिहर्षाई ॥ ४७ ॥

रामआदिजगकीत्वंकहिये ॥ आदिमध्यतवअंतनपइये ॥ परानंदपरमात्मसुदेव ॥ पूर्णसुईश्वरपुरुषअभेव ॥ ४८ ॥ मेरेपुण्यअधिकजगभए ॥ त्वंममगर्भविषेभवलए ॥ अंतसमयमेरोअबआयो ॥ मोहभयोमेउरअधिकायो ॥ ४९ ॥ अज्ञानजभवबंधनजोई ॥ अबलौनाँहिंविनाश्योसोई ॥ भवकोबंधविनाशकजोई ॥ किहँविधिममअबज्ञानसुहोई ॥ ५० ॥ करसंक्षेपज्ञानममकहो ॥ मेरेसुतसंदेहनदहो ॥ अतिशुभजरजरदेहपुरानी ॥ सुननिर्वेदमाइकीवानी ॥ ५१ ॥ धर्मात्मावहुरामदयालु ॥ कहितमातप्रतिवाक्यरसाल ॥ मार्गसुतीनत्रथममेगाए ॥ साधनमुक्तिपरमसुखदाए ॥ ५२ ॥ कर्मयोगजगएकभनीजे ॥ ज्ञानयोगदूसरलखलीजे ॥ भक्तियोगतीसरपहिचाँन ॥ तीनोसाधनकरवखाँन ॥ ५३ ॥ भक्तिपंथतिनतीनोंमाँहीं ॥ परमपूज्यजाँनोंजगमाँहीं ॥ माताभक्तिसुतीनप्रकार ॥ गुणकेभेदभयोविसतार ॥ ५४ ॥ ॥ दोहा ॥ जैसोजाँकोहोइपुनयाँजगमाँहिंसुभाइ ॥ तैसीमेरीभक्तिकोयाँजगमाँहिंकमाइ ॥ ५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जोहिंसाकोमनमेधारे ॥ दंभमानमत्सरविसतारे ॥ भेददृष्टिकरमोकोध्यावे ॥ सोममतामसभक्तकहावे ॥ ५६ ॥ फलअभिसंधिभोगउरधारे ॥ धनहितममपूजाविस्तारे ॥ भेददृष्टिकरपूजेजोई ॥ राजसभक्तकहीजेसोई ॥ ५७ ॥ कर्मबंधकेनाशनिमित्ता ॥ परमात्मामेअर्पेचित्ता ॥ वाकर्त्तव्यजाँनमेध्याए ॥ भेदबुद्धिवहुसात्विकगाए ॥ ५८ ममगुणकथासुनततत्काल ॥ मोमेंउपजेभ

क्तिविशाल ॥ ममअनंतगुणसागरमाँहीं ॥ वृत्तिनिरंतरअं
तरनाँहीं ॥ ५९ ॥ जिमगंगाकीयाँजगधारा ॥ चलेनिरंत
रसिंधुमझारा ॥ निर्गुणभक्तियोगहैसोई ॥ फलनहींचाहेउ
रमेंकोई ॥ ६० ॥ हैवहुतत्वभक्तिममजोई ॥ चारप्रकारदे
इफलसोई ॥ इकसालोक्यऔरसामीप्य ॥ सारूप्यरसायुज्य
प्रदीप ॥ ६१ ॥ परममभक्तनफलकोचहें ॥ मेरोसेवनही
उरगहें ॥ महाभक्तिकोमारगजोई ॥ मातपछानोंउरमेंसोई ॥
॥ ६२ ॥ मेरोभावतांहिंकरपाए ॥ गुणत्रयबंधनदूरमिटाए
॥ मनमेंनहिंकछुइच्छाधरे ॥ निजधर्मनकोनिशिदिनकरे ॥
॥ ६३ ॥ उत्तमकर्मयोगविस्तारे ॥ अतिहिंसाकोदूरनिवारे ॥
वडिनमाँहिंममदृष्टिनिहारे ॥ पूजाउस्ततिवंदनधारे ॥ ६४ ॥
ममदृष्टीकरभूतनिहारे ॥ रहेअसंगनझूठउचारे ॥ महतनको
अतिमानसुकरे ॥ दुखिअनमाँहिंदयाउरधरे ॥ ६५ ॥ निजस
मानमेंमैत्रीधारे ॥ शमदमादिसाधनविस्तारे ॥ सुनवेदांत
वाक्यमनलाए ॥ मेरानामसदामुखगाए ॥ ६६ ॥ सतसंग
तिउररिजुताभजे ॥ अहंभावउरतेसभतजे ॥ मेरोध्यानसदा
उरधरे ॥ मनकीसगलमैलपरहरे ॥ ६७ ॥ ममगुणसुनेंकान
मेंजवही ॥ मोकोपाइवेगनरतवही ॥ फूलगंधजिमवायुअ
धीनें ॥ धसेप्राणमेंसभजनचीनें ॥ ६८ ॥ तिमसभभूतनमेंसु
नमाइ ॥ मेंनिजआत्मारव्योसमाइ ॥ मूढवुद्धिनहिंताँहिंपछाँ
नें ॥ वाहिरवहुपूजाविधिठाँनें ॥ ६९ ॥ क्रियाजुवहुप्रकारनर
करे ॥ लाइद्रव्यवहुमखविस्तरे ॥ वहुआडंबरकरजुकोई ॥

ताँकरतोपनमोकोहोई ॥ ७० ॥ भूतनकोअपमानजुकरे ॥ मेरीपूजाअतिविस्तरे ॥ ताँकरमोहिनपूजनहोई ॥ मूढभयोभवभीनरसोई ॥ ७१ ॥ निजकर्मनकरप्रतिमामाँहीं ॥ तबलगमेपूजेजगमाँहीं ॥ जबलगसभभूतनकेमाँहीं ॥ निजपरमात्माहेरेनाँही ॥ ७२ ॥ आत्माऔरपरात्मामाँहीं ॥ भेदनिहारेजोउरमाँहीं ॥ मृत्युताँहिंकोबहुतडराए ॥ बारंबारदूखबहुपाए ॥ ॥ ७३ ॥ ताँतेभिन्नभूतहेंजते ॥ समताबुद्धिपिखेसभतेत ॥ ऐसोज्ञानसदाउरभजे ॥ मोहिअभिन्नजानपुनभजे ॥ ७४ ॥ भूतजितेयाँजगतमँझारे ॥ मनकरसभकोवंदनधारे ॥ मोकोचेतनलखेअनूप ॥ सभभूतनमेंजीवस्वरूप ॥ ७५ ॥ ताँतेभेदपिखेनहिंकोई ॥ जीवपरातमएकोदोई ॥ भक्तिसुज्ञानयोगहेजोई ॥ मातामैभाख्योतेसोई ॥ ७६ ॥ ॥ दोहा ॥ इनदोनोंमेंएकतरकरेअलंबनजोइ ॥ मुक्तहोइनरजगतमेंपाइपरमपदसोइ ॥ ७७ ॥ ॥ चौपाई ॥ मातामैंसभकेरिदमाँहीं ॥ भक्तियोगकरमोरेमाँहीं ॥ पुत्ररूपवामोहिचितारें ॥ शांतिलहेंभवबंधनिवारें ॥ ७८ ॥ सुनयाँविधराघवकीवानी ॥ भइमातआनंदभवानी ॥ सदारामउरमाँहिंसुध्यायो ॥ जगबंधनतिनदूरमिटायो ॥ ७९ ॥ तीनगतीतिनदीनीत्याग ॥ परमागतिपाईबडभाग ॥ रघुपतिप्रथमबखान्योजोई ॥ कैकेईधरयोगसुसोई ॥ ८० ॥ श्रद्धाभक्तिशांतिउरनीत ॥ रघुकुलतिलकभज्योतिनचीत ॥ डारप्राणअमरापुरिगई ॥ दशरथसहितमोदमनभई ॥ ८१ ॥ श्रीलक्ष्मणकीमाताजोई ॥ अ

तिशयविमलमतीउरसोई ॥ मातलोकमेंतनकोत्याग॥ भरता
पासगईवडभाग॥ ८२ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमाम
हेश्वरसंवादेउत्तरकांडेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ श्रीमहादे
वउवाच ॥ चौपाई ॥ यौंविधिवीततभयोसुकाल॥ भीम
पराक्रमभरतविशाल ॥ ताँकोलेनयुधाजितआयो॥ सेनास
हितसुवहुतसुहायो ॥ १ ॥ रामचंद्रकीआइसमान॥ गयोभ
रततहँअतिवलवान ॥ तीनकोटिगंधर्ववलारे ॥ भरततहाँ
रणभीतरमारे॥ २॥ द्वैपुरतहाँसुभलेवनाए॥ ताँमेंनिजसुतता
हिंवसाए ॥ पुष्करवतीनामपुरिजोई ॥ पुष्करसुततहँथाप्यो
सोई ॥ ३ ॥ तक्षशिलापुरऔरवनायो ॥ तक्षनामसुततहाँव
सायो ॥ तहँअभिषेकवालद्वैकीनें ॥ धनअरधान्यसंगभटदी
नें ॥ ४ ॥ वहुरभरतनिजपुरिकोआयो ॥ रघुवरसेवामेंमन
लायो॥ वहुरप्रसन्नरामअतिभए॥ लक्ष्मणप्रतियहिवचनअ
लए ॥५॥ दोउकुमारसंगअवलीजे ॥ पश्चमदेशपयानोकी
जे॥ दुष्टात्मासभकेअपकारी॥तिनभिल्लनकारणमेंमारी॥६॥
अंगदचंद्रकेतुसुतजेई ॥ महापराक्रमजगमेंतेई ॥ दोनोंकेदो
नगरवनीजे ॥ राजतुरगधनरत्नसुदीजे ॥ ७॥ राजतिलक
वालनदेभाल ॥ मेढिगआवोवेगविशाल ॥ रघुवरआइस
शिरपरमाँन ॥ गजतुरंगरथसैन्यमहाँन ॥८॥ लैकरलक्ष्मण
संगसिधारे ॥ अरिसंवूहसभैतहँमारे ॥ राजतिलकसुतभा
लकराए ॥ लक्ष्मणवहुरअयोध्याआए ॥ ९ ॥ रघुपतिपाद
कंजहैजोई ॥ लक्ष्मणभजेनिरंतरसोई॥ वहुतकालजयभयो

वितीत ॥ रामधर्मपथिअतिदृढचीत ॥ १० ॥ रामनिहारन
काजसुआए ॥ कालरूपीश्वरभेपवनाए ॥ लक्ष्मणकोमुख
एहुअलाए ॥ मेरीसारकहोनृपजाए ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ अ
तिवलिकोमैदूतहोंलक्ष्मणजानोवीर ॥ पुरुषोत्तमरघुवीरको
वेगदिखावोभीर ॥ १२ ॥ महारूपीशप्रधानकोवडोसंदेसोआ
हि ॥ जायकहोकरवेनतोरामचंद्रनरनाह ॥ १३ ॥ सुनकेतां
केवचनकोलक्ष्मणगयोसुधाइ ॥ आयोतपधनद्वारमेंराघव
कह्योसुनाइ ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसेलक्ष्मणभा
प्योजवही ॥ रामचंद्रबोलेपुनतवही ॥ लक्ष्मणतांकोशीघ्र
सुआँन ॥ वहुनकरोतांकोसनमाँन ॥ १५ ॥ लक्ष्मणमुखते
तथावखाँन ॥ गयोतहाँजहँमुनीमहाँन ॥ मुनितापसकोभीत
लिआयो ॥ तेजप्रभातनमेंलशकायो ॥ १६ ॥ ज्वलतआग
घृतडारजेसे ॥ दीनसुतेजताँहितनतेसे ॥ सिंहासनवैठश्रीरामा ॥
सूरजकोटितेजतनधामा ॥ १७ ॥ मुनिवररामसमीपाहिंगयो ॥
मधुरवाक्यमुखमाँहिंअलयो ॥ रामचंद्रवर्द्धस्वसुराई ॥ त्वं
भूपतिसुप्रजासुखदाई ॥ १८ ॥ रामचंद्रमुनिपूजनकरिओ ॥
कुशलक्षेममुखमाँहिंउचरिओ ॥ रामचंद्रपूछ्योमुनिराई ॥
कुशलअहेतुमरेरघुराई ॥ १९ ॥ आसनदिव्यमुनीवैठायो ॥
रामचंद्रमुखवाक्यअलायो ॥ जाँहिंनिमित्तमुनीतुमआए
॥ मोकोकहोसुकाजसुनाए ॥ २० ॥ रामवाक्यमुनिसुन्यो
सुजवही ॥ बोल्योभूपतिकोमुनितवही ॥ रामकाजमैकरों
वखाँन ॥ याँकोलखेनकोनरआँन ॥ २१ ॥ औरनकोईसुनेसु

कॉंन॥रामनकाहूँकरोवखाँन ॥ जोकोऊजनसुनेनिहारे॥रा
मताँहिंतुमहारोमारे ॥ २२ ॥ रामप्रतिज्ञातथाअलाइ ॥ ल
क्ष्मणकोपुनकह्योसुनाइ ॥लक्ष्मणरहुत्वंद्वारमाँहीं ॥ हमइकं
तकोआवेनाँहीं ॥२३॥ जेकोआवेगोइहठाँहीं ॥ विनसंशय
मैंमारोंताँहीं ॥ रामकह्योपुनमुनीसुनाए ॥ किनकेपठेमुनी
वरआए॥२४॥ जोतेरेमनभीतरबात ॥ मोकोकहोमुनीवि
ख्यात ॥ ऐसेसुनिरघुवरकीवानी ॥ आपमुनीश्वरकह्योभ
वानी ॥ २५॥ साचवखाँनोंसुनियेंराम ॥ मोहिपठायोब्रह्मा
काम॥ हेप्रभुकंजनयनसुखकारे ॥ मैंआयोइमपासतुमारे॥
॥२६॥ पूर्वजन्योमैंपूततुमारो ॥ रामपरंतपउरमैंधारो॥माया
संगमतेमैंभयो॥कालनाममेरोनिर्मयो॥ २७॥ मैंसभजगको
हरनेहारा॥ कालनाममवेदउचारा ॥ देवऋपीजाँपूजनधा
रें ॥ ताँब्रह्मतेयैनउचारे॥२८॥ भगवनअवपालोसुरलोक ॥
हमेरपावनकरोसुओक॥ मायाकरसभलोकसँहार ॥ प्रथम
एकतुमरहमुरारि ॥ २९ ॥ मायानारिसहितसुखपायो ॥ प्र
थमपूतमोकोतुमजायो ॥ शेपनागदूसरसुतभए॥ जलकेसाँ
हिंशयनजिनकए ॥ ३० ॥ मायाकेद्दसुतउपजाए ॥ महाव
लीजगमाँहिंसुहाए ॥ मधुकैटभदोअसुरसँहारे ॥ मेददईज
लमेंविस्तारे ॥ ३१ ॥ पर्वतसहितमेदनीजोई ॥ ताँतेतुमउ
पजाईसोई॥तुमस्वनाभितेकमलउपायो॥ताँकीनाभिविपेमैं
जायो ॥ ३२ ॥ प्रजाऽध्यक्षतुममेठहिरायो ॥ सर्वजगतम
मपाछेलायो॥जवमोतेनहिंपालनभयो॥मैंतबनाथसुतोहि

अलयो ॥ ३३ ॥ पालोविश्वहनोप्रभुतेई ॥ ममवीर्यअपहा रकजेई ॥ कश्यपकेघरतवतुमजायो॥ वामनरूपविष्णुतुमपा यो ॥ ३४ ॥ ॥ भूकोभारसुनिखिलउतार्यो ॥ बाँधबलीराक्ष सगणमार्यो ॥ धरणीधरतुमईशनरायण ॥ प्रजासुजवेदु खाईरावण ॥ ३५ ॥ रावणकोवधउरमेंधार ॥ मरतलोकतु मगएमुरारि॥दशइकवर्षसहस्रभवान॥देवनमेंहरिकीनवखाँ न ॥ ३६॥ तेअबवर्षसगलवितगए॥ सफलमनोर्थसुतुमरेभ ए॥मानवलोकआयुहैजेती॥ भईसपूर्णसगलअबतेती॥३७॥ तांपसरूपकालहैजोई ॥ तुमरेपासपठायोसोई ॥ भूमंडलमें राजकमावन ॥ अबलौंजौमतिहैमनभावन ॥ ३८ ॥ तौतु मराजकरोधरमाँहीं॥ तवकल्यानरमोसुखमाँहीं॥ऐसेकह्यो पितामहआप ॥ सुनोरामनृपरवीप्रताप॥ ३९॥ जौपुनगम नविखेमतिधारी॥देवलोकमैरामपुरारी ॥ तौसभदेवनकेज्व रजावें॥विष्णुनाथसुरलोकसुआवें॥ ४० ॥ सुनियाँविधिवि धिकीशुभवानी॥ कालउमामुखमाँहिंवखाँनी॥ हसकरराम सुकीनवखाँन ॥ सुनोसर्वहरकालमहाँन॥ ४१ ॥ तोहिवखा न्योमोकोजोई ॥ अहेइष्टतरमोकोसोई ॥ अतिसुतोपमेउर निर्मयो ॥ तेरोआजुआगमनभयो ॥ ४२ ॥ तीनलोकजे जगतमंझार ॥ तिनपालनहितमेअवतार ॥ तवकल्यानविकुं ठहिंआऊँ॥ देवनकेसभतापमिटाऊँ ॥ ४३ तुमआएअतिमे रेप्यारे ॥ याँभीतरकछुनाँहिंविचारे ॥ ममसेवकसुरकार्यसु जेते ॥ पूतसवारोंमैसभतेते ॥ ४४ ॥ ब्रह्माजोजोकरेवखाँन॥

सोसोकारयकरोंमहाँन॥ कालरामइमकरतउचार॥दुर्वासा ऋपिआएद्वार ॥ ४५ ॥ लक्ष्मणप्रतितिनवाक्यअलाए॥ शीघ्ररामभेदेहिदिखाए॥ कार्यसुएकबडोहैमेरो॥ होवेवेगन लगेअवेरो॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मणसुनमुनिवाक्यको ज्वलततेजअतिपेख॥रामसाथक्याकाजहैमोकोकहोअशेप ॥४७॥ कार्यसुतुमरोजोअहैमैंसभकरोंवनाइ॥राजाकारय मैंलगेदोघटिकाठहिराइ ॥ ४८ ॥ सुनलक्ष्मणकेवाक्यकोको पेमुनीविशाल॥ताम्रवर्णदोनोभएताँकेनयनसुलाल॥४९॥ भूपतिकोयाँक्षणविखेलक्ष्मणजौनदिखाँहिं॥रामदेशरघुवंश कोभस्मकरोंक्षणमाँहिं ॥५०॥ ॥ चौपाई॥ ॥याँविधि घोरवचनसुनपाए॥ मुनिदुर्वासाकोपअलाए॥लक्ष्मणमन मैंकीनविचारा॥वचनअहैमुनिवरकोभारा॥५१॥ सर्वना शतमोवधजोई॥श्रेष्टअहेजगभीतरसोई॥ऐसेलक्ष्मणमनमें धार ॥ गयोतहाँजहँराममुरारि ॥५२॥ दुर्वासाआयोजु महाँन॥लक्ष्मणरामहिंकीनवखाँन॥सुनकैरामवचनउरधरि ओ॥तपसीकालविसरजनकरिओ॥५३॥शीघ्रहिंराममही पतिआए॥अत्रीसुतमुनिदर्शनपाए॥रामजोरकरवंदनधारी॥ आदरसहितसुप्रश्नउचारी॥५४॥ कारयअहेतुमारोजोई॥ कहोमुनीश्वरकीजेसोई॥ याँविधिसुनिरघुवरकीवानी ॥ दु र्वासापुनकह्योभवानी॥५५॥ वर्षसहस्रधयोंउपवास॥ आ जविसर्जनकीमनआश ॥ भोजनसिद्धयथेष्टसुदीजे ॥ यही राममकारयकीजे ॥ ५६ ॥ सुनीराममुनिवरकीवानी॥प

रमतोपयुतभयभवानी ॥ सिद्धअन्नवहुरामभँगायो ॥ मुनि केआगेआनटिकायो ॥५७॥ मुनिसमअम्रतसभोजनकयो ॥ वहुरमुनीनिजआश्रमगयो ॥ कालकहीसुप्रतिज्ञाजोई॥राम चितारीवहुरोसोई ॥ ५८ ॥ शोकदुःखआरतमनराम ॥ भए सुव्याकुलपूरणकाम ॥ मनअतिहीनसुभूमिनिहारें ॥ मुखतेरा मनकछुउच्चारें ॥५९ ॥ ॥ दोहा ॥ मनकररामसुजाँनिओ लक्ष्मणहैहतरूप ॥ अखिलेश्वरअवनीपिखेंभजीसुमौनअनू प ॥ ६० ॥ लक्ष्मणरामहिंदेखकरभयोसुदुखीमहान ॥ मौनभ जोंचिताकरेंस्नेहपाशगलतान ॥ ६१ ॥ लक्ष्मणकह्योसुभोहि हततजोतापरघुवीर ॥ कालगतीइहभाँतिकीपूर्वहिंरचीसुधी र॥ ६२ ॥ रामंप्रतिज्ञाजोतजोतौमुहिनरकसुहोइ ॥ जौमोमेंत वप्रीतिहैकरोरामअवसोइ ॥ ६३ ॥ तजशंकामोकोहनोधर्म धरोउरमाँहिं ॥ रामसुनतयाँवातकोकरविचारमनमाँहिं ॥ ॥६४॥मंत्रिनसहितवसिष्टकोरामसुकह्योसुनाइ॥ मुनिआव नवचकालकेसगलेदिएजनाइ॥ ६५ ॥ रामअमातनकोकही करीप्रतिज्ञाजोइ ॥ मंत्रिनसहितवसिष्टकेसुनेरामवचसोइ॥ ॥ ६६ ॥ मंत्रिनतवकरजोरकैकीनोएहुवखाँन ॥ रामकर्म अक्लिष्टभूभारहरणसुनकान ॥ ६७ ॥ पूरवहीयहिनिर्मयोल क्ष्मणसंगवियोग॥ ज्ञानचक्षुकरजानिओरामनकीजेशोग॥ ॥ ६८ ॥ नाँहिंप्रतिज्ञाछोडियेलक्ष्मणतजभगवान ॥ तुमहिं प्रतिज्ञाजौतजीधर्महोइतवहान॥ धर्मनाशतेलोकत्रयहोवेंना शसुधीर ॥ त्वंसभलोकनपालकोअहेंरघूत्तमवीर ॥ ६९ ॥ ल

क्ष्मणएकहिंकानजोसुनोरामदैकान॥ तीनलोकपालनकरोतु
मभूपतिमतिमान ॥ ७० ॥ वचनअनिंदितधर्मयुतसुनेरामति
नकान ॥ सभामध्यरघुवीरतबलक्ष्मणकीनवखाँन ॥ ७१ ॥
॥ **शंकरछंद** ॥ उठयाहिलक्ष्मणवेगत्वंनहिंधर्महोवैहान॥ जो
त्यागऔवधदेहकोजगसंतकहितसमान॥इहभाँतिरघुवरभा
खिओतबदुःखव्याकुलहोइ॥ श्रीरामकोसुप्रणामकरघरगयो
लक्ष्मणसोइ॥७२॥पुनगयोसरयूतीरमेंआचम्यसरयूनीर॥न
वद्वारनीकेरोककरकरजोरकरधरधीर ॥ शिरमाँहिंप्राणसुरो
ककैउरब्रह्मअक्षरध्यान॥वासुदेवस्वरूपअव्ययवेदकरतवखाँ
न॥७३॥पदताँहिंकोपरधामजोवहुचितेचीतमँझार ॥ शुभवा
युरोधनयुक्तलक्ष्मणशेषधरणिअधार॥ सभदेवकिंनरनागव
निताभृत्यमंगलगाँहिं ॥ यशगाँहिंलक्ष्मणदेवऋषिमुनिशीश
फूलवसाँहिं ॥ ७४ ॥ ॥ **दोहा** ॥ ॥ देवअगोचरहोइकरव
खनसहितशरीर ॥ लक्ष्मणलेसुरपुरगयोइंद्रतहाँसुरभीर ॥
॥ ७५ ॥ विष्णुचतुर्थोभागजोलक्ष्मणआहिप्रवीन॥ देवऋषी
श्वरपेखतिंहँविधिसोंपूजनकीन॥ ७६ ॥ ॥ **चौपाई** ॥ ॥ ल
क्ष्मणदेवलोकमेंआयो॥ समाचारसगलोसुनपायो॥सिद्धलो
कगतयोगीजेई॥ ब्रह्मासहितआयपुनतेई ॥ ७७ ॥ ॥ **दोहा**
प्रीतिसहितलक्ष्मणपिखेधारेशेषस्वरूप॥शोभावरणनकोकरे
भईसुकांतिअनूप॥ ७१ ॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमाम
हेश्वरसंवादेउत्तरकांडेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ **श्रीमाहादेवउ
वाच** ॥ कवित ॥ लक्ष्मणत्यागवडभागरामदुखीभयेलक्ष्म

णरूपमनमाँहिंताँचितारिओ॥नैगमअमातजेवसिष्टगुरुल्या
तपुरिवासकेबुलाइजनरामयौंउचारिओ॥ भरतकोराज़अव
देतमैंसमाजसभमहामतिभ्रानदेशकरेप्रतिपारिओ॥वेगभैंहूं
जाऊँनहींपुरिमैवसाऊँअवलक्ष्मणपादजाँहिंदेशमैपधारि
ओ॥१॥ ऐसेजवरामचंद्रमुखमैंवखाँनकीयोदेशपुरिवासी
जनसभैडहिकाएहैं॥ छिनमूलद्रुमकेसमानसुमलानभएगिर
धरमाँहिउरमाँहिंदुखपाएहैं ॥ रामकीसुवानीसुनीकानमैंभ
वानीजवभरतउदारधरमाँहिंमुरछाएहैं॥पाइकैसंभारतिनकी
नोहैउचारपुनराजनिंदकरीवहुदोपदिखलाएहैं॥ २ ॥ दोहा॥
साचीशपथसुमैंकरोंलोविनहेरघुनंद ॥ स्वर्गभूमिकोराजजो
चाहोंनासुखकंद॥३॥ तवपदकंजनशपथहैराजनचाहोंधीर॥
कुशलवकोअवदीजियेराजसुनोरघुवीर ॥ ४॥ कोसलमैकु
शटीकियेउत्तरमैलवशाम ॥ रिपुहनल्यावनहेतुअवदूतपठोसु
खधाम॥५॥ ॥अडिल॥ ॥ हमसभहनकोगमनसुनावेजा
इकै ॥ सुनशत्रुघ्नसुआवेराघवधाइकै ॥ भरतवखाँनेवैनप्र
जासुनपाइआ ॥ हाभएनिराशसुचीतपरमडरपाइआ॥६॥
॥सवैया॥ रामवियोगच्चितारच्चितेसभकातररूपप्रजासुनि
हारी॥श्रीभगवानवसिष्टदयायुतरामसुनाइसुवातउचारी ॥
रामपिखोधरमाँहिंगिरीरिदअंगमआहिप्रजासभसारी॥जो
इनकेउरमाँहिंरुचेअवसोइप्रसादकरोसुमुरारी॥७॥मुनिपुंग
वकेयहिवाक्यसुनेतवरामप्रजासभआपउठाई॥ कहिकौनहि
काजकरोंतुमरोकरप्रीतिकह्योसभकोरघुराई ॥ तवजोरप्र

जानिजहायनकोरघुनायकक्रोधहिवातअलाई ॥ जहँआपच लेरघुनंदनजूहमसंगचलेंसहवांधवभाई ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ हमरीयहीसुप्रीतिहैधर्मअखैपुनआहि ॥ तवपाछेहमचालणा हमरेदृढमनमाँहिं ॥ ९ ॥ सवैया ॥ सुतदारसवंधुपशूसगले अवरामचलेंहमसंगतिहारे ॥ सुतपोवनवासुरलोकचलोपुरि माँहिंवसोअथवासुखकारे ॥ तिनकेमनकीदृढप्रीतिलखीपुन रामसुकालकिवाक्यचितारे ॥ निजसेवकपेखसुपौरनकोतव रामतथामुखमाँहिंउचारे ॥ १० ॥ निहचेकरताँहिंदिनागिरिजा लवऔरकुशूसुतराजविठाए ॥ रथआठहजारहजारगजापुन साठहजारतुरंगसुहाए ॥ सुतएकसुएकहिंकोरघुनंदनयाँविधि सैन्यसुसंगदिवाए॥रतनाधनपुंजसुरामदियेपुनऔरमहाजन संगलवाए ॥ ११ ॥ अभिवंदनकैहरिकोदुखसोंलवऔरकुशी निजदेशपधारे ॥ अरिहाअनवावनकाजतवैपुनदूतपठेरघुना थमुरारे ॥ तिनजायतहाँअरिनाशनकोरघुनायककेसुवृतांत उचारे ॥ ढिगरामअएपुरिकालवलीमुनिभेशभलेतनमाँहिंस वारे ॥ १२ ॥ अडिल ॥ अत्रीकोसुतवडुरपुरीमहिंआययो ॥ ताँ कोचेष्टितसगलसुताँहिंसुनाययो॥लक्ष्मणकोनिरयाणप्रतिज्ञा रामकी ॥ होरामभूमिसुतटीकेजायेजानकी ॥ १३ ॥ कवित्त॥ रामकरीचहेंजोईदूतवातकहीसोईसुनीशत्रुहनमनमाँहिंघिल खाएहैं ॥ धीरजक्रोधारतिनपूतसुवुलाइलिएमथुरामैंराजसुसु बाहुकोदिवाएहैं॥यूपकेतुनामसुतनीकेमतिमानपुनविश्वनाम नगरमैवहीतुरमाएहैं ॥रामदेखनकेकाजराजकेसमाजतजश

त्रुहनवीरसुअयोध्यामाँहिंआएहैं॥१४॥पिखेरामचंद्रसुमहातमाआनंदकंदज्वलतस्वतेजपेखपावकलजाएहैं॥युगमृदुकूलघनश्यामतनमाँहिंधरेऋपिमुनिवृंदआसपासमैंसुहाएहैं॥जाँहिंनामकोचितारसिंधुजगपारपरेसनतकुमारपुनजाँकियशगाएहैं॥शत्रुहनजाइरामचंद्रकोप्रणामकरीहाथजोरदोऊपुनवाक्यसुअलाएहैं॥१५॥वारिजसुनैनवैनसुनियेहमारेअबपूतनकोराजटीकदईराजधानीआँ॥जहाँतुमजाउतहाँसंगसुलिजावोमोहितोहिपीछेजाँउँउरयहीमतिठाँनीआँ॥त्यागियेनवीरदासतेरोहोंविशेपधीरशत्रुहरमुखोंसरामऐसेद्दढजाँनीआँ॥करियेपयानसुमध्यानदिनआवेजबरामनिजभ्रातकोसुयहीहैवखाँनीआँ॥१६॥ताँहींक्षणमाँहिंपुनवानरअनेकआएकामरूपवंतवलजिनमेंसुहायोहै॥ऋक्षपुनराक्षसलंगूरतोहंजारआएदेवऋपिपूतहरिगौनसुनपायोहै॥वानरसुराक्षसलंगूरऋक्षजेईआएहाथजोरजोररामचंद्रकोअलायोहै॥तोहिपाछेजाँनोंजहाँकरतपयानोप्रभुनीठचीतमाँहिंहमयहीतुठरायोहै॥१७॥ताँहींक्षणआएकपिनायकसुग्रीववीरकरीरघुवीरपदवंदनावनाइकै॥राजकोसमाजमोहिअंगदकेभालदियोआयोतवपासइमभाखिओसुनाइकै॥जहाँचलोरघुवीरतहाँहीसिधाऊँधीरयहीद्दढचीतमाँहिंआयोठहिराइकै॥वानरलंगूरऋक्षराक्षसवखांनकरेसुनेरामचंद्रद्दढवाक्यमनलाइकै॥१८॥विभीषणसादरबुलाइरामचंद्रकहीराक्षसकेराजअवनीकेसुनलीजिए॥आइसकोमान

जौलौभूमिवलवानतुमराक्षसकोराजवीरतौलौजगकीजिये ॥ मेरीहैसुगंदइमभाखिओमुकंदपुनयाँहिंयीच्चवीरकछुउत्तरनदीजिये ॥ ऐसेभगवाँनसुविभीपणवखाँनकरहनूकोवुलायोजाँहिंनामभजजीजिये ॥ १९ ॥ अंजनीकुमारचिरजीवबलधारजगभईममआइसनसोईमेटदीजिये ॥ फेरभगवंतजांबवंतकोवुलाइकह्योधरणिमँझारवीरधारवलजीजिये॥ द्वापरमँझारएककारणउदारहोइमोहिसोंलराईतवफेरपेखलीजिये ॥ करुणाउदारकपिऋक्षनउचारकियोराक्षसनसंगमोहिसंगहीचलीजिये ॥ २० ॥ वारिजसुनैनसुविशालवक्षमैनद्युतिभएसुप्रभातरघुनाथयौंउचारिआ ॥ कुलकोजोइष्टश्रीवसिष्टगुरुरामकह्योकीजियेसुहोमशुभपावकमँझारिआ ॥ सुनकैसुरामवातकरेसविख्यातहोमगौनकोविधानताँहिंभलेहीसवारिआ ॥ वडेहीप्रयानहितराममतिमानतवधारकुशपाणिक्षौमअंवरसुधारिआ ॥ २१ ॥ ॥ सवैया ॥ निकसेपुरितेरघुवीरवलीसितवारिदतेशशिज्योंनिकसाए ॥ शशिकोटिसमानसुकांतिलशेदृगवारिजकीछविदूरमिटाए॥ सितवारिजहाथलिएपदमारघुनायकवामसुभागसुहाए॥ तनकांचनसोदृगवारिजसेहरिसंगचलीछविकौनवताए॥ २२॥ ॥कवित ॥ ॥दाहनेसुभागरामश्यामाहैसुभगामहीवारिजसेनैनछविपरमसुहाएहैं ॥ शस्त्रपुनअस्त्रधनुवागतनधारआएवेदधरदेहहरिआगेयशगाएहैं ॥ आएमुनिवृंदपुनकपिनकेझुंडधरनभकेनिवासीनहींजाततवेगिनाएहैं॥वे

दनकीमातातवप्रणवसमेतआईव्याहृतिसमेतहरिहेरविक
साएहैं॥ २३॥रामकेसमेतचलेत्यागकेनिकेतजननारिसुतवं
धुझुंडसंगहीसिधारिओ ॥ मनोमोक्षद्वाररामखोलहीकिवार
दिएजाँहिंरामसंगकोऊकरेननिवारिओ॥ सांतःपुरवासअनु
चरनारिसंगलिएअरिहासिधारेपुनभरतकुमारिओ॥रामको
निहारपुरिवासीसभलारभएपद्मासमेतजवरामहीपधारि
ओ॥ २४॥ वालऔयुवानद्विजवृद्धजेमहानवडेमंत्रीसअमा
त्यसभसंगहीसिधाएहैं॥वाहुजसुवैश्यपुनशूद्रसुअनेकचलेअं
त्यजसुभीलनहींजातवेगिनाएहैं ॥ वानरकपीशआदिन्हीशु
द्धरूपभएमंगलस्वरूपशुभशव्दससुहाएहैं ॥ भवदुःखदीनम
नकोऊनाँहिंभयोजनवाहिरकेसुखमैंनकाहूँमनलाएहैं॥२५॥
आनंदस्वरूपअनुगतसुविरक्तभएरामसंगचलेपशुभृत्यनमि
लाइकै ॥ भूतजेअदृश्यपुरीमाँहिंनाँहितेईरहेचलेजडजंगमको
सकेनगिनाइकै ॥ शक्तिजाँअंनतजवरामभगवंतचलेचलेसं
गलोकजगसूखनभुलाइकै॥रथ्योनाँहिंजंतुकोअयोध्यामाँहिं
ताँहिंसमैराममतिपाइचलेसंगहीसिधाइकै॥२६॥ नराजछं
द॥ भईपुरीसमस्तशून्यरामभूपजौचले॥गएसुदूरताँहितेनदी
निहारियाभले॥भईपरेशनैनतेसुसारजूमहानदी॥प्रसन्नराम
तौभएसुतीरमैंगएयदी॥ २७॥ चितारजाँहिरामकोसमस्तहों
हिंपावना॥ अशेपविश्वआपमैपिखीसुरामभावना॥समस्त
देवसंगलेपितामहासुआइओ॥ ऋषीसमस्तसिद्धकेसुझुंडसों
सुहाइओ॥२८॥विमानकोटिआइसेअकाशमैलसाइहैं॥ सुदे

वतासमेतनारिताँहिमैंसुहाइहैं ॥ सुगंधिवंतवायुमंदमंदहीसु आइहैं ॥ आपारफूलदेवताअकाशमैंवसाइहैं ॥ २९ ॥ न्रदंगदेवतावजाँहिगाँहिज्ञानकेधरा ॥ नचेंअपच्छराघनीसुहाँहिंसंगकिंनरा ॥ जुरामपादपावनोसुनीरमैंछुहाइओ ॥ अनंतशक्तिरामजीउमातवैंसुहाइओ॥३०॥पितामहासुजोरहाथरामकोवखाँनिओ॥परातमापरेशरामएकत्वंपछानिओ॥सदाअनंदविष्णुत्वंसुपूरणोवखाँनिये॥ लखेंसतत्वआपनोअजैकत्वंसुजानिये ॥ ३१ ॥कवित॥ तथापिसुवाक्यमेरोकीयोहैवनाइप्रभुभक्तनअधीनरामतुहींतोनिहारिआ ॥भ्रातनसमेतधारपूरवस्वरूपतुमधारभुजाचारसुरकरोप्रतिपारिआ॥देवनअधीशहरितुहींजगदीशप्रभुमोविनानआनजनसकेंतेविचारिआ॥वंदनाहजारसुप्रसीददेवदेवप्रभोफेरफेरवंदनापछानियेहमारिआ॥३२॥सवैया॥विनतीचतुराननकीसुनकैसभदेवनपेखतहीरघुराई॥तनभूरिप्रकाशतिनैंनमुदेकछुदेवनकोनहिंदेतदिखाई॥धरचक्रगदादरवारिजरामसुताँहिंसमेभुजचारवनाई॥लक्षमंनभयोहरिसेजतवैंअहिनायकरूपसुदेहसुहाई ॥ ३३ ॥ ॥दोहा ॥ ॥ भरतशंखवपुधारकरहरिकेसंगसुहाइ ॥ चक्रभयोशत्रुघ्नवमहिमाकहीनजाइ ॥३४॥ कवित ॥ पदमासुभईसीयरामभएविष्णुपीयपुरुपपुरातनजुवेदकैवखाँनियें ॥ अनुजसमेतधारपूरवसुदेहहरिभएतेजवंतदिव्यमूरतिपछानियें॥ ईश्वरकोपाइकैसुरेशदेवसिद्धमुनिकिंनरसुयक्षऔरऋपीजेमहाँनियें ॥ पितरसुचारमुखभएसुखवंतसभगाहिं

यशईशकोसुपूजतभवानियें॥३५॥आनंदकेपूरमैंमगनमन भएसुरपाइकैमनोरथसुरहेहरपाइकै ॥ ईश्वरसनातनमुहात माभवानीतवआपकमलासनकोभाखिओसुनाइकै॥आएईं हाँजेईममभगतपछाँनोंतेईहोंहिंअनुगामीममहर्षवढाइकै ॥ तिर्यकशरीरजेईधीरपुण्यवंततेईस्वर्गसमलोकमैंसुदेहिपहुचा इकै॥ ॥ ३६ ॥ **सवैया** ॥ ॥ सुनकैहरिआइसयाँविधिकी चतुराननजूकरजोरउचारी ॥ सुसंतानिकनामसुलोकवडे ममऊपरिदीपतिमानमुरारी ॥ कृतपुंण्यसँवूहसुतेजनजेति हँमाँहिंचलेंजहँभोगअपारी ॥ सुविकुंठसमानसुलोकनमैं इहनीतरमेंजिमआइसथारी ॥३७॥ जेपुनअंतसमेनरपाव नरामइहैमुखनामअलाए॥जाँनतनाँहिंमहातमकोनरतेपुन याँविधिलोकसुपाए॥लाइसमाधियोगीश्वरजेतवध्यानधरें जिनलोकनजाए॥पावननामसुरामइहैइकवारकहेजनपाप मिटाए॥ ३८ ॥ कवित ॥ सुनीविधिवानीसुभवानीहरपाने सभवानरसुराक्षससुनीरमाँहिंनाएहैं॥डारयाँहिंदहकोसुजाँ हिंसुरअंशजाएवानरभलूकतनतेईतेईपाएहैं ॥ वानरप्रवीर जोसुग्रीवधीरवंतभगवंतरविभएतेजपरमसुहाएहैं॥सूरयके वीरयतेभएसुसुग्रीवकपिमिलेपुनताँहिंसुरचंदयशगाएहैं ॥ ॥३९॥ ॥**सवैया**॥ ॥औरसभेसरयूजलमैंनरन्हाइसुमान वदेहनडारे॥वैठविमाननभूपणधारसंतानिकलोकनमाँहिंप धारे॥ जेपशुकीटपतंगसभेजलन्हाइगएदिविरामनिहारे॥रा मनिहारतजेजनसंगगएसुरमैजनदेखनहारे॥४०॥**दोहा**॥

॥ ॥ सिमरपरेश्वरलोकगुरुरामहरीभगवान॥वेगगएस्वरलोकमैंलोकसुचैठविमान॥ ४१ ॥ ॥**सूतोवाच** ॥**सवैया** ॥ इहपारवतीप्रतिहेमुनिमंडलउत्तरआपमहेशवताए॥शुभऔरकथाविसतारघनोकछुअंतनहींकविमंडलपाए ॥इकपादपठेइनमैंनरजोवहुजन्महजारसुपापमिटाए॥मुनिलाइसमाधिसुजाँहिंजहाँसुखसोंवहिताँपदमाँहिसमाए॥४२॥निशिवासरपापअनेककरेपुनएकशलोकपढेमनलाई॥ नरसोइहरामसलोकलहेसभपापनकोजगमाँहिमिटाई॥ यहिरामकथाशिवआयकहीरघुनाथहिंप्रेरिओताँउरजाई ॥ सुभविष्यतभावकहीचरियासुनहोतप्रसन्नसुश्रीरघुराई॥४३॥ **छपैछंद**॥काव्यरमायणमहामुनीशिवआपउचार्यो॥पारवतीसुनयाँहिंसुचित्तसँदेहनिवार्यो पढभक्तिसोंयाँहिंसुनेउरप्रेमवढाई ॥ शतजन्मनकेपापदेइक्षणमाँहिंमिटाई ॥ जनपढेसुनेअतिभक्तिसोंलिखेसुयाँहिलगाइमन ॥ हुअतिप्रसन्नश्रीरामसियश्रेयवियारेंताँहिंजन ॥ ४४ ॥**कवित** ॥ रामायणआदिकाव्यब्रह्मलौसुरेशकहेजाँहिंकीवडाईसुनेचीतहरेप्राणीआँ॥श्रद्धाकेसमेतपढेसुनेकृतशुद्धदेहविष्णुजीकोपाइपदकहेनिरवाणीआँ॥रामअवतारकीउदारकथापुण्यफललोकगुरुशंभुइहभाँतिहैवखाणीआँ॥याँहिंकोमहातमसुशंभुहीपछानेंमुनिसुनतमिटाँहिंपापपुंजनकीघाणीआँ ॥ ४५॥ **कविरुवाच**॥ **दोहा** ॥ मनवाणीप्रेरकसदाराघवचेतनधाम ॥ वालकवचनसुफूलपदविकसेंसीताराम॥ ४६ ॥ ॥ **छपैछंद**॥ गउरीथी

देउत्तरकांडेवैकुंठनिर्याणोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ संपूर्ण ॥ ॥ शुभम् ॥ संवत् ॥ १९४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥
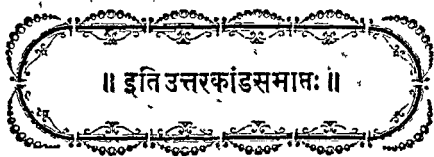
॥ इति उत्तरकांडसमाप्तः ॥

देउत्तरकांडेवैकुंठनिर्याणोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ संपूर्ण ॥ ॥ शुभम् ॥ संवत् ॥ १९४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥

॥ इति उत्तरकांडसमाप्तः ॥

प्रथमसे ग्रंथ खरीद करनेवाले सद्ग्रहस्थोके नाम.

नाम	प्रती	नाम	प्रती
ठकर. शीवजी रामजी	२५	ठकर कानजी वि परशोतम	२
ठभर त्रीकम नथु	२५	ठकर गोपाल हरचंद	२
मारवाडी हरीपरशाद भागीरथ	२५	ठकर मुरजी चतरभोज	२
मारवाडी गंगाविण्णु खेंमराज	२५	ठकर खाटाऊ वीरजी	२
पंडीत जेटाराम मुकुंदजी	२५	नागोरी चापशी खीमराज	२
ठकर लालजी दुगरथी	१०	मटी गुनुमल भोजराज	२
ठकर देवकण वि. काईआ	१०	ठकर सुंदरजी केशवजी	१
शेठ चंदा भाई रामजी	५	ठकर पुजा जीवराज हा. वशराम	१
ठकर रतनशी जाधवजी	५	ठकर चतरभोज लालजी	१
ठकर प्रेमजी केवल	५	शोनी जशराजदेवसी	१
ठकर शवजी प्रागजी	५	ठकर नाराणदोशाणी	१
ठकर मोनजी देवजी	५	ठकर रतनशी ईशर	१
ठकर वागजी ठाकरशी	५	मुलतानी मुलचंद	१
ठकर धारशी नानजी	५	मुलतानी फुलुमल	१
ठकर दोशा अवजी	५	ठकर रागवजीपरमानंद	१
ठकर विरजी हंशराज	२	ठकर सुंदरजी शवजी	१
भणशारी माधवजी शामजी	२	ठकर अरजणशामजी	१
ठकर नाराण सुंदरजी	२	ठकर रवजी रामजी शराफ	१
ठकर दोशा मुरारजी	२	कानजी हीरजीलुवार	१
ठकर प्रेमजी भाई लधा	२	ठकर देवचंद हरीराम	१
ठकर नाराण ऊकेडा	२	ठकर भाणजीतुरशीआ	१
ठकर नरशी नाराण	२	ठकर टलुगोपाळ	१

नाम	प्रती	नाम	प्रती
बावा हरीदास ऊदासीन	१	ठकर रामदास रतनशी	१
जोशी दामजी हा. जेठा लालजी	१	ठकर नाराणमुरजी	१
जोशी जेठा लालजी	१	ठकर कानजीजेठा	१
ठकर केशवजी रतनथी	१	ठकर देवजीपारपेआ	१
ठकर शवजी रामजी	१	ठकर दामजीलधा	१
ठकर मावजी माधवजी	१	ठकर खीमजीरागवजी	१
दीवान खीमसिंग	१	ठकर जेठाशामजी	१
रागवानंद	२	वेलजी वरीध	१
उपाधीआ अरवेशर चत्रभुज अंजार बुकशेलर	१०	पुजारा तेजपारदेवचंद	१
उपाधीआ केशवजी अंजार बुकशेलर	१०	सुधरजी भीमजी	५